हों, ताज़ीम नहीं

महाराणा जगत्सिंह दूसरे,
बारहवां प्रकरण - १२१७-१५३४.

इग्यारहवां प्रकरण.

महाराणा संग्रामसिंह दूसरे.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७६७ पौष शुक्ल १ [हि० ११२२ तारीख़ २९ शव्वाल = ई० १७१० ता० २२ डिसेम्बर] और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १७६८ ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० ११२३ ता० १९ रबीउ़लअव्वल = ई० १७११ ता० ८ मई] को हुआ. इस राज्यमें पहिलेसे यह दस्तूर चला आता है, कि जब महाराणाका इन्तिक़ाल हो, उसी दिन उनका बेटा, चाहे ख़ास हो, अथवा गोद लिया हुआ, गद्दीपर बैठता है; और कुछ अर्से बाद शुभ मुहूर्त निकलवाकर गद्दी नशीनीका जल्सह किया जाता है; उस वक़्त तमाम राजाओंको न्योता भेजा जाता है; और सब बहिन, सुवासिनी व कुन्बेवालोंको एकट्ठा करते हैं; शास्त्रके अनुसार सब तीर्थोंका जल और अग्निहोत्रका सामान, वस्त्र, शस्त्र और गहना वग़ैरह एकट्ठा करके महाराणा पाटवी महाराणीके साथ गद्दीपर बैठते हैं, तब सब सर्दार या राजा लोग, जो उस वक़्त हों, नज़्र देते हैं. महाराणा सबकी नज़्र बैठे हुए लेते हैं, उस वक़्त किसीको ताज़ीम नहीं

और इसी मान्ताके कारण शीतला माताका मन्दिर बनवाया, जो देलवाड़ेकी हवेलीके साम्हने बाग़के अन्दर अब तक मौजूद है.

यह महाराणा रियासतमें एक हुक्म रखना चाहते थे, अर्थात् रियासतोंमें अक्सर क़ाइदह है, कि मज़्हबी पेश्वा, ज़नानख़ानह अथवा वलीअ़ह्द, तथा भाई बेटे वग़ैरह जुदा जुदा हुक्म चलाने लगते हैं. इन महाराणाने अपने हुक्मके सिवाय दूसरेका हुक्म नहीं चलने दिया; इस बारेमें एक बार अपनी मासे भी रंजीदह होगये थे. उनकी यह आदत थी, कि हमेशह अपनी मा से प्रभातको दंडवत् करनेके बाद खाना खाते; एक बार मामूल मूजिब बाईजीराज (अपनी माता) के पास गये, तो उन्होंने किसीको जागीर दिलानेकी सिफ़ारिश की; महाराणा मन्ज़ूर करके बाहर आये, और उस जागीरका पट्टा लिखकर बाईजीराजके पास भेजदिया; परन्तु दूसरे दिनसे भीतर जानेका दस्तूर बन्द किया; बाईजीराजने बहुत कुछ चाहा, पर वे न गये; तब उन्होंने तीर्थ यात्राका मनोर्थ किया; महाराणाने सब तय्यारी करवादी, तोभी मिलनेको न गये; बाईजीराज आंबेर पहुंचे, महाराजा सवाई जयसिंहने यहां तक उनका आदर किया, कि बाईजीराज की पालकीमें कन्धा लगाकर महलोंमें लेगये. फिर राज माता मथुरा, वृन्दाबन वग़ैरह तीर्थ यात्रा करके लौटीं, तो महाराजा सवाई जयसिंह उन्हें पहुंचानेको उदयपुर तक आये, और यह कहा, कि मैं दोनों मा बेटोंका रंज मिटवा दूंगा. महाराणा अपनी माताकी पेश्वाईके लिये उदयपुरसे एक मंज़िल साम्हने जाकर उन्हें अपने डेरोंमें ले आये, और महाराजा जयसिंहसे मिले. महाराजाने आपसके रंजका ज़िक्र छेड़ा, महाराणाने कह दिया, कि घरका विरोध घरमें ही मिटता है, आप मिह्मान हैं, आपको इन बातोंसे कुछ मत्लब नहीं. इसके बाद उदयपुरमें आये, और महाराजा जयसिंहकी बहुत ख़ातिर की. यह बात कर्नेल टॉडने महाराणाकी बुद्धिमानीकी प्रशंसामें लिखी है, जो हक़ीक़तमें बड़े बुद्धिमान थे. विक्रमी १७७९ फाल्गुन् कृष्ण ११ [हि० ११३५ ता० २५ जमादियुल अव्वल = ई० १७२३ ता० ४ मार्च] को चीनीकी चित्रशालीमें रहनेका उत्सव किया; यह चीनीकी ईंटें महाराणाने पोर्चुगीज़ोंकी मारिफ़त चीनसे मंगवाई थीं, और बहुतसी उनमेंसे यूरोपकी बनीहुई थीं, जो इस महलमें लगाई गईं, वह अब तक मौजूद हैं.

वि० १७८० वैशाख कृष्ण ७ [हि० ११३५ ता० २१ रजब = ई० १७२३ ता० २७ एप्रिल] को युवराज कुंवर जगत्सिंहका यज्ञोपवीत संस्कार किया, और वि० ज्येष्ठ [हि० रमज़ान = ई० जून] में कुंवर जगत्सिंहकी बरात लूणावाड़े गई. वहांके रईस सोलंखी नाहरसिंहकी बेटीके साथ विवाह हुआ. इस शादीमें महाराणा संग्रामसिंहने

कीसत् रा कीसत रुपीया केसी जठै भराय देसां जी.
बाहुडता कागद वेगा वेगा दीजो. मीती काती वदि ६ भौम, सं । १७७४ रा।
मुं । दुधैलाई.

—⁂—
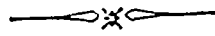
इन ऊपर लिखे हुए हालातसे महाराणा संग्रामसिंहका मुल्की इन्तिज़ाम, नौकरोंकी क़द्र व सर्दारोंका लिहाज़, जैसा बर्ताजाता था, वह पाठक लोग जान सक्ते हैं. इसी वर्षके श्रावण मास [हि० रमज़ान = ई० ऑगस्ट] में नाहर मगरेके महलोंकी बुन्याद डालीगई. यह शिकारगाह उदयपुरसे सोलह मील ईशाण कोणपर अब तक मौजूद है, और वहां उनके बनवाये हुए गुम्बज़दार महल क़ाइम हैं. इसी तरह उदयसागरके तीरपर कमलोदकी पहाड़ीमें शिकार खेलनेके मकान बनवाये. यह महाराणा मुल्की इन्तिज़ामसे फ़ुर्सत पाकर दुन्यादारीके आरामकी तरफ़ भी ध्यान रखते थे, जो उस समयके चित्रपट देखनेसे ज़ाहिर है. इनके समयमें रियासतमें कोई ख़लल नहीं आया, क्योंकि यह हर एक बातकी तरफ़ मौक़ेपर तवज्जुह करते थे; लेकिन् अफ़्सोस है, कि ऐसे अ़क्लमन्द राजाने उन बातोंके अंजामपर कुछ भी ध्यान नही दिया; क्योंकि बुद्धिमान लोग संसारी सुखसे नुक़्सान नहीं उठाते, परन्तु वे ऐश व इ़श्रतकी जड़ जमा देते हैं, जिससे पिछले ग़ाफ़िल लोग धीरे धीरे ख़राबीमें पड़कर बर्बादीकी दशाको पहुंच जाते हैं.

महाराणा जयसिंहने मरनेसे कुछ दिन पहिले ऐश व इ़श्रतके कामोंकी तरफ़ ध्यान दिया, फिर महाराणा अमरसिंह २ ने बहादुरी और बुद्धिमानीके बग़ीचेमें शराबके पानीसे इस पौदेको पर्वरिश किया, और इन महाराणाने उसकी शाख़ोंको बढ़ाया, पर यह न सोचा, कि इससे बग़ीचेके पिछले दरस्तोंको नुक़्सान पहुंचेगा. हम इस जगह मुग़्लियह ख़ानदानकी मिसाल देतेहैं, कि अक्बर बादशाहने ऐश व इ़श्रतका बीज बोया, और जहांगीरने उसकी रक्षा की, शाहजहांने उसे सर सब्ज़ किया, जिसकी ठंडी छायामें ग़ाफ़िल होतेही आलमगीरकी क़ैदमें आया. फिर उसके ख़ानदानमें अय्याशी ऐसी फैल गई, कि हिन्दुस्तानकी बादशाहतका ख़ातिमह होनेतक पीछा न छूटा. इसी तरह मेवाड़को भी बहुत नुक़्सान पहुंचा, जो पाठकोंको आगे अच्छी तरह मालूम होजायेगा.

विक्रमी १७७५ चैत्र शुक्ल १ [हि० ११३० ता० ३० रबीउ़स्सानी = ई० १७१८ ता० १ एप्रिल] को बड़े कुंवर जगत्सिंहको शीतला निकली, जिसका उत्सव कियागया,

लाखों रुपये ख़र्च किये थे. चारण कविया करणीदानके गीतों (१) को महाराणाने धूप देकर पूजन किया. यह बात इस तरह हुई थी, कि मेवाड़में सूलवाड़ा गांवका चारण कविया करणीदान अन्न बिना लाचार होकर घरसे निकला; यह अच्छा शाइर था; अव्वल शाहपुराके कुंवर उम्मेदसिंहके पास गया, जो इन्हीं दिनोंमें अपने बापको रद्द करके शाहपुराका मुख़्तार होगया था. करणीदानने अपनी शाइरीसे उन्हें ख़ुश किया, उम्मेदसिंहने कुछ राह ख़र्च देकर रुख़्सत दी. यह अपने प्रारब्ध को दोष लगाकर रवानह होगया, क्योंकि कुंवर उम्मेदसिंह उदार थे; और इसकी कवितासे ज़ियादह ख़ुश भी हुए, परन्तु करणीदानको घरपर भेजनेके लाइक़ ज़ाहिरा कुछ नहीं दिया; ८०० रुपये उम्मेदसिंहने करणीदानके घर भेजदिये, और उसका कुछ भी ज़िक्र नहीं किया. करणीदान डूंगरपुर पहुंचा, जहांके रावल शिवसिंहने उसकी कवितासे ख़ुश होकर लाख पशाव दिया. उस वक़्का एक दोहा हम नीचे लिखते हैं:-

दोहा.

बाबरिया छत्रपतबिया कीदाखूं क्रामात ॥
सिध जूना रावल शिवा नमो गिरप्पुर नाथ॥ १ ॥

अर्थ- दूसरे छत्र धारी (राजा) नये जोगी अर्थात् छोटी जटावाले मरकर थोड़ीसी तपस्याके ज़ोरसे राजा बनगये, जिनको मैं करामाती नहीं कहसक्ता; परन्तु पुराने तपस्वी (बहुत दिनों तक तप करके राजा बनने वाला) रावल शिवसिंह तुमको मेरा प्रणाम है. करणीदान वहांसे उदयपुर आया, और महाराणा संग्रामसिंह को पांच गीत सुनाये, जिससे महाराणाने ख़ुश होकर कहा, कि तुम कहो, तो इन गीतोंका हम अपने हाथसे पूजन करें, और तुम कहो, तो लाख पशाव दियाजावे. करणीदानने अपनी इ़ज़्ज़त बढ़ानेके लिये पूजन करना पसन्द किया; महाराणाने वैसा ही किया, और लाख पशाव (२) भी दिया. फिर यही करणीदान जोधपुरके

(१) यह एक प्रकारके छन्द होते हैं, जो चारण लोग अक्सर मारवाड़ी शाइरी इन्हीं छन्दोंमें बनाते हैं.

(२) लाख पशावकी तफ़्सील इस तरहपर है, एक हाथी मए सामान व ज़ेवरके, १ पालकी (लंबे ख़मदार बांसके डंडे वाली), २ घोड़े मए सुनहरी व रुपहरी ज़ेवर व सामानके, २ ऊंट, बीस हज़ार रुपयोंसे लेकर पचास हज़ार रुपयों तक नक़्द, एक हज़ार रुपया सालानाकी आमदनीसे

महाराजा अभयसिंहके पास पहुंचा, और वहांका अजाची बना, जिसका ज़िक्र मारवाड़की तवारीख़में लिख आये हैं.

विक्रमी १७८१ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ११३६ ता० १७ ज़िल्काद = ई० १७२४ ता० ८ ऑगस्ट] को महाराणाके कुंवर जगत्‌सिंहकी भार्या सोलंखिणीसे भंवर प्रतापसिंहका जन्म हुआ. महाराणाने पौत्र पैदा होनेका बहुत बड़ा उत्सव किया. इन महाराणाको अपने बापका मन्शा पूरा करनेकी बहुत ख़्वाहिश थी; रामपुरा महाराणा अमरसिंह २ की मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ अपने क़ब्ज़ेमें करलिया, सिरोही लेनेकी कोशिश थी, और ईडरके लिये चाहते थे, कि उसको मेवाड़में मिला लियाजावे; लेकिन् जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहको उनके बेटे बख़्तसिंहने मारडाला; और महाराजाके छोटे बेटे आणन्दसिंह और रायसिंह भागकर ईडर पहुंचे; उन्होंने वहांके पहिले राजाओंकी ख़राब हालत देखकर ईडरपर क़ब्ज़ह करलिया, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने उनसे छीन लेना चाहा, और महाराजा सवाई जयसिंहको इस मुआमलेमें मुन्सिफ़ क़रार दिया. जयसिंहने महाराजा अभयसिंहको समझाया, कि आपके भाई आणन्दसिंह व रायसिंह ईडरके पहाड़ी मुल्कपर क़ाबिज़ रहकर मारवाड़को बर्बाद करेंगे, इसलिये मैं उनको ग़ारत करनेके लिये एक तद्बीर बतलाता हूं, कि ईडरका फ़र्मान बादशाहसे आपको मिलचुका है, लेकिन् महाराणाने मुझसे कहा है, कि वह ज़िला मुझे ठेकेपर महाराजा अभयसिंह लिखदेवें; बस आप अपने भाइयोंको मारडालनेके इक़ारपर महाराणाको दे दीजिये. महाराजाने इस सलाहको मंज़ूर किया, और एक ख़रीतह महाराजा जयसिंहके ख़रीतहके साथ महाराणाको भेजा; उन दोनों ख़रीतोंकी नक़्लें नीचे लिखीजाती हैं:-

महाराजा सवाई जयसिंहका ख़रीतह,

श्रीरामजी

सीतारामजी

सिध श्री महाराजा धिराज महारांणा श्री संग्रामस्यंघजी जोग्य, लिषतं राजा

लेकर पांच हज़ारकी आमदनी तकका गांव, और सिरोपाव व पांच हज़ार रुपयोंका ज़ेवर. पिछले ज़मानेमें महाराणा भीमसिंहके समय रुपयोंकी कमी होती, तो उनके एवज़में ज़ेवर व जायदाद ज़ियादह दीजाती थी, जिसका ज़िक्र उनके हालमें किया जायेगा.

(१) श्री दीवांणजीसों मारो मुजरो मालुम व्हे, अप्रंच श्री दीवांणजीकी हजुरीछो, जदी आप हुकम कीयो छो, जो ईडर तो आंगण छे; अर उपन घर छे, सो ईनै लीयो चाहिजे; सो म्हारे ईको तलास बहोत छो, सो अब यो काम श्री दीवाणजीका प्रतापसो हुवो.

सवाई जेस्यघकेन मुजरो अवधारिज्यो, अैठाका स्मांचार श्री जीकी क्रिपा सौं भला छे, आपका सदा भला चाहजे, अप्रंच आप वड़ा छो, हिंदुसथांनमै सरदार छो, अैठा वैठाको व्योहारमै कहीं वात जुदायगी न छै, अैठे घोड़ा रजपुत छे सो आपका कांमनै छै, ई त्रफ़ कांम काज होय, सो लिषावता रहोला; अर ऊदैपुरमैं म्हे आपकी हजुरि छा, तव म्हांनै आप या वात फुरमाई छी, जो मेवाड़ तो घर छे, अर ईड़र मेवाड़को आंगण छै, सो ई का लेवाको तलास रपावोला; सो वे ही दिनसां म्हे तलासमे छा; अर अव भी ई कांमके वासतै मयारांम ऊकीलनै आपको लिप्यो आयो, सो दलपत राय म्हांनै वजंनसि वंचायो; तीपरि म्हे महाराजा अभैस्यंघजीनै समझाय व्योरो कह्यौं, सो यां भी कवुल करी, अर प्रगनौं ईडरको आपकी नजरि कीयौ, सो पत याको ईही मतलवको लिपाय भेज्यौ छै, सो पहुंचेलो, अर महाराजा अभैस्यघजी या अरज करी छै, जो आप जतन असो करावोला, अणंदस्यंघ वैठासौं जीवतो नीकलै नही, मार्‍यो ही जाय, वेंनै मार्‍या विना राजको वंदवसत कठणि छै; सो याका राजका वंदवसतको तो फिकर आपनै छै ही, तीस्यौ म्हे भी याही अरज करां छां, प्रथम तो ई कांमकै वासतै श्री दीवांण ही पधारै, अर जो कदाचि आपका पधारिवाकी सलाह न होय, तो धायभाई नगनै हुकंम होय, वो आछी फोज सौं जाय, अर पैहली तो नांका वंदी करिले, जैठा पाछै वैनै मारै; भाग्य जावा न पावे. ई वातको घणौ जतन रपावे, कागद समाचार लिपावता रहोला. मिती असाढ वदि ७ सवत १७८४.

पांनो दुजो.

रांमजी

प्रगनुं ईडर महाराजा अभैस्यघजीकी जागीरमै छै, जेतौ तो या आपकी नजरि ही कीयौ छै, अर जो कदाचि ओर कहीकी जागीरमै होजाय, तो जमाव वैठाको असो करांवैला, अमल सरकार ही को रेहेवो करै, ओर मनसवदार अमल करवा न पावे. मिती असाढ वदि ८ संवत १७८४.

---

(१) ये तीनों आड़ी सतरें ख़ास महाराजा जयसिंहके हाथके लिखे हुएकी नक्ल है.

महाराजा अभयसिंहके काग़ज़की नक़्ल, जो महाराजा जयसिंहके काग़ज़के साथ आया था.

॥ श्रीपरमेसरजी सत्त छे.

॥ स्विस्ति श्री महाराजा धिराज महारांणा श्री संग्रांमसिंघजी जोग्य, राज राजेश्वर माहाराजा धिराज महाराजा श्री अभैसिंघजी लिषावतं मुंजरो वाचजो, अठारा समाचार भला छे, राजरा सदा भला चाहीजै, राज ठाकुर छो, वडा छो, सदा हेत मया रापो छो, तिणथी वीसेप रषावजो, अठा सारषो कांम काज हुवे, सुं हमेसां लिषावजो, अठे राजरो घर छे, जुदागी कीए वात दीसा न जांणे, अठे घोडा रजपुत छे, सुं राजरे कांमनुं छे,

अप्रंच प्रगनो ईडर म्हे राजनुं दीयो छे, राज ऊठारो भली भांत जावतो करावजो, ने राज ईजारे मुकाते दीसा लिषीयो थौ, सुं आ कीसी वात छे, ईडर राजरी नीजर छे; तथा अणदसीघ नें रायसीघ हरांम पोर छे, तीणांनुं फोज मेलने मराय नांपजो; म्हांरी ईण वात सुं रजामंदी छे, राज ईण वातरो आघो कढावजो मती,

सांवत १७८३ रा असाढ वदी ७ मं ॥ फरीदावाद.

(१) म्हांरो मुजरो मालुम हुवे, औ दीवांण अण-दसींघ, रायसींघनुं मरायनापसो, या बात जरूर.

पहिले काग़ज़में विक्रमी १७८४ और दूसरेमें विक्रमी १७८३ लिखा है, इससे यह मालूम होता है, कि महाराजा जयसिंहका काग़ज़ चैत्रादि संवत्से और महाराजा अभयसिंहका श्रावणादिके हिसाबसे लिखागया है; क्योंकि पहिले काग़ज़में चैत्रसे विक्रमी १७८४ लग गया, और दूसरेमें आषाढ़ी पूर्णिमा तक विक्रमी १७८३ माना गया, वर्नह महीना, तिथि और मत्लब दोनों काग़ज़ोंका एक है; और ये एक ही साथ महाराजा जयसिंहने भेजे हैं. इन काग़ज़ोंके आने बाद महाराणाने अणन्दसिंह व रायसिंह पर फ़ौज तय्यार करके ईडरकी तरफ़ भेजी. इस फ़ौजके मुसाहिब भींडरका महाराज जैतसिंह और धायभाई राव नगराज थे. एक दम ईडरको जाघेरा, तो अणन्दसिंह और रायसिंहने शहर और ज़िला महाराणाकी फ़ौजके सुपुर्द किया, और ख़ुद हिरासतमें आगये. इन दोनों मुसाहिबोंने भी मुल्की बन्दोबस्त करके अणन्दसिंह व रायसिंहको साथ लेकर उदयपुरकी तरफ़ कूच किया; उस वक्त मारवाड़ी भाषामें किसी शाइरने यह दोहा कहा थाः–

(१) ये दोनों आड़ी सतरें ख़ास महाराजा अभयसिंहके हाथके लिखे हुएकी नक़्ल है.

दोहा.

जैतो आयो जैतकर ईडर अमल जमाह ॥
हिन्दूपत राजी हुवो सगतांरो पतसाह ॥ १ ॥

अर्थ - जैतसिंह फ़त्ह करके ईडरमें अमल जमा आया, जिससे शक्तावतोंके मालिकपर हिन्दूपति (महाराणा) खुश हुआ.

अणन्दसिंह व रायसिंहको महाराणाने अपने पास रक्खा, तो महाराजा अभयसिंहने एक काग़ज़ महाराणाके पास भेजा, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं:-

महाराजा अभयसिंहके काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीपरमेसरजी स्त छे.

॥ स्वस्ति श्री माहाराजा धिराज माहारांणा श्री संग्रामसिंघजी जोग्य, राज राजेश्वर माहाराजा धिराज माहाराजा श्री अभैसिंघजी लिपावतं सुजरौ वाचजो, अठारा समाचार भला छै, राजरा सदा भला चाहीजै, राज वडा छौ, ठाकुर छौ, सदा हेत मया रापा छौ तिण था विसेप रषावजो, अठा सारीपो कांम काज हुवै सु हमेसां लिपावजो, अठे राजरौ घर छै, जुदायगी कीणी वात दीसा न जांणै, अठै घोडा रजपुत छै सो राजरै कांमनुं छै। अप्रंच अणंदसिंघ, रायसिंघरी वात राज ठैहराय नै ऊदैपुर बुलाया, सु आछां कीयौ, आ वात राजरै हीज करणरी थी; हीसै यानुं पटौ भावै रोजीनौ दीरायनें राज कनै रपावसी; ईडररौ ऐक पेत ही ईणांनुं न दीरावेला, ईडर राजरै रपावजो, दरबाररै मुतसदीयांनुं हुकंम हुवो छै, सो ईडररै ईजारैरौ टकौ हीमार राजरै मुतसदीयां कनै कोई मांगे नही, सु राज हरगीज ईडररो ऐक पेत ही ऊणांनुं दीरावौ मत, और हकीकत पं ॥ रायचंद अरज करसी. संवत १७८५ रा भाद्रवा वदी २ सुं ॥ जहांनावाद.

इस काग़ज़के लिखनेका मत्लब ज़ाहिरा तो ईडरमें रायसिंह व अणन्दसिंहको न रखनेका है, परन्तु उनके न मारेजानेसे महाराजा अभयसिंहकी दिली मुराद पूरी न हुई; तब महाराणाको इशारेसे उलहना लिखभेजा, कि "अणन्दसिंह, रायसिंहको फ़ौज भेजकर उदयपुर बुलाया, यह अच्छा किया, यह बात आप हीके करनेकी थी", अर्थात्

इक़्रारके बख़िलाफ़ आपके करनेकी न थी. दूसरी बात ईडरमेंसे उनको ज़मीन न देनेके लिये भी इस वास्ते लिखी है, कि जिस तरह उनको मारडालनेका इक़्रार पूरा न हुआ, इसी तरह ज़मीन न देनेका भी पूरा न हो; परन्तु इस काग़ज़के आनेसे पहिले आणन्द-सिंह व रायसिंह दोनों उदयपुरसे रवानह होगये, और मेड़ता वग़ैरह मारवाड़के कई पर्गने जा लूटे. इसपर महाराजा अभयसिंहने जयसिंहको लिखा होगा, क्योंकि वे महाराणा को ईडर दिलानेमें पंच थे. महाराजा अभयसिंहने अपने भाई बख़्तसिंहको फ़ौज देकर मेड़तेकी तरफ़ भेजा, और महाराजा जयसिंहको भी अभयसिंहका मददगार बनना पड़ा; तब एक और काग़ज़ महाराजा जयसिंहने महाराणाके नाम लिख भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

महाराजा सवाई जयसिंहके काग़ज़की नक़्ल.

श्रीरांमजी.

श्रीसीतारांमजी.

॥ सिधि श्री महाराजा धिराज महारांणा श्री संग्रामस्यघजी जोग्य, लिपतं राजा सवाइ जैस्यघ केन्य मुजरो अवधारिज्यो, अैठाका समाचार श्री जीकी क्रिपा सौं भलां छै, आपका सदा भला चाहिज्ये, अप्रंचि, आप वडा छो, हिंदसथांनमै सरदार छो, अैठा वैठाका व्योहारमै कही वात जुदायगी न छै, अैठै घोडा रजपुत छै, सो आपका कांमनै छै, ई तरफ कांम काज होय सो लीपावता रहोला, ओर राजा वपतसीघजी वा फोज म्हांकी अणंदसीघ, रायसीघ ऊपरि गई छी, सो हीरदै नारायण तो आय मील्यो, अर अणंदसीघ रायसीघकी ई भांति ठाहरी, जो ए तो दोन्यो ऊदैपुर श्री दीवांणकी हजुरि रहबो करै, कहीठे जाय नहीं, अर ईडरका पडगंनांका जो गांव श्री दीवांणकी हदकी त्रफ छै, सो तो श्री दीवांणके रहै, अर कसवो ईडर वा ओर गांव अणंदसीघ रायसीघ नै दीज्यै, सो अब अणंदसीघ, रायसीघ श्री दीवांणकी हजुर आवे छै, सो यांकी तसल्ली फरमांवैला, अर नीसां ले हजुर रापैला, अर ईडरकी सीवाय गांम आपकी हदकी त्रफ की सनदि करिदेवाको मुतसद्यांनै हुकंम फरमांवैलाजी, ओर कागद समाचार लीपावता रहोला. सीती भादवा वदी १३ संवत १७८५.

अणन्दसिंह व रायसिंहके उदयपुर पहुंचनेपर महाराणाने खास क़स्बह ईडर व थोड़ा सा ज़िला अणन्दसिंह, रायसिंहको देदिया; और पोलां व पाल वगैरह कुछ पहाड़ी ज़िला ईडरके पहिले राजाकी सन्तानको गुज़ारेके लिये दिया, बाक़ी मुल्क मेवाड़में मिलाया; ज़मानेके फेरफारसे मरहटोंके गद्रमें बहुतसा पहाड़ी ज़िला तो उसमेंसे मेवाड़के तह्तमें रहा, बाक़ीपर अणन्दसिंह रायसिंहने अपना क़ब्ज़ह करलिया; और उदयपुरकी मातह्तीसे भी अलग होगये.

विक्रमी १७८१ [हिज्री ११३६ = ई० १७२४] में शाहपुराके राजा भारथसिंहने जगमालोत राणावतोंसे जहाज़पुरका पर्गनह छीन लिया, और महाराणाको खुश करके एक पर्वानह भी हासिल करलिया था, उसी बारेमें भारथसिंहके कुंवर उम्मेदसिंहने पेशकशी वगैरह भरनेके लिये जहाज़पुर व फूलिया वगैरह मेवाड़में मिलानेकी गरज़से मुचल्का लिख दिया, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं :-

मुचल्का जहाज़पुरकी बाबत.

७००१) सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, लीपतु कुअर उमेदसीघजी भारथसीघोत अप्रचं। जाजपुररो श्री दरबार थी जागीरी मया हुओ, तीरी पेसकसी अजमेररे सोबे पेसकसीरा रुपय्या लागे है रु० ७००१) अके रुपय्या सात हजार अेक लागे हे, सो दरबार भरणां,

वीगत र

३५००) म्हा सुदी १५. ३५०१) जेठ सुदी १५.

छ १७८५ काती सुदी १२ संनु लीपतु कुअर उमेदसीघ, उपलो लीष्यो स्ही.

२२००३) लीप्यो १ सीधश्री दीवाणजी आदेसातु, लीपतु कुअर उमेदसीघजी भारथ सीघोत अप्रचं। प्ररगनो फुल्यारो मुकातै अजमेर थी तीरा मुकातारा त्था पेसकसीरा रुपय्या लागे हे, सो श्री दरबार देणां, उजर करा न्ही, अजमेररे सोबे दरबार थी सुध करेलेसी. वदी २ म्ही जेठीरी आधुआध

वीगत र

१७००१) फुल्यारा प्रगनारा मुकातारा पेसकसी सुधी रुपय्या सतरा हजार अेक.

२००१) गाम देवल्यो प्रङगणे भीणांयरे हासल पेसकसी सुधी.

१००१ गाम कोठ्यांरी पेसकसीरा.

२००० परचरा.

२२००३ अपरे बावीस हजार तीन, काती सुदी १२ संनु लीपतु कुअर उमेदसीघ, उपलो लीप्यो स्ही.

—०—

अब हम राजपूतानाकी कुछ रियासतोंका मरहटोंके हाथसे बर्बाद होने, और रहे सहे रोब दाबके भी मिट्टी होनेकी शुरू बुन्याद लिखते हैं.

महाराणा अमरसिंह २ की बेटी चन्द्रकुंवरका विवाह विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहके साथ हुआ था, जिसका जिक्र ऊपर लिखागया है. उस वक्त एक अह्दनामह ते पाया था, कि उदयपुरके महाराणाकी बेटीका कुंवर छोटा हो, तो भी अपने बापकी रियासतका मालिक होगा. चन्द्रकुंवर बाईके पहिले पहिल कन्या हुई, जिसकी शादी महाराजा जयसिंहने जोधपुरके महाराजा अभयसिंह से करदी; लेकिन् विक्रमी १७८५ पौष कृष्ण १२ [हि० ११४१ ता० २६ जमादियुल् अव्वल = ई० १७२८ ता० ३० डिसेम्बर] को आंबेरके महाराजा जयसिंहकी महाराणी और महाराणा संग्रामसिंहकी बहिन चन्द्रकुंवर बाईके गर्भसे एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम माधवसिंह रक्खा गया. इस राजकुमारके जन्म होनेसे महाराजा सवाई जयसिंहको बड़ी फ़िक्र हुई; क्योंकि इनके दो राजकुमार, जो दूसरी राणियोंसे पैदा हुए, मौजूद थे; एक शिवसिंह दूसरे ईश्वरीसिंह; अगर अह्दनामहपर अमल किया जाय, तो इन दोनोंका हक़ ख़ारिज हो; और वे दोनों भी फ़सादपर कमर बांधें; और उस इक़ारके बर्ख़िलाफ़ बर्ता जाये, तो उदयपुरसे मुक़ाबलह करना पड़े, जिससे जोधपुर, बूंदी, कोटा, बीकानेर वगैरह रियासतें उदयपुरकी मददगार हों. ऐसे विचार करनेसे महाराजाको खाना पीना भी बुरा लगने लगा, और यह सोच लिया, कि इस बखेड़ेसे बर्बादीके दिन आगये. अव्वल तो उस राजकुमारके मारडालनेकी कोशिश कीगई, लेकिन् चन्द्रकुंवर बाई इस बातको जानती थीं, जिससे महाराजाकी सारी कोशिशें फ़ुजूल हुईं. तब महाराजा जयसिंह दौड़कर उदयपुर आये, जहां विक्रमी १७८५ आश्विन शुक्ल १०

[हि० ११४१ ता० ९ रबीउल्अव्वल = ई० १७२८ ता० १५ ऑक्टोबर] से विक्रमी कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २५ ऑक्टोबर] तक रहे; और मुसाहिबोंको मिलाकर माधवसिंहको जुदी जागीर रामपुरा दिलानेका उपाय किया, लेकिन् यह मन्सूबह भी रोका गया, क्योंकि पंचोली बिहारीदासने इस बातको बिल्कुल मंजूर नहीं किया; लाचार महाराजा वापस गये, लेकिन् फिर भी उनको इस फ़सादके मिटानेकी फ़िक्र बनी रही, इसलिये फिर इसी वर्षके अन्तमें उदयपुर आकर रामपुराके लिये बहुत कुछ कहा, और महाराणाको समझाया, कि रामपुराके राव बादशाही नौकर थे, जिनका मुल्क आपने ज़बर्दस्ती छीन लिया, अगर आपका भान्जा वहांका मालिक बने, तो हमारी रियासतका झगड़ा दूर हो; इस बातको सोचना चाहिये. राव नगराज धायभाईने भी महाराणाको समझाया, कि रामपुरा माधवसिंह को अपनी तरफ़से देनेमें मेवाड़का हक़ नहीं जाता, वर्नह महाराजा जयसिंह बादशाहोंसे मिलकर कुछ और फ़साद खड़ा करेंगे; अगर यह भी न हुआ, और उन्होंने अपने बड़े बेटेको पाटवी रक्खा, तो हमको कितनी बड़ी ताक़त आज़्माई करनी पड़ेगी; तिसपर भी हमारा मत्लब पूरा हो, या न हो. महाराणाके दिलपर धायभाईके कहनेका असर हुआ, लेकिन् बिहारीदासने इस बातको न माना, और कहा, कि माधवसिंह तो आपके भान्जे हैं, परन्तु हमेशह भान्जे न रहेंगे; चन्द्रावतोंसे, जो सीसोदिया हैं, यह रियासत छीनकर कछवाहोंको देना पूरी बदनामीकी बात है; अगर आपको दिल्लीके बादशाहोंका डर हो, तो मैं इसका ज़िम्महवार हूं, कि मुहम्मदशाह महाराजा जयसिंहका पक्षपात नहीं करेगा, इत्यादि.

महाराणा इन दोनों मुसाहिबोंकी बर्ख़िलाफ़ सलाहपर विचारने लगे, क्योंकि दोनों ख़ैरख़्वाह और एतिबारी थे, दोनों तरफ़की दलीलें मज़्बूत थीं. इस ख़ानगी सलाहकी ख़बर महाराजा सवाई जयसिंहको मिली, तब वह पहर रात गये खुद बिहारी-दासके घरपर गये, और बहुतसी खुशामदकी बातें करके कहा, कि हमारी रियासतका फ़साद घटाना और बढ़ाना तुम्हारे हाथमें है. इस कहनेसे बिहारीदासपर बहुत असर हुआ, लेकिन् इतने पर भी दिलसे सलाह नहीं दी, और चुप होरहा; तब धायभाई नगराजको सवाई जयसिंहने कहा, कि अब कोई कार्रवाई करना चाहिये. नगराजने महाराणाको फिर समझाया, जिससे महाराणाने रामपुरेका पर्वानह माधवसिंहके नाम लिख दिया. उस पर्वानेकी, और माधवसिंह व सवाई जयसिंहके इक़ारनामोंकी नक़्लें यहां दर्ज कीजाती हैं:-

रामपुराके पर्वानहकी नक़ल.

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री एकलिंग प्रसादातु.

बाबा रांमपुरो थांहे दीयो हे, सो म्हां नीरें रहोगा जीत्रें थां थी नहीं उत्रे रही.

श्री महाराजाधिराज महारांणा श्री संग्रामसिंघजी आदेशातु, भांणेज कुंअर श्री माधोसींघजी कस्य, ग्रास मया कीधो ———— व्रीगत ————

पटो रांमपुरारो थांहें मया कीधो हे, सो असवार १००० एक हजार, बंदुक १००० एक हजार थी छ महींना सेवा करोगा, नें फोज फांटे असवार हजार ३००० तींन, बंदुक हजार ३००० तींन थी सेवा करोगा; सो म्हां हजुर रहोगा, जीत्रे या जायगा थां थी नहीं ऊतरे. प्रवांनगी पचोली रायचंद, मेंहतो मालदास ————

एवं संवत १७८५ वर्षे चेत सुदी ७ भोमे ————

भांणेज कुंअर श्री माधोसींघजी कस्य.

(१) ई बातका साषद महाराजा श्री सवाई जयसिंघजी, और कुंवर श्रारे करो.

॥ स्वस्ति श्री लिषतं कूवर माएेज श्री माधोस्यघजी अप्रंचि म्हानै रांमपुरो जीमीदारीमै दीयो छै पटामै, सो ईसी तरैह चाकरी करीस्यां, जो आगै चंद्रांवतास्यै ई तरैह था, पछी सो ईही प्रमांए हजुरी रही सेवा करीस्यां, जे तै म्हास्यौ जाईगा ने उतारै.

वीगत

माफीक चंद्रावता

मास छह एक हजार सुवार, एक हजार बंदुके स्यै सेवा करणी, फोज फांटे असवार

१००० १०००

हजार तींन, बंदुक हजार तीन सेवा करणी. मिती चैत सुदि ७ संवत १७८६.

३००० ३०००
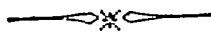
महाराजा सवाई जयसिंहके लिखे
हुए इक़ारनामहकी नक़ल.

श्रीरामोजयति.

सिधि श्री लिषतं सवाइ जयसीघ कुवर माधोसीघने परमेश्वर चिरंजी राषे, जे ओर तरह व्हे, तो छोटो कुवर रामपुराकी एवज चाकरी करे, अर एक ही व्हे, तो पटा माफीक चाकर ही चाकरी करे, जदि दुसरो व्हे जदी वो आय चाकरी करे. मीती चैत सुदी ९ गुरौ स १७८६.

(१) सिरेके अक्षर महाराजा श्री जयसिंहजीके हाथके हैं.

ऊपर लिखे हुए पर्वाने और इक़ारनामहके संवत् में फ़र्क़ है, जिससे पर्वानेके एक वर्ष बाद इक़ारनामोंका लिखाजाना मालूम होता है, लेकिन् ये इक़ारनामे उसी समय लिखे गये हों, तो तअ़ज्जुब नहीं; क्योंकि महाराजा सवाई जयसिंह चैत्रादि संवत् लिखते थे, जैसे ऊपर आणन्दसिंह व रायसिंहके मुआमलेमें महाराणाके नाम ख़रीतह लिखा था- (देखो पृष्ठ १६७).

आख़िरकार चन्द्रकुंवर बाई और कुंवर माधवसिंहको उदयपुर लाये, और वे यहीं रहे, जबतक कि ईश्वरीसिंहके बाद वह जयपुर गये, और गद्दीपर बैठे. अब हम महाराणा संग्रामसिंहके समयके दशहरेके दर्बारके चित्रपटके लेखकी एक नक़ल यहां दर्ज करते हैं, जिससे उस वक़के मौजूदह सर्दारोंके नाम और दर्बारका तरीक़ह मालूम होगाः-

---

चित्रपटपरके लेखकी नक्ल.

महाराजा धिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी दसरावारे दिन खेजड़ी पूजे जठारो भाव दरीखाने बेठा, जीमणी बाजूरा ठाकुर, श्री जीरी पाखती- राव गोपालसिंहजी, राज कीरतसिंहजी, रावत देवभाणजी, रावत केसरीसिंहजी, रावत संग्रामसिंहजी, रावत प्रथीसिंहजी, झालो अज्जोजी, रावत सारंगदेवजी, सक्तावत जैतसिंहजी, रावत हरीसिंहजी, राव रघुनाथसिंहजी, महाराज प्रतापसिंहजी, महाराज तख़्तसिंहजी, राठौड़ भीमसिंहजी नागौर वाला, महाराज अदोतसिंहजी, झालो अगरसिंहजी झाड़ोल वालो, रावत सावंतसिंहजी, राठौड़ अखैरामजी गोपीनाथोत, भाटी जुझार-सिंहजी, चौहान कीतोजी, चौहान जोरावरसिंहजी, राठौड़ कुशलोजी, सक्तावत श्यामसिंहजी, चौहान अनोपसिंहजी, सक्तावत सूरतसिंहजी; श्री जीरा पाछे पंचोली विहारीदासजी, पंचोली किशनदासजी, ढींकड्यो रामसिंहजी, खवास रुघोजी, मसाणी लखमण, पुरोहित सुखरामजी होम करे; डावी बाजूरा ठाकुरांरो साथ बैठा- रावल बिसनसिंहजी बांसवाला वालो, रावल रामसिंहजी डूंगरपुर वालो, राव बख़्तसिंहजी, राठौड़ प्रतापसिंहजी, रावत देवीसिंहजी, झालो कल्याणजी, महाराज दलसिंहजी, महाराज उमेदसिंहजी, डोडिया मनोहरसिंहजी, कुंवर श्री जगत्सिंहजी, चौहान शोभानाथजी, झालो दौलतसिंहजी, राठौड़ किशनदासजी, महाराज सूरतसिंहजी भगोतसिंहोत, बीजावत कुशलसिंहजी, राठौड़ शिवसिंहजी, राणावत अगरसिंहजी,

राणावत अचलसिंहजी, रावत सूरतसिंहजी, तंवर किशनसिंहजी, वख़्तसिंह मेहचा वालो, राणावत रत्नसिंहजी, ठाकुर इन्द्रभाणजी, महाराज नरायणदासजी बैठा; बीचमें कुंवरांरी पांत जणी उपरे राठोड़ दुर्गदासजीरा पोता दो बैठा, कुंवरां नीचे धायभाई नगजी बैठा; चंवरदार तुलसीदासजी, पंचोली मयाचंदजी चमर राखे.

इस चित्रपटमें संवत् नहीं लिखा है, परन्तु विक्रमी १७७६ और विक्रमी १७८८ के बीच यह बना मालूम होता है, क्योंकि विक्रमी १७७५ [हि० ११३१ = ई० १७१९] के प्रारंभमें बेदलेका राव सुल्तानसिंह मौजूद था, और इसमें उसके बेटे राव बख़्तसिंहका नाम लिखा है, जिसको इसी वर्षके कार्तिक मास [हि० ११३२ मुहर्रम = ई० नोवेम्बर] में तलवार बंधी थी; और विक्रमी १७८९ [हि० ११४४ = ई० १७३२] में बांसवाड़ेके रावल विष्णुसिंहका देहान्त हुआ, और इस चित्रपटमें उनका भी नाम है.

अब हम महाराणा संग्रामसिंहके आख़िरी समय, अर्थात् विक्रमी १७९० [हि० ११४५ = ई० १७३३] के एक काग़ज़की नक़्ल नीचे लिखते हैं, जिससे उस वक़्के कुल जागीरदारोंकी तादाद, गोत्र, रेख (आमदनी) वगैरह का हाल मालूम होगा; लेकिन् यह भी याद रखना चाहिये, कि इस काग़ज़से प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, ईडर, और सिरोहीकी जागीरें जुदी हैं, जो उस समय महाराणाके मातहत थीं.

पत्रकी नक़्ल.

संवत १७९० रा वरसरो इकतो सरदारांरो उपत घोड़ा नामा जोजावल.

॥ श्रीरामजी.

। श्रीचत्रभुजजी.

॥ सीधश्री गुणेसाअजीनमो. ठाकुरारा साथरो ईगतो संवत १७९० रा वरसरो

ऊपत रु०	गोत्र	नांमा	घोडा	जोजावल
३२२५२५	झालारो साथ	३४	११८५	५९

उपत रु०	गोत्र	नांमा	घोड़ा	जोजावल.
२४७६५५	चोहणांरो साथ	४०	९२८	४२
८४५२२०	चोंडावतांरो साथ	१६९	३१२६	१३२
३८७४५०	सगतावतांरो साथ	६१	१५५५	७०
५९६२१५	रांणावतांरो साथ	१४५	१९६३	८२
४२००५०	राठोड़ांरो साथ	१४०	१५९६	५२
१०२९५०	पुवारांरो साथ	२७	४०४	१६
१०६११५	सोलंख्यांरो साथ	५३	४०९	१४
३१९००	भाट्यांरो साथ	११	१३५	४
८९०७००	कछवांवांरो साथ	१२	२५२१	५५
१४५०	तुवर तथा गोड़ांरो साथ	५	६	०
७२२५	सोनगरांरो साथ	८	२९	०
८९७५	सापलांरो साथ	१०	३७	०
५३००	पीच्यांरो साथ	७	१७	०
१२००	वलांरो साथ	६	७	०
३२५	वालेसांरो साथ	३	३	०
२५५०	जादवांरो साथ	७	१२	०
१२७५	सादड़ेचांरो साथ	५	६	०

उपत रु०	गोत्र	नांमा	घोड़ा	जोजावल.
९६५०	सीघलांरो साथ	१५	३४३	०
१०५२५	भांडावतांरो साथ	१२	४०	०
३८२००	हाडारो साथ	११	१३१	४
६०१०५	डोड्यारो साथ	३०	२३९	८
२४०७५	देवड़ांरो साथ	२२	९१	०
१०००	पीढ्यारारो साथ	३	४	०
२५८५०	प्रचुंनी साथ नांमा	१२	८८	४
४१४८४८५		८४८	१४५७५	५४२

ईगतो

४१४८४८५	ऊपत रुपीआ	८४८	आसांमी
१४५७५	असवार	५४२	जोजावल

तीरी वीगत		नांमां	अस्वार	जोजावल
८५६९९७	रांमपुरारा वाद	१	२४००	५०
३२९१८८८	बाकी	८४७	१२१७५	४९२
४१४८८८५		८४८	१४५७५	५४२

महाराणा संग्रामसिंहका देहान्त विक्रमी १७९० माघ कृष्ण ३ [हि० ११४६ ता० १७ शअ्बान = ई० १७३४ ता० २३ जैन्युअरी] को हुआ. यह विक्रमी १७४७ वैशाख कृष्ण ६ शुक्रवार [हि० ११०१ ता० २० जमादियुस्सानी = ई० १६९० ता० १ एप्रिल] को जन्मे थे; इनका मझलेसे कुछ छोटा क़द, चौड़ी पेशानी, गेहुआं गोर वर्ण, भराहुआ वदन, हसत मुख, इनका अख़्लाक़ हर एक आदमी को खुश करनेवाला था; राज्य प्रवन्ध चलानेमें

चतुर, वक्तके बड़े पाबन्द, वचनके सच्चे थे, इनमें ऐब ढूंढनेसे भी बहुत कम पाया जाता है. पोलिटिकल हालतमें पक्के होनेपर भी इन्होंने अपनी ईमान्दारीको नहीं छोड़ा. इनका रोब नौकरों पर ऐसा था, कि सलूंबरके रावत् केसरीसिंह रुख़सत लेकर घर गये, सलूंबर शहरके दर्वाज़े में घुसते वक्त किसी दुश्मनके अर्ज़ करनेपर महाराणाने हुक्म भेजदिया, कि जल्दी चले आओ; यह हुक्म पहुंचनेपर वह अपने बाल बच्चोंसे बगैर मिले ही लौट आया; महाराणा बहुत ख़ुश हुए. इसी तरह अदनासे लेकर आला तक हर एक नौकर महाराणाके हुक्मको माननेवाला था. और मुहब्बतके साथ नौकरी देता था, राज्य प्रबंधका यह हाल था, कि किसी उत्सवके रोज़ कोठारियाके रावत्ने महाराणाके जामेका घेर कम होनेसे ज़ियादह बढ़ानेकी अर्ज़ की. महाराणाने मंज़ूर करके उक्त उमरावकी जागीरके एक गांवपर ख़ालिसा भेजदिया. जब उसने सबब दर्याफ़्त किया, तो कुल राज्यका जमा ख़र्च दिखलाकर फ़र्माया, कि हर एक सीगेके लिये जमा ख़र्च मुक़र्रर है, अब जामेका घेर न बढ़ायाजावे, तो बेसुरव्वती है, और बढ़ायाजावे, तो यह ख़र्च किस जगहसे वुसूल हो, इसलिये तुम्हारी जागीरके एक गांवकी आमदनीसे यह घेर बढ़ाया जायेगा. इस बातसे उनका राज्यप्रबंध अच्छा मालूम होता है. महाराणा अमरसिंहके प्रबंध और मनोरथोंको इन्हींने पूरा किया, और महलोंमें चीनीकी चित्रशाली, बड़े जगमन्दिरोंमें नहरके महल, व दोनों दरीख़ाने वगैरह, महासतीमें अपने पिताके दग्धस्थानपर बड़ी छतरी. सहेलियोंकी वाड़ी और त्रिपोलिया वगैरह बहुतसी इमारतें बनवाई. इनके १६ राणियां थीं, लेकिन् उनमेंसे जिनके नाम मिले, वे नीचे लिखे जाते हैं:-

१ जैसलमेरके रावल अमरसिंहकी बेटी अतरकुंवर.
२ ऐज़न सूरजकुंवर.
३ बंबोरीके पंवार मुकन्दसिंहकी बेटी उम्मेदकुंवर.
४ समदड़ीके राठोड़ दुर्गदासकी बेटी रामकुंवर.
५ राठोड़ सूरजमल्लकी बेटी.
६ भाटी प्रतापसिंहकी बेटी इन्द्रकुंवर.
७ ईडरके राठोड़ हटीसिंहकी बेटी महाकुंवर.
८ गोगूंदाके झाला राज अजयसिंहकी बेटी महाकुंवर.
९ वीरपुरा दयालरामकी बेटी.
१० झाला कर्णसिंहकी बेटी जसकुंवर.

इनके ४ कुंवर थे, बड़े महाराजकुमार जगत्सिंह महाराणी नम्बर ३ से; दूसरे कुंवर नाथसिंह महाराणी नम्बर ७ से; तीसरे कुंवर बाघसिंह और चौथे कुंवर अर्जुनसिंह महाराणी नम्बर १० से थे; अर्जुनसिंह महाराणाके इन्तिक़ालके तीन महीने बाद पैदा हुए थे.

महाराणाकी राजकुमारियां- सबैकुंवर, रूपकुंवर, और ब्रजकुंवर, और ख़वासके पुत्र नारायणदास और केसरीदास थे.

रामपुराकी तवारीख़.

महाराणा संग्रामसिंहके समयमें रामपुराकी रियासतका ख़ातिमह होकर नामके लिये उसका निशान बाक़ी रहा, इस वास्ते हम उसकी तवारीख़से पाठकोंको वाक़िफ़ करते हैं.

यह सीसोदियोंकी एक मश्हूर शाख़ चन्द्रावत नाम महाराणा मेवाड़के ख़ानदान से है. बड़वा भाट तो चन्द्रसिंहको महाराणा लक्ष्मणसिंहके बेटे अरिसिंहका दूसरा बेटा बतलाते हैं, और राजपूतानाकी तवारीख़ोंमें भी ऐसा ही दर्ज है; लेकिन् नैनसी महताने अपनी किताबमें चन्द्रसिंहको महाराणा भुवनसिंहके बेटे भीमसिंहकी औलादमें लिखा है; और तारीख़ मालवा, जो हालमें सय्यद करीमअ़लीने बनाई है, उसमें चन्द्रसिंहको महाराणा हमीरसिंहका बेटा और महाराणा खेताका भाई लिखा है; पर इस तवारीख़का लिखना बिल्कुल ग़लत मालूम होता है, क्योंकि पीढ़ियोंका शज्रह भी बेतर्तीब है, और पहिला हाल क़ियासी कहानीके तौर लिखा है; अल्बत्ता रामपुरा छूटनेके बादका हाल कुछ ठीक है. मआसिरुल उमरामें चन्द्रावतोंका हाल जिसक़द्र अक्बरनामह, तुज़ुकजहांगीरी, बादशाहनामह, मआसिरेआलमगीरी, मुन्तख़-बुल्लुबाब वग़ैरह किताबोंसे छांटकर लिखा है, वही सहीह जचता है; लेकिन् राव दुर्गभानुसे लेकर रत्नसिंह तक बादशाही नौकरी और मन्सबका ज़िक्र दर्ज है, पहिला और पिछला हाल उसमें भी नहीं है.

हमारी दानिस्तमें नैनसी और बड़वा भाट दोनोंमेंसे एकका लेख सहीह होना चाहिये; क्योंकि नैनसी महता तहक़ीक़ातके साथ इस समयसे सवा दो सौ वर्ष पहिले लिखगया है, जो हमारी बनिस्वत उस ज़मानेके क़रीबका था; उसके बयानसे चन्द्रसिंह भीमसिंहका बेटा होना ठीक होगा. यदि बड़वा भाटोंका लिख़ना सहीह मानाजाये, तो भी ग़ैर मुनासिब नहीं है; क्योंकि महाराणा भीमसिंहके जैत्रसिंह, उनके लक्ष्मणसिंह, उनके अरिसिंह चार पुश्तका फ़र्क़ होता है; परन्तु इन चारों पीढ़ियोंका राज्य लड़ाईमें जल्द मारेजानेके सबब बहुत कम अर्से तक रहा, इससे फ़र्क़में ज़ियादह फ़ासिलह नहीं है. उदयपुरके बड़वा व भाटोंकी पोथियोंमें महाराणा जयसिंहका बेटा चन्द्रसिंह लिखा है, परन्तु इन बड़वा भाटोंके पुराने नसबनामे एतिबारके लाइक़ नहीं हैं; क्योंकि एकसे दूसरेकी पोथीका बयान नसबकी बाबत नहीं मिलता; इसलिये

हम नैनसी महताकी पोथीको ठीक समझकर बयान शुरू करते हैं; बीचका हाल फ़ार्सी तवारीख़ोंसे, और पिछला तारीख़ मालवा व बुड्ढे आदमियोंकी ज़बानी तथा कागज़ोंसे तलाश करके दर्ज करते हैं.

अव्वल चन्द्रसिंह, उसका बेटा सज्जनसिंह, उसका जाझणसिंह, उसका छाजूसिंह, उसका शिवसिंह था.

महाराणाने चन्द्रसिंहको आंतरीका पर्गनह गुज़रके लिये दिया; सो उसकी औलाद भोमियां लोगोंके तौरपर वहां रही. जाझणसिंहके बड़े बेटे भाखरसिंहसे उसके काका छाजूसिंहकी तक्रार हुई, तब छाजूसिंह आंतरी छोड़कर दूसरी जगह जा बसा. उसका बेटा शिवसिंह बड़ा बहादुर और नामी हुआ, जिसने मांडूके बादशाह हौशंग गोरीकी बेगमको नदीमेंसे बहते हुए बचाया, जिससे उस बेगम ने हौशंगसे शिवसिंहको रावका ख़िताब दिलाया. उसके बाद राव रायमल्ल हुआ, जिसको चित्तौड़के महाराणा कुंभाने अपने ताबे बनाया. उसका अचलदास था, जिसके राव दुर्गभान पैदा हुए, उसने शहर रामपुरा अपने इष्टदेव रामचन्द्रके नामपर आबाद किया; तारीख़ मालवामें लिखा है, कि रामा भीलको मारकर राव शिवसिंहने रामपुरा बसाया, परन्तु यह बात ज़बानी क़िस्सेकी तरह सुनकर लिख दी है; क्योंकि एक तो रामपुरा दुर्गभानका आम लोगोंमें मश्हूर है, जिसकी तस्दीक़ नैनसी महताकी किताबसे होती है; दूसरे एक दोहेके दो मिस्रे राजपूतानाके आम लोगोंकी ज़बानी सुननेमें आते हैं, कि " रामपुरा दुर्गभाणका देखत भागे भूक" इससे प्रतीत होता है, कि राव दुर्गभानने रामपुरा आबाद किया, जिसका हाल हम फ़ार्सी तवारीख़ोंसे नीचे लिखते हैं:-

जब विक्रमी १६२४ [हि० ९७४ = ई० १५६७] में बादशाह अक्बरने क़िले चित्तौड़पर घेरा डाला, तो आसिफ़ख़ांको कई अमीरोंके साथ फ़ौज समेत भेज कर रामपुरा बर्बाद किया, और महाराणा उदयसिंह पहाड़ोंमें चलेगये. अक्बर बादशाहकी ज़बर्दस्त ताक़त देखकर दुर्गभान भी बादशाही ताबे बनगया. मआसिरुल उमराका मुसन्निफ़ अक्बरनामहके ज़रीएसे लिखता है, कि विक्रमी १६३८ [हि० ९८९ = ई० १५८१] में अक्बर बादशाहने सुल्तान मुरादके साथ राव दुर्गभानको अपने छोटे भाई मिर्ज़ा हकीमपर भेजा; और विक्रमी १६४० [हि० ९९१ = ई० १५८३] में गुजरातकी तरफ़ बाग़ियोंका फ़साद मिटानेके लिये मिर्ज़ाख़ां (१) के साथ

---

(१) यह ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमका पहिला ख़िताबी नाम है.

रवानह किया, जहां राव दुर्गभानने बड़ी तन्दिही और नेक नियती दिखलाई.

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में राव मज़्कूर खाने आज़म कोकाके साथ दक्षिणमें भेजागया. विक्रमी १६४८ [हि० ९९९ = ई० १५९१] में वह सुल्तान-मुरादके साथ मालवे गया, और दक्षिणी लड़ाइयोंमें अच्छी बहादुरियें दिखलाईं. विक्रमी १६५७ [हि० १००८ = ई० १६००] में रावको बादशाहने मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र-हुसैनकी गिरिफ़्तारीके लिये भेजा, उधरसे ख़्वाजह उवैस मिर्ज़ाको गिरिफ़्तार किये लारहा था, जो सुल्तानपुरके पास रावको मिला, वहांसे दोनों शख़्स मिर्ज़ाको बादशाही हुज़ूरमें लेआये. फिर दुर्गभानको शैख़ अबुलफ़ज़्लके साथ नासिककी तरफ़ मुक़र्रर किया, पर कुछ अर्से बाद वतनकी अब्तरीके सबब रुख़्सत लेकर घर आया, और विक्रमी १६५८ [हि० १००९ = ई० १६०१] में वापस चलागया.

विक्रमी १६६४ पौष [हि० १०१६ रमज़ान = ई० १६०८ जैन्युअरी] में राव दुर्गाका देहान्त होगया; इस समय उसकी उम्र ८२ वर्षकी थी. अक्बरके जुलूसी सन् ४० तक डेढ़ हज़ारी ज़ात और सवारके मन्सबपर था; तुज़ुक जहांगीरीके पृष्ठ ६३ में बादशाह जहांगीर लिखता है, कि "यह राव मेरे बापके नौकरोंमेंसे था, जो ४० वर्षसे ज़ियादह उनके मातह्त सर्दारोंके तौर उनकी नौकरीमें रहा; और धीरे धीरे चार हज़ारी मन्सब तक पहुंचा; वह मेरे बापकी नौकरीमें आनेसे पहिले राणा उदयसिंहके मोतबर नौकरोंमेंसे था, नवीं दहाई (१) (अस्सी और नव्वेके बीच) में गुज़रगया, वह सिपाहगरीके फ़नमें होश्यार था."

दुर्गभानके बाद राव चांदा (चन्द्रसिंह) गद्दीपर बैठा, और जहांगीर बादशाहके साम्हने कई ख़िदमतोंमें हाज़िर रहा. इसके ४ बेटे थे, बड़ा नग्गा, दूसरा गिरधर, तीसरा रुक्माङ्गद और चौथा हरिसिंह. चांदा विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] में इस जहानको छोड़गया, नग्गा तो बापके साम्हने ही मरगया था; इसलिये दूदा, जो चांदाका पोता था, गद्दीपर बैठा. दूदाने शाहजहां बादशाहसे दो हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब पाया, और आज़मखांके साथ ख़ानेजहां लोदीपर भेजागया, लेकिन् लड़ाईके वक्त भागगया. इसके बाद यमीनुद्दौलह आसिफ़ख़ांके साथ आदिलख़ांकी मुहिमपर भेजागया. ६ जुलूस शाहजहानी

---

(१) मआसिरुल उमरामें हफ़्ताद व दो ७२, और तुज़ुक जहांगीरीमें अश्रए नोज़दुहुम याने उन्नीसवीं दहाई जो लिखा है, इनके लिखने और छपनेमें ग़लती रहगई; मआसिरुल उमरामें हश्ताद व दो ८२, और तुज़ुक जहांगीरीमें अश्रए तुहुम याने नवीं दहाई दुरुस्त मालूम होता है, जिससे दोनों किताबोंका तह्रीरी फ़र्क़ निकल जायेगा.

विक्रमी १६९० [हि० १०४२ = ई० १६३३] में, जब क़िले दौलताबादपर लड़ाई हुई, उस वक्त बीजापुरकी मदद आगई थी, चारों तरफ़से लड़ाई होने लगी, उस मौक़ेका ज़िक्र मुल्ला अब्दुलहमीद लाहौरी बादशाह नामह जिल्द १ पृष्ठ ५२० में इस तरह लिखता है:-

"ता० २४ ज़िल्क़ाद [विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ९ = ई० ता० २ जून] को मुरारि पंडितने बहुतसी फ़ौजके सबब मग़्रूर होकर रन्दूला और साहूको बहुतसी फ़ौजके साथ ख़ानेज़मांके मुक़ाबलेपर भेजा, और आप याक़ूत हब्शीको साथ लेकर फ़ौज समेत रवानह हुआ; ख़ानख़ानांने ख़ानेज़मांको कहा, कि दुश्मनोंसे लड़नेकी जल्दी फ़िक्र करें; फिर उसने सोच बिचार कर ख़ानेज़मांका जाना मुनासिब न समझा, और लुहरास्पको अपनी फ़ौज समेत मुक़र्रर किया. जगराज, राव दूदा और पृथ्वीराजको भी कहा, कि अपने मोर्चोंसे निकलकर तय्यार रहें; और दिलेरहिम्मतको चन्द्रभान वग़ैरह समेत मोर्चोंकी निगहबानीके वास्ते अंबरकोटके भीतर छोड़कर आप थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ क़िलेसे वहां आ पहुंचा, जहां कि दूदा मौजूद था; इस मौक़ेपर राणाके आदमी, जिनको ख़ानेज़मांने भोपतकी मातहतीमें भेजा था, ख़ानख़ानांकी मददको आगये. दुश्मनोंकी एक फ़ौजने राव दूदासे लड़ाई शुरू की, और लुहरास्प दूर था, इसलिये सिपहसालार कम फ़ौज होनेपर भी दुश्मनोंकी तरफ़ चला; मालू, परसू, राव दूदा, तथा रामाकी जमइयत भी आगई, और थोड़ीसी कोशिशसे दुश्मनोंको हटाकर मैदान ख़ाली करदिया. फिर मुबारिज़ख़ां, राजा पहाड़सिंह और जगराज भी जा पहुंचे; और दुश्मनोंका पीछा किया. जब दुश्मन भागकर लुहरास्पकी तरफ़ गये, तो ख़ानख़ानां, जगराज और राणाके आदमियोंको साथ लेकर लुहरास्पकी मददको चला. इस वक्त राव चांदाके पोते राव दूदा चंद्रावतने, जिसके किसी क़द्र रिश्तहदार लड़ाईमें मारेगये थे, अपने मुर्दोंको उठानेकी इजाज़त मांगी. सिपहसालारने मना किया; लेकिन् दूदाने, जिसकी मौत पास आगई थी, कुछ ख़याल नहीं किया; और मालू वग़ैरह मरेहुओंकी लाशोंको उठाने लगा; जूंहीं ख़ानख़ानांकी फ़ौज नज़रसे ग़ाइब हुई, दुश्मन के बहुतसे लोग इधर उधरसे आगिरे, और राव दूदा अपने साथियों समेत लाचारीके सबब घोड़ेसे उतर पड़ा, और बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. बाद इसके बादशाह शाहजहांने उसके बेटे हटीसिंहको ख़िल्अत, डेढ़ हज़ारी ज़ात व हज़ार सवारका मन्सब और रावका ख़िताब दिया; और ख़ानेज़मां बहादुरके साथ दक्षिणकी मुहिमपर तईनात किया; लेकिन् वह कुछ अर्से बाद मौतसे मरगया."

हटीसिंहके कोई औलाद नहीं थी, तब राव चांदाके तीसरे बेटे रुक्मांगदका बेटा रूपसिंह गद्दीपर बैठा, और बादशाह शाहजहांके पास विक्रमी १७०० [हि० १०५३

= ई० १६४३] में हाज़िर हुआ. विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में वह शाहज़ादह मुरादबख़्शके साथ बल्ख़की तरफ़ भेजागया. विक्रमी १७०३ [हि० १०५६ = ई० १६४६] में बल्ख़के मालिक नज़रमुहम्मदख़ांसे अच्छी तरह लड़ा, जिस समय, कि वह बहादुरख़ां रुहेला और असालतख़ांकी फ़ौजमें हरावल था. अन्तमें नज़रमुहम्मदको शिकस्त मिली; तब रूपसिंहको तरक़्क़ीसे डेढ़ हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारका मन्सब मिला. जब शाहज़ादहको वहांकी आबो हवा नापसन्द आई, तो वह दिल्लीको चलाआया, और राजा रूपसिंह भी और सर्दारोंके साथ पेशावरमें आगया था; परन्तु बादशाही हुक्म पहुंचनेसे ये लोग अटक न उतरने पाये. मुरादबख़्शके एवज़ शाहज़ादह औरंगज़ेब भेजा गया, जिसके साथ उज़्बकोंकी लड़ाईमें राव रूपसिंहने बड़ी बहादुरी दिखलाई. फिर शाहज़ादहके साथही बादशाही हुज़ूरमें हाज़िर हुआ.

विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में शाहज़ादह औरंगज़ेबके साथ कन्धारकी तरफ़ भेजागया, जहां कज़लबाशोंसे मुक़ाबलह हुआ; उस वक़्त रुस्तमख़ां और फ़त्हख़ांकी हरावलमें इसने अच्छी बहादुरी दिखलाई. इस ख़िद्मतके एवज़ उसने अस्ल और इज़ाफ़ह मिलाकर दो हज़ारी ज़ात व बारह सौ सवारका मन्सब पाया. विक्रमी १७०८ [हि० १०६१ = ई० १६५१] में राव रूपसिंह इस जहानको छोड़ गया. उसके भी कोई लड़का न था, इसलिये राव चांदाके बेटे हरीसिंहका बेटा अमरसिंह गद्दीपर बैठा, जिसको बादशाह शाहजहांने एक हज़ारी ज़ात व नव सौ सवारका मन्सब और रावका ख़िताब तथा चांदीके सामान समेत घोड़ा देकर रूपसिंहकी जगह क़ाइम किया.

विक्रमी १७०९ [हि० १०६२ = ई० १६५२] में औरंगज़ेबके साथ अमरसिंहको कन्धारकी तरफ़ भेजा, और विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में इसी मुहिमपर दाराशिकोहके साथ तईनात हुआ. विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में दाराशिकोहकी सुफ़ारिशसे ढाई हज़ारी ज़ात व हज़ार सवारका मन्सब मिला, और विक्रमी १७१२ [हि० १०६५ = ई० १६५५] में दक्षिणकी मुहिमपर भेजागया. विक्रमी १७१५ [हि० १०६८ = ई० १६५८] में वह राजा जशवन्तसिंहके साथ मालवेकी तरफ़ औरंगज़ेब और मुरादके मुक़ाबलेको भेजागया. फ़त्हाबादकी लड़ाईमें अमरसिंह महाराजा जशवन्तसिंहकी फ़ौजका हरावल था, लेकिन् लड़ाई होनेके बाद भागगया, और जब आलमगीर बादशाह बना, तब उसके पास हाज़िर होगया. इसी वर्ष शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानके

साथ बंगालेकी तरफ़ शुजाअ़पर भेजागया. फिर मिर्ज़ा राजा जयसिंहके साथ दक्षिण भेजागया, जहां ख़ूब ख़िद्मतें कीं.

विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] में सालेरके क़िलेके नीचे लड़ाईमें राव अमरसिंह काम आया, और उसका बेटा मुह्कमसिंह दुश्मनोंकी क़ैदमें गया. वह कुछ रुपये देने बाद छूटा, और दक्षिणके नाज़िम बहादुरख़ां कोकाके पास पहुंचा. फिर अपने बापकी गद्दीपर क़ाइम होकर रामपुरेका राव कहलाया. कुछ अ़र्सेके बाद यह भी दुन्याको छोड़गया. राजपूतानहमें राव मुह्कमसिंह बड़ा मश्हूर और उदार राजा गिनागया है, और राजपूतानहके कवि उसकी कीर्ति (नाम्वरी) तारीफ़के साथ कवितामें बयान करते हैं.

उसका बेटा राव गोपालसिंह विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में बादशाह आलमगीरके पास गया, और रामपुरेकी रियासतका प्रबंध अपने बेटे रत्नसिंहको सौंपा; यह रत्नसिंह बापसे बाग़ी होगया; जब राव गोपालसिंहने बादशाही हिमायतसे उसे दबाना चाहा, तब वह मालवाके सूबहदार मुख़्तारख़ांकी मारिफ़त मुसल्मान होगया, जिससे आलमगीरने ख़ुश होकर उसका नाम 'इस्लामख़ां' और रामपुराका नाम 'इस्लामपुर' रक्खा. इसकी सुबूतीके अस्ल काग़ज़ोंकी नक़्लें महाराणा अमरसिंह २ के वर्णनमें दीगई हैं-(देखो पृष्ठ ७४७). गोपालसिंह शाहज़ादह बेदारबख़्तके पास मुक़र्रर था, जहांसे भागकर महाराणाकी शरणमें आया, और कुछ न करसका. विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] में बादशाहके पास हाज़िर हुआ, तो कोलासकी क़िलेदारी पाई, लेकिन् विक्रमी १७६० [हि० १११५ = ई० १७०३] में वहांसे मौक़ूफ़ होनेपर भागकर मरहटोंका साथी बना; और राजा इस्लामख़ां (रत्नसिंह) रामपुरेका मालिक रहा. वह मुसल्मानोंके पास मुसल्मान और राजपूतोंके आगे राजपूत बन जाता था. जहांदारशाहके वक़्तमें यही राजा मारागया, जिसका ज़िक्र मुन्तख़बुल्लुबाबकी दूसरी जिल्दके पृष्ठ ६९३ से ६९७ तकमें इस तरहपर लिखा है:-

"जहांदारशाहकी शुरूअ़ सल्तनतमें कड़ेका फ़ौज्दार सर्बलन्दख़ां अपने इलाक़ेसे दस बारह लाख रुपये लेकर आया, और रास्तेमें फ़र्रुख़सियरके पास नहीं गया, जिससे जहांदारशाहने ख़ुश होकर अहमदाबादकी सूबहदारी दी, और अहमदाबादके सूबहदार अमानतख़ांको मालवेकी सूबहदारीपर भेजा. जब यह उज्जैन पहुंचा, तो वहां राजा इस्लामख़ांने जिसका उर्फ़ रत्नसिंह था, अक्सर इलाक़ह दबा रक्खा था, और अमानतख़ांके मुरब्बी और राजाके मुरब्बीमें दिन दिन अ़दावत बढ़ती थी; ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके

लिखनेसे, या राजाने सर्कशीसे अमानतख़ांका दख़्ल न होने दिया, और वेफ़ाइदह जवाब सवाल करने लगा. आख़िरकार दोनों तरफ़से फ़ौजें तय्यार हुईं; अमानतख़ांने थानेदार रहीमबेगको सारंगपुर भेजा था, जहां राजा इस्लामख़ां व दिलेरख़ां पठानने चार पांच हज़ार फ़ौज समेत पहुंचकर थानेको उठा दिया, बहुतसोंको मारा, और बहुतेरों को क़ैद किया. अमानतख़ांके साथ कुल तीन हज़ार फ़ौज थी, जिसमेंसे चार सौ या पांच सौ आदमी थानेकी लड़ाईमें काम आचुके थे. यह राजा राजपूत होनेकी हालतमें मुसल्मानोंसे जितनी अ़दावत रखता था, उससे भी ज़ियादह मुसल्मान होनेपर रखने लगा. इसके पास बीस हज़ारसे ज़ियादह सवार थे, जो तीस चालीस हज़ारके क़रीब जान पड़ते थे; इसके लश्करमें अच्छे अच्छे नामी पठान थे, जैसे – चार पांच हज़ार सवारोंका मालिक दोस्त मुहम्मदख़ां रुहेला, दिलेरख़ां पांच छः हज़ार सवार व तोपख़ानह समेत, और बहुतसे अक्खड़ राजपूत थे; जब अमानतख़ां उज्जैनसे चार पांच कोसपर सारंगपुरके नालेके पास पहुंचा, अचानक उसे राजा इस्लामख़ांके लश्करने आघेरा, और दिलेरख़ांने पांच छः हज़ार सवार साथ लेकर बाईं तरफ़से अमानतख़ांको आ दबाया, और बड़े सख़्त हमले किये; इस्लामख़ांने दस बारह हज़ार सवार तीन सर्दारोंके साथ मुक़र्रर करदिये थे, कि अमानतख़ांको चारों तरफ़से घेरकर ज़िन्दह पकड़ लेवें. इस वक़्त अमानतख़ां ऐसी तंगीमें था, कि उसे अपने लश्करमेंसे किसीके ज़िन्दह बचनेकी उम्मेद न थी, तो भी उसने बड़ी बहादुरीसे लड़ाई की, और अपने साढू दिलावरख़ांसे, जो राजाकी तरफ़से आया था, सख़्त मुक़ाबलह किया. अनवरुद्दीनख़ां बहादुर, जो अमानत-ख़ांका दोस्त था, थोड़ीसी जमइयत लेकर दिलेरख़ांसे ख़ूब लड़ा, और तीन घड़ी तक बराबर कटा छनी होती रही; अनवरुद्दीनख़ांने भालेसे ज़ख़्मी होने बाद भी दिलेरख़ांपर गोली मारी, जिससे उसका काम तमाम हुआ, लेकिन् अनवरु-द्दीनख़ांका भाई काम आया. राजाकी तरफ़से दिलेरख़ां जमादार (जमाअ़ःदार) ज़ख़्मी हुआ, और कई नामी जमादार मारेगये."

"यह लड़ाई पहर दिन चढ़ेसे तीसरे पहर तक रही, इस वक़्त चारों तरफ़ तीरोंका जंगल ख़ूनकी नदीसे सर्सब्ज़ नज़र आता था. राजा घोड़ा झपटाकर लड़नेको आया, लेकिन् उसके साथी उसकी बद ज़बानी और बद आदतोंसे पहिले ही नाराज़ थे, और मौक़ा ढूंढते थे, इस वक़्त लड़नेसे बिल्कुल किनारा करगये; राजा थोड़ेसे आदमियों समेत लड़ता रहा, और गोली लगनेसे उसका काम भी तमाम हुआ; परंतु राजाके मरनेकी ख़बर किसीको न हुई, एक घंटे तक बराबर उसका लश्कर लड़ता रहा; जब राजाका जमादार दिलावरख़ां भागा, तो अमानतख़ांने फ़त्हके शादियाने

वजवाये; इतनेमें राजाका सिर भी लोग काटलाये, और राजाकी तरफ़ वाले पठान अपने अपने डेरोंमें आग लगाकर भागगये; वहुतसे घोड़े, हाथी और वाक़ी उम्दह डेरे व वहुतसा सामान अमानतखांके हाथ आया, जिससे उसका सारा लश्कर माला माल होगया. जब जहांदारशाहको ख़बर पहुंची, तो शाबाशीका फ़र्मान दो खिल्अ़त समेत भेजा. अमानतखांने रामपुराको, जो इस्लामखांका वतन था, लूटनेका इरादह किया; तब रत्नसिंहकी राणियोंने नक्द रुपये और दो हाथी नज्र भेजकर अर्ज़ की, कि राजा तो अपने कियेके नतीजेको पहुंच गये, अब हम विधवाओंपर फ़ौजकशी करना बड़ोंकी शानके लाइक़ नहीं है. इसपर अमानतखां चुप होरहा." //

इसके बाद जब रत्नसिंह मारागया, तो राव गोपालसिंहने रामपुरेपर क़ब्ज़ह करलिया; रत्नसिंहके दोनों बेटे बदनसिंह और संग्रामसिंह अपने बापके मुसल्मान होनेपर गोपालसिंहके पास चले आये थे. राव गोपालसिंह बुड्ढे और नर्म दिल थे, रियासतका उम्दह इन्तिज़ाम न करसके; इसी अ़र्सेमें महाराणा संग्रामसिंहका प्रधान कायस्थ बिहारीदास बादशाह फ़र्रुख़सियरसे रामपुराको महाराणाकी जागीरमें लिखा लाया, जिसके अस्ल कागज़ यहां अब तक मौजूद हैं; और उदयपुरसे फ़ौज लेजाकर वहां दख़्ल किया; लेकिन् कुछ गांव फ़ौज ख़र्चके लेने बाद राव गोपालसिंहको वहीं क़ाइम रखकर अपना ताबे बना लिया. राव गोपालसिंहके पोते बदनसिंह और संग्रामसिंहने जोश जवानीसे महाराणाके आदमियोंको फ़ौज ख़र्चके गांवोंपरसे निकाल दिया; तब विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] में महाराणा संग्रामसिंहने बेगूंके रावत् देवीसिंह और कायस्थ बिहारीदासको फ़ौज समेत वहां भेजा; अठानाका रावत् उदयसिंह, जो मेवाड़से बाहर निकालागया था, रावत् देवीसिंहकी सुफ़ारिशसे इस फ़ौजमें शामिल हुआ; और रामपुरेको जाघेरा; कुछ अ़र्से तक लड़ाई होती रही. एक दिन अंधेरी रातमें अठानेका रावत् उदयसिंह अपने साथियों समेत शहर पनाहपर सीढ़ी लगाकर चढ़गया, और दूसरे फ़ौज वालोंने भी हमलह करदिया; क़िला फ़त्ह हुआ, और राव गोपालसिंहको उदयपुर लेआये. फिर आमदका पर्गनह जागीरमें देकर एक इक़ारनामह लिखवाया, जिसकी और दूसरे काग़ज़ोंकी नक़्लें ऊपर लिखीगई हैं- (देखो एष्ठ ९५७). महाराणाने राठौड़ दुर्गदासको रामपुराके बन्दोवस्तपर भेजा; थोड़े दिनों बाद राव गोपालसिंह तो मरगया, और उसका बड़ा पोता बदनसिंह आमदका जागीरदार हुआ; यह महाराणाकी ताबेदारीमें रहा. इसके कोई औलाद नहीं थी, इसके मरने बाद उसके छोटे भाई संग्रामसिंहको गद्दी मिली. फिर रामपुरा महाराणा संग्रामसिंहने अपने भानजे और जयपुरके कुंवर माधवसिंहको जागीरमें देदिया. //

तारीख़ मालवामें गोपालसिंहके बाद संग्रामसिंहका गद्दी बैठना लिखा है, लेकिन् बड़वा भाटोंकी किताबोंसे और दूसरे काग़ज़ोंसे साबित होता है, कि राव गोपालसिंहके बाद उसका बड़ा पोता बदनसिंह गद्दीपर बैठा; और उसका बेटा फ़तहसिंह बापके साम्हने ही मरगया, जिसका बेटा लछमनसिंह बदनसिंहके बाद गद्दीपर बैठा; बड़े बेटेकी औलादका बैठना दुरुस्त भी है. यह अल्बत्तह हुआ हो, तो तअ़ज्जुब नहीं, कि बदनसिंहके बाद लछमनसिंह बालक हो, और सब कारोबारका मुख़्तार संग्रामसिंह रहा हो, जो रावके नामसे मश्हूर हुआ; क्योंकि रामपुरा तो क़ब्ज़हसे निकल गया था, ये लोग एक इलाक़हके इलाक़ेदार और महाराणा उदयपुर या कुंवर माधवसिंहके जागीरदार रहगये थे; इस हालतमें संग्रामसिंहको राव ख़याल करलिया हो, तो तअ़ज्जुब नहीं. यह संग्रामसिंह अपनी रियासत वापस मिलनेकी कोशिशमें बादशाह मुहम्मदशाहके पास दिल्ली गया था, लेकिन् कुछ तद्बीर न करसका, सल्तनतकी कमज़ोर हालतमें उदयपुर और जयपुरके बर्ख़िलाफ़ हुक्म मिलना मुश्किल था. तारीख़ मालवाका बयान है, कि इसी कोशिशमें संग्रामसिंह आगरेके पास सिकन्दरेमें मरगया. लछमनसिंह भी रामपुरा लेनेकी उम्मेदमें इस दुन्यासे कूच करगया. इसके बेटे भवानीसिंहने बहुत कोशिश की, लेकिन् रामपुरा महाराजा माधवसिंहने मल्हार राव हुल्करको देदिया; तब मरहटोंसे यह लड़ता भिड़ता रहा. इसके बाद मुह्कमसिंह गद्दीपर बैठा, रामपुरा हुल्करके क़ब्ज़ेमें था, रावकी जागीरमें आमदका क़िला और कुछ पर्गनह बाक़ी रहा, जिसकी सालाना आमद डेढ़ लाख रुपयेके क़रीब होगी.

मुह्कमसिंहका इन्तिक़ाल होनेपर ग़ैर हक़दार भैरवसिंह गद्दीपर बैठगया, जिसको जयपुरके महाराजा जगत्सिंहने विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में टीकेका दस्तूर भेजकर मुह्कमसिंहका वारिस बनाया, लेकिन् उदयपुरके महाराणा भीमसिंहके हुक्मसे भाटखेड़ीके रावत् कर्णसिंह व अठाणाके रावत् तेजसिंहने भैरवसिंहको निकालकर मुह्कमसिंहके हक़ीक़ी बेटे नाहरसिंहको गद्दीपर बिठाया. फिर महाराणाने मुन्शी अमरलाल कायस्थके हाथ तलवार वग़ैरह दस्तूर भेजकर मुह्कमसिंहकी जगह क़ाइम करदिया, और उसने रुपये १०००० दस्तूर तलवार बन्दीके नज़्र किये. इस मुआमलेके काग़ज़ात उदयपुर बख़्शीख़ानेके दफ़्तरमें मौजूद हैं. नाहरसिंहने कुछ कोशिश नहीं की, वर्नह सर्कार अंग्रेज़ीसे उसका जुदा अ़ह्दनामह होजाता, जिस तरह कि मालवाके छोटे मोटे दूसरे रईसोंके साथ मालकम साहिबने किया था. इसपर भी नाहरसिंहने अगले ज़मानेके ख़यालातको दिलमें रखकर बाग़ियोंको पनाह दी, जिससे मेकडोनल्ड साहिब फ़ौज लेकर गये, और आमदका क़िला गिरवादिया; राव नाहरसिंहको नज़र क़ैद करके रामपुरामें लेआने बाद एक हवेलीमें रखदिया, और

क़रीब एक लाख आमदकी जागीर गुज़ारेके लिये हुल्करसे दिलवा दी. उस वक़्से चन्द्रावतोंको हुल्करके जागीरदार बनकर रहना पड़ा. राव नाहरसिंह विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] में मरगया, जिसका बेटा तेजसिंह अब मौजूद है. इसने हुल्करसे बहुत कुछ क़र्ज़ लेलिया है; इसलिये तकूजीराव हुल्करने उसकी घरू जायदादपर भी मुन्सरिम रखदिया है. इस ख़ानदानका और ज़ियादह हाल नहीं मिला.
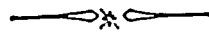
महाराणा संग्रामसिंहके अह्दमें ईडरके राजाओंकी तब्दीली और उदयपुरके तावे होनेके सबब हम उस रियासतका इतिहास यहां लिखते हैं:–

ईडर
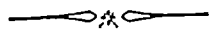
फ़ॉर्ब्स साहिबकी रासमाला, बम्बई गज़ेटियरकी जिल्द ५ पृष्ठ ३९८ तथा गुजरात राजस्थानके अनुसार लिखते हैं, क्योंकि इस राजधानीसे हमको कोई लेख नहीं मिला.

इस राजके उत्तर सिरोही और मेवाड़, पूर्वमें डूंगरपुर, दक्षिण और पश्चिममें अहमदाबाद और गायकवाड़का मुल्क है; कुल क्षेत्र फल २५०० मील मुरब्बा, (१) सन् १८७२ ई० में २१७३८२ और सन् १८८१ की मर्दुम शुमारीमें २५८००० बाशिन्दे थे, और सालियानह आमदनी ६००००० छः लाख रुपये हैं, जिसमेंसे २५०००० ढाई लाख महाराजाका ख़ालिसह, और ३५०००० साढ़े तीन लाख उनके जागीरदारोंके क़ब्ज़हमें है.

दक्षिण पश्चिममें एक चौरस और रेतीला हिस्सह है, उसके अलावह मुल्ककी ज़मीन ज़र्ख़ेज़ (उपजाऊ) और जंगलसे ढके हुए पहाड़ों और नदियोंसे भरी हुई है; सर्दी (२) और बारिशमें यह मुल्क बहुत ख़ूबसूरत होजाता है.

---

(१) डॉक्टर हंटरके गज़ेटियर सेकण्ड एडिशनकी जिल्द चौथीके पृष्ठ ३३६ में क्षेत्र फल ४९६६ मील मुरब्बा लिखा हैं, जो बम्बई गज़ेटियरके लेखसे दूना फ़र्क़ बताता है; और डॉक्टर साहिबने सन् १८८१ ई० की सेन्सस (ख़ानह शुमारी) रिपोर्टके मुवाफ़िक़ लिखा है.

(२) गुजरात राजस्थानमें लिखा है, कि सर्द मौसममें इस देशकी आबो हवा ख़राब होजाती है.

नदियां.

इस देशमें पांच नदियां हैं- साबर, हाथमती, मेश्वो, माझम, और वात्रक.

साबरमती मेवाड़के पहाड़ोंसे निकलकर उत्तरकी तरफ़ बहने बाद दक्षिणको जाती है, और बीस मील तक रियासतकी पश्चिमी सीमा बनाती है.

हाथमती पूर्वोत्तरी सीमासे आकर देशके बीचमें गुज़रती हुई अहमदनगरके पास साबरमें मिलजाती है, और संगमके बाद दोनों नदियोंका नाम साबरमती हो जाता है.

मेश्वो पूर्वसे आती है, और सांवलाजीके क़स्बेके पास होकर दक्षिण-पश्चिमकी तरफ़ बहकर कैड़ाके पास वात्रक में मिलजाती है.

माझम डूंगरपुरके पास पहाड़ोंसे निकलती है, और मेश्वोके तौर बहकर आमलियारा ठिकानेके पास वात्रकमें मिलजाती है.

वात्रक दक्षिण पूर्वमें मेघराजके पास होकर निकलती है, और दक्षिण पश्चिममें बहकर माझममें मिलकर धौलकामें वोथा मक़ामपर साबरमतीसे मिलती है.

पहाड़.

ईडरमें कई पहाड़ हैं, जिनमेंसे कई एक बहुत लंबे और ऊंचे हैं, और सब दरख़्तों और झाड़ियोंसे ढके हुए हैं.

ईडरका क़िला उस पहाड़पर है, जिसकी श्रेणी अर्वली और विंध्यसे मिली हुई है.

उत्तरी पहाड़ी हिस्सहमें गर्मी और सर्दी बहुत ज़ियादह पड़ती है, और बाक़ी हिस्सोंकी आबो हवा मध्य गुजरातके दूसरे हिस्सोंके समान है; सबसे अधिक गर्मीके महीनोंमें थर्मामेटर ज़ियादहसे ज़ियादह १०५ डिगरी तक, और कमसे कम ७५ तक रहता है; जुलाई और ऑगस्टमें ९५ से ७५ तक और डिसेम्बर और जैन्युअरीमें ५३ से ८९ तक रहता है.

तिजारत.

कुद्रती पैदावार ईडरमें बहुत कम है, पहिले ईडरके सौदागर अफ़ीमका रोज़गार ज़ियादह करते थे, लेकिन् अब बिल्कुल कारख़ानह सर्कारने लेलिया है. सांवलाजी और खेड़ब्रह्मके मेलोंसे कुछ तिजारत चलती है, तो भी अक्सर बंबई, पूना, अहमदाबाद, प्रतापगढ़ और विशनगरसे तिजारत होती है; ख़ास करके घी, कपड़ा, ग़ल्लह, शहद, चमड़ा, गुड़, तेल, तिल वग़ैरह चीज़ें, जिनसे तेल निकलता है, साबन, पत्थर और लकड़ी बाहरको भेजी जाती हैं. पीतल, तांबेके बर्तन, रूई, विलायती और देशी कपड़े, नमक, शक्कर और तम्बाकू वग़ैरह चीज़ें बाहरसे आती हैं; अहमदनगरमें साबन बहुत बनाया जाता है.

ईडर महाराजके ख़ानदानके सर्दार.

१- महाराज जगत्सिंह, हमीरसिंहोत, सुवरका.
२- महाराज सर्दारसिंह, इन्द्रसिंहोत, दावड़ाका.
३- महाराज भीमसिंह, इन्द्रसिंहोत, नुवाका.

पटायत सर्दार.

१- चांपावत हमीरसिंह, रायसिंहोत, चांदरणीका.
२- चहुवान इन्द्रभाण, सूरजमलोत, मूंडेटीका.
३- जोधा मुहब्बतसिंह, हमीरसिंहोत, वेरणाका.
४- चांपावत दीपसिंह, दौलतसिंहोत, टींटोईका.
५- कूंपावत अर्जुनसिंह, नाहरसिंहोत, उंडणीका.
६- चांपावत भारथसिंह, गोपालसिंहोत, मऊका.
७- कूंपावत अजीतसिंह, दौलतसिंहोत, कूकड़ियाका.
८- जैतावत दलपतसिंह, खुमाणसिंहोत, गाठीयालका.

भोमिया.

१- पाल, २- खेरोज, ३- घोड़वाड़ा, ४- सोरी (मेघरज), ५- पोसीना, ६- वेरावर, ७- पाल, ८- वूडेली, ९- ताका, १०- टुंका, ११- कुशका, १२- सोमेयरा, १३- जालिया, १४- देघामड़ा, १५- वडीयोल, १६- वसायत, १७- धमवोलिया, १८- नाडीसाणा, १९- सरवणा, २०- गामभोई, २१- मोर डूंगर, २२- मोहरी (देवाणी), २३- करचा देरोल.

इतिहास.

ईडर- यह पुरानी जगह है, जिसके बारेमें कई कहानी क़िस्से प्रसिद्ध हैं, कहते हैं, कि ईडरके पहाड़पर वेणीवच्छराज नाम राजाने एक क़िला बनवाया था; फिर यह देश जंगली भील लोगोंका निवास स्थान रहा; जब वल्लभीपुरका राज पश्चिम निवासी गुर्जरोंने तबाह किया, उस वक्त वहांके राजा शिलादित्यकी राणी कमलावती अम्बा भवानीके दर्शनोंको आई थी, वह अपने गर्भके बालक केशवादित्यको शस्त्रक्षतसे निकालकर वहांके पुजारी हरका रावलकी स्त्री लक्ष्मणावतीके सुपुर्द करने बाद आप आगमें जलगई. केशवादित्यके बड़े होनेपर ईडरके भीलोंने उसे अपना राजा

वनाया. इसके बाद भांडेर, नागदा, चित्तौड़ व उदयपुरमें उस वंशके राजा नम्बरवार राज करते रहे, जिनका हाल पहिले भाग व इस भागमें मुफ़स्सल लिखागया है. फिर ईडरपर परिहार राजपूतोंका राज रहा.

ईडरपर जबसे राठौड़ोंका राज हुआ, उसका बयान इस तरहपर है:- क़न्नौजके राजा जयचन्द्रकी सन्तानमें सीहा (सिवा) के चार बेटे थे:-

१- आस्थान, २- अजमाल, ३- सोनंग, ४- भीम; इनके बुज़ुर्गोंका हाल हम जोधपुरकी तवारीख़में लिख आये हैं. सोनंग और अजमाल दोनों भाई गुजरात देश अनहिलवाड़ा पट्टनके सोलंखी राजा दूसरे भीमदेवके पास आये, और भीमदेवने सोनंगको कड़ी पर्गनेका सामेत्रा गांव जागीरमें दिया. अजमालने ओखामंडलमें जाकर वहांके चावड़ा राजाओंको मारने बाद राज छीनलिया; उनके दो पुत्र बाघा और बाढेल थे, उन दोनोंके नामसे "बाजी" और "बाढेल" गोत्रके राजपूत अबतक उस ज़िलेमें मौजूद हैं.

ईडरका राज सोनंगको इस तरह मिला:-

परिहार वंशका आख़िरी राजा अमरसिंह, जो पृथ्वीराज चहुवानके साथ शिहाबुद्दीन गौरीकी लड़ाईमें लड़कर मारागया (१), ईडरका राज एक अपने नौकर कोली हाथीसोड़की सुपुर्दगीमें करगया था; वह अमरसिंहके बाद ईडरका राजा बन बैठा. उसके बाद उसका बेटा सांवलिया सोड़ ईडरका राजा हुआ, उसने अपने प्रधान नागर ब्राह्मणकी कन्यासे ज़बर्दस्ती शादी करना चाहा; नागरने उसको दम देकर राठौड़ राव सोनंगसे पुकार की; सोनंग छिपकर अपने तीन सौ राजपूतों समेत नागरकी हवेलीमें आ छिपा; नागरने सामलिया सोड़को अपनी बेटीकी शादी करनेको बुलाया; वह अपने साथियों समेत बड़ी धूम धामसे आया; नागरने उन लोगोंकी शराबसे ख़ातिरदारी की; जब वे बेहोश होगये, तो राठौड़ोंने तलवारोंसे सबका काम तमाम किया. सामलिया सोड़ भागता हुआ ईडरके क़िलेके दर्वाज़ेके पास मारागया; उसने मरते वक़्त अपने ख़ूनसे सोनंगके सिरपर राज तिलक किया.

सोनंग विक्रमी १३१३ [हि० ६५४ = ई० १२५६] में रावका ख़िताब पाकर ईडरकी गद्दीपर बैठा, उसके पुत्र अहमल, धवलमल, लूणकरण, रवनहत, और

---

(१) बंबई गज़ेटियर वग़ैरह किताबोंमें लिखा है, कि उन दिनों ईडर चित्तौड़के मातहत था, और परिहार अमरसिंह चित्तौड़के रावल समरसिंहके साथ शिहाबुद्दीन गौरीकी लड़ाईमें मारागया, लेकिन् इस बयानके सहीह होनेमें शक है- (देखो बंगाल एशियाटिक सोसाइटीका जर्नल नं० १ भाग १, सन् १८८६).

रणमल्ल एकके बाद एक गद्दीपर बैठे. रणमल्लके वक्तमें गुजरातके बादशाह अव्वल मुज़फ़्फ़रशाहने विक्रमी १४५० [हि० ७९५ = ई० १३९३] और विक्रमी १४५५ [हि० ८०० = ई० १३९८] में ईडरपर हमलह किया, और विक्रमी १४५८ [हि० ८०३ = ई० १४०१] में तीसरा हमलह हुआ, तब राव रणमल्ल ईडर छोड़कर विशनगर चलागया.

रणमल्लके बाद उसका बेटा पूंजा ईडरकी गद्दीपर बैठा, वह गुजराती बादशाह अहमदशाहसे लड़ा था, और उससे शिकस्त खाने बाद एक खड्डेमें घोड़ेसे गिरकर मरगया. उसके पीछे नारायणदास गद्दीपर बैठा, जिसने अहमदशाहको ख़िराज देना क़ुबूल किया, लेकिन् विक्रमी १४८५ [हि० ८३१ = ई० १४२८] में वह बादशाहसे बर्ख़िलाफ़ होगया था. उसके बाद भाण गद्दीपर बैठा, जिसके ऊपर विक्रमी १५०२ [हि० ८४९ = ई० १४४५] में महमूदशाहने चढ़ाई की. मिराति सिकन्दरी के पृष्ठ ४९ में लिखा है, कि राव पहाड़ोंमें भागगया, और अपने वकील भेजकर सुल्ह चाही, और अपनी बेटीका डोला भी महमूदशाहके लिये भेजदिया. राव भाणके दो बेटे थे, बड़ा सूरजमल्ल और छोटा भीमसिंह, जिनमेंसे सूरजमल्ल गद्दीपर बैठा, और उसके बाद उसका बेटा रायमल्ल ईडरका राव हुआ. भीमसिंहने अपने भतीजेसे राज छीन लिया, रायमल्लका विवाह चित्तौड़के महाराणा संग्रामसिंह अव्वल (सांगा) की बेटीके साथ हुआ था, जिससे महाराणाने उसकी मदद की, और गुजरातियोंसे महाराणाकी लड़ाई हुई, जिसका हाल तफ़्सीलसे उक्त महाराणाके बयानमें लिखा है.

भीमसिंह गुजरातके मुल्कको लूटने लगा, तब मुज़फ़्फ़रशाह (२) ने उसपर चढ़ाई की; भीमसिंह पहाड़ोंमें भागगया, फिर सुल्हके साथ वापस आया. उसके बाद रायमल्ल फिर गद्दीपर बैठा; लेकिन् इसको भी मुज़फ़्फ़रशाहने निकाल दिया, और उसने बहुतसी लड़ाइयां कीं. उसके बाद राव भारमल्ल ईडरका मालिक बना, इसपर भी बहादुरशाह गुजरातीने दो दफ़ा हमलह किया, आख़िरमें यह अक्बरके ताबे हुआ. इसके बाद इसका बेटा पूंजा (२) ईडरका राव हुआ, और उसके बाद उसका बेटा नारायणदास गद्दीपर बैठा; इसने विक्रमी १६३१ [हि० ९८१ = ई० १५७४] में अक्बरकी इताअत क़ुबूल की थी, लेकिन् यह महाराणा १ प्रतापसिंहका ससुर था, जब अक्बर बादशाह मेवाड़पर चढ़ आया था, तब विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में उसने ईडरकी तरफ़ फ़ौज भेजी, और राव नारायणदासने मुक़ाबलह किया, जिसका ज़िक्र महाराणा प्रतापसिंहके हालमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ १५६); नारायणदाससे ईडर छूटकर बादशाही क़ब्ज़ेमें आया, लेकिन् कुछ अर्से बाद राव मए अपने कुंवर वीरमदेवके बादशाही दर्बारमें पहुंचा, तो बादशाहने उसका राज उसे वापस देदिया.

नारायणदासके बाद वीरमदेव गद्दीपर बैठा, यह बड़ा बहादुर और सख़्त बे रहम था, उसने अपने सौतेले भाई रायसिंहको मारडाला, और दूसरे भी छोटे बड़े राजाओंके साथ लड़ाइयां करता रहा; वह काशी यात्राको गया, जब पीछा लौटकर आंबेर आया, तो वहां उसके सौतेले भाई रायसिंहकी बहिन जो आंबेरके राजाको ब्याही थी, उस महाराणीने अपने भाईका एवज़ लेनेके लिये वीरमदेवको मरवाडाला. इसी बीरमदेवके नामसे बनी हुई एक कहानी राजपूतानहमें मश्हूर है, जिसको पन्ना बीरमदेवकी बात कहते हैं, लेकिन् वह कहानी बिल्कुल झूठी दिल्लगीके लिये बेबुन्याद बनाकर मश्हूर करदी गई है. उसके बाद उसका भाई कल्याणमल्ल ईडरका मालिक कहलाया. लिखा है, कि उदयपुरके महाराणा और सिरोहीके रावसे कल्याणमल्ल ख़ूब लड़ता रहा, और ओगना, पानड़वा वगैरह पहाड़ी हिस्सह अपने क़ब्ज़हमें करलिया. जब उसका इन्तिक़ाल हुआ, तब उसका बेटा राव जगन्नाथ मुख़्तार बना, परन्तु विक्रमी १७१३ [हि० १०६६ = ई० १६५६] में बेताल भाटकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे दिल्लीके बादशाह शाहजहांके हुक्मके मुताबिक़ गुजरातके सूबहदार शाहज़ादह मुरादबख़्शने चढ़ाई करके इसी वर्ष में ईडर लेलिया; राव भागकर पोल गांवकी तरफ़ पहाड़ोंमें चलागया, और एक मुसलमान अफ़्सर सय्यद हातूको शाहज़ादहने ईडरमें छोड़ा. जगन्नाथका देहान्त पोलमें हुआ. उसका बेटा पूंजा तीसरा गद्दीपर बैठा, वह दिल्ली गया, लेकिन् आंबेरके राजाकी नाइत्तिफ़ाक़ीके सबब ईडरका राज मिलनेसे नाउम्मेद होकर उदयपुर चलाआया, और महाराणा (१) की मददसे ईडरपर क़ब्ज़ह करलिया; परन्तु छः महीनेके बाद पूंजाका देहान्त होगया, और उसका भाई अर्जुनदास गद्दीपर बैठा; थोड़े अर्सेमें वह भी रहबरोंकी लड़ाईमें मारागया. उस समय जगन्नाथके भाई गोपीनाथने अहमदाबादका इलाक़ह लूटा, और मुसल्मानोंको ईडरसे निकाल दिया, फिर ग़रीबदास रहबरको डर हुआ, कि गोपीनाथ अर्जुनदासका बदला लेवेगा, तब वह अहमदाबाद गया, और मुसल्मानोंकी फ़ौज चढ़ालाया, जिसके ज़रीएसे ईडर लेलिया. गोपीनाथ पहाड़ोंमें भागगया, और अफ़ीम न मिलनेके कारण जंगलमें मरगया.

फिर उसका बेटा करणसिंह राव कहलाया, जिसने विक्रमी १७३६ [हि० १०९० = ई० १६७९] में मुसल्मानोंको निकालकर ईडर लेलिया. परन्तु मुहम्मदअमीनख़ां और बहलोलख़ांने उससे ईडर छीन लिया, और करणसिंह भागकर सरवाण गांवकी तरफ़ गया.

---

(१) इस वक़्त उदयपुरके महाराणा अव्वल राजसिंह थे, जो शाहजहांके बेटोंकी लड़ाइयोंके वक़्त अपना मतलब निकाल रहे थे.

जहांपर उसका देहान्त होगया. करणसिंहके दो बेटे थे, चन्द्रसिंह और माधवसिंह; माधवसिंहने वेरावर मक़ाम लिया, जहांपर उसकी औलाद क़ाबिज़ है; ईडरमें बहुत अ़र्से तक मुसल्मानोंका क़ब्ज़ह रहा, जहांका हाकिम मुहम्मद बहलोलखां रहा. विक्रमी १६९६ [हि० १०४९ = ई० १६३९] से चन्द्रसिंह ईडरपर हमलह करने लगा, जिसपर उसने विक्रमी १७१८ [हि० १०७१ = ई १६६१] में वसाई वालोंकी मददसे क़ब्ज़ह करलिया; परन्तु सिपाही राजपूतोंकी बहुत तन्ख़्वाह चढ़गई थी, वह न देसका, इसलिये ईडर बलासणाके ठाकुर सर्दारसिंहको सोंपकर पोलमें चला आया, और वहांके मालिक परिहार राजपूतको मारकर क़ब्ज़ह करलिया. सर्दारसिंह चन्द्रसिंहके नामसे हुकूमत करता रहा, परन्तु वहांके निवासियोंसे फ़साद होनेके सबब कुछ अ़र्से बाद वह भी बलासणाको भाग गया; और बच्छा पंडितने ईडरपर क़ब्ज़ह करलिया.

विक्रमी १७८१ आपाढ़ शुक्ल १२ [हि० ११३६ ता० ११ शव्वाल = ई० १७२४ ता० ४ जुलाई] को महाराजा अजीतसिंहको उनके दूसरे बेटे बख़्तसिंहने मारडाला, जिसका ज़िक्र इस तरहपर है:- कि सय्यद अ़ब्दुल्लाहख़ां और महाराजा अजीतसिंहने शामिल होकर दिल्लीके बादशाह फ़र्रुख़सियरको मारडाला, जब मुहम्मदशाहके वक़में अ़ब्दुल्लाहख़ां मारागया. आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहने महाराजाके बड़े बेटे अभयसिंहको समझाकर बख़्तसिंहके नाम लिखवा भेजा, तो उसने अपने बापको मारकर छोटे भाइयोंको भी मारना चाहा, उस वक़ अजीतसिंहके छोटे बेटे आणन्दसिंह और रायसिंहको उनके रिश्तहदार राजपूत वहांसे ले निकले, और कुछ अ़र्से तक मारवाड़में फ़साद करते रहे; ईडरका पर्गनह मुहम्मदशाहने महाराजा अभयसिंहको जागीरमें लिखदिया था; यह सुनकर आणन्दसिंह व रायसिंहने विक्रमी १७८३ [हि० ११३८ = ई० १७२६] (१) में उसपर क़ब्ज़ह करलिया.

अब ईडर सोनंगकी औलादसे निकलकर उसके बड़े भाई आस्थानकी औलादके तहतमें आया. यह हाल सुनकर महाराणा संग्रामसिह (२) ने इस राज्यको मेवाड़में मिलालेना

---

(१) फ़ॉर्बस साहिबकी रासमाला हिस्ट्री और मारवाड़की तवारीख़में अणन्दसिंहका ईडर लेना विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = ई० १७२८] मे और ऊदावत लालसिंहका ईडरमें आना और विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] में महाराजाका क़ब्ज़ह होना लिखा है. ये दोनों तहरीरें ग़लत हैं, क्योंकि विक्रमी १७८४ आपाढ़ [हि० ११३९ = ई० १७२७] में आंबेरके महाराजा जयसिंह और जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने महाराणा संग्रामसिंहके नाम इस मज़्मूनके ख़र्रते लिखे हैं, कि अणन्दसिंहको निकालकर आप ईडर ले लीजिये, जिनकी नक़्लें ऊपर दर्ज हो चुकी हैं- (देखो पृष्ठ ९९७).

चाहा, और महाराजा सवाई जयसिंहकी मारिफ़त महाराजा अभयसिंहकी भी इजाज़त लेली; ताकि आपसकी मुहब्बतमें फ़र्क़ न आवे. इस विषयके काग़ज़ और महाराणाकी फ़ौजकशीका हाल ऊपर लिखा गया है. कुछ अर्से तक आणन्दसिंह व रायसिंह महाराणाके मातहत रहे.

विक्रमी १७९१ [हि० ११४६ = ई० १७३४] में मल्हार राव हुल्कर और राणोजी सेंधियाकी मदद लेकर आणन्दसिंहने जवांमर्दख़ां सर्दारको निकाला. विक्रमी १७९५ [हि० ११५१ = ई० १७३८] में गुजरातका सूबहदार मोमिनख़ां ईडरपर चढ़ा, और रणासण व मोहनपुरके सर्दारोंपर कर लगाया, लेकिन् रायसिंहने मोमिनख़ांसे सुलह की, और सूबहदारने भी उसकी बात क़बूल करली. राघवजी मरहटाके बर्ख़िलाफ़ रायसिंहने मोमिनख़ांसे दोस्ती रक्खी, जिसके एवज़ उसने मोड़ासा, कांकरेज, अहमदनगर, प्रांतिज, और हरसोलके ज़िले देदिये. विक्रमी १७९९ [हि० ११५५ = ई० १७४२] में रहवर राजपूतोंने हमलह करके महाराजा आणन्दसिंहको मारडाला, और उसके साथ चहुवान देवीसिंह और कूंपावत अमरसिंह मारेगये, तब रायसिंह मोमिनख़ांसे रुख़्सत लेकर आया, और रहवरोंको ईडरसे निकाल दिया. उसने आणन्दसिंहके बेटे शिवसिंहको गद्दीपर बिठाया, जो उस वक़्त छः वर्षका था; और रायसिंह मुसाहिबीका काम करने लगा, जो विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] में मरगया, परन्तु बंबई गज़ेटियरमें इसके मरनेके सन्को सन्देहके साथ लिखा है.

विक्रमी १८१४ [हि० ११७० = ई० १७५७] में म[illegible]या, औ[illegible] अहमदाबाद लेलिया, जिसके साथ राजा शिवसिंहसे भी प्रांतिज, [illegible]की लड़ाईमें [illegible], बायद और हरसोलका आधा हिस्सह लेलिया, जिससे मालूम [illegible] रहटान[illegible]सिंह मुसल्मानों की हिमायतमें था. फिर गायकवा[illegible] रहवरका[illegible]जापुर, मोड़ास[illegible]२३ [हि० ११७९ = ई० १७६६] में चढ़ आया, [illegible]ता है, कि [illegible] आधा राज मांगा, जो रायसिंहके हिस्सेमें था, वह नि[illegible]हब विक्रमी १[illegible]वसिंहको लाचार आधी आमदनी लिखदेनी पड़ी. विक्रमी १[illegible] [illegible]सिंहसे ईडरका [illegible]५ = ई० १७९१] में शिवसिंह मरगया, उसके पांच बेटे थे, [illegible]गया था; [illegible]वसिंह, २- संग्रामसिंह, ३- ज़ालिमसिंह, ४- अमीरसिंह, और ५- इन्द्र[illegible]। १२[illegible] [illegible]नीसिंह गद्दीपर बैठा, लेकिन् बारह दिन राज करके मरगया. उसका बेटा गंभीरसिंह तेरह वर्षका गद्दीपर बैठा. उसके काकाओंने गंभीरसिंहको मारना चाहा, जिसपर वे ईडरसे निकालेगये. संग्रामसिंह अहमदनगर और ज़ालिमसिंह व अमीरसिंह बायड़ व मोड़ासा चले गये. विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] में इन तीनों भाइयोंने फिर

ईडरपर हमलह किया, जिससे गंभीरसिंहने उनको फिर कुछ इलाक़ह देदिया.

विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] में पालनपुरके पठानोंने घोड़वाड़के कोलियोंपर हमलह करके क़ब्ज़ह करलिया, लेकिन् गंभीरसिंहने मरहटोंकी मदद लेकर उनको निकाल दिया, और गायकवाड़को २४००० रु० घास दानेके नामसे सालियाना देना ठहराया; कोलियोंसे तीसरा हिस्सह गंभीरसिंह लेने लगा; इसी तरह घोड़वाड़के रहबरोंसे भी पांच हिस्सोंमेंसे दो ईडरमें लिये जाते थे, वे हिस्से गंभीरसिंहने अपने चचा इन्द्रसिंहको देदिये. विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में गम्भीरसिंहने बीराहर (जो पुराने ईडरके राज्य वंशियोंके ख़ानदानमें था) और तंबा कोलियोंका और दांताके पंवार सर्दारके नवर गांव और वरनापर हमलह करके खिचड़ीके नामसे ख़िराज ठहरा लिया. इसी तरह पौळके राव रत्नसिंहको भी खिचड़ी देना पड़ा. दूसरे साल कोलियोंके गांव कर्चा, समेरा, देह गामड़ा, वंगर, बांदी ओल और राजपूतोंके गांव ख़ुश्की और रहबरोंके ठिकाने सिरदोई, मोहनपुर, रणासण और रूपालसे भी ख़िराज ठहरा लिया. गंभीरसिंह विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में मरगया.

उनका बेटा जवानसिंह गद्दीपर बैठा, और उसके बचपनमें रियासतका इख़्तियार सर्कार अंग्रेज़ीके हवाले हुआ. जब अहमदनगरके महाराज तख़्तसिंह जोधपुर दत्तक चलेगये, तो वह इलाक़ह भी ईडरमें शामिल होगया, जिसको महाराजा तख़्तसिंह जुदा रखना चाहते थे, लेकिन् गवर्मेंटने कुबूल नहीं किया.

जवानसिंह बड़े आक़िल और सर्कारके ख़ैरख़्वाह थे, इसलिये सर्कारने उनको बंबईकी लेजिस्लेटिव कौन्सिलका मेम्बर बनाया, और के० सी० एस० आई० का ख़िताब दिया. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में ३८ वर्षकी उम्र पाकर उनका इन्तिक़ाल होनेपर उनके पुत्र केसरीसिंह वर्तमान महाराजा गद्दीपर बैठे. उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने विक्रमी १८४० - १८५० [हि० ११९७- १२०८ = ई० १७८३- १७९३] में ईडरके महाराजाकी तीन बेटियोंके साथ शादी की थी, जिसका हाल उक्त महाराणाके हालमें लिखा जायेगा; और वर्तमान महाराजाकी दो बहिनोंमेंसे एकके साथ विक्रमी १९३२ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० १२९२ ता० ७ जमादियुस्सानी = ई० १८७५ ता० १२ जुलाई] को और दूसरीके साथ विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] को वैकुंठवासी महाराणा सज्जनसिंहकी शादी हुई, जिसका वर्णन उक्त महाराणाके हालमें किया जायेगा.

ईडरके महाराजाकी १५ तोपोंकी सलामी होती है, और उनको दत्तक लेनेकी

सनद हासिल है. विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में एक अह्द-नामह सर्कार अंग्रेज़ीके साथ हुआ, जो एचिसन्की किताबमें दर्ज है.

डूंगरपुर.

जुग्राफ़ियह.

डूंगरपुरकी उत्तरी सीमा मेवाड़; पूर्वी मेवाड़ और माही नदी है, जो इसको वांसवाड़ेसे जुदा करती है; दक्षिण तरफ़ माही, और पश्चिम तरफ़ रेवा व माही कांठा है. यह रियासत, जिसका रक़्वह ९५२ मील मुरब्बा है, २३.२५- और २४.३ उत्तर अक्षांश और ७३.४० व ७४.१८ पूर्व देशान्तरके बीचमें फैली हुई है; लंबाई इसकी पूर्वसे पश्चिमको ४० मील और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको ३५ मील है.

इस रियासतका अक्सर इलाक़ह पहाड़ियोंसे ढका हुआ है, जिसमें सालर वग़ैरह बड़े और कई क़िस्मके छोटे २ दरख़्त कस्रतसे हैं. गर्मीमें जंगल सूख जाते हैं, लेकिन् बारिशके दिनोंमें कई क़िस्मकी हरियाली होजानेसे अक्सर पहाड़ियोंका सब्ज़ा खुशनुमा मालूम होता है. मेवाड़ और प्रतापगढ़की तरफ़की ज़मीन वीरान और ऊंची नीची है, लेकिन् रेवाकांठाकी तरफ़ वाली उससे उ़म्दह है. यह देश कई मील तक गुजरातके समान मालूम होता है. यहां दो या तीन बड़ी बड़ी झाड़ियां हैं, जिनमें आबनूस और दूसरी क़िस्मके बहुतसे काठ पैदा होते हैं. यहांपर मवेशीकी चराईके लिये ज़मीन बहुत कम है.

बालरा खेतीके टुकड़ोंके सिवाय पहाड़ियोंके किनारेपर, और उसके बीच, या घाटियोंकी नीची २ तर ज़मीनमें होती है, और कुएं व तालाबोंसे सींची जासक्ती है. अगर्चि ज़मीन ऊंची नीची बहुत है, लेकिन् कोई बड़ी पहाड़ी नहीं है. राजधानीके पास एक पहाड़ी ७०० फुट ऊंची है, जिसके दामनका घेरा पांच मील है; उसके नीचे शहर, और एक उ़म्दह झील है; और चोटीपर महारावलके महल हैं. सागवाड़ेमें एक दूसरी पहाड़ी है, जो शहरके पासवालीसे कुछ बड़ी है.

नदी और झील.

यहां माही और सोम दो ही नदियां हैं, जो बनेश्वरके मन्दिरके पास मिलती हैं; वहांपर हर साल एक मेला होता है; माही नदी इस राजको बांसवाड़ेसे अलग करती है, और सोम नदी सलूंबरसे, जो मेवाड़में है. ये दोनों नदियां बराबर साल भर बहती रहती हैं; अगर्चि कई जगहमें सोमका जल धरतीके नीचे बहता है, लेकिन् वह एक

वारगी छिपजाती, और फिर दिखाई देती है; माही नदीकी तलहटी औसत तीन या चार सौ फुट चौड़ी और ज़ियादह तर पथरीली है. इसके तीरपरके कई हिस्सोंमें, जो वेणूके दरख़्तसे ढके हुए हैं, गर्मीके दिनोंमें जंगली जानवर रहते हैं. कुद्रती भील डूंगरपुरमें कोई नहीं है, लेकिन् ५ या ६ बनाई हुई भीलें हैं.

आबोहवा और बारिश.

डूंगरपुरकी आबोहवा न वहुत सर्द है, न गर्म है; बारिशका औसत क़रीब २४ इंचके है. आबोहवा मुअ्तदिल होनेसे यह एक तन्दुरुस्तीका देश समझा जासक्ता है, क्योंकि यहांपर सिवाय बुख़ार और बालाके हैज़ह या दूसरी बीमारी वहुत कम होती है.

पैदावार.

इस देशमें गेहूं, जव, चना, बाजरा, मक्की, चावल, रूई, अफ़ीम, तिल, सरसों, अद्रक, हल्दी और गन्ना वग़ैरह पैदा होता है; पियाज़, रतालू, नीबू, मीठा आलू, बैंगन, मूली, तर्बूज़, आम और केलाके सिवा कोई फल या तर्कारी नहीं होती; महुवाके पेड़ वहुत हैं, जिनसे शराब बनती है; खेती कुओंसे ज़ियादह और नदी तालावोंसे कम सींची जाती है.

ज़मीनकी मालगुज़ारी और पट्टा.

ज़मीनकी मालगुज़ारी वुसूल करनेका किसी गांव या शहरमें एक क़ाइदह नहीं है, न तो ज़मीन मापी जाती है, और न फ़ी बीघे महसूल मुक़र्रर है. बसन्त और जाड़ेकी फ़स्लमें राजसे एक अफ़्सर भेजा जाता है, जो फ़स्ल देखनेके बाद राजका महसूल ठहरालेता है. वर्षमें एक वार पटैलको सर्कारी अफ़्सर बुलाकर हर एक गांवकी आमदनी और राजकी शरह मुक़र्रर कर लेते हैं. पूंजा रावल, जो १९० वर्ष (१)

---

(१) पूंजा रावलका बनाया हुआ गोवर्धननाथका मन्दिर डूंगरपुरमें गैबसागर तालाबकी पालपर है, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में हुई थी; यह बात वहांकी प्रशस्तिमें लिखी है. इसके बाद महाराणा जगत्सिंहके वक़्में, जब डूंगरपुरपर विक्रमी १६८५ [हि० १०३७ = ई० १६२८] में फ़ौज गई थी, तब वहां पूंजा रावल था, जिसको २६० वर्षका अर्सह हुआ; यह बात राज समुद्रकी प्रशस्तिमें लिखी है. राजपूतानह गज़ेटियरमें यह बात ग़लतीसे लिखीगई है, क्योंकि राज समुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके आठवें श्लोकमें लिखा है, कि गिरधर रावलको महाराणा राजसिंह १ ने अपने ताबे बनाया, तो इससे साफ़ ज़ाहिर है, कि उस समय पूंजाका देहान्त होचुका था, जिसको शाहजहांने डेढ़ हज़ारी मन्सब दिया था.

पहिले जीता था, उसके ज़मानेमें ज़मीन मापी जाती थी, भाव भी ठहरालिया जाता था, और आमदनीके सीगे ठीक करलिये जाते थे.

पूंजा रावलने इक्कीस सीगे मालगुज़ारीके मुक़र्रर किये थे. ज़मीनकी मालगुज़ारी याने बराड़, सर्कारी काम्दारोंकी तन्ख़्वाह देनेके लिये, सर्दारके ख़ानदानके लिये, परदेशी सिपाहियोंके लिये और दूसरी फुटकर बातोंके लिये बहुतसे महसूल मुक़र्रर जगह लियेजाते थे. उस वक़्के दस्तूरोंमेंसे यह बड़ी तब्दीली हुई है, कि अब किसानको रुपयेके सिवाय कुछ अन्न भी देना पड़ता है; गांवोंमेंसे कहीं पैदावारकी चौथाई और कहीं तिहाई लीजाती है, और कहीं कहीं पैदावारके हिसाबसे कम ज़ियादह भी लिया जाता है; जहां पैदावार कम है, वहां अन्नके सिवाय कुछ नहीं लिया जाता.

डूंगरपुरकी कुल ज़मीनकी आमदनी एक लाख तिरासी हज़ार तीन सौ पचास रुपया है, जिसमेंसे ७९६८८ रु० राजको, ५१९६७ रु० ठाकुरोंको मिलता है, और बाक़ी धर्मार्थ दिया जाता है.

आबादी.

हिन्दुओंकी तादाद १७५००० है, और कुल रञ्अय्यतमेंसे तीन चौथाई हिस्सह हिन्दू, आठवां हिस्सह जैनी, और इतने ही मुसल्मान हैं. भीलोंकी तादाद क़रीब दस हज़ारकें है; और विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] की मर्दुमशुमारीकी रिपोर्टके मुवाफ़िक़ एक लाख तिरेपन हज़ार तीन सौ इक्यासी आदमी हैं.

इस देशमें ख़ास व्यापारी हिन्दू महाजन और बोहरे हैं. यहां ब्राह्मणोंकी संख्या आठ और दस हज़ारके बीचमें है, राजपूत और महाजन तादादमें पांच हज़ारके क़रीब गिनेगये हैं, और कुछ मुसल्मान भी आबाद हैं. भील इस देशके क़दीमी रहने वाले हैं; बड़े शहरोंमें साधारण रोज़गारी और कारीगर पाये जाते हैं. हलवाई, सुनार, कुंभार, लुहार, कूंजड़े, बढ़ई, संगतराश, और मोची वग़ैरह शहरमें हैं; लेकिन् गांवोंमें ज़ियादहतर खेती पेशा लोग हैं. कपड़ा और ग़ल्लह अदल बदलकी मुख्य चीज़ है. काले पत्थरके खिलौने, आबख़ोरे और मूर्तियां डूंगरपुरमें बनती हैं. सागवानकी सादी व रंगीन तिपाई और चारपाई वग़ैरह चीज़ें अक्सर बढ़ई लोग बनाते हैं.

डूंगरपुरमें कोई पाठशाला नहीं है, राजधानीमें पुलिसका बन्दोबस्त एक कोतवाल और २९ कांस्टेब्ल् करते हैं, और ज़िलोंमें छः जगह पुलिस है, जिनमें एक थानहदार, दो नाइब और कुछ कांस्टेब्ल् रहते हैं. अव्वल दरजेके थानेदारको

एक महीने जेलख़ानह और २५ रुपया जुर्मानह, दूसरे दरजे वालेको १० रुपया जुर्मानह और आठ दिन जेलख़ानह भेजनेका इख़्तियार है; छोटे छोटे मुक़द्दमोंकी मिस्ल नहीं रक्खीजाती, लेकिन् बड़े मुक़द्दमोंके काग़ज़ात तह्क़ीक़ातके बाद कचहरीमें भेजदिये जाते हैं.

सड़कें, शहर और मश्हूर जगह.

इस राज्यमें कोई बनाई हुई पक्की सड़क नहीं है, बांसवाड़ेसे डूंगरपुरमें होकर गाड़ीकी कच्ची सड़क खेरवाड़ेको गई है. दूसरी सागवाड़ेमें होकर बांसवाड़ेसे खैरवाड़ेको पहुंची है. ये दोनों सड़कें पश्चिमोत्तरमें हैं. तीसरी दक्षिण पश्चिममें सलूंबरसे डूंगरपुरमें होकर बीछीवाड़ेको गई है, और यह उदयपुरसे अहमदाबादको जानेवाली सड़कसे राजकी दक्षिण पश्चिमी सीमापर मिलती है. ख़ास मक़ाम राजधानी डूंगरपुर, गलियाकोट और सागवाड़ा, नोसराम, गींजी, बीछीवाड़ा, आसपुर और बनकोड़ा हैं, जिनमेंसे डूंगरपुर, गलियाकोट और सागवाड़ा तीनों तिजारतके ख़ास मक़ाम हैं; वर्ष भरमें दो मेले, एक तो बनेश्वर और दूसरा गलिया-कोटमें फ़ेब्रुअरी और मार्च महीनेके अन्दर होते हैं; पिछले मेलेमें मुसल्मान बोहरोंके सिवाय और लोग बहुत कम जाते हैं, और यह बोहरोंका ही जारी किया हुआ है; पहिले मेलेमें सब तरहके लोग जमा होते हैं, जिनका शुमार पन्द्रह हज़ारसे बीस हज़ार तक है; यह मेला पन्द्रह दिन तक रहता है, और इसमें आस पासके सौदागर भी आते हैं. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में इस मेलेपर १४३००० का माल आया था, जिसमेंसे ११७५०० का सामान बिक गया.

बनेश्वरमें एक देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जहां सब ज़ातके हिन्दू पूजाके लिये आते हैं. यह जगह सोम और माही नदीके संगमपर है, और वहांका जल बहुत पवित्र समझागया है. गलियाकोटमें एक मुसल्मानका रौज़ह है, जो फ़ख़्रुद्दीनके नामसे मश्हूर है. बनकोड़ाके लोग एक विष्णूका मन्दिर विष्णू अवतारके लिये रखते हैं, जिसका नाम मानजी कहलाता है; और यह बनेश्वरके पास ही है. यहां गुजराती और हिन्दुस्तानी मिली हुई भाषा बोली जाती है, जो बागड़ी कहलाती है.

तवारीख़.

डूंगरपुरका तवारीख़ी हाल बहुत कम मिलता है, क्योंकि न तो वहांके आदमी

इस इल्मसे वाक़िफ़ हैं, और न वहांके राजाओंको इस बातका शौक़ हुआ; मैंने विद्यमान महारावलसे दो दफ़ा मुलाक़ात की, पहिले धूलेवमें, जब वह ऋषभदेवके दर्शन करनेको आये थे, और मैं भी इसी कामके लिये वहां गया था; दूसरी बार भीलोंके बलवेमें हुई, जब कि वे खैरवाड़ेकी छावनीमें आये थे, और मैं वहां गया था; मैंने तवारीख़के फ़ाइदे दिखलाकर बहुत कुछ कहा, और महारावलने भी तह्क़ीक़ात करवाकर भेजनेका इक़ार किया; उन्होंने एक कुर्सीनामह व अपना हाल मुख़्तसर मेरे पास भेजा, जिसमें चन्द प्रशस्तियां अल्बत्तह मुफ़ीद हैं; उन प्रशस्तियोंसे, नैनसी महताकी पुस्तकसे और राजपूतानह गज़ेटियर व बड़वा भाटोंकी पोथियोंसे चुनकर, जो कुछ हाल मिला, वह यहां लिखता हूं:-

मेवाड़ और मारवाड़की ख्यातोंमें इस तरह लिखा है, कि रावल करण १ के दो बेटे एक माहप, दूसरा राहप था; जब मंडोवरका राणा मोकल परिहार करणसिंहको तक्लीफ़ देने लगा, तो उन्होंने अपने बड़े बेटे माहपको उसके पीछे भेजा, माहप कुम्भलमेरके पहाड़ोंमें शिकार खेलने लगा, और राणा मोकलका कुछ प्रबंध न करसका; थोड़े अर्से बाद माहप अपने बापके पास चला आया. यह बात राहपको नागुवार गुज़री, उसने राणा मोकलको बरातके बहानेसे मंडोवरमें घुसकर गिरिफ़्तार करलिया, और अपने बाप करणके पास लेआया. रावल करणने मोकलसे राणाका ख़िताब छीनकर अपने छोटे बेटे राहपको दिया (१). यह बात माहपको बुरी मालूम हुई, और नाराज़ होकर अहाड़ गांवमें चला आया, जहां अब उदयपुरसे पूर्व दो मीलके फ़ासिलेपर महाराणाओंका दग्धस्थान है. इस बातसे महारावल करणने नाराज़ होकर अपने छोटे बेटे राणा राहपको वलीअह्द किया; महारावलका इन्तिक़ाल होनेपर राहप राणाके ख़िताबसे मेवाड़का मालिक कहलाया (२).

नैनसी महताको डूंगरपुरके सांइया झूलाके बेटे भाणा, उसके बेटे रुद्रदासने जो हाल लिख भेजा, उसके अनुसार वह इस तरहपर लिखता है:- कि रावल माहपने अपने छोटे भाई राहपको उसकी ख़िद्मतोंसे खुश होकर मेवाड़का राज्य दे दिया, और आप अहाड़में आरहा; इसी तरह डूंगरपुरके विद्यमान लोग भी ज़िक्र करते हैं: लेकिन् इनके सिवाय ऐसा और कोई बयान नहीं करता.

---

(१) रावल करण और राहप व माहपका हाल हमने अपनी रायके साथ इस किताबके पहिले हिस्सेमें मुफ़स्सल लिखा है.

(२) हमारे ख़यालसे माहप नाउम्मेद होकर बैठ रहा, और राहप चित्तौड़ लेनेके इरादेपर मस्रूफ़ रहकर लड़ाइयां किये गया.

माहपने डूंगरिया मेरको मारकर डूंगरपुरका शहर आबाद किया. मेवाड़की किताबोंमें इस शहरके आबाद करनेमें भी महाराणा राहपकी मदद लेना लिखा है; डूंगरपुरसे जो प्रशस्तियां आईं, उनमें सहस्रमल्ल रावल और पूंजा रावलके बनाये हुए मन्दिरोंमें वंशावली लिखीगई है, लेकिन् एकसे दूसरी नहीं मिलती; इस वास्ते पुराना हाल सहीह लिखना बहुत मुश्किल है, परन्तु कई तरहसे यह साबित है, कि यह रियासत पुराने ज़मानेसे उदयपुरके मातह्त रही है. उनकी पीढ़ियोंके नाम बड़वा भाटोंकी पोथियोंके मुवाफ़िक़ नीचे लिखते हैं:-

मेवाड़के रावल करणसिंहका बेटा १ रावल माहप, २- रावल नर्बद (१), ३- रावल भीलो, ४- रावल केसरीसिंह, ५- रावल सांवन्तसिंह, ६- रावल सीहड़देव, ७- रावल दूदा, ८- रावल बरसिंह, ९- रावल भाचन्द, १०- रावल डूंगरसिंह, ११- रावल करमसिंह, १२- रावल कान्हड़देव, १३- रावल पत्ता, १४- रावल गोपालदास, १५- रावल समदरसिंह, १६- रावल गंगदास.

यहां तककी ज़ियादह तवारीख़ नहीं मिलती. बाज़ कहते हैं, कि माहपने पहिले बड़ौदामें राजधानी बनाई, जो डूंगरपुरके इलाक़हमें एक गांव है; और रावल बीरसिंहने डूंगर भीलको मारकर डूंगरपुर राजधानी क़ाइम की, जिसके बारेमें एक कहानी मश्हूर है, कि डूंगर भीलने अपने भाई बेटों समेत महाजनोंकी लड़कियां ज़बर्दस्ती ब्याह लेनी चाहीं, तब महाजनोंने रावल बीरसिंहसे मदद मांगी; रावलने शादीमें शरीक होनेके बहानेसे डूंगर और उसके सैकड़ों साथियोंको शराब पिलाकर ग़फ़लतकी हालतमें मारडाला; उसी भीलके नामपर डूंगरपुरका शहर बसाया; लेकिन् इस कहानीमें और रावलके नाममें हर एक जगह और हर एक लिखावटमें इख़्तिलाफ़ है.

रावल कान्हड़देवने अपने नामका दर्वाज़ह और बाज़ार आबाद किया. इनके बाद रावल पत्ताने पातेला तालाब और इसी नामका दर्वाज़ह बनवाया.

रावल गैबाने, जो विक्रमी १४९८ [हि० ८४५ = ई० १४४१] में गद्दीपर बैठे थे, गैबसागर तालाब और बादल महल बनवाये, जो अब तक मौजूद हैं; उससे शहर डूंगरपुरकी ख़ूबसूरती मालूम होती है.

रावल गंगदासकी गद्दीपर १८ रावल उदयसिंह अव्वल बैठे, यह महाराणा संग्रामसिंह अव्वल याने सांगाके बड़े सर्दारोंमें थे. बादशाह बाबरने अपनी किताब

---

(१) नम्बर २, ३, ४, ५, रावलोंके नाम डूंगरपुरसे भेजे हुए कुर्सीनामेमें नहीं हैं, और नम्बर ८ रावल बरसिंहकी जगह बीरसिंह, नम्बर ९ का नाम भरतुंड, १५ नम्बरके एवज़ गैबाजी और १६ नम्बरके बदले सोमदास लिखा है.

तुज़ुक बाबरीके पत्र २४३ में रावल उदयसिंहको महाराणा सांगाके सर्दारोंमें बारह हज़ार सवारका मालिक लिखा है. यह रावल उदयसिंह उक्त महाराणाके साथ विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२८] में बाबर बादशाहसे लड़कर बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. इनके बड़े बेटे १९ एथ्वीराज और छोटे जगमाल थे; एथ्वीराज गद्दीपर बैठे, तो जगमालने बागड़के कई पर्गनोंपर अमल करलिया.

नैनसी महता लिखता है, कि एथ्वीराजने चहुवान मेरा बागड़िया और रावत् पर्वत लोलाड़ियाको जमइयतके साथ भेजा; उन दोनों राजपूतोंने बड़ी बहादुरीके साथ जगमालको बागड़से बाहर निकालदिया. इन लड़ाइयोंमें दोनों तरफ़के सेकड़ों राजपूत मारेगये. चहुवान मेरा और रावत् पर्वत फ़त्हके साथ इस उम्मेदपर डूंगरपुर आये कि रावल एथ्वीराज हमको इन्आम देगा, लेकिन् उनको उसका नतीजा उल्टा मिला; उन सर्दारोंके साथमेंसे एकने रावलसे जाकर कहा, कि जगमाल काबूमें आगया था, पर इन दोनों सर्दारोंने जान बूझकर उसे जानेदिया. इस बातपर नाराज़ होकर रावलने दोनों राजपूतोंकी ड्योढ़ी बन्द की. और कहा, कि तुम हमारे हरामख़ोर हो, जो हमारा दुश्मन काबूमें आया हुआ, तुम्हारी मिलावटसे जीता चलागया. ये दोनों राजपूत नाराज़ होकर जगमालसे जामिले, और जगमाल भी उनके मिलनेसे ताक़तवर होकर बागड़का देश लूटने लगा. एथ्वीराजने भी अपनी फ़ौज मुक़ाबलहको भेजी, दोनों तरफ़के बहादुर अच्छी तरहसे लड़े; लेकिन् एथ्वीराजकी फ़ौजने शिकस्त खाई, क्योंकि मेरा और पर्वतसिंहके साथ अच्छे अच्छे राजपूत जगमाल के पास चलेगये थे; आख़िरकार एथ्वीराजने लाचार होकर बागड़का आधा देश जगमालको बांटदिया; एथ्वीराज डूंगरपुरमें, और जगमाल बांसवाड़ेमें राजधानी बनाकर रहने लगे.

मेवाड़की पोथियोंमें लिखा है, कि महाराणा रत्नसिंहने जगमालकी हिमायत करके एथ्वीराजसे आधा राज बंटवादिया, जिसकी तस्दीक़ तारीख़ फ़िरिश्तह और मिरात सिकन्दरीके एष्ठ २४३ में लिखी है, कि " बहादुरशाह गुजराती मुरासेमें अपने लश्करको देखकर बागड़में आया, डूंगरपुरके राजा एथ्वीराजने सुंबुल मक़ामपर हाज़िरी दी; बादशाह लश्करको वहीं छोड़कर आप शिकार खेलनेको बांसवाड़े गये, और करजीके घाट तक शिकार खेला; उस जगह चित्तौड़के राणा रत्नसिंहके वकील डूंगरसी और भांभरसी आये. फिर सुंबुल मक़ामपर पहुंचकर बादशाहने बागड़का मुल्क एथ्वीराज और जगमालको आधा आधा बांटदिया."

इससे पाया जाता है, कि महाराणाके वकील भी इसी मत्लबके लिये बादशाहके पास गये होंगे, जिन्होंने इसी मत्लबकी बातें भी बहादुरशाहको अपना शरीक बनानेके

लिये कही थीं. रावल पृथ्वीराजका इन्तिक़ाल होनेपर उनके बेटे २० आशकरण गद्दीपर बैठे, क्योंकि विक्रमी १५८८ [हि० ९३७ = ई० १५३१] में रावल पृथ्वीराज मौजूद थे, और विक्रमी १५९० [हि० ९३९ = ई० १५३३] में जब बहादुरशाह गुजराती चित्तौड़पर चढ़ आया था, तब आशकरण महाराणाकी फ़ौजमें शामिल थे; इस अर्सेके बीचमें रावल पृथ्वीराजका इन्तिक़ाल और रावल आशकरणका गद्दी नशीन होना पाया जाता है. महाराणा विक्रमादित्यके बेजा बर्तावसे कुल सर्दारोंके दिल बिगड़गये, उसी तरह रावल आशकरण भी नाराज़ होकर चित्तौड़से डूंगरपुर चलेगये; इन्होंने बनेश्वरमें पुरुषोत्तम भगवानका मन्दिर बनवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६१७ ज्येष्ठ शुक्ल ३ [हि० ९६७ ता० २ रमज़ान = ई० १५६० ता० २६ मई] को हुई थी. महाराणा उदयसिंहके साथ कई लड़ाइयोंमें इनकी बहादुरी मश्हूर है.

अबुल्फ़ज़्ल अक्बरनामहकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ १६९ में लिखता है, कि- "जब बादशाह बांसवाड़ेके पास पहुंचे, तो विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में रावल प्रतापने, जो वहां सर्कश था, मए डूंगरपुरके ज़मींदार रावल आशकरण वगैरहके ताबेदारी इख़्तियार की."

इस वक़्से डूंगरपुर और बांसवाड़े वालोंने बादशाही ताबेदार बनना शुरू किया, फिर मालूम नहीं, कि रावल आशकरण कब इस दुन्याको छोड़गया. फिर उनके बेटे सहस्रमल्ल गद्दीपर बैठे, इन्होंने सुरपुरकी नदीके तीरपर माधवरायका मन्दिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६४७ [हि० ९९८ = ई० १५९०] में की, वहां एक प्रशस्ति भी है, जिसमें डूंगरपुरकी वंशावली और कुछ हाल लिखा है- (देखो शेषसंग्रह नम्बर ४).

इनके बाद रावल करमसी गद्दीपर बैठे, जिनका ज़ियादह हाल नहीं मिलता.

इनके बाद रावल पूंजा मस्नद नशीन हुए, जिन्होंने गैबसागर तालाबकी पाल पर गोवर्द्धननाथका एक मन्दिर विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में बनवाकर एक प्रशस्ति भी खुदवाई, जिसमें रावल पूंजा तक वंशावली लिखी है, और नैनसी महताने इसी वंशावलीको अपनी पोथीमें दर्ज किया है, और एक गांव भी मन्दिरकी भेट विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में किया-(देखो शेषसंग्रह नम्बर ५). जब विक्रमी १६७१ [हि० ११२६ = ई० १७१४] में जहांगीर बादशाह और महाराणा अमरसिंह अव्वलकी सुलह हुई, तब कुंवर करणसिंहकी जागीरके फ़र्मानमें डूंगरपुर भी दर्ज है-(देखो पृष्ठ २४८); उस फ़र्मानमें डूंगरपुरको गैर अमली लिखा है, जिससे यक़ीन होता है, कि रावल आशकरणने अक्बरकी ताबेदारी कुबूल की, वह थोड़े दिनों तक रही होगी, क्योंकि मुसल्मानोंकी ताबेदारीसे महाराणाकी

तावेदारी करना उनको ज़ियादह पसन्द होगा, जो एक अर्सेसे उनके बड़े करते आये थे, जिसपर भी राजपूतोंको आपसका ताना बड़ा नागुवार गुज़रता है; अगर दिल दूसरी तरफ़ हो, तो भी शर्मिन्दगीसे वह काम नहीं कर सक्के, जिससे बिरादरीका ताना सहना पड़े. इसलिये आशकरण, सहस्रमल्ल और करमसी महाराणा प्रतापसिंह अव्वल व अमरसिंह अव्वलकी लड़ाइयोंमें ज़रूर साथ होंगे.

पूंजा रावलने शाहज़ादह खुर्रमसे बग़ावतके वक्त कुछ मिलाप करलिया, जिससे जहांगीरके मरनेपर खुर्रम याने शाहजहां बादशाह बना, तो पूंजाने भी महाराणा जगत्सिंह अव्वलकी हुकूमतसे निकलना चाहा, जिससे महाराणाने अपने प्रधान अक्षयराज वगैरहको कई सर्दारोंके साथ भेजकर रावल पूंजाको फिर अपना तावेदार बनाया, जिसका ज़िक्र महाराणा जगत्सिंह अव्वलके हालमें लिख आये हैं- (देखो पृष्ठ ३१९).

रावल पूंजाने अपने नामसे पुंजपुर गांव आबाद करके पुंजसागर तालाब बनवाया.

इनके बाद रावल गिरधरदास गद्दीपर बैठे. जब महाराणा [जगत्]सिंह अव्वलने इस दुन्याको छोड़ा, तब रावल गिरधरदासने भी महाराणाकी तावेदारीसे सिर फेरा; राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके आठवें श्लोकमें लिखा है, कि विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] में फ़ौज भेजकर रावल गिरधरदासको महाराणा राजसिंहने फिर अपना तावेदार बनाया.

इनके बाद रावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठे, जिनको जसराज भी कहते हैं. विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = ई० १६७५] में जब महाराणा राजसिंहने राजसमुद्र तालाबकी प्रतिष्ठा की, तो उस वक्त डूंगरपुरके रावल जशवन्तसिंह थे; इससे उक्त समय पहिले गिरधरदासका परलोक वास होना पायाजाता है. इनके बाद खुमानसिंह गद्दीपर बैठे, महाराणा राजसिंह १ और आलमगीरकी लड़ाईके बाद डूंगरपुरके रावलने फिर बादशाही तावेदार बननेकी कोशिश की, और महाराणा दूसरे अमरसिंहकी गद्दी नशीनीके वक्त टीकेका दस्तूर लेकर हाज़िर भी नहीं हुए; इस नाराज़गीसे उक्त महाराणाने अपने काका सूरतसिंहको बड़ी फ़ौजके साथ डूंगरपुर भेजा; सोम नदीपर डूंगरपुरके कई चहुवान राजपूत मुक़ाबलह करके मारेगये; महाराणाकी फ़ौजने डूंगरपुरको घेरलिया. तब रावल खुमाणसिंहने घबराकर अपनी तलवार बन्दी व फ़ौज खर्च के एवज़ एक लाख पछत्तर हज़ारका रुक्का लिखकर देवगढ़के रावत् द्वारिकादासको अपना सुफ़ारिशी और रुपयोंका ज़ामिन बनाया.

रुक़्हकी नक़्ल.

श्रीरामोजयति १

स्वस्ति श्री महाराज धिराज महाराणा श्री अमरसिंघजी आदेशातु, रावल श्री पुमाणसींघजीरे कपुर (१) कीधो, जणीरी वीगत रुपीया १७५००० ईपरे रुपीया एक लाप पीचोतर हजार, हाथी २ दोय, माला १ मोतीरी—

वीगत रुपीया

१००००० रुपीया एक लाप, हाथी २, माला १, पेंहेली भरसी

३५००० पंधी १ एक संवत १७५६ री ऊनाली माहे भरसी, रुपीया पेतीस हजार

४०००० पंधी १ संवत १७५७ री सीआली माहे भरसी, रुपीया च्यालीस हजार

१७५००० जेठ सुद ५ भोमे संवत १७५५ वर्षे (२).

यह मुआमलह ठहराकर महाराज सूरतसिंह तो उदयपुर चलाआया, और देवगढ़का रावत् द्वारिकादास रुपया वुसूल करनेको एक आदमीके साथ पचास सवार वहां छोड़ आया; उन सवारोंने रावल खुमाणसिंहको तंगकर रक्खा था, महारावल सवारोंको टालता रहा, और एक अर्ज़ी बादशाह आलमगीरके नाम इस मत्लबकी लिख भेजी, कि महाराणा दूसरे अमरसिंह बहुत बड़ी फ़ौज एकट्ठी करके बादशाही मुल्क पर हमलह करना चाहते हैं, और मुझे भी अपने शरीक होनेको कहा, मैंने हुज़ूरकी ख़ैरख़्वाहीपर निगाह रखकर इन्कार किया, जिससे नाराज़ होकर फ़ौजकशीसे मुझको बर्बाद करते हैं. यह अर्ज़ी तहक़ीक़ातके लिये अजमेरके सूबहदारके पास भेजीगई, और उसने तहक़ीक़ात की. इस बारेके फ़ार्सी काग़ज़ोंकी नक़्लें महाराणा दूसरे अमरसिंह के हालमें लिखीगई हैं- (देखो पृष्ठ ७३५).

खुमाणसिंहके बाद उनके बेटे महारावल रामसिंह गद्दीपर बैठे. यह भी अपने बापकी नसीहतोंके मुवाफ़िक़ महाराणासे जुदा होना चाहते थे, और महाराणा उनको

(१) मेवाड़में दस्तूर है, कि किसीसे जुर्मानह अथवा तलवार बन्दीके रुपये लिये जावें, तो उनको कपूरके रुपये कहते हैं; इसका मत्लब यह है, कि देने वाला लाचार होकर कहता है, कि आप पानकी बीड़ी खाते हैं, उसमें जो कपूर डाला जावे, उस कपूरके कारखानेमें यह रुपये जमा कीजिये; वह इस बातसे उनका बड़प्पन दिखलाता है.

(२) यह संवत् श्रावणी है, और चैत्री संवत् विक्रमी १७५६ होता है.

अपने सर्दारोंमें शुमार करते थे; महारावल रामसिंहपर पंचोली विहारीदास फ़ौज लेकर गया, और एक लाख छब्बीस हज़ार रुपयेका रुक़ह लिखवाकर दूसरा रुक़ह न जाने किस मत्लबसे लिखवाया, वह हमको अस्ल मिला, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:-

रुक़्क़ेकी नक्ल.

श्रीरांमजी १

सीधश्री श्री दीवांणजी आदेशातु, प्रतहुवे पंचोली वीहारीदासजी अप्र ॥ डुगरपुर रावल रांमसीघजीरे पेसकसीरो ठेराव कीयो, मुकांम गांम फलोदरे डेरे——————
वीगत रु ——————————————————

पेहली रु १२६००० एक लाप छावीस हजार कीया सो सावत.

पंचोली श्री वीहारीदासजीरा डेरा गांम डीमरत्या आसपुरथी गांम फलोद हुवा, सो नीज्र कीया, चुहांण माधोसीघ, चुहांण अवचलसीघ, पुआर साचो, भंडारी गणेस, स्मस्त पांचा भेला व्हे कीया——————
वीगत——————————————

हाथी १ दंतीलो परीद रु० २५०००) रो से, ज्यो नीजर करसी——————
२०००० रोकड़ा रुपीया वीस हजार——————

लीपतं साह देवा लाधावत गांम फलोदरे डेरे स १७७४ आसोज सुदी ४, स्रो लीपंतरा पत २ पाछा देने रुपीया भरसी, त्था रावल रामसीघजी गांम फलोदरे डेरे आवे मीलसी, रावत् जोधसीघ, रावत सांवतसीघजी, कुअर दुरजंणसीघजी, साह देवो लेवा चालसी, या थाप कीधी.

मतो राउलजी.

अतो रु ——————————————————

२०००) छोड्या रावतजी रे अरज कीधी तीथी

१८०१०) बाकी सावत हाथी १

रावल रामसिंह बहादुरीमें बड़े मश्हूर थे, भील लोगोंपर इनका रोब ऐसा ग़ालिब था, कि बिल्कुल चोरी डकैती बन्द होकर इनका नाम लेनेसे थर्राते थे. इनके राज्यमें महाजन व्यापारियों और किसानों वग़ैरहको बड़ा चैन था; डूंगरपुरकी तवारीख़में लिखा है, कि इन्होंने गुजरातकी तरफ़ लूणावाड़ा, कडाणा तक अमल्दारी बढ़ाली; और उस ज़िलेमें छोटी गढ़ियें बनवालीं, जिनको लोग अब तक रामगढ़ीके नामसे पुकारते हैं. यह रावल बारह वर्ष तक लड़ाई झगड़ोंमें निरन्तर शस्त्र बद्ध रहे. इनके बाद इनके बेटे शिवसिंह गद्दीपर बैठे, यह बड़े अ़क्लमन्द, बहादुर और फ़य्याज़ मश्हूर थे; इन्होंने बादशाहतका ज़वाल और अपनी रियासतकी बर्बादीकी चाल ढाल जानकर महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके साथ सुलह करके धाय भाई नगराजकी मारिफ़त इक़ारनामह लिखदिया, जिसकी नक़ल हम नीचे लिखते हैं:-

——×——

इक़ारनामहकी नक्ल.

श्रीरांमजी १

।लीप्यो १ डुगरपुर रावल सीवसीघजीरो

।सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, प्रत दुअै धाअभाई नगजी अप्रंच ॥ रावल श्री सीवसीघजी लीपतां, रांणा श्री जगतसीघजी राणा श्री राजसीघजीरी वार मांहें पेली सेवा करता मास ६, जो सेवा करसी; फोज फांटे हुकंम प्रमांणे सेवा करसी. सं १७८६ वेसाप सुद ६ दीने आछा साथ सांमांन थी धाअभाई नगजीरा कागल प्रमांणे सताव आवे भेला हा. सं १७८६ वेसाप सुद ६ दीने————————

——×——

इसी मुचल्केके साथ तलवार बन्दीके रुपयोंका रुक़ा लिखा गया, उसकी भी नक़ल यहांपर दर्ज कीजाती है:-

तलवार बन्दीके रुपयोंके रुक़ेकी नक्ल.

——×——

लीप्यो १ रु० ४००००० डुगरपुर कीदा तीरी नकल लीषी————

सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, प्रत दुअै धाअभाई नगजी अप्रंच ॥ रावल श्री सीवसीघजीरे केदरा रुपीआ ४००००० अके रुपीआ च्यार लाष कीदा, सो भंडार भरसी, रोकडा पेली भरसी. सं १७८६ वेसाष सुद ६.

अत्रमतु सवत

रावल सीवसीघजी मतो.

दसकत भंडारी गणेस

गांधी गोकलजी.

मालूम होता है, कि ये दोनों काग़ज़ पूरे दबावके साथ लिखवाये होंगे, क्योंकि रावल खुमाणसिंहसे एक लाख पछत्तर हज़ार, रावल रामसिंहसे एक लाख छब्बीस हज़ार लिये थे, और इस वक्त चार लाखका रुक़ह लिखवाया गया, तो ऐसी बड़ी रक़म बग़ैर दबावके मंज़ूर करना क़ियासमें नहीं आता; और यह भी मालूम होता है, कि रावल रामसिंहने गुजरातकी लूट खसोटके साथ जो नये पर्गने लिये, उनकी आमदनीसे ख़ज़ानह भी अच्छा एकट्ठा करलिया था, क्योंकि गुजरातकी तरफ़ क़िले बनवाये गये. रावल शिवसिंहने डूंगरपुरके गिर्द शहर पनाह तय्यार करवाई, और वागड़में भी कई छोटे छोटे क़िले बनवाये; महाराणाको इतनी बड़ी रक़म देनेके अलावह रावल शिवसिंहने और भी बड़े काम किये, जिनमें बहुत ख़र्च हुआ था. इसके सिवाय रावल शिवसिंहकी फ़य्याज़ी कवि लोग अपनी शाइरीमें अब तक बड़ी मुहब्बतके साथ याद रखते हैं; रअय्यत भी महारावल शिवसिंहको नहीं भूली है. उनकी जारी कीहुई पचपन रुपये भर सेरकी शिवशाही तोल और दूसरे कई बर्ताव उस ज़िलेमें जारी हैं; रियासतमें शिवशाही पगड़ी वग़ैरह बहुतसे दस्तूर उन्होंने क़ाइम किये थे. शिवराजेश्वरका मन्दिर तय्यार करवाया, और दूसरे भी मन्दिरोंकी मरम्मत विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में करवाई.

उदयपुरके महाराणा दूसरे भीमसिंह विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = ई० १७८३] में ईडरके महाराजा शिवसिंहकी बेटीके साथ शादी करनेको गये, तो डूंगरपुरके रावल शिवसिंह भी बरातके साथ थे, और पीछे लौटते वक्त शिवसिंह महाराणाकी मिह्मानीके लिये डूंगरपुर चले आये, चार कोस तक महाराणाकी पेश्वाई की, और पगमंडा व नज़्र, निछावर सब दस्तूरके मुवाफ़िक़ किया; वापसीके वक्त महाराणाको चार कोस तक पहुंचाया. थोड़े ही दिनोंके बाद रावल शिवसिंहका देहान्त होगया, और रावल वैरीशाल गद्दीपर बैठे; कुछ अर्से बाद इनका भी इन्तिक़ाल होगया, और उनके बेटे फ़तहसिंह गद्दीपर बैठे. इन्होंने उदयपुरका तअ़ल्लुक़ छोड़दिया. जब महाराणा दूसरे भीमसिंह दोबारह ईडर शादी करनेको गये, तो उस वक्त फ़तहसिंह बरातमें नहीं आये, जिससे नाराज़ होकर महाराणाने लौटते वक्त डूंगरपुरको घेरलिया; महारावलने तीन लाख रुपयेका रुक़ह लिखकर पीछा छुड़ाया. यह हाल तपसीलवार महाराणा दूसरे भीमसिंहके बयानमें लिखा

जायेगा. यह रावल फ़त्हसिंह फ़साद फैलनेसे बिल्कुल ज़वालमें आगये थे.

महारावल जशवन्तसिंह.

रावल फ़त्हसिंहके बाद महारावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठे, इनके वक्तमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे अह्दनामह हुआ, और जो टांका मरहटोंको देते थे, वह अंग्रेज़ी सर्कारको देना क़रार पाया. इस बारेमें राजपूताना गज़ेटियरकी पहिली जिल्दके २७५ पृष्ठमें इस तरह लिखा है:-

"जब मुसल्मानी बादशाहत बिगड़ी, तो दूसरी छोटी छोटी रियासतोंके मुवाफ़िक़ डूंगरपुर भी मरहटोंके ताबे हुआ, और पेंतीस हज़ार रुपया लगानका सेंधिया, हुल्कर और धारके सर्दारोंमें बांट दियेजानेका बन्दोबस्त हुआ; परन्तु अन्तमें धारके सर्दारोंने ही अपना हक़ करलिया. मरहटोंके बर्बाद होने बाद यह देश पिंडारों या दूसरे लुटेरे और अरब व अफ़्गान लोगोंके गिरोहका, जिन्हें सर्दारोंने अपने बचावके वास्ते नौकर रक्खा था, शिकार हुआ, (याने छीन लिया गया, और कई वर्ष तक सिंधियोंका क़ब्ज़ह रहा). आख़िरकार ये लोग अंग्रेज़ी फ़ौजसे निकलवादिये गये, क्योंकि सर्कार अंग्रेज़ी विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] के सुलहनामहके मुताबिक़ इस राज्यको अपनी हिफ़ाज़तमें लेचुकी थी, और तभीसे ख़िराज भी सर्कारका होगया था, तो भी कई वर्ष तक बड़ी ख़राबी रही: क्योंकि राजपूत सर्दार अपनी रियासतके भीलोंमें लूटने और भूमि लेनेके लालचसे मिलगये, और कोई भीलोंको दबावमें न रखसका. तब अंग्रेज़ी अफ़्सरोंके साथ एक फ़ौज भेजीगई, और भील व सर्दार मिलालिये गये; थोड़े ही दिनोंमें बिल्कुल बर्बादी दूर हुई; रावल जशवन्तसिंह चाल चलन ठीक न होनेके सबब हुकूमत करनेके लाइक़ न था; इसलिये विक्रमी १८८२ [हि० १२४० = ई० १८२५] में अलग कियागया, और उसका दत्तक पुत्र दलपतसिंह सावन्तसिंहका पोता, जो प्रतापगढ़का राजा था, क़ाइम किया गया.

विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में प्रतापगढ़की हुकूमत दलपतसिंहको इस शर्तपर मिली, कि उदयसिंहको डूंगरपुरमें अपना जानशीन बनालेवे, लेकिन् जब तक प्रतापगढ़का सर्दार रहे, और वह लड़का बालक रहे, तब तक डूंगरपुरका प्रबन्ध भी वही करे. इस मौक़ेपर जशवन्तसिंहने अपनी हुकूमत लेनेकी बहुत कुछ कोशिश की, पर नाकामयाब हुई, और वह मथुरा भेजागया, जहां कि बन्दोबस्तमें रहा. वह बन्दोबस्त, जिससे दलपतसिंह प्रतापगढ़में रहनेके वक्त डूंगरपुरका मालिक बनायागया, ठीक नहीं ठहरा; इसलिये विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में उसने डूंगरपुरका बिल्कुल तअल्लुक़ छोड़दिया, और

वह एक देशी एजेंट (मुन्शी सफ़दरहुसैन) के अधिकारमें विद्यमान रावल उदयसिंहके होश्यार होने तक रक्खागया. डूंगरपुर वालोंने दत्तक लेनेका इख्तियार पाया है, और उनकी पन्द्रह तोपोंकी सलामी है."

महारावल उदयसिंह–२.

महारावल जशवन्तसिंह और दलपतसिंहके बाद महारावल उदयसिंह विक्रमी १९०३ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १२६२ ता० ७ शव्वाल = ई० १८४६ ता० २९ सेप्टेम्बर] को गद्दीपर बैठे, जब तक इन्हें इख्तियार नहीं मिला, तब तक इनको रजवाड़ोंकी सैर करनेको गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे हिदायत हुई थी; इसपर यह उदयपुरमें महाराणा स्वरूपसिंहके पास आये थे, और क़दीम दस्तूरके बमूजिब इनकी इज़्ज़तका बर्ताव कियागया. यह महारावल नेक तबीअ़त, नेक आदत, फ़य्याज़, बहादुर, सच्चे, ईमान्दार और जगत् मित्र हैं. इस किताबका लिखनेवाला (कविराजा श्यामलदास) भी इनसे दो दफ़ा मिला, तो उनका अख़्लाक़ व मिलनसारी लाइक़ तारीफ़के पाई. रअ़य्यत और सर्दार सब लोग इनके मिज़ाजसे खुश हैं, और ग़ैर इ़लाक़ेका कोई अदना व आला, जो इनसे मिलता है, वह ज़िन्दगी भर इनकी खुश अख़्लाक़ीको नहीं भूलता, गवर्मेंट अंग्रेज़ीके अफ़्सर भी इनसे खुश हैं. अपने इ़लाक़हका हर साल दौरह करते हैं; किसी पालके भीलोंकी बग़ावत सुनते हैं, तो उसी वक़्त खुद पहुंचकर दबाग़तसे या फ़हमाइशसे अम्न करदेते हैं. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] के अकालमें इन्होंने रिआ़याके साथ बड़ी हमदर्दी की; इनके एक पुत्र खुमाणसिंह जवान हैं, लेकिन् उनकी आदत, व होश्यारी और चाल चलनसे लोग बहुत कम वाक़िफ़ हैं. और विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = ई० १८८७] में महारावलके एक पोता भी पैदा हुआ है.

पहिले दरजेके ठाकुर ताज़ीम पाते हैं. यह सब सर्दार राजपूत, कुछ महारावलके रिश्तहदार और कुछ चारण हैं, जिनकी जागीर व आमदनीका हाल नक्शेमें दर्ज है.

पहिले दरजेके जागीरदारोंका नक़्शह मए गांव व आमदनी.

गोत्र.	नाम.	जागीर.	गांव.	आमदनी सालिमशाही रुपयेसे.
चहुवान.	केसरीसिंह.	बनकौड़ा.	२७ $\frac{३}{४}$	११०२५)
चहुवान.	गंभीरसिंह.	छीतरी.	७	५४०५)
चहुवान.	दीपसिंह.	पीठ	३७	५७१५)
चहुवान.	उदयसिंह.	ठाकरड़ा.	१२	६४४४)
चहुवान.	डूंगरसिंह.	मांडो.	१४॥	५३७५)
चहुवान.	भवानसिंह.	बमासा.	२	१६०५)
चहुवान.	धीरतसिंह.	वीछीवाड़ा.	६॥	२७१०)
चहुवान.	केसरीसिंह.	लोडावल.	२॥	१४५०)
अहाड़िया.	उम्मेदसिंह.	नांदली.	५॥	१६३२)
अहाड़िया.	गुलाबसिंह.	सावली.	३॥	७०४)
राठोड़.	उदयसिंह.	कूआं.	३५॥	६४८४)
चूंडावत.	प्रतापसिंह.	रामगढ़.	२	२४६५)
चूंडावत.	पहाड़सिंह.	सोलज.	१४	१७६५)
सोलंखी.	लक्ष्मणसिंह.	ओड़ां.	२	२३४५)
चारण.	बाणसिंह.	नौगावां.	१	२०००)
चारण.	जगतसिंह.	कड़ावाड़ा.	३	३०००)
	१६	१६	१७५ $\frac{३}{४}$	६३१२४) सालिमशाही.

एचिसनकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३.
अह्दनामह नम्बर १०, पृष्ठ २३,
बाबत डूंगरपुर.
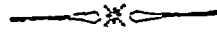
अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, क़रार पाया हुआ कप्तान जे० कॉल्फ़ील्डकी मारिफ़त, ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरह, पोलिटिकल एजेण्टके हुक्मसे, मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल बहादुरकी क़ाइम मक़ामीकी हालतमें, और राय रायां महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरकी अपनी और उनकी औलाद वग़ैरहकी तरफ़से, जब कि जेनरल सर जॉन माल्कमको पूरे इख्तियारात मोस्ट नोबल् फ्रान्सिस मार्क्विस ऑव हेस्टिंग्ज़, के० जी० से मिले थे, जो हिज़ ब्रिटेनिक मैजेस्टीकी ऑनरेबल प्रिवी कौन्सिलके मेम्बर थे, और जिनको ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमतकी दुरुस्तीके लिये मुक़र्रर फ़र्माया था.

शर्त अव्वल - दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख्वाही हमेशहको गवर्मेंट अंग्रेज़ी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम और जारी रहेगी, और दोस्त व दुश्मन दोनों फ़रीक़के आपसमें एकसे समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी - सर्कार अंग्रेज़ी वादा फ़र्माती है, कि वह राज और मुल्क डूंगरपुर की हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी - महारावल और उसके वारिस और जानशीन हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके साथ इताअत और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमत और बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और आगेको किसी ग़ैर रईस या रियासतसे मिलावट न रक्खेंगे.

शर्त चौथी - महारावल और उसके वारिस व जानशीन अपने राज और मुल्कके पूरे हाकिम रहेंगे, और सर्कार अंग्रेज़ीका दीवानी व फ़ौज्दारी इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा.

शर्त पांचवीं - डूंगरपुरके मुआमले सर्कार अंग्रेज़ीकी सलाहसे तै पायेंगे, और तमाम कामोंमें सर्कार भी महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ रक्खेगी.

शर्त छठी - महारावल और उसके वारिस और जानशीन किसी ग़ैर रईस या रियासतके साथ सर्कार अंग्रेज़ीकी मंज़ूरी बग़ैर इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न करेंगे, लेकिन् उनकी दोस्ताना लिखा पढ़ी अपने दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त सातवीं - महारावल और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़बर्दस्ती न करेंगे, और अगर इत्तिफ़ाक़से किसीके साथ तक्रार पैदा होगी, तो उसका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीमें सुपुर्द होगा.

शर्त आठवीं - महारावल और उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि जो वाजिबी ख़िराज रियासत धार या किसी औरका, जिसक़द्र अबतक देनेके लाइक़ होगा, वह अंग्रेज़ी सर्कारको क़िस्तबन्दी (खन्दी) से अदा किया जायेगा, और क़िस्तें सर्कार अंग्रेज़ी रियासत डूंगरपुरकी हैसियतके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर फ़र्मावेगी, याने जितनी रियासतमें गुंजाइश होगी, उस क़द्र तादाद क़ाइम कीजायेगी.

शर्त नवीं - महारावल और उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि वह अपनी हिफ़ाज़तके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज अदा करेंगे, जितना ख़िराज रियासतकी हैसियतसे सर्कार मुक़र्रर फ़र्मायेगी, वह देंगे; लेकिन् किसी हालतमें यह ख़िराज रियासतकी आमदनीपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न होगा.

शर्त दसवीं - महारावल, उनके वारिस और जानशीन वादह करते हैं, कि उनके पास जितनी फ़ौज होगी, वह ज़रूरतके वक्त मांगनेपर सर्कार अंग्रेज़ीको हवाले करेंगे.

शर्त ग्यारहवीं - महारावल, उनके वारिस और जानशीन इक्रार करते हैं, कि वह कुल अरब और मकरानी और सिन्धी सिपाहको बर तरफ़ करके मुल्की आदमियोंके सिवा किसी ग़ैरको फ़ौजमें भरती न करेंगे.

शर्त बारहवीं - अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह महारावलके किसी सर्कश या फ़सादी रिश्तहदारको मदद न देगी, बल्कि महारावलको ऐसा सहारा देगी, कि सर्कश उनका फ़र्मांबर्दार होजावे.

शर्त तेरहवीं - महारावल इस अह्दनामहकी नवीं शर्तमें वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको ख़िराज दिया करेंगे, बस इसके इत्मीनानके लिये इक्रार करते हैं, कि अंग्रेज़ी सर्कार जिसे ख़िराज लेनेपर मुक़र्रर करेगी, उसको देंगे; और वक्तपर अदा न होनेकी हालतमें वादह करते हैं, कि अंग्रेज़ी सर्कार अपनी तरफ़से किसी मोतमदको मुक़र्रर करे, जो शहर डूंगरपुरकी आमदनी चुंगी वग़ैरहसे बाक़ियात वुसूल करे.

यह तेरह शर्तोंका अह्दनामह आजकी तारीख़ कप्तान जे० कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे, जो ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से मुख़्तार थे, और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरकी मारिफ़त, जो अपनी और अपने वारिस व जानशीनोंकी तरफ़से ज़ी इख़्तियार थे, तै हुआ. कप्तान कॉलफ़ील्ड वादह करते हैं, कि इस

अ़ह्दनामेकी एक नक़्ल मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलकी तस्दीक़ कीहुई, महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरको दो महीनेके अ़र्सेमें दीजायेगी, और जब नक़्ल मिल जायेगी, तो यह अ़ह्दनामह, जो कप्तान कॉलफ़ील्डने ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० व के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे तय्यार किया, वापस दिया जायेगा- फ़क़त.

रावल साहिबने इस अ़ह्दनामहपर अ़क़्की दुरुस्ती और होश व हवासकी बिह्तरीकी हालतमें अपनी रज़ामन्दी और खुशीसे मुहर और दस्तख़त किये, उनकी मुहर और दस्तख़त गवाहके तौर समझे जायेंगे.

मक़ाम डूंगरपुर ता० ११ डिसेम्बर सन् १८१८ ई०, मुताबिक़ बारहवीं सफ़र सन् १२३४ हिज्री, और मुताबिक़ अगहन सुदी १४ संवत् १८७५ विक्रमी:

दस्तख़त - जे० कॉलफ़ील्ड. [बड़ी मुहर.]

दस्तख़त - जशवन्तसिंह;
देसी हर्फ़ोंमें.

[मुहर ऑनरेबल कंपनीकी.]

दस्तख़त - हेस्टिंग्ज़.
दस्तख़त - जी० डाउड्ज़वेल.

[छोटी मुहर गवर्नर जेनरल की.]

दस्तख़त - जे० स्टुअर्ट.
दस्तख़त - जे० ऐडम.

हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने इज्लासमें आजकी तारीख़ तस्दीक़ किया, १३ फ़ेब्रुअरी सन् १८१९ ई०.

दस्तख़त - सी० टी० मॅट्कॉफ़,
सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.

अ़ह्दनामह नम्बर ११.

सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरके दर्मियान -

इस सबबसे कि पहिले अ़ह्दनामेकी आठवीं शर्तमें, जो सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरके दर्मियान अगहन सुदी १४ संवत् १८७५

मुताबिक़ ११ डिसेम्बर सन् १८१८ ई० को क़रार पाया, रावलने शर्त की है, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको उसका और धार वग़ैरह रियासतका बाक़ी ख़िराज, जिस क़द्र तारीख़ अह्दनामह तक रहा होगा, सालाना क़िस्त बन्दी (खंदी) से देंगे; और क़िस्तें सर्कार अंग्रेज़ी मुनासिब तौरपर मुक़र्रर फ़र्मावेगी. सर्कार अंग्रेज़ीने रियासतकी तंग हालत और रावलकी कम आमदनीके सबब मुबलिग़ पैंतीस हज़ार रुपया सालिमशाही, जो मुल्कके साल भरके महसूलके बराबर है, आठवीं शर्तमें बयान कीहुई तमाम वाक़िआतके एवज़ मंजूर किया; इस वास्ते महारावल इस तहरीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको ज़िक्र किया हुआ रुपया नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ अदा करेंगे :-

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७६ विक्रमी मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२१ ई० रु० २५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२१ ई० रु० २५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० रु० ३०००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२२ ई० रु० ३०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२३ ई० रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२३ ई० रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२४ ई० रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२४ ई० रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२५ ई० रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८२ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२५ ई० रु० ३५००

जो कि उक्त अह्दनामेकी नवीं शर्तमें महारावल वादह करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको हिफ़ाज़तके एवज़ मुल्ककी हैसियतके मुवाफ़िक़ ख़िराज देंगे, लेकिन् वह आमदनी मुल्कपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न होगा; और जो कि सर्कारकी गैन दिली ख़्वाहिश है, कि रावलकी रियासत जल्द बिह्तर और दुरुस्त हो, इस वास्ते सर्कारने तज्वीज़ की है, कि रुपया अदा करनेकी तादाद बाबत सन १८१९ ई० व सन् १८२० व सन् १८२१ ई० के क़रार पावे. महारावल इक़ार करते हैं, कि वह नीचे लिखी हुई तादाद बयान किये हुए सनोंकी बाबत अदा किया करेंगे.

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७६ मुताबिक़ जेन्युअरी सन् १८२० ई० रु० ८५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२० ई० रु० ८५००

कुल बाबत सन् १८१९ ई० रु० १७०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ जेन्युअरी सन् १८२१ ई० रु० १००००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ एप्रिल सन १८२१ ई० रु० १००००

कुल बाबत सन् १८२० ई० रु० २००००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ जेन्युअरी सन् १८२२ ई० रु० १२५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२२ ई० रु० १२५००

कुल बाबत सन् १८२१ ई० रु० २५०००

यह बन्दोबस्त सिर्फ़ तीन वर्षके वास्ते है, उसकी मीआद गुज़र जानेपर सर्कार अंग्रेज़ी नवीं शर्तके मुवाफ़िक़ ऐसा बन्दोबस्त ख़िराजका फ़र्मावेगी, जैसा उसके नज़्दीक ईमान्दारीसे ठीक मालूम होगा, और मुल्ककी हैसियतसे दोनों तरफ़की बिह्तरीका बाइस होगा.

यह अह्दनामह सोमवाड़ा मक़ामपर मारिफ़त कप्तान ए० मॅक्डोनल्डके, जो जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से कारबन्द थे, और मारिफ़त तख़्ता गामोडी दीवान डूंगरपुरके,

जो महारावल श्री जशवन्तसिंहकी तरफ़से मुख़्तार था, तारीख़ २९ जैन्युअरी सन् १८२० ई० मुताबिक़ माघ सुदी १५ संवत् १८७६.

रावलकी मुहर और दस्तख़त.

दस्तख़त – ए० मेक्डोनल्ड,

अव्वल असिस्टेंट, सर० जे० माल्कम साहिब.

अ़ह्दनामह नम्बर १२.

दस्तख़त – रावल जशवन्तसिंह.

क़ौलनामह महारावल जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुर और कप्तान अलिग्ज़न्डर मेक्डोनल्डके दर्मियान, जो ऑनरेबल कंपनीकी तरफ़से मुक़र्रर थे.

सात सौ रुपये माहवारी, जिसके आठ हज़ार चार सौ सालानह होते हैं, बाबत तन्ख़्वाह सवार व पैदलोंके, जो मेरे हम्राह रहेंगे, मैं सर्कारको मुक़र्रर क़िस्तोंसे दिया करूंगा; इसमें कुछ हीला और उज़्र न करूंगा. यह रुपया पहिली जैन्युअरी सन् १८२४ ई० से अदा होगा, इसमें कुछ फ़र्क़ न पड़ेगा, इसलिये यह तहरीर अपनी रज़ामन्दी और ख़ुशीसे लिख दी.

ता० १३ जैन्युअरी सन् १८२४ ई०, मुताबिक़ पौष सुदी ११ संवत् १८८० विक्रमी.

अ़ह्दनामह नम्बर १३.

तर्जमह क़ौलनामह दर्मियान लींबरवाड़ोके भीलों और ऑनरेब्ल कम्पनीके, जो मारिफ़त मेजर हमिल्टनके हुआ था, जो कप्तान मेक्डोनल्डकी तरफ़से ज़ी इख़्तियार थे. ता० १२ मई सन् १८२५ ई०.

१– हम अपने कमान और तीर वग़ैरह हथियार देदेंगे.

२– हमने जिस क़द्र लूट अगले फ़सादमें की होगी, उसका सब एवज़ देंगे.

३– आगेको हम शहरों, गांवों और रास्तोंपर लूटमार न करेंगे.

४– हम किसी चोर, लुटेरे या गिरासिया ठाकुरों या सर्कार अंग्रेज़ीके दुश्मनको अपने गांवमें पनाह न देंगे, चाहे वह हमारे मुल्कके या किसी दूसरी जगहके हों.

५– हम कम्पनीके हुक्मकी तामील किया करेंगे, और जब हुक्म होगा, हाज़िर हुआ करेंगे.

६- हम रावल और ठाकुरोंके गांवोंसे सिवा अपने क़दीमी और वाजिबी हक़के कुछ न लेंगे.

७- हम रावल डूंगरपुरका सालानह ख़िराज अदा करनेमें इन्कार न करेंगे.

८- अगर कोई कम्पनीकी रिआया हमारे गांवमें आकर रहे, तो हम उसकी हिफ़ाज़त करेंगे.

अगर हम ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ अमल न करें, तो सर्कार अंग्रेज़ीके क़ुसूरवार समझे जायें.

दस्तख़त- वेनम सूरत और दूदा सूरत.

इसी क़िस्मका एक क़ौलनामह नीचे लिखे हुए आदमियोंके दस्तख़तसे तय्यार हुआ:-

१- दस्तख़त आमरजी.	९- दस्तख़त नाथू कोटेर.	१७- दस्तख़त भन्ना डामर.
२- दस्तख़त डामर नाथा.	१०- दस्तख़त लालू.	१८- दस्तख़त लालू.
३- दस्तख़त पीथा डामर.	११- दस्तख़त राजिया.	१९- दस्तख़त ताजा.
४- दस्तख़त सलिया डामर.	१२- दस्तख़त मोगा.	२०- दस्तख़त जीतू
५- दस्तख़त मन्ना.	१३- दस्तख़त कन्हैया.	२१- दस्तख़त भीडू.
६- दस्तख़त कोरजी.	१४- दस्तख़त लालजी.	२२- दस्तख़त थानो कोटेर.
७- दस्तख़त शवजी.	१५- दस्तख़त तजना.	
८- दस्तख़त मनिया.	१६- दस्तख़त मनिया.	

इसी क़िस्मका क़ौलनामह सिमरवाड़ो, देवल और नांदूके भीलोंने भी दस्तख़तसे मन्जूर किया.

दस्तख़त थाजा.	दस्तख़त गूदड़ा.	दस्तख़त हीरा.	दस्तख़त सुकजी.
दस्तख़त सामजी.	दस्तख़त मग्गा.	दस्तख़त कान्हजी.	दस्तख़त धर्मा.
दस्तख़त रंगा.			

अह्दनामह नम्बर १४,

क़ौलनामह, जो जशवन्तसिंह रावल डूंगरपुर और ऑनरेबूल कम्पनीके दर्मियान, कप्तान मेक्डोनल्डकी मारिफ़त मक़ाम नीमचमें ता० २ मई सन् १८२५ ई० को तै पाया, उसका तर्जमह.

१ - सर्कार अंग्रेज़ी जो कोई दीवान मुक़र्रर फ़र्मायेगी, मैं उसे मन्जूर करूंगा; सब काम उसके सुपुर्द करूंगा, और किसी तरह उसमें दख़्ल न दूंगा.

२ - जो कुछ सर्कार अंग्रेज़ी मेरी पर्वरिशके वास्ते मुक़र्रर फ़र्मावेगी, उसमें उज़्र न होगा, और जो मक़ाम राज डूंगरपुरमें मेरे रहनेको तज्वीज़ करेगी, वहां रहूंगा.

३ - अक्सर फ़साद मक्कारोंकी सलाहसे मेरे मुल्कमें हुए, इसलिये मैं लिख देता हूं, कि आगेको हर्गिज़ उनका कहना न मानूंगा, और न खुद फ़साद करूंगा; अगर मैं ऐसा करूं, तो जो सज़ा सर्कार अंग्रेज़ी तज्वीज़ फ़र्मावे, वह मुझे मन्जूर होगी.

अह्दनामह नम्बर १५.

सर्कार अंग्रेज़ी और श्री मान् उदयसिंह महारावल डूंगरपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके बीचका अह्दनामह, जो एक तरफ़ लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ने व हुक्म लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरलके किया, जिनको पूरा इख़्तियार राइट ऑनरेबल सर जॉन लेअर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट्, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे मिला था, और महारावल उदयसिंहने खुद अपनी तरफ़से किया.

पहिली शर्त - कोई आदमी अंग्रेज़ी या किसी दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाकेमें बड़ा जुर्म करे, और डूंगरपुरकी राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो डूंगरपुरकी सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगेजाने पर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त - कोई आदमी डूंगरपुरके राज्यका बाशिन्दह वहांके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी मुल्कमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम डूंगरपुरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करदेवेगी.

तीसरी शर्त - कोई आदमी, जो डूंगरपुरके राज्यकी रअय्यत न हो, और डूंगरपुरके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें होगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसला उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होता है, जिसके तहतमें वारिदात होनेके वक़्पर डूंगरपुरकी मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त - किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम

ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुताबिक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाकेमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाकेके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

पांचवीं शर्त - नीचे लिखे हुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगेः-

१ - खून, २ - खून करनेकी कोशिश, ३ - वह्शियाना क़त्ल, ४ - ठगी, ५-ज़हर देना, ६ -सख़्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार), ७- ज़ियादह ज़ख्मी करना, ८- लड़का बाला चुरा लेजाना, ९ - औरतोंका बेचना, १० - डकैती, ११ - लूट, १२-सेंध (नक़्ब) लगाना, १३ -चौपाये चुराना, १४-मकान जलादेना, १५ - जालसाज़ी करना, १६- झूठा सिक्कह चलाना, १७ - धोखा देकर जुर्म करना, १८- माल अस्बाब चुरालेना, १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना (बहकाना).

छठी शर्त - ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

सातवीं शर्त- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़्त तक बरक़रार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख्वाहिश दूसरेको ज़ाहिर न करे.

आठवीं शर्त - इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बख़िलाफ़ हो.

मक़ाम डूंगरपुर, तारीख़ ७ मार्च सन् १८६९ ई०.

(द०) ए० आर० ई० हचिन्सन, लेफ्टिनेन्ट कर्नेल,
क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़.

(द०) मेओ.

(द०) महारावल, डूंगरपुर.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने तारीख़ २१ एप्रिल सन् १८६९ ईसवीको मक़ाम शिमलेपर की.

(द०) डब्ल्यु० एम० सेटन् कार,
सेक्रेटरी, गवर्मेन्ट इन्डिया, फ़ॉरेन डिपार्टमेन्ट.

वांसवाड़ाकी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह.

यह रियासत राजपूतानहकी छोटी रियासतोंमेंसे है, और उसकी दक्षिणी सीमा पर वाके़ है, जिसके उत्तर और पश्चिमोत्तरमें डूंगरपुर व मेवाड़; पूर्व और पूर्वोत्तरमें प्रतापगढ़; दक्षिण तरफ़ मध्य प्रदेशकी एजेन्सीकी छोटी छोटी रियासतें; और पश्चिम तरफ़ रेवा कांठाका इलाक़ह है. इसका फैलाव २३° १०′ से २३° ४८′ उत्तर अक्षांश तक और ७४° २′ से ७४° ४१′ पूर्व देशान्तर तक है; और लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको ४५ मील, और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको ३३ मील है. रक़बह १४०० या १५०० वर्ग मील, सन् १८८१ की मर्दुमशुमारीके मुवाफ़िक़ आवादी १५२०४५ और ख़ालिसेकी सालानह आमदनी डॉक्टर हंटरके गज़ेटियरके अनुसार रु० २८०००० है, जिसमेंसे ५०००० रुपया सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज वग़ैरहका दिया जाता है.

वांसवाड़ेका पश्चिमी भाग, याने राजधानी और माही नदीके बीचकी ज़मीन, साफ़ व सेराव होनेके सवव उपजाऊ (ज़रख़ेज़) है; ताड़ और महुआके दरख़्त कस्रतसे हैं. इस देशके चारों तरफ़ छोटी छोटी पहाड़ियां जंगलसे ढकी हुई हैं; उत्तरकी तरफ़ पहाड़ियां कुछ कम हैं, लेकिन् वड़े वड़े दरख़्तोंसे जंगल शोभायमान है, और यहीं भीलोंकी पालें हैं. ये लोग हम्वार ज़मीनके जंगल काटकर खेती करते हैं, लेकिन् पानीकी कमीसे खेती वन्द और वर्बादी होजाती है. मदारिया और जगमेर दो वड़ी पहाड़ियां हैं- पहिली राजधानीसे डेढ़ कोसके फ़ासिलेपर है, जिसमें एक पवित्र झरना वहता है, और वहुतसे लोग उसकी पूजा करनेको जाते हैं; दूसरी- जगमेर, राजधानीसे थोड़ी दूर उत्तर तरफ़ वाके़ है, जहांपर जगमालने बांसवाड़ा आवाद होनेके पहिले आश्रय लेकर कोट तथा गढ़ बनवाया था, और जिसके खंडहर अब तक मौजूद हैं. पहाड़ियोंपर ५० फुट तक ऊंचे दरख़्त होते हैं. सर्दीके मौसममें दरख़्तोंकी सब्ज़ी और पहाड़ियोंसे निकलकर वृक्षोंके समूहमें बहते हुए पानी व नालोंकी रवानी तथा तरह तरह के फूल व घाससे देशमें बड़ी रौनक़ दिखाई देती है. कुओंमें ४० फुट नीचे पानी निकलता है. यहांपर कोई पक्की सड़क नहीं है, पर मामूली रास्तोंसे कई महीनों तक गाड़ी आतीजाती है, बर्सातके मौसममें कीचड़के सबब रास्तह बन्द होजाता है, नदी नाले हाथीपर बैठकर पार उतरे जाते हैं; माही नदीके उतारके मक़ामोंपर वेड़े भी रहते हैं, लेकिन् पानीकी चढ़ाईके वक्त़ उनसे कुछ काम नहीं निकल सक्ता.

बांसवाड़ेकी अक्सर ज़मीन उपजाऊ है, परन्तु पहाड़ियोंके बीचकी धरती सख़्त है. जंगलमें सागवान, शीशम, लादर, गोमर, हल्दू वग़ैरह बड़े बड़े दरख़्त पैदा होते हैं. रियासतके उत्तरमें छोटे छोटे दरख़्तोंका गुंजान जंगल है. तलवाड़ा, अवलपुर और चीचमें ऐसे पत्थरकी छोटी छोटी खानें भी हैं, जो घर बनानेके काम आता है; लोहा कहीं कहीं निकलता है; रियासतके पश्चिमोत्तर ख़ासकर लोहारियामें लोहा निकाला जाता था, लेकिन् अब दो वर्षसे खान बन्द होगई है; यहां पहिले सैकड़ों मकान थे, अब केवल २० रहगये हैं; मोतिया अंधे वेड़ामें लोहेकी एक छोटी खान है.

नदी और झील.

इस रियासतकी मुख्य नदी माही है, जो रतलामसे आती और उत्तर पूर्व होकर पश्चिमकी तरफ़ बहती हुई दक्षिणको जाकर बांसवाड़ा, मेवाड़ और डूंगरपुरकी सीमा बनती है. इस नदीमें पानी कम, लेकिन् बारहों महीने रहता है, और बर्सातमें ज़ियादह होजाता है; इसके करारे ४० से ५० फुट तक ऊंचे हैं, जिनपर बड़े बड़े दरख़्त बहुत हैं. बांसवाड़ेमें माहीकी मददगार दो छोटी नदियां भनदन और रायब हैं, जो पूर्वसे आकर मिली हैं; इनमें बारहों महीने पानी नहीं रहता, और इन दोनोंके सिवा तीसरी चाप नदी राजधानीके पास माहीमें मिली है.

बड़ी भील बांसवाड़ेमें कोई नहीं है, मुख्य बाई नामी एक भील बनवाई हुई राजधानीसे पूर्वको एक कोसके फ़ासिलेपर है, जिसकी पालपर महारावलने महल बनवाये हैं; इसके सिवा कई गांवोंमें तालाब भी हैं. आबो हवा और बर्सातका कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन् बांसवाड़ेके अस्पतालके थर्मामेटरमें गर्मीके दिनोंमें ९२ से १००, बर्सातमें ८० से ८३ और सर्दीमें ६५ से ७० डिगरी तक पारा पायागया है.

बाला, दाद और फोड़े फुन्सीकी बीमारियां बांसवाड़ेमें बहुत होती हैं, और ज्वर भी बहुत फैलता है, लेकिन् सर्दीके दिनोंमें और मौसमोंकी बनिस्बत ज़ियादह होता है.

इस देशकी ख़ास पैदावार मक्की, मूंग, उड़द, गेहूं, जव, चना, तिल, चावल, कोदरा, और सांठा (गन्ना) हैं; किसी क़द्र अफ़ीम भी बोई जाती है.

डूंगरपुरके मुवाफ़िक़ यहां भी तीन तरहके गांव हैं - ख़ालिसह, जागीर और धर्म संबन्धी. ख़ालिसेका हासिल कामदारोंके ज़रीए से जमा कियाजाता है, और ज़नानह व जेब ख़र्चका हासिल ख़ास कामदारोंसे वुसूल होता है; हर एक गांवकी तरफ़से पटेल रहता है, जो कामदारोंसे हिसाब और खेतीका बन्दोबस्त करता है; पहिले हर एक

गांव या कई गांवों पीछे रियासतकी तरफ़से हासिल वुसूल करनेके लिये गामेती रहता था, लेकिन् अब गांवोंका हासिल थानेदारोंकी मारिफ़त जमा होता है. हासिल लेनेके लिये कोई क़ाइदह मुक़र्रर नहीं है; धरती न नापी जाती है, और न मालवेके मुवाफ़िक़ फ़ी बीघेके हिसाबसे लगान लियाजाता है. हासिलके सिवा ज़रूरतके वक़ भी किसान लोगोंसे रुपया वुसूल कियाजाता है; एक महारावलके मरने और दूसरेकी मस्नद नशीनीके वक़, और महारावलकी बेटी या ख़ास उनकी शादीके समय, जो कुछ ख़र्च पड़ता है, किसानोंसे वुसूल होता है; कुंवर (१), लकड़ी घोड़ा चराई वग़ैरह और भी कई लागतें लीजाती हैं. ब्राह्मणोंसे दर्या बराड़, व्यापारी और दूसरे लोगोंसे कर यानी लगान, और चारण तथा भाटोंसे घासका गाड़ी बराड़ लिया जाता है.

इस रियासतमें राजपूत व भील जागीरदार हैं, जो ख़िराज देते हैं; सर्दारोंको लड़ाई झगड़ेके वक़ जमइयत समेत मददके लिये रईसके साथ रहना पड़ता है, और अगर किसी जगहकी चढ़ाईका काम किसी सर्दारके सुपुर्द हो, तो वे लोग अपनी जमइयत उस जगह भेजदेते हैं; सब सर्दार अपने अपने ठिकानोंके ख़ुदमुरूतार हैं, अगर रईस उनकी जागीरमें दस्तअन्दाज़ी करे, तो मुक़ाबलह करनेको तय्यार होते हैं. देशका बड़ा हिस्सह भीलोंसे पुर है; बांसवाड़ेमें ब्राह्मण और राजपूतोंके सिवा दूसरी १५ छोटी जातें हैं, ख़ास राजधानी (बांसवाड़ा) में ६१९७ आदमियोंकी बस्ती है. भीलोंके ठिकानोंमें बांसवाड़ेका दख़्ल बहुत कम रहता है, उनकी पालें भी बहुत हैं, गमेती (गामेती) लोग वक़ मुक़र्ररहपर ख़िराज दे देते हैं.

इन्तिज़ाम.

राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ यहां अदालतोंका कुछ प्रबन्ध नहीं है; राजधानीमें दीवानी, फ़ौजदारी अदालतें मौजूद हैं; परन्तु हाकिमोंके किये हुए फ़ैसले महारावलके पास भेजेजाते हैं. दीवानी मुक़द्दमे पंचायतसे फ़ैसल होते हैं, और फ़ौजदारी मुक़द्दमोंमें मुद्दईकी तसल्ली कीजाती है. ठाकुर लोग भी अपने अधिकारसे ठिकानोंमें दीवानी, फ़ौजदारी रखते हैं. रियासतमें कई जगह थाने हैं, जिनमें एक थानेदार चन्द सवार व पैदलों समेत रहता है; थानेदारके इख़्तियारात थोड़े हैं. शहरमें एक कोतवाल और उसके मातहत कुछ अमला है; उसको इख़्तियार है, कि बद मआश लोगोंको पकड़कर हाकिमोंको इत्तिला देवे. बांसवाड़ेमें जेलख़ानह नहीं

(१) कुंवर पदेकी लागत.

है, शहरकोटकी कोठड़ियोंमें बड़े फाटकोंके पास मुज्रिम लोग क़ैद कियेजाते हैं, पर क़ैदकी सज़ा कम होती है; महारावल फांसी देनेका भी इख्तियार रखता है.

तालीम यहां बिल्कुल कम है, सिर्फ़ राजधानीमें एक छोटीसी पाठशाला है.

रियासत में सड़कें नहीं हैं, अस्बाब बैलोंपर लादा जाता है. पश्चिमी हिस्सेमें एक गांवसे दूसरे गांवको घास, लकड़ी वगैरह सब चीज़ें गाड़ीपर आती जाती हैं, बाक़ी और जगहोंमें गाड़ीका नाम भी कोई नहीं जानता. बांसवाड़ेमें तिजारती चीज़ोंकी आमद रफ्तका कोई मश्हूर रास्तह नहीं है, रतलाम और मालवासे कुशलगढ़के रास्ते होकर माल आता है, और प्रतापगढ़से घाटोल होकर डूंगरपुरके उत्तर तरफ़ आता है. एक सड़क प्रतापगढ़से अहमदाबाद होकर गुजरातको जाती है. दूसरा रास्तह राजधानीसे डूंगरपुरको जालोदसे सीधा गया है. राजधानीमें एक डाकखानह कई वर्षसे नियत कियागया है.

जिला, खास कुस्बे और मश्हूर मकामात.

इस रियासतकी राजधानी बांसवाड़ा, शहरपनाहसे घिरी हुई है, जिसमें ६००० से ज़ियादह आदमी आबाद हैं; दक्षिणकी तरफ़का शहरकोट गिरा हुआ है; और जिन पहाड़ियोंपर शहरपनाह बनी हुई थी, वे अब जंगलसे ढकरही हैं. शहरसे दक्षिणकी तरफ़ एक पहाड़ीपर महल बना हुआ है, जिसका ऊंचा कोट और तीन फाटक हैं. यह मकान पुराने ज़मानेकी इमारतोंके तर्ज़से मिलता हुआ है; इसके सिवा हर एक रईसने जुदे जुदे मकानात बनवाये हैं. मौजूद महारावलने भी कई इमारतें तय्यार कराई हैं, जिनमेंसे राजधानीके दक्षिणी तरफ़के दो मन्ज़िले महल 'शाही विलास' नामके उम्दह बने हुए हैं. पश्चिमकी तरफ़ ज़मीन हम्वार है, कहीं कही खेती होती है, महुएके दरख्त बहुत हैं. ताड़के दरख्तोंके पीछे सघन जंगल है, उत्तर और पूर्वकी तरफ़ बाई ताल और पहाड़ियोंके बीचमें नदी शहरकी दीवारोंके नीचे बहती है, और मैदानमें दरख्तोंके बीच छोटी छोटी कई झीलें देखनेमें आती हैं. शहरके पूर्व आध मीलपर नदीके पास एक बाग़में बांसवाड़ेके रईसोंकी छत्रियां हैं.

बांसवाड़ेके आठ हिस्से हैं, जो तप्पा कहलाते हैं, और राजधानीके हर तरफ़ रियासतकी सीमा तक चलेगये हैं:-

१	घाटी उतार	पश्चिम.	५	महीरवाड़ा	पूर्वमें माही पार.
२	लोहारिया	पश्चिमोत्तर.	६	पंचलवाड़ा	पूर्वमें माही पार.
३	चिमदा	उत्तर.	७	खांदूवाड़ा	दक्षिण.
४	भूंगड़ा	पूर्वोत्तर.	८	पथोग	दक्षिण पश्चिम.

१ घाटी उतार – यह हिस्सह तलवाड़ाके पास पहाड़ियोंकी घाटीके नामसे मश्हूर है; और इसकी सीमा उसी घाटीसे रियासतकी माही नदी तक है; इसमें नीचे लिखे ठिकाने हैं :–

गढ़ी, अर्थूणा, वांकड़ा, टकारा, मंडवा और तलवाड़ा; इनमें खेती करने वाले ब्राह्मण और पटेल रहते हैं; चावल, सांठा (गन्ना) और अफ़ीम यहां ख़ासकर ज़ियादह पैदा होती है. प्रतापपुर इस हिस्सेकी ख़ास जगह है, जिसमें पांच या छःसौ घरोंकी बस्ती है.

गढ़ीमें भी प्रतापपुरके मुवाफ़िक़ मकान हैं, और उसके उत्तरमें चाप नदी है. अर्थूणामें ४०० घर हैं; इसके (१) पूर्वमें तीन चार कोसपर अमरावती नगरीके खंडहर और दक्षिणमें जैन मन्दिरके खंडहर वाके़ हैं. तलवाड़ामें ३०० या ४०० मकान हैं; इसके पास कितने ही टूटे फूटे पुराने मन्दिर पड़े हैं, जो सिद्धपुर पट्टनके राजा अम्बरीकके बनवाये हुए कहेजाते हैं; तलवाड़ा घाटी पहाड़ियोंमें ६ मीलके क़रीब लम्बी है, जिसमें पुराना तालाव और मन्दिरोंके टूटे फूटे निशानात पायेजाते हैं. घाटीके बीच वाले तालाबकी निस्बत मश्हूर है, कि युधिष्ठिरके भाई भीमने अपने बारह वर्षके बनवासके समयमें उसे बनवाया था.

२ लोहारिया – रमणविलास चाड़ियावासके पास रावलके बनवाये हुए महलसे वांसवाड़ेके पश्चिमोत्तर तीन चार मील माही नदी तक चलागया है. यहांकी धरती हलकी है; चावल अच्छे पैदा होते हैं. इस हिस्सेमें ख़ास ३ गांव घनोड़ा, मोलान और मेतवाल हैं, जिनमेंसे हर एकमें तीन सौ घरके क़रीब आबादी है.

३ चिमदा – वांसवाड़ेके उत्तरमें मेवाड़की सीमा माही नदी तक चलागया है; मक्की और सांठा यहां कस्रतसे होता है. घाटोड़ गांवमें ३०० – ४०० घर हैं; इस जगह एक काम्दार हासिल वुसूल करनेको रहता है. इस हिस्सेमें ६ जागीरदारोंके ठिकाने हैं.

४ भूंगड़ा– बांसवाड़ेसे पूर्वोत्तर प्रतापगढ़की सीमा तक चलागया है, जहांसे मलिया और कुशलपुरके ठाकुर व सूंधलपुर और मऊड़ीखेड़ाके भील सर्दार आबाद हैं; भूंगड़ामें २०० घरकी बस्ती है.

५ महीरवाड़ा – यह हिस्सह माही नदीसे प्रतापगढ़ तक फैला हुआ है; इसमें भील रहते हैं, जिनमें महीर ज़ातके ज़ियादह हैं; और इसीसे यह हिस्सह महीरवाड़ा कहलाता है.

६ पंचलवाड़ा – माही नदीके पूर्वमें रतलामकी सर्हदसे जामिला है, जिसमें ख़ासकर भील ही आबाद हैं.

---

(१) हमको इस ग्रामके पुराने खंडहरोंके मन्दिरोंमें दो प्रशस्तियां विक्रमी ११३६ और ११६६ की मिली हैं, जिनमें पंवार राजाओंकी वंशावली और उनका संक्षेप हाल लिखा है; वे इस ज़िले (बागड़) का राज्य करते थे, जिससे पायाजाता है, कि सीसोदियोंसे पहिले पंवार राजा इस ज़िले पर हुकूमत करते थे; लेकिन् यह मालूम नहीं, कि वे ख़ुद मुख़्तार थे, या चित्तौड़के मातहत– (देखो शेष संग्रह नम्बर ६–७).

७ खांदूवाड़ा – बांसवाड़ेके दक्षिणमें रतलाम तक फैला हुआ है; चार गांवोंके सिवाय सबमें भील लोग रहते हैं. खांदू गांवमें क़रीबन् ७०० घरकी वस्ती है. यहांके जागीरदार बांसवाड़ेके अव्वल दरजहके सर्दारोंमेंसे हैं; गांवके दक्षिण तरफ़ नदीके किनारेपर महाराजके महल हैं.

८ पथोग– यह हिस्सह बांसवाड़ेसे दक्षिण पश्चिममें कुशलगढ़की सीमा तक फैला हुआ है. वरिया, अन्नजा, ट्याजा, भूकिया ठिकानेवाले जागीरदार हैं. ननगांव, चीच, वागीदोरा, कालिंञ्जा ख़ास गांव हैं; पहिले तीनमें पांच पांच सो घरकी और दूसरोंमें तीन तीन सो घरोंकी आबादी है. चावल, चना, गेहूं और मक्की इस हिस्सेमें ज़ियादह पैदा होते हैं.

मेले.

बांसवाड़ेमें एक मेला ऑक्टोबर महीनेमें १५ रोज़ तक रहता है, जिसमें आस पासके बनिये व्यापारी लोग आते हैं; और अमल, नारियल, छुहारे, बम्बईका सामान और अनाज व तम्बाकू वग़ैरह बेचते हैं; व्यापारियोंसे महसूल नहीं लियाजाता. इस मेलेमें व्यापारी और ख़रीदार वग़ैरह लोग २००० के क़रीब जमा होते हैं. दूसरा मेला गोतियो अंबो मक़ामपर होता है, जहां हर साल भील लोग सौदा करनेको आते हैं. इस मक़ामके लिये ऐसा भी मश्हूर है, कि यहांपर युधिष्ठिरने पनाह ली थी.

बांसवाड़ेमें दस्तकारीका काम नहीं होता; कपड़ा, नारियल, छुहारा, सुपारी, काली मिर्च, तम्बाकू और नमक वग़ैरह चीज़ें गुजरातसे आती हैं; लेकिन् ज़ियादह हिस्सह रतलामको जाता है.

तवारीख़.

इस रियासतका तवारीख़ी हाल बहुत ही कम मिलता है, कर्नेल टॉड और कप्तान येटको भी ज़ियादह कुछ नहीं मिला. हमने नैनसी महता और उदयपुरके सर्कारी पुराने काग़ज़ातसे चुनकर कुछ हाल एकट्ठा किया है. नैनसी महता लिखता है, कि चारण रुद्रदास भाणावत साइयां झूलाका पोता गांव जैतारणमें विक्रमी १७१९ चैत्र [हि० १०७२ शअ्बान = ई० १६६२ मार्च] में मिला, उसने मुझे बांसवाड़ेकी तवारीख़ इस तरह लिखवाई, कि बागड़के तीन हज़ार पांच सो गांवोंमेंसे १७५० गांव बांसवाड़ेके क़ब्ज़ेमें रहे, जिसका ज़िक्र इस तरहपर है:–

डूंगरपुरका रावल उदयसिंह, जो विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२८] में चित्तौड़के महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) अव्वलके साथ जाकर बयानाके पास बाबर बादशाहकी लड़ाईमें मारागया, उसके दो बेटे थे, बड़ा पृथ्वीराज और छोटा जगमाल; जब पृथ्वीराज डूंगरपुरकी गद्दीपर बैठा, तब जगमाल उसके बर्ख़िलाफ़ होकर देश बिगाड़ने लगा; रावल पृथ्वीराजने बड़ी जमइयत देकर चहुवान मेरा और रावत् पर्वतको भेजा; इन सर्दारोंने अच्छी लड़ाइयां करके जगमालको मुल्कसे निकालदिया. यह वापस डूंगरपुर आये, तो इनके साथियोंमेंसे किसीने जाकर रावल पृथ्वीराजसे कहा, कि जगमाल हमारे क़ाबूमें आगया था, सो वह ज़रूर गिरिफ़्तार होता, या माराजाता; परन्तु मेरा और पर्वतने जान बूझकर छोड़दिया. इस बातपर यक़ीन करके रावलने उन दोनों सर्दारोंसे कहलाया, कि तुम नमक हराम हो, हमारे देशसे निकल जाओ, जिससे वे नाराज़ होकर जगमालके पास चलेगये, और जगमाल अपनी ताक़तको बढ़ाकर मुल्कपर क़ब्ज़ह करने लगा; आख़िर हिम्मत हारकर पृथ्वीराजने सुलह चाही; तब यह फ़ैसलह हुआ, कि बागड़के तीन हज़ार पांच सौ गांव आधे पृथ्वीराज और आधे जगमालको बांट दियेजावें; इसी तरह फ़ैसलह होगया; पृथ्वीराज डूंगरपुरके, और जगमाल बांसवाड़ाके रावल कहलाये.

मिराति सिकन्दरीमें विक्रमी १५८८ [हि० ९३७ = ई० १५३१] में लिखा है, कि "बहादुरशाह गुजरातीने पृथ्वीराज और जगमालको यह मुल्क बांट दिया." मेवाड़की पोथियोंमें महाराणा रत्नसिंहका बागड़के दो हिस्से करवा देना लिखा है, और क़ियाससे भी मालूम होता है, कि महाराणाकी ज़बर्दस्त हिमायतके बिना दो हिस्से होना गैर मुम्किन् था, और महाराणाको भी इनकी ताक़तका कम करना मन्ज़ूर होगा. राजपूतानह गज़ेटियरमें बिशना भीलके नामसे बांसवाड़ेका आबाद होना क़िस्सहके तौर लिखा है, लेकिन् इसमें शक है.

रावल जगमाल बड़ा बहादुर था, वह एक अर्से तक ज़िन्दह रहा, जिसने चारों तरफ़ पैर फैलाकर अपने राजको बढ़ाया. उसका बेटा प्रतापसिंह था, जिसका नाम बड़वा भाटोंने कृष्णसिंह लिखदिया है; लेकिन् नैनसी महता, अक्बरनामह व तुज़क जहांगीरी वगैरहसे उसका नाम प्रतापसिंह साबित होता है. नैनसी महता अपनी किताबमें लिखता है, कि रावल प्रतापसिंहके कोई असली बेटा नहीं था, और एक ख़वास (पन्ना बनियानी) के पेटका मानसिंह नाम लड़का था; चहुवान मानसिंह वगैरह सर्दारोंने उसीको बांसवाड़ेका मालिक बना दिया. यह रावल मानसिंह कहीं शादी करनेको गया था, और पीछेसे खांदूके भीलोंने नुक्सान किया, थोड़ेसे राजपूतोंने बांसवाड़ेसे निकलकर खांदूपर छापा मारा, लेकिन् भीलोंने राजपूतोंके घोड़े

छीन लिये. जब रावल मानसिंह अपनी राजधानीमें आया, तो इस बे इज़्ज़तीका हाल सुनकर खांदूपर चढ़ा, सैकड़ों भीलोंको मारकर उनके सरगिरोहको गिरिफ्तार किया; जब वह क़ैदी भील रावल मानसिंहके साम्हने आया, तब उसने किसीकी तलवार छीनकर उससे रावलको मारडाला; चहुवान मानसिंहने उस भीलको भी मारा, और ये लोग बांसवाड़ेको वापस आये. राजधानीको ख़ाली देखकर चहुवान मानसिंह मुख़्तार बनगया. डूंगरपुरके रावल सैंसमल्ल (सहस्रमल्ल) ने मानसिंहको लिख भेजा, कि तुमको सीसोदियोंका राज नहीं मिल सक्ता, लेकिन् उसने कुछ ख़याल नहीं किया; तब वह बांसवाड़ेपर चढ़ा. मानसिंहने मुक़ाबलह किया, और सैंसमल्लको शिकस्त खाकर डूंगरपुर लौटना पड़ा. महाराणा प्रतापसिंह अव्वलने भी मानसिंहको निकालनेके लिये चार हज़ार आदमियोंकी जमइयत देकर रावत् रत्नसिंह कांधलोत चूंडावत और रावत् रायसिंह खंगारोत चूंडावतको भेजा, लेकिन् कुछ कामयाबी हासिल न हुई, और मानसिंहसे शिकस्त खाकर लौट आये. तब कुल बागड़के चहुवान सर्दारोंने मानसिंहसे कहा, कि तुमने बहुत कुछ ज़ियादती करली, चहुवान बांसवाड़ेके मुख़्तार नहीं होसक्ते, ख़ैरख़्वाह नौकर और मुसाहिब (भड़ किवाड़) ज़रूर हैं; इस लिये जगमालके पोतोंमेंसे किसीको रावल बनाना चाहिये.

तब मानसिंहने जगमालके पोते, प्रतापसिंहके भाई और कल्याणमल्लके बेटे उग्रसेनको गद्दीपर बिठाया, और आधा राज उसको देकर आधा अपने क़ब्ज़हमें रक्खा. इसपर भी उग्रसेनको वह अपना किया हुआ रईस समझकर हक़ीर जानता था. कुछ अर्से बाद राठौड़ सूरजमल्ल वग़ैरह राजपूतोंकी मददसे मानसिंहपर उग्रसेनने हमलह किया; मानसिंह भागगया, और बांसवाड़ा उग्रसेनके क़ब्ज़हमें आया. महाराणा प्रतापसिंह अव्वल भी उसके मददगार थे, इसलिये लाचार होकर चहुवान मानसिंह बादशाह अक्बरके पास पहुंचा; अक्बरने मिर्ज़ा शाहरुख़को बड़ी फ़ौज देकर मानसिंहके साथ उग्रसेनपर बिदा किया. इस फ़ौजने बांसवाड़ा छीन लिया; लेकिन् उग्रसेनकी मददपर महाराणा प्रतापसिंह अव्वल व रावल सैंसमल्ल और दूसरे भी कुल राजपूत होगये, जिससे उसने बादशाही मुल्क लूटना शुरू किया; मिर्ज़ा शाहरुख़ मालवेकी तरफ़ गया, और उग्रसेनने लौटकर बांसवाड़ेपर क़ब्ज़ह करलिया. कहते हैं कि इन लड़ाइयोंमें चार सौ आदमी मारेगये, जिनमें ज़ियादह मानसिंहके थे. मानसिंह भी भागकर बादशाही फ़ौजके शामिल होगया, और बांसवाड़ा लेनेकी कोशिशमें लगा रहा. बादशाही फ़ौज बुर्हानपुरमें पहुंची, तब उग्रसेनके राजपूत गांगा गौड़ने चहुवान मानसिंहको मारडाला, और उग्रसेन बादशाही इताअ़त क़बूल करके बे खटके बांसवाड़ेका राज करने लगा.

रावल उग्रसेनके बाद रावल उदयभान गद्दीपर बैठा, और उसके बाद रावल समरसी वहांका मालिक हुआ. यह रावल महाराणा जगत्सिंह अव्वलके बर्खिलाफ़ होकर साइरके काम्दारोंको अपने इलाक़हसे निकालने बाद बादशाही नौकर बनना चाहता था, और देवलियाके रावत् हरीसिंहकी बहकावट और महाबतखांकी हिमायतका इन पर भी असर पहुंचा; महाराणा जगत्सिंह अव्वलने बड़ी फ़ौजके साथ अपने प्रधान कायस्थ भागचन्दको भेजा; उसने बांसवाड़ेपर घेरा डाला, और रावल समरसी भागगया. छः महीने तक वह प्रधान बांसवाड़ेपर घेरा डाले रहा; फिर देशदाण बदस्तूर जमाकर दस गांव जुर्मानेमें लेने बाद समरसीको पीछा बांसवाड़ेका मालिक बनाया. यह हाल बेड़वासकी बावड़ीकी प्रशस्ति और राज समुद्रकी प्रशस्तिके पांचवें सर्गके २७ व २८ वें श्लोकसे मज़्बूत होता है- (देखो पृष्ठ ३८१ और ५८९).

इनके बाद कुशलसिंह गद्दीपर बैठे, इन्होंने भी उदयपुरसे आज़ाद होनेकी कोशिश की, लेकिन् महाराणा राजसिंह अव्वलने सत्ताईस गांव डांगल ज़िलेके ज़ब्त करलिये, और रावल कुशलसिंहसे मुचल्कह लिखवा लिया, कि इन गांवोंसे बिल्कुल तअ़ल्लुक़ नहीं रक्खूंगा.

इनके बाद रावल अजबसिंह गद्दीपर बैठे; इन्होंने बादशाह आलमगीरके पास पहुंचकर बादशाही नौकरी इख्तियार करली, और उसी ताक़तसे अपने बापके ज़मानेके २७ गांव, जो महाराणाकी ज़ब्तीमें थे, उनको अपने क़ब्ज़ेमें करलिया. महाराणा अमरसिंह दूसरेने बादशाहीमें अजबसिंहका क़ुसूर साबित करनेको कुशलसिंहका इक़ारनामह अपने वकीलोंकी मारिफ़त बादशाहके पास भेजदिया, जिसके जवाबमें वज़ीर असदख़ांने विक्रमी १७५९ [हि० १११३ = ई० १७०२] में एक काग़ज़ महारावल अजबसिंहके नाम लिख भेजा, जिसकी नक़्ल महाराणा दूसरे अमरसिंहके हालमें लिखीगई है- (देखो पृष्ठ ७४७).

इनके बाद रावल भीमसिंह गद्दीपर बैठे; इनका हाल कुछ नहीं मिला; मालूम होता है, कि यह थोड़ेही अर्सेतक बांसवाड़ेकी हुकूमतपर रहे. जब यह दुन्याको छोड़गये, तो उनके बेटे बिशनसिंह (विष्णुसिंह) गद्दीपर बैठे; इनका भी इरादह उदयपुरसे किनारह करनेका मालूम हुआ, तब महाराणा संग्रामसिंह दूसरेने पंचोली बिहारीदासको लिख भेजा, जो उस वक्त रामपुरापर फ़ौज लेकर गया था, कि तुम वहांका काम करके लौटते हुए देवलिया, बांसवाड़ा और डूंगरपुरकी तरफ़ होते आना. बिहारीदास मए फ़ौजके उसी तरफ़ होकर आया, तब बांसवाड़ेके रावल बिशनसिंहको धमकाकर नज़ानेका रुक़ह लिखवाया, जिसकी नक़्ल यहां लिखीजाती है :-

रुक़्केकी नक़ल.

श्रीरांम १

सीध श्री लीषतं राउल श्री वीसनसींघजी अप्रंच, पंचोली श्री वीहारीदासजी पधारया रामपुराथी अणी वाटे पधारा, जदी गोठरा रु० २५०००) देणा, वे ईीषरे पचीस हजार देणा, हाथी १ नीजर करणो, ढील करे नही

मतुं रावल श्री बीसनसीघजी उपर लीषुं ते सही, कोल मास १ नी मास १ ग्ऐ प्र देणा. सं० १७७४ आसोज बद १०.

वीगत रुपीआ

१०००० ईीषरे रुपीआ हजार दस तो मास १ में भरणा.

१५००० रुपीआ ईीषरे हजार पदरे श्री जी हजुर पगे लागे जदी अरज करे वगसांवणा.
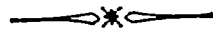
फिर महारावल बिशनसिंह महाराणाकी नौकरीमें आते जाते रहे, जब ईडरके महाराज अणन्दसिंहपर महाराणाने फ़ौज भेजी, तो रावल बिशनसिंह नहीं गये. न जाने सर्कशीसे या इस सबबसे कि उस फ़ौजका अफ़्सर भींडरका महाराज था; उस फ़ौजके शामिल न होनेपर कुछ अर्सेके बाद रावल बिशनसिंहसे जुर्मानेका रुक़्ह लिखाया गया, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:-

रुक़्केकी नक़ल.

॥ श्री ॥

लीषतं १ रु० ८५००१ रो वांसवालारो तीरी नकल,

सवत.

सीध श्री दीवांणजी आदेसातु, प्रत दुओ धाअ भाई नगजी, पचोली कान्हजी अप्रंच ॥ वांसवालारा रावलजी अवके फौजम्हें न्हीं आया, जणी बाबत बेड परचरा रु० ८५००१ अषरे रुपीआ पच्यासी हजार कीधा, सो अेवारु पेहली भरणा, षंदी

न्ही रोकडा भरणा. सं १७८६ वेस्ष वीद ८ स्ने रावलजी श्री वीसनसीघजी मतो सेंह ऋांणु, ऋगरसीघ लषतं.

इसके बाद रावल विशनसिंहका भी देहान्त होगया, क्योंकि उदयपुरके पुराने दफ्तरकी वहीमें विक्रमी १७८९ पौष शुक्ल २ [हि० ११४५ ता० १ रजब = ई० १७३२ ता० २० डिसेम्बर] को बांसवाड़ाके रावल उदयसिंहके तलवार बंधना लिखा है. इस हिसाबसे उक्त मितीके पहिले रावल विशनसिंहका इन्तिकाल होगया था.

इनके बाद रावल उदयसिंह गद्दीपर बैठे, और उनके कोई औलाद न हुई, तब उदयसिंहके बाद उनके छोटे भाई पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे.

इनके बाद विजयसिंह और उनके बाद उम्मेदसिंह, फिर भवानीसिंह और बहादुरसिंह, जिनके बाद लक्ष्मणसिंह, जो अब बांसवाड़ेके रावल हैं, रईस हुए.

इनमेंसे रावल विजयसिंहके वक्त विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] में जब महाराणा भीमसिंह ईडर शादी करनेको गये, तो पीछे लौटते हुए डूंगरपुरसे फ़ौज ख़र्च लेकर बांसवाड़ेकी तरफ़ रवानह हुए; उस वक्त रावल विजयसिंहने ठाकुर जोधसिंहको भेजकर महाराणाको तीन लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका देना कुबूल किया. इस बातसे महाराणा माही नदीके किनारेसे उदयपुरकी तरफ़ लौटगये.

उसके बाद महारावल उम्मेदसिंहने ब्रिटिश गवर्मेंटके साथ ऋहदो पैमान किया. राजपूताना गज़ेटियर जिल्द १ के पृष्ठ १०५ में यहांका तवारीख़ी हाल इस तरहपर लिखा है:-

"जगमालसे छठी पुश्तमें समरसिंह था, जिसने प्रतापगढ़के रईसपर फ़त्ह पाई, और अपने मुल्ककी तरक़ी की. इसके बाद उसका पुत्र कुशलसिंह हुआ, जो भीलोंसे बारह वर्ष तक लड़ता रहा, और अपने इलाक़ेमें कुशलगढ़ वग़ैरह मशहूर जगहोंकी बुन्याद डाली."

"ईसवी १७४७ [वि० १८०४ = हि० ११६०] में पृथ्वीसिंह गद्दीपर बैठा, जिसने बांसवाड़ेकी शहर पनाह बनवाई, सोंठ मक़ामको लूटा, और बांसवाड़ेके दक्षिण पूर्व चिलकारी स्थानको अपने क़ब्ज़हमें किया. आख़िर सदीमें यह सब देश या कुछ कमोबेश मरहटोंके क़ब्ज़हमें गया, जिन्होंने रईसोंसे खूब धन लिया, और उनके साथियोंने मन माना लूटा; मरहटोंसे जो कुछ बचरहा, उसे उन लोगोंके गिरोहने लूटलिया, जो किसीके हुक्ममें न थे, और जिन्होंने देशको दुःख सागरमें डबोदिया."

"ईसवी १८१२ [वि० १८६९ = हि० १२२७] में बांसवाड़ेके रईसने जुदी रियासत ठहराली, और सर्कार ब्रिटिशको ख़िराज देनेकी दर्ख्वास्त की; पर शर्त यह थी, कि मरहटे देशसे निकाल दियेजावें; लेकिन् ईसवी १८१८ [वि० १८७५ = हि० १२३३] तक कोई संबंध ठीक नहीं रहा; इसी सालमें यह अहृद ठहरा, कि सर्कार ब्रिटिशकी हिफ़ाज़त और मददके सबब रावल, सर्कारकी मातहती करे, तो सर्कारकी सलाहके साथ रियासतका काम करेंगे; दूसरी रियासतसे सम्बन्ध न रक्खेंगे; ख़िराज सर्कारको देंगे; और ज़ुरूरतपर सिपाह भी देंगे. यह अहृद वकीलकी मारिफ़त हुआ था, जिसको रावलने नहीं माना. इसके बाद दूसरा अहृदनामह ईसवी १८१८ नोवेम्बर [वि० १८७५ कार्तिक = हि० १२३४ मुहर्रम्] में कियागया. इस अहृदनामहमें यह लिखागया, कि महारावल सर्कार अंग्रेज़ीको सब ख़िराज धार या दूसरी रियासतका अदा करे, और माल गुज़ारीका तीन आठवां हिस्सह हर साल दिया करे. सर्कार अंग्रेज़ी रावलके बिगड़े हुए भाई बेटोंको उसके आधीन करदेवे. पीछेके एक अहृदनामहमें सालानह ख़िराज पैंतीस हज़ार रुपया मुक़र्रर कियागया. उसके बाद फिर ज़ुरूरी ख़र्चके लिये रुपया बढ़ा दियागया."

महारावल लक्ष्मणसिंह.

विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४१] के बाद, जिसका ख़ास वक़्त कई बार दर्याफ़्त करनेपर भी नहीं मिला, गोद लिये जाकर मस्नद नशीन हुए. इनके गद्दी बैठनेपर खांदूके ठाकुरने अपने बेटेके गद्दी बैठनेके वास्ते दावा किया था, लेकिन् उसके मामूली ख़िराजमेंसे तेरह सौ रुपया सालानह कम होजानेपर वह चुप हो बैठा. महारावलकी कम उम्रीमें कई साल तक मुन्शी शहामतअलीख़ां वग़ैरहने सर्कारी तरफ़से काम किया; फिर उनको होश्यार होनेपर इख़्तियार मिल गया.

मौजूद महारावलके अहृदमें प्रतापगढ़ वग़ैरहसे सर्हदी झगड़े और मातहत सर्दारोंसे बहुतसी अन्दरूनी तक़ारें पेश आईं, जिनमें अक्सर बांसवाड़ेका नुक़्सान हुआ. सर्कारी तहक़ीक़ातमें गांव बोरी रीचेड़ीके फ़सादमें बांसवाड़ेकी ज़ियादती पाई गई, जिससे वहांका काम्दार चमनलाल कोठारी दस हज़ार रुपया जुर्मानह लिये जाने बाद दस वर्षके लिये मुल्कसे निकाल दियागया. गांव अजन्दा भी तहक़ीक़ात होने बाद बांसवाड़ेके क़ब्ज़हसे निकालकर प्रतापगढ़ वालोंको दिलाया गया. इसकी

बाबत बांसवाड़ेसे पेश कियेहुए कागज़ात जाली साबित होनेपर सर्कारकी नाराज़गी, और रियासतकी बहुत बदनामी हुई.

विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में थानह कालिन्जरेका बड़ा मुक़द्दमह फैला, कि इस मक़ामसे एक संगीन मुज्रिम किसी तरह निकल गया; राज वालोंने उसके भगा लेजानेका इल्ज़ाम राव कुशलगढ़पर लगाया. कर्नेल निक्सन पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ने भी इस दावेके मुवाफ़िक़ राय देदी, जिससे सर्कारी हुक्मके मुवाफ़िक़ कुशलगढ़पर ज़ब्ती पहुंची; लेकिन् रावने अपने बेकुसूर होनेकी बाबत बहुत कोशिश की, और दोबारह तहक़ीक़ातमें कर्नेल हचिन्सन पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ने रावको सच्चा क़रार दिया. तीसरी बार ज़ियादह खोज और तस्दीक़के लिये कर्नेल मेकेन्ज़ी वग़ैरह कमानियर (कमांडर) खेरवाड़ाके नाम तहक़ीक़ातका हुक्म हुआ. वह कई महीने तक मौक़े पर सुबूत वग़ैरहको तलाश करते रहे. आख़िरकार डूंगरपुरके काम्दारोंकी मारिफ़त बांसवाड़ेके काम्दार केसरीसिंह कोठारीने तमाम अस्ली अह्वाल कर्नेल साहिबसे ज़ाहिर करदिया, और महारावलसे भी किसी तौरपर तह्रीरी इक़ार करादिया, कि मुज्रिमका भागना कुशलगढ़की मददसे न था, राजके अह्ल्कारोंकी ग़फ़्लतसे ज़ुहूरमें आया, और इस मुआमलहमें काम्दारोंने सब कार्रवाई महारावलके हुक्मसे की है. इस मुक़द्दमहकी मुफ़स्सल रिपोर्ट कर्नेल साहिबने सद्रको भेजदी, जिसपर बांसवाड़ेकी तरफ़से बहुत बे एतिबारी पैदा होकर विक्रमी १९२६ पौष [हि० १२८६ शव्वाल = ई० १८७० शुरू जैन्युअरी] से एक ख़ास सर्कारी अफ्सर असिस्टेंट पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़के नामसे बांसवाड़ेमें तईनात कियागया, जो बांसवाड़े और प्रतापगढ़के सर्हदी मुक़द्दमों और जागीरदारोंके संगीन झगड़ोंका निगरां रहकर फ़ैसलह किया करे. इस मह्कमहका ख़र्च, जिसकी तादाद पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह है, मामूली ख़िराजके सिवा हमेशहके वास्ते बांसवाड़ेपर जुर्मानहके तौर डालागया.

विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में गढ़ीके ठाकुर चहुवान रत्नसिंहने, जो अस्सी हज़ार सालानहका जागीरदार है, सर्कशी की; उसने महाराणा शंभूसिंहको अपनी बेटी ब्याहकर उनसे रावका ख़िताब महारावलकी बग़ैर इजाज़त हासिल करलिया था. महारावलने बांसवाड़ेमें उसके बाग़का एक हिस्सह सड़क बनानेके बहानेसे दबाकर उसके इलाक़हमें राहदारीका महसूल, जो उसके बयानके मुवाफ़िक़ मुआफ़ था, जारी करदिया; लेकिन् दूसरे ठाकुरोंने नर्मीके साथ फ़ैसलह करादिया; महारावलने मेवाड़का दिया हुआ रावका ख़िताब ठाकुरके नामपर बहाल रखकर बाग़ और दाणके एवज़ कुछ रुपया देदिया, और रत्नसिंहको अपना दीवान बनालिया.

दूसरे कई जागीरदारोंपर बग़ैर दर्याफ़्त गोद लिये जानेपर महारावलने सज़ा तज्वीज़ की थी, लेकिन् पोलिटिकल अफ़्सरने हिदायत करदी, कि राजको मुल्की कार्रवाईके सिवा क़ौमी बातोंमें दख़्ल देनेका इख़्तियार नहीं है.

महारावल लक्ष्मणसिंह, जिनको चालीस बरससे ज़ियादह अ़र्सा राज करते गुज़रा, पुरानी चालके रईस हैं; उनको इ़ल्मका शौक़ है, और अपने बेटोंको भी किसी क़द्र हिन्दी व फ़ार्सी तालीम दिलाई है. राज बांसवाड़ेके ख़ालिसहकी आमदनी दो लाख रुपया सालानह और इससे कुछ ज़ियादहकी जागीर सर्दारोंके क़ब्ज़हमें है; तीस हज़ार सालानहके गांव ब्राह्मण, चारण और अह्ल्कारों वग़ैरहको बंटे हुए हैं. इस रईसको गोद लेनेका इख़्तियार और १५ तोपकी सलामी है, लेकिन् सर्कारी नाराज़गीके सबब मौजूद महारावलकी ज़ाती सलामी कुछ अ़र्सेके लिये १३ तोप करदी गई थी.

एचिसन्की अ़हदनामोंकी किताब जिल्द ३,
अ़हदनामह नम्बर १६.

अ़हदनामह ऑनरेब्ल ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाड़ा और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान, ऑनरेब्ल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मॅटकॉफ़की मारिफ़त, पूरे इख़्तियारके साथ, जो उनको श्रीमान मार्क्किस हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलसे मिले थे, और महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुरकी तरफ़से रत्नजी पंडितकी मारिफ़त, जो उनकी तरफ़से पूरे इख़्तियार रखता था, तै पाया.

शर्त अव्वल- दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और नेक निय्यती आपसमें सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाड़ा और उसके वारिसों व जानशीनोंके हमेशह क़ाइम और जारी रहेगी, और एक फ़रीक़के दोस्त व दुश्मन दूसरेके भी दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह राज और मुल्क बांसवाड़ेकी हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी- महारावल, उसके वारिस और जानशीन हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके साथ इताअ़त और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमतको बड़ा क़ुबूल करेंगे, और आगेको किसी दूसरे रईस या रियासतसे वासितह न रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महारावल, उसके वारिस व जानशीन अपने कुल राज्य और

मुल्कके हाकिम रहेंगे, और सर्कार अंग्रेज़ीकी दीवानी व फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा.

शर्त पांचवीं – राज बांसवाड़ेके मुआमले अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहसे तै पावेंगे, लेकिन् सब बातोंमें अंग्रेज़ी सर्कार महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ फ़र्मावेगी.

शर्त छठी – महारावल, उसके वारिस और जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारकी मंजूरी वगैर किसी गैर रईस या रियासतके साथ दोस्ती या इत्तिफ़ाक़ न रक्खेंगे, मगर उनकी दोस्तानह लिखा पढ़ी अपने दोस्त और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त सातवीं– महारावल, उसके वारिस व जानशीन किसी पर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़न् किसीके साथ तक्रार पैदा होगी, तो उसका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीके सुपुर्द होगा.

शर्त आठवीं– महारावल, उसके वारिस व जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारको अपनी आमदनीमेंसे छः आने फ़ी रुपयेके हिसाबसे ख़िराज अदा करेंगे.

शर्त नवीं– ज़रूरतके वक्त मांगनेपर रियासत बांसवाड़ा अपनी फ़ौज सर्कार अंग्रेज़ीकी नौकरीके लिये अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ देगी.

शर्त दसवीं– यह दस शर्तोंका अहदनामह तय्यार होकर उसपर चार्ल्स थियोफ़िलस मॅटकॉफ़ और रत्नजी पंडितके दस्तख़त व मुहर हुए, और उसकी नक़्लें हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल और महारावल उम्मेदसिंहकी तस्दीक़ की हुई आजकी तारीख़से दो महीनेके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दीजायेंगी.

मक़ाम दिहली, तारीख़ १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई०

रत्नजी पंडितकी मुहर.	दस्तख़त– सी० टी० मॅटकॉफ़. दस्तख़त– हेस्टिंग्ज़.
कंपनीकी मुहर.	दस्तख़त– जे० डाउड्ज़वेल. दस्तख़त– जे० स्टुअर्ट. दस्तख़त– सी० एम० रिकेट्स.

गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें तारीख़ १० ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें तस्दीक़ किया.

दस्तख़त – जे० ऐडम,
चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेंट.

बाक़ी शर्त अह्दनामहकी, जो १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई० को ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाड़ाके तै हुआ.

जो कि महारावल बयान करते हैं, कि उन्होंने अब तक किसी रईसको मुक़र्रर ख़िराज नहीं दिया, इस वास्ते यह इक़ार किया जाता है, कि अगर कोई रईस इस बाबत अपना दावा पेश करे, और उसका सुबूत दे, तो ऐसे दावोंका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीके सुपुर्द होगा.

मक़ाम दिहली, ता० १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई०

दस्तख़त – सी० टी० मॅटकॉफ़. | बड़ी मुहर.

| पंडित रत्नजीकी मुहर. |

दस्तख़त – हेस्टिंग्ज़.

दस्तख़त – जे० डाउड्ज़वेल.

| कंपनीकी मुहर. |

दस्तख़त – जे० स्टुअर्ट.

दस्तख़त – सी० एम० रिकेट्स.

हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें ता० १० ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें तस्दीक़ किया.

दस्तख़त – जे० ऐडम,

चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेंट.

अह्दनामह नम्बर १७.

अह्दनामह ऑनरेबल ईस्ट इण्डियां कंपनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ा और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान, ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से कप्तान जेम्स कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त, जिसको ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलके एजेंटकी तरफ़से हुक्म मिला था, और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ाकी मारिफ़त, जो अपनी और अपने वारिस व जानशीनोंकी तरफ़से मुख़्तार थे, तै पाया. ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कमको कुल इख़्तियार इन मुआमलेमें मोस्ट नोबल फ़्रांसिस मार्किस हेस्टिंग्ज़ के० जी० की तरफ़से, जो

हिज़ ब्रिटैनिक मॅजिस्टीकी प्रिवी कौन्सिलके मेम्बर थे, और जिनको ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमत और उसकी कार्रवाईके लिये मुक़र्रर किया था, हासिल हुए थे.

शर्त अव्वल - दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और आपसकी ख़ैरख़्वाही सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ा और उसके वारिस व जानशीनोंके हमेशह क़ाइम और जारी रहेगी, और दोस्त व दुश्मन दोनों फ़रीक़के आपसमें एकसे समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी - अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह राज्य और मुल्क बांसवाड़ेकी हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी - महारावल, उसके वारिस और जानशीन हमेशह सर्कार अंग्रेज़ीके साथ इताअत और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमत और बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और आगेको किसी रईस या रियासतसे तअल्लुक़ न रक्खेंगे.

शर्त चौथी - महारावल, उनके वारिस और जानशीन अपने राज्य और मुल्कके पूरे हाकिम रहेंगे, और अंग्रेज़ी दीवानी और फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा.

शर्त पांचवीं - राज बांसवाड़ेके मुआमले अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहसे तै पावेंगे, और सब बातोंमें अंग्रेज़ी सर्कार महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ फ़र्मावेगी.

शर्त छठी- महारावल, उनके वारिस और जानशीन सर्कार अंग्रेज़ीकी मन्ज़ूरी बग़ैर किसी रियासतके साथ इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न रक्खेंगे, लेकिन् उनकी दोस्तानह तह्रीर अपने दोस्त व रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त सातवीं- महारावल, उनके वारिस व जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़न् किसीके साथ झगड़ा होजायेगा, तो उसका फ़ैसलह अंग्रेज़ी सर्पंचीके सुपुर्द होगा.

शर्त आठवीं- महारावल, उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि जो वाजिबी ख़िराज रियासत धार या किसी और का, जो अबतक देनेके लाइक़ होगा, वह अंग्रेज़ी सर्कारको सालानह क़िस्त बन्दीके साथ मुनासिब वक़ोंमें अदा किया जायेगा, और ये क़िस्तें अंग्रेज़ी सर्कार रियासतकी हैसियतके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर फ़र्मावेगी.

शर्त नवीं- महारावल, उनके वारिस और जानशीन वादह करते हैं, कि वह हिफ़ाज़तके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज दिया करेंगे, और यह ख़िराज हर बरस मुल्क बांसवाड़ेका तरक़्क़ीके मुवाफ़िक़ बढ़ता जायेगा, जिस क़द्र कि सर्कार अंग्रेज़ी

हिफ़ाज़तके ख़र्चेकी बाबत काफ़ी ख़याल फ़र्मावे, लेकिन् वह किसी हालतमें आमदनी रियासतपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न हो.

शर्त दसवीं– महारावल, उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि राजकी फ़ौज हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके इख़्तियारमें रहेगी.

शर्त ग्यारहवीं – महारावल, उनके वारिस व जानशीन इक़ार करते हैं, कि वह हर्गिज़ किसी अरब, मकरानी, सिंधी या ग़ैर मुल्कके सिपाहीको अपनी फ़ौजमें, देशी लोगोंके सिवा, भरती न करेंगे.

शर्त बारहवीं– सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह महारावलके किसी रिश्तहदारको, जो उनसे बाग़ी होगा, मदद न देगी; बल्कि महारावलको ऐसा सहारा देगी, कि सर्कश उनका फ़र्मांबर्दार बनजावे.

शर्त तेरहवीं– महारावल इस अहदनामहकी नवीं शर्तमें वादह करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज दिया करेंगे, बस उसके इत्मीनानके वास्ते इक़ार करते हैं, कि ख़िराज अदा न होनेकी हालतमें एक मोतमद सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से बांसवाड़ेमें तईनात हो, जो चबूतरे और दूसरे मातहत नाकोंकी आमदनीसे बाक़ियातका रुपया वुसूल करे.

यह तेरह शर्तोंका अहदनामह आजकी तारीख़ कप्तान जे० कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त, ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल० एस० के हुक्मसे, ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से, और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ाकी मारिफ़त खुद उनकी और उनके वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से ख़त्म हुआ; कप्तान कॉलफ़ील्डने उसकी एक नक़्ल ज़बान अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें दस्तख़ती और मुहरी अपनी महारावल श्री उम्मेदसिंहको दी; और एक नक़्ल उनकी दस्तख़ती और मुहरी आप ली.

कप्तान कॉलफ़ील्ड वादह करते हैं, कि एक नक़्ल मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल बहादुरकी तस्दीक़ कीहुई बिल्कुल इस अहदनामहकी नक़्लके मुवाफ़िक़, जो अब तै पाया है, महारावल श्री उम्मेदसिंहको इस अहदनामहकी तारीख़से दो महीनेके अन्दर दीजावेगी; और जो नक़्ल कप्तान कॉलफ़ील्ड साहिबने अपनी दस्तख़ती और मुहरी दी है, वह उस वक़्त वापस होगी.

यह अहदनामह महारावल श्री उम्मेदसिंहने अपनी मर्ज़ी और ख़्वाहिशसे तन्दुरुस्ती और अक़्लकी दुरुस्तीकी हालतमें ख़त्म किया है.

मक़ाम बांसवाड़ा, ता० २५ डिसेम्बर, सन् १८१८ ई० मुताबिक़ २४ सफ़र, सन् १२३४ हिज्री, और मुताबिक़ १३ पौष, संवत् १८७५ विक्रमी.

कंपनीकी मुहर.

दस्तख़त - जे० कॉलफ़ील्ड.

दस्तख़त - हेस्टिंग्ज़.

दस्तख़त - जे० डाउड्ज़्वेल.

दस्तख़त - जेम्स स्टुअर्ट.

दस्तख़त - ऐडम.

गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.

गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें ता० १३ फ़ेब्रुअरी सन् १८१९ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- सी० टी० मॅटकॉफ़,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट.

अह्दनामह नम्बर १८.

गवर्मेंट अंग्रेज़ी और महारावल श्री भवानीसिंह रईस बांसवाड़ाके दर्मियान.

जो कि उस अह्दनामहकी आठवीं शर्तमें, जो सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिह रईस बांसवाड़ाके दर्मियान, ता० २५ डिसेम्बर सन् १८१८ ई० मुताबिक़ पौष कृष्ण १३ संवत् १८७५ को तै हुआ, उक्त रावलने यह शर्त की है, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको रियासत धार और दूसरे ठिकानोंका तमाम बाक़ी ख़िराज, जो अह्दनामहकी तारीख़ तक वाजिबी होगा, सालानह क़िस्तवन्दीके साथ देंगे; और क़िस्तें मुनासिब समझकर अंग्रेज़ी सर्कार मुक़र्रर फ़र्मावेगी; और जो कि सर्कार अंग्रेज़ीने रियासतकी तबाही और रावलकी कम आमदनीके ख़यालसे पैंतीस हज़ार रुपया सालिमशाही, जो मुल्ककी एक सालकी आमदनीके बराबर है, आठवीं शर्तमें बयान कीहुई तमाम बाक़ियातके एवज़ मंज़ूर किया; इस वास्ते महारावल इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ ज़िक्र किया हुआ रुपया अदा करेंगे.

मिती फाल्गुन् संवत् १८७६ मुताबिक़ फ़ेब्रुअरी सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ जेन्युअरी सन १८२१ ई०
रु० २५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ एप्रिल सन १८२१ ई०
रु० २५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ जेन्युअरी सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ जेन्युअरी सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक़ जेन्युअरी सन १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक़ जेन्युअरी सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८२ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

और जो कि उक्त अ़ह्दनामहकी नवीं शर्तमें महारावल वादह करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको हिफ़ाज़तके एवज़ एक खिराज मुल्ककी हैसियतके मुवाफ़िक़ देंगे, मगर वह किसी हालतमें आमदनी मुल्कपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न होगा; और जो कि गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी बिल्कुल दिली ख्वाहिश यह है, कि रियासत रावलकी दुरुस्ती और बिह्तरी बहुत जल्द हो, इस वास्ते उसने तज्वीज़ फ़र्माई है, कि वाजिब रुपयेकी तादाद बाबत सन् १८१९ ई० व सन् १८२० ई० व सन् १८२१ ई० के क़रार पावे; और महारावल इक़ार करते हैं, कि वह बयान किये हुए रुपयोंकी बाबत नीचे लिखे मुवाफ़िक़ रुपया अदा किया करेंगेः—

मिती फाल्गुन् संवत् १८७६ मुताबिक़ फ़ेब्रुअरी सन् १८२० ई०
रु० ८५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२० ई० रु० ८५००

कुल बाबत सन् १८१९ ई० रु० १७०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२१ ई० रु० १००००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२१ ई० रु० १००००

कुल बाबत सन् १८२० ई० रु० २००००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२२ ई० रु० १२५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२२ ई० रु० १२५००

कुल बाबत सन् १८२१ ई० रु० २५०००

यह बन्दोबस्त सिर्फ़ तीन वर्षके वास्ते है, बाद इस मुद्दत गुज़रनेके सर्कार अंग्रेज़ी नवीं शर्त अह्दनामहकी तह्रीरके मुवाफ़िक़ ऐसा बन्दोबस्त फ़र्मावेगी, जैसा उसके नज़्दीक ईमान्दारीकी रूसे रावलके मुल्ककी हैसियतके मुवाफ़िक़ और दोनों तरफ़की बिह्तरीके लिये मुनासिब समझा जायेगा.

यह अह्दनामह बांसवाड़ा मक़ामपर कप्तान ए० मॅक्डोनल्डकी मारिफ़त जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे, जो अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से कारबन्द थे, और महारावल श्री भवानीसिंहकी मारिफ़त, जो अपनी रियासतकी तरफ़से मुख़्तार थे, ता० १५ फ़ेब्रुअरी सन् १८२० ई० मुताबिक़ फाल्गुन् सुदी २ संवत् १८७६ विक्रमी और मुताबिक़ २६ वीं रबीउस्सानी सन् १२३६ हिज्रीको तय्यार हुआ.

रावलकी मुहर.

दस्तख़त - ए० मॅक्डोनल्ड,
असिस्टेंट, सर जॉन माल्कम.

अह्दनामह नम्बर १९.

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट और श्री मान लक्ष्मणसिंह, महारावल

बांसवाड़ा व उनकी औलाद वारिसों व जानशीनोंके, जो एक तरफ़ लेफ्टिनेन्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ने बहुक्म लेफ्टिनेन्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी० के किया, जो राजपूतानाकी रियासतोंके लिये गवर्नर जेनरलके एजेन्ट थे, और जिनको पूरे इख्तियारात हिज़ एक्सिलेन्सी राइट ऑनरेब्ल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बार्ट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दसे मिले थे, और दूसरी तरफ़ महारावल लक्ष्मणसिंहने खुद अपनी तरफ़से किया.

शर्त पहली - कोई शख़्स अंग्रेज़ी या ग़ैर इलाक़ेका रिआया अंग्रेज़ी इलाक़ेमें कोई बड़ा जुर्म करके बांसवाड़ा इलाक़ेकी हद्दमें कहीं आश्रय लेवे, तो उसको बांसवाड़ेकी सर्कार गिरिफ़्तार करेगी, और सर्कार अंग्रेज़ीको सपुर्द करेगी, जब कि सरिश्तेके मुवाफ़िक़ वह तलब किया जायेगा.

शर्त दूसरी - कोई शख़्स बांसवाड़ेकी रिआया बांसवाड़ाके इलाक़ेकी हद्दमें बड़ा जुर्म करके अंग्रेज़ी इलाक़ेमें आश्रय लेवे, तो सरिश्तेके मुताबिक़ दर्ख्वास्त करनेपर सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी, और बांसवाड़ेकी सर्कारके सुपुर्द करेगी.

शर्त तीसरी - कोई शख़्स जो बांसवाड़ेका बाशिन्दा न हो, और बांसवाड़ा इलाक़ेकी हद्दमें कोई भारी जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़ेमें आश्रय लेवे, तो वह गिरिफ़्तार कियाजायेगा, और मुक़द्दमेकी रूबकारी ऐसी अदालतमें होगी, जिसे कि सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करे. अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंकी तहक़ीक़ात उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमें होगी, जिसकी सुपुर्दगीमें बांसवाड़ेकी पोलिटिकल निगहबानी रहे.

शर्त चौथी - किसी हालतमें कोई सर्कार किसी शख़्सको, जिसपर किसी बड़े जुर्मका इल्ज़ाम लगाया गया हो, सुपुर्द करनेके लिये मज्बूर न होगी, जब तक कि सरिश्तेके मुवाफ़िक़ वह सर्कार, जिसके इलाक़हमें जुर्म किया गया हो, दर्ख्वास्त न करे, या इख्तियार न दे, और जुर्मकी ऐसी गवाही होनेपर, जैसे कि उस मुल्कके क़ानूनोंके मुताबिक़, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ़्तार करना दुरुस्त ठहरे, और जुर्मकी पुख्तगी हो, गोया कि जुर्म वहींपर किया गया हो.

शर्त पांचवीं - नीचे लिखे हुए जुर्म भारी जुर्म क़रार दियेगये हैं :-

१- खून, २- खून करनेकी कोशिश, ३- वहशियाना क़त्ल, ४- ठगी, ५- ज़हर देना, ६- सख्तगीरी, याने ज़बर्दस्ती व्यभिचार, ७- शदीद ज़रर पहुंचाना,

८- लड़का चुराना, ९- औरतोंका बेचना, १०- डकैती, ११- लूटमार, १२- मकानमें सेंध लगाना, १३- चौपाये जानवर चुरा लेजाना, १४- मकान जलाना, १५- जाली दस्तख़त बनाना, १६- झूठा सिक्कह बनाना, १७- धोखा देकर जुर्म करना, १८- माल अस्बाब चुरा लेजाना, १९- ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना.

शर्त छठी- मुज्रिमको गिरिफ़्तार करने, रोक रखने या इन शर्तोंके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगेगा, वह उस सर्कारको देना पड़ेगा, जिसकी दर्ख्वास्तसे यह काम किया जावे.

शर्त सातवीं- यह अ़ह्दनामह उस वक्त तक जारी रहेगा, जब तक कोई एक फ़रीक़ इसके ख़त्म करनेकी ख्वाहिश दूसरेसे न ज़ाहिर करे.

शर्त आठवीं- इस अ़ह्दनामहकी किसी बातका असर पहिलेके अ़ह्दनामोंपर कुछ नहीं होगा, जो कि दोनों फ़रीक़में क़ाइम हैं, सिवाय उसके, जो कि इसकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम बांसवाड़ा, ता० २४ डिसेम्बर सन् १८६८ ई०.

मुहर. दस्तख़त- ए० आर० ई० हचिन्सन्, लेफ्टिनेन्ट कर्नेल,

मुहर. क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़.

मुहर. और दस्तख़त- महारावल, बांसवाड़ा.

दस्तख़त- मेओ.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान वाइसरॉय गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानने, मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें, ता० ५ मार्च सन् १८६९ ई० को की.

मुहर. दस्तख़त डब्ल्यु० एस० सेटन् कार,

सेक्रेटरी गवर्मेंट ऑव इन्डिया,

फ़ॉरेन् डिपार्टमेन्ट.

देवलिया याने प्रतापगढ़की तवारीख़.

इस रियासतका हाल यहांपर इसलिये दर्ज कियागया है, कि महाराणा दूसरे अमरसिंह व संग्रामसिंहके अ़ह्द हुकूमतमें देवलियाके महारावत् बादशाही हिमायतसे दोबारह मेवाड़की मातह्तीमें लाये गये थे; लेकिन् अब यह रियासत राजपूतानहकी छोटी अ़लहदह रियासतोंमेंसे एक गिनी जाती है.

जुग़्राफ़ियह (१).

प्रतापगढ़का राज्य २४° १८′ से लेकर २३° १७′ उत्तर अक्षांश तक और २४° ३१′ से ७५° ३′ पूर्व देशान्तर तक फैला हुआ है, इसकी ज़ियादह लंबाई उत्तरसे दक्षिणको ६७ माइल और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक ३३ माइल; और कुल रक्वह १४५० वर्ग माइलके क़रीब है. यह रियासत पश्चिमोत्तरमें मेवाड़, पूर्वोत्तरमें सेंधियाके ज़िले नीमच व मन्दसौर, पूर्व दक्षिणमें जावरा व पीपलोदा, दक्षिण पश्चिम और पश्चिममें रियासत बांसवाड़ासे घिरी हुई है.

प्रतापगढ़का ज़ियादह हिस्सह जिसमें राजधानीके पूर्व और दक्षिण पूर्वके बीचकी ज़मीन चौड़ी खुली हुई अच्छी काली मिट्टीकी है, जो भूरे रंगकी सुर्ख़ी माइल रंगसे मिली हुई है, जैसी कि मालवाके ऊंचे मैदानके बाज़ हिस्सोंकी; और कहीं कहीं बहुत पथरीली है; घाटोंकी एक क़तार क़रीब क़रीब ठीक उत्तर और दक्षिण, बांसवाड़ाके जंगलोंमेंके झुकावको ज़ाहिर करती है. इस राज्यका पश्चिमोत्तरी भाग पुरानी राजधानी क़स्बे देवलियासे मेवाड़की सीमा तक जंगल व पहाड़ियोंसे ढका हुआ और क़रीब क़रीब बिल्कुल भीलोंसे आबाद है. इसीतरह अक्सर पहाड़ियों व जंगलोंके सिवा कुल इलाक़हमें कुछ नहीं नज़र आता; जहांपर जंगलोंके दरख़्त कटगये हैं, वहांपर थोड़ीसी भीलोंकी झोंपड़ियां हैं.

---

(१) यह बयान कप्तान सी० ई० येट साहिब बहादुरके बनाये हुए राजपूतानह गज़ेटियरके पृष्ठ ७७ से तर्जमह करके लिखागया है.

पहाड़ियोंका बड़ा सिल्सिला इस राज्यमें एक ही है, जो रियासतके पश्चिमोत्तर कोणमें होकर इलाके मेवाड़में बड़ी सादड़ी तक चलागया है, और जाकुम नदीके तीरपर राणीगढ़के पाससे शुरू होता है, जहांपर इसकी बलन्दी समुद्रकी सत्हसे १५४८ फ़ीट है, और पश्चिमकी तरफ़ क़रीब तीन माइलके फ़ासिलेपर १७२१ फ़ीट होगई है; इसी तरह पश्चिमोत्तरकी तरफ़ कुछ कुछ बढ़तीहुई मेवाड़की सर्हदके किनारे पर १९०० फ़ीट होगई है. जाकुमसे दक्षिण तरफ़ थोड़े ही फ़ासिलेपर नीची ज़मीन है, लेकिन् पहाड़ियां रफ्तह रफ्तह ऊंची होतीगई हैं, और देवलियाके नज़्दीक जाकर फिर १८०० फ़ीट ऊंचाई होगई है. देवलियासे दक्षिण पुरानी पहाड़ीपर "जूना गढ़" नामका एक गढ़ है, जिसके ऊपर एक छोटा तालाब व कुआं है, और उसके आस पास भीलोंके खेत हैं.

प्रतापगढ़की ज़मीनका पूरा पूरा हाल मालूम नहीं है. विन्ध्याचल पहाड़, जो मेवाड़की सीमापर ख़त्म होता है, अर्वलीकी समानान्तर श्रेणियोंमें मिलगया है, परन्तु भूगर्भ विद्याके अनुसार ज़मीनकी कैफ़ियत कभी मालूम नहीं कीगई है. यहांपर किसी क़िस्मका धातु नहीं पाया जाता, लेकिन् यहांके लोग पहिले देवलियाके पास डाकोर मक़ाममें पत्थरकी अच्छी खानें होना बयान करते हैं.

आब हवा और बारिश.

यहांकी आब हवा उम्दह और मालवाके दूसरे हिस्सोंके मुवाफ़िक़ गर्मी व सर्दी भी साधारण है. सन् १८७९ ई० में जो वर्सातका अन्दाज़ा ३२ इंच हुआ था, उसके हिसाबसे बारिशका औसत भी अच्छा समझा जा सक्ता है.

जंगल.

इस इलाक़हमें कोई ख़ास जंगली हिस्सह नहीं है, लेकिन् पश्चिम और पश्चिमोत्तरके पहाड़ी हिस्से छोटे छोटे दरख़्तों और बांसके जंगलोंसे ढके हुए हैं, मगर बहुतसी लकड़ी, जो काममें लाई जाती है, भील लोग बांसवाड़ाके ज़िलों से लाकर सप्ताहिक बाज़ारोंमें बेचते हैं; इस सौदागरीके बाज़ार सीमाके किनारेपर कई गांवोंमें लगते हैं.

नदी और झील.

प्रतापगढ़में कोई मश्हूर नदी नहीं है, क्योंकि यह हिस्सह बंगालेकी खाड़ीमें

गिरनेवाली नदियोंके बहावको खंभातकी खाड़ीमें गिरनेवालियोंके प्रवाहसे अलग करनेवाली ऊंची ज़मीनपर वाके है. जाकुम नदी, जो मेवाड़में सादड़ीके पास निकलती है, राज्यके पश्चिमोत्तरी भागमें धरियावदकी तरफ़ जाकर माही नदीमें गिरती है. वह छोटा गढ़ जो प्रतापगढ़का दक्षिणी हिस्सह है, उन दो नालोंके कोनेपर बना है, जो पीछेसे आपसमें मिलकर बांसवाड़ेके राज्यमें माही नदीसे मिलने वाली एक नदीको बनाते हैं. राज्यके दक्षिण पूर्वी हिस्सेका बहाव सोनमें गिरता है, जो कि चम्बलकी एक मददगार है, और मन्दसोरमें होकर उत्तरकी तरफ़ बहती है.

राज्यमें चन्द बड़े बड़े तालाब हैं, जिनमेंसे रायपुरका सर्पटा तालाब सबसे बड़ा है. पानी अक्सर ज़मीनकी सतहसे ४० या ५० फ़ीटकी गहराईपर मिलता है.

राज्यका प्रबन्ध.

राज्यका प्रबन्ध क़रीब क़रीब बिल्कुल रईसकी संभाल और सलाहपर अह्लकार या प्रधानके ज़रीएसे होता है; पहिले रियासतका कुल इन्तिज़ाम कामदार ही करता था, लेकिन् कुछ अर्सेसे दीवानी, फ़ौज्दारी, महक्मह माल व पुलिसपर जुदे जुदे अफ़्सर मुक़र्रर करदिये गये हैं.

जेलख़ानह, अस्पताल, पाठशाला और टकशाल.

राजधानीमें एक जेलख़ानह, अस्पताल और एक पाठशाला है, और मन्दसौरके सर्कारी डाकख़ानहसे राजका भी एक डाकख़ानह मिला हुआ है. टकशाल भी यहांपर है, लेकिन् उसमें किसी तरहका यन्त्र (कल) नहीं है, सिर्फ़ एक भद्दे ठप्पेपर सालिमशाही (१) रुपया गढ़ाजाता है, जिसकी क़ीमत क़रीब ।॥) कल्दारके है.

आबादी.

कुल राज्यके आदमियोंकी तादादका बड़ा हिसाब रियासतकी तरफ़से १२२२९८ हुआ है. शहर प्रतापगढ़ व ख़ालिसेके ज़िलोंमें ८५९१९ आदमियोंकी आबादी लिखी है. ऐसा अन्दाज़ा किया जाता है, कि जागीरदारोंके गांवोंमें कुल २७६२९ आदमी हैं, और इन्हें छोड़कर बड़े छोटे २५० गांव भीलोंके हैं, जिनमें फ़ी गांव औसत १० घरके हिसाबसे २५०० घर या क़रीब ८७५० भीलोंकी बस्ती है.

---

(१) ये रुपया नर्मदा किनारे तक कुल मालवेमें चलता है.

ऊपर लिखे तख़्मीनेसे फ़ी मील मुरब्बा क़रीब ८४ $\frac{1}{3}$ बाशिन्दोंका औसत हुआ, जिसको ठीक समझना चाहिये; मुल्कके साफ़ हिस्सेकी आबादी, पश्चिमी व उत्तरी जंगली व पहाड़ी ज़िलोंके भीलोंकी तादादके बराबर ही मानी जाती है.

बाजरा व मौठके सिवा अक्सर सब क़िस्मका अनाज यहां उपजता है, परन्तु गेहूं ख़ास पैदावार है; अफ़ीम, ईख और ज्वार भी कस्रतसे बोई जाती हैं. यहांपर भील लोग ज़िलोंमें खेती उसी तरह करते हैं, जैसी बांसवाड़ेमें; और वह सिर्फ़ मक्की ही बोते हैं.

ज़मीनका पट्टा और आमदनी.

अक्सर ज़मीन राजकी ख़ालिसाई है, और किसानोंको कच्चे पट्टेपर जोतने बोने को दीजाती है, जो उसके बेचने या गिर्वी रखनेका इख्तियार नहीं रखते; लेकिन् इसके बर्ख़िलाफ़ यह भी नहीं होसक्ता, कि विना किसी ख़ास सबबके ज़मीनसे अलग कियेजावें, जो पीढ़ियोंसे उनके क़ब्ज़ेमें चली आती है. राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ यहां भी ठाकुर और अह्लकार लोग चाकरी और ख़िराजकी शर्तपर जागीर पाते हैं.

ज़ियादह तर ख़ालिसेके गांव मुक़र्रर वक़्के लिये ठेकेपर दियेजाते हैं, और जब ठेका नहीं होता है, तो गांवोंकी मालगुज़ारी पटैलके ज़रीएसे राजका काम्दार तह्सील करता है. पीवल (सींचीजाने वाली) ज़मीनका कर फ़ी बीघे ५) रुपयेसे ३०) तक नक्द लियाजाता है; जो ज़मीन नहीं सींची जाती उसका मह्सूल नक्द पैदावारमें से लियाजाता है. नक्दकी हालतमें फ़ी बीघा ।) से लेकर ३) रुपये तक, और पैदावारमें बीघे पीछे ५ सेरसे लेकर दो मन तक वुसूल होता है; भील लोग घर प्रति १) रुपया सालानह देते हैं, बीघेका मह्सूल मुक़र्रर नहीं है; ख़ालिसाई ज़िलोंकी कुल सालानह आमदनी १२५०००) रुपया सालिमशाही है, लेकिन् साइर व ख़िराज वग़ैरह मिलाकर कुल आमदनी तीन लाखके लग भग समझी जाती है.

सौदागरी.

धान, अमल और देशी कपड़े व्यापारकी ख़ास चीज़ोंमेंसे हैं. धान ज़ियादह तर बांसवाड़ेसे आता है, और जो देशी कपड़ा मन्दसौर व दूसरे मक़ामोंसे आता है, वह वहां भेजाजाता है. प्रतापगढ़के कारीगर ज़ुमुर्रुदके रंगके काचपर सोनेका काम

करनेके लिये प्रसिद्ध हैं, लेकिन् अब यह काम सिर्फ़ दो ख़ानदानोंमें होता है, क्योंकि इसकी तर्कीब पोशीदह रक्खी जाती है.

सड़कें.

राज्यमें कहीं बनाई हुई सड़कें नहीं हैं, परन्तु जो सड़क नीमचको जाती है, ३२ मील उत्तरको है, और मन्दसौरको जाने वाली १९ मील पूर्वको और जावराको जाने वाली ३५ मील दक्षिण पूर्वमें है. साफ़ मैदानमें होकर गुज़रने वाली सड़कें अच्छी हैं; मेवाड़ और बांसवाड़ेकी सौदागरी अभी तक केवल बंजारोंके ज़रीएसे बैलोंपर होती थी, परन्तु हालमें एक गाड़ीकी सड़क बांसवाड़े तक जारी करनेकी कोशिश हुई है, जो ५५ मील दक्षिण पश्चिमको कान्हगढ़के घाटेमें होकर गई है.

ज़िले और शहर.

राज्यमें तीन पर्गने हैं:- छोटा या कुंडल पर्गनह, जिसमें राजधानीसे उत्तर और पूर्व मन्दसौरकी तरफ़ वाली ज़मीन है; बड़ा पर्गनह, जिसमें दक्षिणी ज़िले हैं; और माली पर्गनह (पश्चिमोत्तरी) जिसमें भील लोग आबाद हैं.

शहर प्रतापगढ़ उत्तर अक्षांश २४° २' और पूर्व देशान्तर ७४° ५९' में समुद्रकी सतहसे १६६० फ़ीटकी ऊंचाईपर वाके़ है, जिसकी बुन्याद महारावत् प्रतापसिंहने अठारहवीं सदीके शुरूमें एक मकामपर डाली, जो पहिले घोघेरिया खेड़ा कहलाता था. यह शहर एक नालेके सिरेपर दो नालोंके बीच शहर पनाहसे महफ़ूज़ बसा हुआ है, जिसमें आठ दर्वाज़े हैं; शहरपनाहको महारावत् सालिमसिंहने मस्नद नशीन होनेपर विक्रमी १७५८ में बनवाया; इसके दक्षिण पश्चिमी कोणमें एक छोटा गढ़ है, जहां हालमें महारावत्के परिवारके रहनेको मकान बनायागया है. शहरके बीच वाला महल बहुत बड़ा नहीं है, और अक्सर ख़ाली रहता है (१), क्योंकि वर्तमान महारावत्ने अपने रहनेको एक नया महल शहरसे पूर्व एक मीलकी दूरीपर बनवालिया है. शहरमें २९०६ घर और १०६६९ आदमी बसते हैं, जिनमें ज़ियादह तर रोज़गार पेशह लोग हैं.

देवलियाकी पुरानी राजधानी, जो अब बिल्कुल ऊजड़सी होगई है, प्रतापगढ़से ठीक पश्चिम ७½ मीलपर २४° ३०' उत्तर अक्षांश और ७४° ४२' पूर्व देशान्तरमें समुद्रकी

(१) इस गज़ेटियरके बनने बाद महारावत् अब प्रतापगढ़के अन्दर रहने लगे हैं, और इमारतोंकी तरक़्क़ी भी की है.

सत्हसे १८०९ और प्रतापगढ़से १४९ फ़ीटकी ऊंचाईपर बसा है; पुराने महल अब बिल्कुल बे मरम्मत पड़े हैं, जिनको सत्रहवीं सदीमें महारावत् हरीसिंहने बनवाया था. पहिले यह शहर ख़ूब आबाद था; यहांपर कई मन्दिर विष्णु, शिव और दुर्गाके, और दो मन्दिर जैनके अभी तक मौजूद हैं. बहुतसे तालाब भी हैं, जिनमें सबसे बड़ा 'तेज' तालाब तेजसिंहके नामसे बना है, जो सन् १५७९ ई० में अपने पिताके क्रमानुयायी थे, जिन्होंने पहिले देवलिया बसाया था. क़िला कोई नहीं है, और ऐसा मालूम होता है, कि शहरकी हिफ़ाज़त व बचावका भरोसा इसके कुद्रती मक़ामकी मज़बूतीपर ही है, जो टीलेके किनारेसे अलग पहाड़ीके एक ढालपर चारों तरफ़की ज़मीनसे ऊंचा है; उत्तर और पश्चिमकी ओरका हिस्सह नाहमवार ज़मीन और बिल्कुल उजाड़ है.

मेले.

प्रतापगढ़में मुख्य देवस्थान महादेवका है; और अर्णोदके पास पश्चिमी घाटोंकी चोटीपर 'गौतम नाथ' मक़ामपर हर साल बहुतसे यात्री वैशाख शुक्ल १५ को जाते हैं, जहां दो दिन तक मेला रहता है. दूसरा एक बड़ा पवित्र स्थान राज्यके पश्चिमोत्तर कोणमें पहाड़ियोंके दर्मियान मेवाड़की सीमाके पास सीता माताका है. 'अम्बा माता' जो प्रतापगढ़से ४ मील उत्तर, और 'सन्तनाथ' जो धमोतरके पास ही जैनका एक मन्दिर है, इन दोनों मक़ामोंपर हर साल कार्तिक शुक्ल १५ को मेला होता है. प्रतापगढ़से दक्षिण तरफ़ तालाबपर दीपनाथ महादेवका मन्दिर है, जहां वैशाख शुक्ल १५ को एक प्रसिद्ध मेला लगता है.

तवारीख़.

महाराणा मोकलके बड़े बेटे कुम्भकर्ण मेवाड़की गद्दीपर बैठे, और दूसरे खेमकरण को कोई जागीर नहीं मिली; महाराणा मोकल विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] में चाचा मेराके हाथसे मारेगये. खेमकरण बचपनमें तो चित्तौड़पर बने रहे, लेकिन् बड़े होने बाद जागीरका दावा करने लगे. महाराणा कुम्भाने वैमात्र होनेके सबब खेमकरणको जागीर देनेमें हुज्जत की; तब खेमकरणने बड़ी सादड़ीपर ज़बर्दस्ती क़ब्ज़ह करलिया. महाराणा कुम्भाने फ़ौज भेजकर उनको वहांसे निकाला,

तो वह मांडूके बादशाहको चढ़ा लाया, बहुतसी लड़ाइयां हुईं, जिनका हाल महाराणा कुम्भाके वर्णनमें लिखा गया है.

आख़िरकार महाराणा कुम्भा और खेमकरण, दोनों इस दुन्याको छोड़गये. और मेवाड़की गद्दीपर महाराणा रायमल्ल बैठे, तो खेमकरणके बेटे सूर्यमल्लने रावत् अज्जा लाखावतके बेटे सारंगदेवको अपना शरीक किया, क्योंकि अज्जाको महाराणा मोकलने और सारंगदेवको महाराणा कुम्भा व रायमल्लने जागीर देनेमें इन्कार किया था. सारंगदेवने बाठर्ड़ापर और सूर्यमल्लने नाहरमगरा व गिर्वा वग़ैरह पहाड़ी ज़िलोंपर अपना क़ब्ज़ह किया. महाराणा रायमल्लने किसी सबबसे दर्गुज़र किया, तो सूर्यमल्लने पूर्वी मेवाड़में भैंसरोड़ गढ़पर जा क़ब्ज़ह किया. महाराणा रायमल्ल अपने बेटोंके ख़ानगी फ़सादसे तंग होरहे थे, उनके बड़े बेटे पृथ्वीराजने सूर्यमल्ल और सारंगदेवको भैंसरोड़से शिकस्त देकर निकाल दिया, और सादड़ीपर भी हमले करने लगे. महाराणा रायमल्लने भी चढ़ाई की, जिसमें हज़ारों राजपूत मारेगये, और महाराणा व सूर्यमल्ल दोनों ज़ख़्मी होकर अपने अपने डेरोंको चले गये. कुंवर पृथ्वीराज सूर्यमल्लका आराम पूछनेके लिये गये; कुंवरने कहा, कि "काकाजी खुश हो". तब सूर्यमल्ल बोला, कि "हां भतीजे मेरे ज़ख़्मोंको आराम होनेपर खुशी होगी." पृथ्वीराजने बयान किया, कि मैं भी श्री दर्बार (महाराणा रायमल्ल) के घावपर पट्टी बांधकर आया हूं. इस तरह बातें करके पृथ्वीराज चित्तोड़ आया; फिर इसने गिर्वा व नाहरमगरा वग़ैरह पर्गने सूर्यमल्लसे छीन लिये; रावत् सारंगदेवको बाठर्ड़ेमें जा मारा, और सूर्यमल्लसे लड़ने लगा. कुंवर पृथ्वीराज और कुंवर सांगाके दर्मियान नाहरमगरेके पास भीमल ग्राममें लड़ाई हुई, तो सूर्यमल्ल सांगाका मददगार बनकर पृथ्वीराजसे लड़ा, और ज़ख़्मी हुआ. सूर्यमल्ल और पृथ्वीराजके आपसमें कई लड़ाइयां हुईं, परन्तु दिनको लड़ते, और रातको आपसमें आराम पूछने जाते. यह सब हाल मुफ़स्सल तौरपर महाराणा रायमल्लके बयानमें लिखा गया है.

रायमल्लके बाद पृथ्वीराजके मरजानेसे महाराणा सांगा (संग्रामसिंह १) चित्तोड़की गद्दीपर बैठे, तो यह रंजिश दूर हुई; क्योंकि महाराणा सांगाकी सूर्यमल्लसे दोस्ती थी. इन दोनोंका इन्तिक़ाल होनेपर सूर्यमल्लका बेटा बाघसिंह गद्दीनशीन हुआ. विक्रमी १५९२ [हि० ९४१ = ई० १५३५] में बहादुरशाह गुजरातीने चित्तोड़पर हमलह किया, तब सर्दारोंने महाराणाको तो बूंदी भेजदिया, और उनके एवज़ मरनेके लिये बाघसिंहको क़िले और फ़ौजका मुख़्तार बनाया; छत्र व चंवर

वग़ैरह महाराणाका लवाज़िमह अपने साथ रखकर बाघसिंह चित्तौड़के आख़िरी दर्वाज़े पर बड़ी बहादुरीके साथ मारागया; इसलिये देवलियाके महारावत् भी अबतक 'दीवान' के नामसे पुकारेजाते हैं, क्योंकि एकलिङ्गजी मेवाड़के राजा, और महाराणा उनके दीवान कहलाते हैं; जब कि उनकी जगहपर क़ाइम होकर बाघसिंह भी मारा गया, इससे छत्र, चंवर और दीवानका ख़िताब उनकी औलादको मिला.

बाघसिंहके भाई सहसमल्लकी औलाद सीहावत कहलाई, जिनके ठिकाने धमोतर और मारवाड़में झालामंड वग़ैरह हैं. इनकी चौथी पीढ़ीमें धमोतरका ठाकुर जोधसिंहका छोटा भाई पूरा था, जिसकी सन्तान पूरावत कहलाती है. बाघसिंहका तीसरा भाई रणमल्ल था, जिसकी औलाद रणमलोत कहलाई; और महाराणा उदयसिंहके समयमें बड़ी बहादुरीके साथ खैराड़की तरफ़ लड़ाईमें मारा-गया. रावत् बाघसिंहके चित्तौड़पर मारेजानेका हाल महाराणा विक्रमादित्यके प्रकरणमें लिखागया है– (देखो पृष्ठ ३१). इनके दो बेटे थे– बड़ा रायसिंह और दूसरा ख़ानसिंह, जिनमेंसे रायसिंह गद्दीपर बैठा, और ख़ानसिंहकी शाख़ ख़ानावत कहलाई.

रायसिंहके बाद उसका बेटा बीका गद्दीपर बैठा. महाराणा उदयसिंह बनबीरको निकालकर जब चित्तौड़के मालिक बने, तो उनको रावत् रायसिंहकी वह बात याद आई, कि जब वह बनबीरके डरसे भागकर धायके साथ सादड़ीमें गये थे, और रावत् रायसिंहने कुछ मदद नहीं की. इसलिये रावत् बीकाको महाराणाने फ़ौज भेजकर सादड़ीसे निकालदिया; वह ग्यासपुर और बसारमें जारहा. इस कांठलके पर्गनेमें सर्कश मीने (१) लोग रहते थे; बीका बड़ा बहादुर राजपूत था, उनकी सर्कशी तोड़दी, और देऊ मीणीके ख़ाविन्दको, जो सबसे ज़ियादह सर्कश था, मारडाला; तब देऊ अपने पतिके साथ सती हुई, और उस वक्त रावत् बीकासे यही कहा, कि मेरा नाम रहना चाहिये, जिसको बीकाने मन्ज़ूर करके विक्रमी १६१७ [हि० ९६७ = ई० १५६०] में उसी जगह राजधानीकी नीव डाली; और उसी मीनीके नामसे 'देवलिया' नाम रक्खा. नैनसी महता अपनी किताबमें लिखता है, कि बीकाने ७०० गांवोंपर अपना अमल करलिया, जिनमें ४०० चौड़ेके थे (जिनको देवलिया वाले देश कहते हैं), और ३००

(१) नैनसी महताने अपनी किताबमें उस ज़मानेमे इन लोगोंको मेर लिखा है, परन्तु हमारी तहक़ीक़ातसे इस देशके मीने और मेरवाड़ाके मेर और खैराड़के मीने व मेवातके मेवाती, सब एक ही ख़ानदानसे हैं, जिनका तफ्सीलवार हाल हमने बंगालकी एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८८६ ई० के पहिले हिस्सेमें छपवाया है.

पहाड़ी थे, जिनमें मेरोंके १०० गांव हैं. सोनगरा राजपूत भी बड़े फ़सादी थे, जिन्हें मारकर बीकाने सुहागपुरके २४ गांव अपने क़ब्ज़ेमें किये; और जलखेड़िया राठोड़ोंको दबाकर ताबेदार बनाया. इसी तरह डोडिया राजपूतोंसे भी कोठड़ी वगैरहका इलाक़ह छीन लिया; फिर अपने भाई कांधल सहावतको धमोतर वगैरह पर्गनह जागीरमें दिया.

जब विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में बादशाह अक्बरकी फ़ौजसे महाराणा प्रतापसिंहकी हल्दी घाटीपर लड़ाई हुई, तो महारावत् बीकाकी तरफ़से उनका भाई कांधल महाराणाकी फ़ौजमें था; सो उसीमें बड़ी बहादुरीके साथ मारागया. इसके तीन पुत्र, तेजसिंह, कृष्णदास और सुर्जण थे; परन्तु बड़वा भाटोंने कृष्णदासकी जगह शार्दूल लिखा है. बीकाके बाद विक्रमी १६३५ [हि० ९८६ = ई० १५७८] में तेजसिंह गद्दीपर बैठा, जिसने 'तेज सागर' तालाब बनवाया; और विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में मारागया. उसके दो बेटे थे, बड़ा भाना (भवानीसिंह) और छोटा सिंहा; रावत् तेजसिंहके बाद भाना जानशीन हुआ; गादीं बैठने बाद भानसिंह और जोधसिंह शक्तावतके आपसमें दुश्मनी बढ़ी. जोधसिंहको महाराणा अमरसिंह अव्वलने जीरण और नीमच जागीरमें दी थी; वह बड़ा बहादुर और लड़ाकू शख़्स था, मन्दसोरके सूबहदार मक्खन मियां और देवलियाके रावत् भानासे दुश्मनी रखता था. नैनसी महता लिखता है, कि एक दिन महाराणा अमरसिंहके साम्हने भाना और जोधसिंहके दर्मियान किसी बातपर ज़िद हो पड़ी, उस वक्त महाराणाने तो दोनोंको समझादिया; लेकिन् भानाने अपनी राजधानी (देवलिया) में आकर मक्खन मियांसे मिलावट की, और डेढ़ हज़ार सवार साथ लेकर दोनों शख़्स जोधसिंहसे लड़नेको चढ़े; जोधसिंहने भी १०० सवार और २०० पैदल साथ लेकर मुक़ाबलह किया; चीताखेड़ासे आगे एक बड़के पेड़ (१) के पास लड़ाई हुई, जिसमें मक्खन मियां, रावत् भाना और जोधसिंह, तीनों बड़ी बहादुरीसे काम आये. देवलिया वाले जीरणके तालाबपर रावत् भानसिंहकी छत्री बतलाते हैं.

विक्रमी १६६० [हि० १०१२ = ई० १६०३] में जब भाना लड़कर

---

(१) यह स्थान चीताखेड़ा, नैनसी महताकी किताबसे लिखा है, जो इस लड़ाईके ५० वा ६० वर्ष बाद तक मौजूद था. येट साहिबके बनाये हुए प्रतापगढ़के गज़ेटियर और प्रतापगढ़की तवारीख़में यह लड़ाई जीरणमें होना लिखा है; लेकिन हमको नैनसीका लेख दुरुस्त मालूम होता है, और भानाकी लाशको जीरणमें लाकर जलाई होगी, जहां उसकी छत्री बनी है.

मारागया, तो उसके कोई औलाद न थी, इसलिये उसका छोटा भाई सिंहा तेजावत गद्दीपर बैठा, और जीरणमें जोधसिंहके बेटे नाहरख़ान व भाखरसिंह रहे. आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे ना ताक़त देखकर रावत्ने, जो कि इन दिनों बादशाह अक्बरकी बहुत हिमायत रखता था, लोगोंके इलाके छीन लेने चाहे. यह हाल देखकर महाराणा अमरसिंह अव्वलने रावत् सिंहा और नाहरख़ानका विरोध मिटा दिया, और कहा कि भाना व जोधसिंह दोनों हमारे भाई थे, उनका रंज हमको है, तुम्हें नहीं रखना चाहिये.

विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में महारावत् सिंहा भी परलोकवासी हुआ; इसके दो बेटे जशवन्तसिंह और जगन्नाथ थे, जिनमेंसे जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठा. जशवन्तसिंह नरहरदासोत शक्तावतको महाराणा कर्णसिंहने मोड़ीके थानेपर रक्खा था, जो बसारके पर्गनेमें है, और वह पर्गनह महाराणाके ख़ालिसेमें था. देवलियाके रावत् जशवन्तसिंह सिंहावत और जशवन्तसिंह शक्तावत में तक्रार होनेलगी; महाराणा कर्णसिंह और बादशाह जहांगीरका देहान्त होगया, और महाराणा जगत्सिंह अव्वल उदयपुरमें, और बादशाह शाहजहां आगरेमें मस्नद नशीन हुए. महाबतख़ां शाहजहांके शुरू अह्दमें, जो ख़ानख़ानां सिपहसालार और सात हज़ारी मन्सबदार होगया था, जहांगीरके ख़ौफ़से भागकर उदयपुरके पहाड़ोंमें आया; और वहांसे देवलियाकी तरफ़ गया, तो रावत् जशवन्तसिंह सिंहावतने उसे बड़ी ख़ातिरके साथ रक्खा. उसको अजमेरका सूबहदार व बादशाहका बड़ा मुसाहिब जानकर जशवन्तसिंहको महाराणासे अल्हदह होनेकी हिम्मत हुई. महाराणा कर्णसिंहके इन्तिक़ाल और जगत्सिंहकी गद्दी नशीनीका मौक़ा देखकर मन्दसौरके हाकिम जांनिसारख़ांको वर्ग़लाया, कि बसारका पर्गनह बहुत अच्छा और आमदनी का है, बादशाहसे अपनी जागीरमें लिखवा लीजिये; उसने वैसा ही किया; परन्तु शक्तावत जशवन्तसिंहने दख़्ल न होने दिया; तब जांनिसारख़ां अपनी जमइयत लेकर चढ़ा, और देवलियाके रावत्ने अपनी फ़ौज उसके शामिल करदी, तो दोनों तरफ़से अच्छा मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें रावत् जशवन्त नरहरोत, सीसोदिया जगमाल बाघावत, सीसोदिया पीथा बाघावत, सीसोदिया कान्ह, शार्दूलसिंह नरहरोत और सबलसिंह चत्रभुजोत पूर्विया वग़ैरह काम आये; जांनिसारख़ांके भी बहुतसे आदमी मारेगये.

यह ख़बर बादशाह शाहजहांने सुनी, तो एक फ़र्मान नसीहतके तौर महाराणा जगत्सिंह अव्वलके नाम लिखा, जिसका तर्जमह और नक़्ल यहां दर्ज की जाती हैः–

अबुल्मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहां बादशाहके फ़र्मानका तर्जमह, जो महाराणा जगत्सिंह अव्वलके नाम आया.

खुदा बड़ा है.

ख़ैरख़्वाह और इज़्ज़तदार ख़ानदानका
विह्तर, मिह्र्बानी, बख़्शिश और इज़्ज़तके लाइक़,
नेक आदत ख़ैरख़्वाहोंका बुज़ुर्ग, राणा जगत्सिंह,

बादशाही इनायतोंसे खुशख़बर होकर जाने, इस सबबसे कि बुज़ुर्ग सल्तनतके अह्लकारोंको मालूम न था, कि पर्गनह बसार उस मिह्र्बानियोंके लाइक़ की अगली जागीरमें शामिल था, और ना वाक़िफ़ीसे मिह्र्बानीके क़ाबिल जांनिसारख़ांकी जागीरमें दाख़िल करदिया गया; अब यह बात सुलैमानी तख़्तके पास खड़े रहने वालोंके साम्हने अर्ज़ हुई, तो उस पर्गनहको अगले दस्तूरके मुवाफ़िक़ उस ख़ैरख़्वाहको इनायत फ़र्माया; और दफ़्तरके लोग जांनिसारख़ांको एवज़ दूसरे मक़ामसे देंगे; इस मुआमलेमें फ़र्मान आलीशान जांनिसारख़ांके नाम जारी हुआ है, कि पर्गनह बसार उस ख़ैरख़्वाहसे तअल्लुक़ रखता है, उसके क़ब्ज़ेमें छोड़कर इस बाबत झगड़ा और लड़ाई न करे; लेकिन् उस लड़ाई और तक्रारसे, जो उस ख़ैरख़्वाहके आदमियों और जांनिसारख़ांके दर्मियान हुई, दौलत ख़्वाहोंको तअज्जुब नज़र आया; जब कि उस उम्दह वफ़ादारका चचा और वकील वग़ैरह पाक दर्बारमें हाज़िर थे, लाज़िम था, कि अव्वल इस मुआमलेको बुज़ुर्ग दर्गाहमें अर्ज़ करते; और फिर जैसा कुछ हुक्म होता, अमलमें लाते.

نقل فرمان ابو المظفر شهاب الدین محمد شاهجهان بادشاه،
موسومهٔ مهارانا جگت سنگه اوّل والیِ میواڑ *

(نقل طغرا)

فرمان ابو المظفر شهاب الدین
محمد شاهجهان بادشاه غازی
صاحب قران ثانی *

الله اکبر

(نشان مهر)

ابو المظفر
شهاب الدین
محمد شاهجهان
بادشاه غازی ۱۰۳۷
صاحب قران
ثانی ۰ سنه احد

خلاصهٔ خاندان عزّت و اخلاص ، شایستهٔ عاطفت و مرحمت
و اختصاص ، قدوهٔ مخصصان سعادت کیش ، رانا جگت سنگه ،
بعنایت بادشاهانه مخصوص و مباهی گشته بداند ، که چون معلوم دیوانیانِ عظام ممالک نظام
نبود ، که پرگنهٔ بسار در دول سابق، آن لائق الاحسان داخل بوده ، و به نادانستگی در دول

यक़ीन है, कि उस ख़ैरख़्वाहको इस कार्रवाईपर इत्तिला न होगी; लाज़िम है, कि अपने आदमियोंको मना करे, जब तक ऐसे मुआमले बलन्द बुज़ुर्ग दर्गाहके हाज़िर बाशोंके आगे अर्ज़ न होलें, बादशाही नौकरोंसे लड़ाई और दुश्मनी न कीजावे, कि उसकी ख़ैरख़्वाहीके लाइक़ नहीं है; और आहिस्तह आहिस्तह ख़ुदा न करे, उस दरजह तक पहुंचें, कि ख़ल्क़तकी ख़राबी और तक्लीफ़का सबब होजावें. जिस रोज़ कि फ़र्मान आलीशानके मज़्मूनपर इत्तिला हासिल करे, पर्गनेपर क़ाबिज़ होकर पहिलेसे ज़ियादह बुज़ुर्ग मिहर्बानियोंको अपनी बाबत समझे; और हुक्मसे बर्ख़िलाफ़ी न इख़्तियार करे. तारीख़ १७ आज़र महीना इलाही, अव्वल जुलूस- फ़क़त. [मुताबिक़ सन् १०३७ हिज्री = वि० १६८५ = ई० १६२८].

(पीठकी इबारत).

अदना दरजहके ख़ैरख़्वाह आसिफ़ख़ांकी मारिफ़त.

—∞*∞—

قابل العنایة جان نثار خان داخل شده ' الحال که این معنی بعرض ایستادهاے پایهٔ سریر سلیمانی رسید ، آن پرگنه را بدستور سابق بآن اخلاص کیش عنایت فرمودیم ' و عوض به جان نثار خان دیوانیان از محل دیگر خواهند داد — و درین باب فرمان عالیشان بجان نثار خان صادر شد ، که پرگنهٔ بسار به آن خیرخواه متعلق است ، بتصرف او واگذاشته برسر این نزاع و جدال نه نماید ؛ اما از جنگ و نزاعے که درمیانهٔ مردم آن خیر اندیش و جان نثار خان شده ، دولتخواهان را بعجب روے داده ، چون عمو و وکلاے آن بندهٔ اصحاب عقیدت در دربار مقدس بودند ، مے بایست که اول این مقدمه را بدرگاه جهان پناه عرضداشت میکردند ، تا بهرچه حکم میشد ، بعمل مے آوردند - یقین است که آن خیرخواه را ازین معنی اطلاع نخواهد بود ، مے باید که مردم خود را منع نماید ، که مادام که این چنین مقدمات بعرض ایستادهاے درگاه فلک اشتباه نه رسد ، با بندهاے بادشاهی نزاع و خصومت نه کنند ، که لائق اخلاص او نیست ، و رفته رفته معاذ الله باللہ تعالیٰ انجامد ، که موجب خرابی و آزار خلق الله گردد - در روز که بر مضمون فرمان عالیشان اطلاع حاصل نماید ، آن پرگنه را متصرف شده بیشتر از پیشتر عنایت اشرف را دربارهٔ خود شناسد ، از فرموده تخلف نه ورزد — تحریر آ می تاریخ ۱۷ - آذر ماه الهی ، سنه احد فقط (مطابق سنه ۱۰۳۷ هجری)

(عبارت پشت)

برسالهٔ کمترین اخلاص کیشان

آصف خان *

(نقل مهر وزیر)

۱۰۳۷

شده چو شاه جهان

بادشاه دیبر مان *

خدا ے داد نکیتی

مراد آصف خان *

سنه احد

बादशाहने जांनिसारखांको लिख भेजा, कि पर्गने बसारपर दस्ल न करे. शाहजहां जानता था, कि कैसी कैसी ताक़त काममें लानेपर महाराणा उदयपुरका फ़साद दूर हुआ है, अब छोटी बातके लिये उसी आगको भड़काना अक्लमन्दीका काम नहीं. इसके सिवाय बादशाहका भी शुरू तख्त नशीनीका अह्द था, इसलिये जांनिसारखांको धमकाया, और महाराणाको नसीहतोंका फ़र्मान लिख भेजा; परन्तु देवलियाके रावत् जशवन्तसिंहसे महाराणा बहुत नाराज़ रहे, और उससे जशवन्तसिंह शक्तावतका बदला लेना चाहा. महावतखांकी हिमायतके सबब महाराणाको देवलियापर फ़ौजकशी करनेका मौक़ा न मिला, तब धीरे धीरे रावत् जशवन्तसिंहको धोखा दिया, और विक्रमी १६९० [हि० १०४३ = ई० १६३३] में उसे मए उसके बेटे महासिंहके उदयपुर बुलाया; उसे पूरा विश्वास नहीं था, इससे वह एक हज़ार चुने हुए राजपूत साथ लाया; और चम्पा बाग़में डेरा किया. राठौड़ रामसिंह कर्मसेनोतको महाराणाने रातके वक्त फ़ौज देकर भेजा, जो महाराणाकी बहिनका बेटा था; उसने फ़ौज समेत चम्पा बाग़पर घेरा डाला, और तोपें व सोकड़ोंकी गाड़ियां (१) मोर्चोंपर जमा दीं. रावत् जशवन्तसिंह केसरिया पोशाकके साथ सिरपर सेहरा और तुलसीकी मंजरी लगाकर चम्पा बाग़से बाहर निकला; और अपने साथियों समेत महाराणाकी फ़ौजपर टूट पड़ा; परन्तु तोप और सोकड़ेकी गाड़ियोंके फ़ैरसे सबके सब भुनगये; तो भी किसी किसीने रामसिंहको ललकारा, और तलवारें चलाईं. आख़िरकार महारावत् जशवन्तसिंह अपने बेटे महासिंह और १००० राजपूतों समेत बहादुरीके साथ मारागया, और महाराणा जगत्सिंहकी इस दग़ादिहीसे बड़ी बदनामी हुई.

यह ख़बर जब देवलियामें पहुंची, तो धमोतरके ठाकुर जोधसिंहने जशवन्तसिंहके दूसरे बेटे हरीसिंहको गद्दीपर बिठादिया. महाराणाने राठौड़ रामसिंहको फ़ौज देकर देवलियापर भेजा; यह सुनकर जोधसिंह (२) हरीसिंहको बादशाह शाहजहांके पास आगरे लेगया, और महावतखांने उनको उदयपुरसे अलहदह करके बादशाही नौकर बनाने बाद मन्सब और इज़्ज़तसे बड़े अमीरोंमें शामिल किया; और बादशाही

(१) एक एक गाड़ीमें सौ सौ या दो दो सौ तय्यार बन्दूकें उसके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ जमी हुई रहती थीं, उनमें एक जगह बत्ती लगानेसे एक दम सब बन्दूकें चलती थीं. यह पुराने रिवाजकी गाड़ियां मेवाड़के बाज़े बाज़े ठिकानोंमें अबतक टूटी फूटी मौजूद हैं.

(२) देवलिया प्रतापगढ़की तवारीख़में इनका नाम जगकरण लिखा है, और. जोधसिंह नैनसी महताकी तवारीख़से लिखागया है, लेकिन् बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें दोनों नाम नहीं मिलते. जो कि यह हाल नैनसी महताके ज़मानेका है, इसलिये उसको मोतबर माना है.

फ़ौज उनके साथ देकर अपने वतनको भेजा, जिससे महाराणा जगत्‌सिंह अव्वलने अपनी फ़ौजको वापस बुलालिया; क्योंकि बादशाही फ़ौजसे मुक़ाबलह करनेमें इस वक़्त ज़ियादह बखेड़ा बढ़नेका ख़याल था. इस नाराज़गीसे महाराणाने धरियावदका पर्गनह हरीसिंहसे छीनलिया. हरीसिंह कई बार इस पर्गनेके लिये बादशाह शाहजहांके पास अर्ज़ीऊ हुआ, लेकिन् बादशाहने भी दर्गुज़र किया. देवलियाके महारावत् बाघसिंहसे लेकर सिंहा तक महाराणाके फ़र्मांबर्दार और ख़ैरख़्वाह रहे, और बड़ी बड़ी लड़ाइयोंमें बहादुरी दिखलाई. अगर महाराणा जगत्‌सिंह जशवन्तसिंहको धोखेसे न मारडालते, तो हरीसिंह महाबतख़ांका वसीला ढूंढकर बादशाही नौकर बननेकी कोशिश नहीं करता; क्योंकि डूंगरपुर, बांसवाड़ा और रामपुराके रईस चित्तौड़ छूटनेके बाद अक्बर बादशाहसे जा मिले थे, लेकिन् देवलिया वाले इस बातके इख़्तियार करनेको बहुत बुरा समझते थे. अगर देवलियापर फ़ौज भेजकर जशवन्तसिंहको उनके बेटे समेत मारडालते, और हरीसिंहको उसी इलाक़ेका मालिक बनादेते, तो कभी वह इताअ़तसे मुंह न फेरता; क्योंकि मेवाड़के राजाओंका पुराने वक़्से यह क़ाइदह चला आता है, कि बापको सज़ा देकर बेटेकी पर्वरिश करते थे, लेकिन् विश्वासघात और बर्बादीपर कमर कभी नहीं बांधी. इस फ़सादका यह अंजाम हुआ, कि देवलियाके रईसने भी आज़ादी हासिल करनेका रास्तह पकड़ा. महाराणा जगत्‌सिंहके वक़्में, बल्कि शाहजहांके बादशाह रहने तक हरीसिंह आज़ाद रहा; जब आलमगीर शाहजहांकी बीमारीसे आप अपने भाइयोंकी लड़ाइयोंमें लगा, उस वक़्का हाल राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके आठवें श्लोकसे २४ वें श्लोक तक इस तरह लिखा है:-

विक्रमी १७१६ वैशाख कृष्ण ९ मंगल [हि० १०६९ ता० २३ रजब = ई० १६५९ ता० १५ एप्रिल] के दिन कायस्थ फ़त्हचन्द प्रधानको देवलियापर फ़ौज समेत भेजा, तब रावत् हरीसिंह भाग गये, और उनकी माने अपने पोते कुंवर प्रतापसिंहको भेजकर ताबेदारी इख़्तियार करली. उसी संवत् (१) में महाराणा राजसिंह अव्वल बांसवाड़ेकी तरफ़ फ़ौज लेकर चढ़े, उसी चढ़ाईके ख़ौफ़से देवलियाका रावत् हरीसिंह महाराणाके पास सादड़ीके राज झाला सुल्तानसिंह, बेदलाके राव चहुवान सबलसिंह, सलूंबरके रावत् चूंडावत रघुनाथसिंह, और

(१) प्रशस्तिमें पिछला हाल पहिले और पहिला पीछे दर्ज हुआ है, और फ़त्हचन्द प्रधानका जाना विक्रमी १७१५ श्रावणी हिसाबसे लिखा है, जिसको हमने चैत्री संवत्के हिसाबसे ऊपर दर्ज किया है.

भींडरके महाराज शक्तावत मुहकमसिंहका वचन लेकर आये; क्योंकि रावत् हरीसिंहको अपने बाप और दादाके धोखेमें मारे जानेसे दह्शत होगई थी. उसने पांच हज़ार रुपया, मनरावत हाथी और एक हथनी महाराणाको नज़्में दी. महारावत् हरीसिंहका देहान्त विक्रमी १७३० [हि० १०८४ = ई० १६७३] में हुआ. उनके चार बेटे थे, प्रतापसिंह, अमरसिंह, मुहकमसिंह और माधवसिंह.

महारावत् प्रतापसिंह.

हरीसिंहके बाद महारावत् प्रतापसिंह गद्दीपर बैठे, यह बड़े अक्लमन्द और बहादुर थे, इन्होंने प्रतापगढ़का शहर विक्रमी १७५४ [हि० ११०८ = ई० १६९७] में शहर पनाहके अन्दर आबाद किया; जयपुर, जोधपुर, और बीकानेर वगैरहसे अपना सम्बन्ध बढ़ाया; और महाराणा उदयपुरसे भी ज़ियादह बरख़िलाफ़ी न बढ़ने दी. ऐसा बर्ताव बगैर अक्लमन्दीके नहीं हो सक्ता. यह महारावत् जब बीकानेर शादी करने गये, तो चारण, भाटोंको बहुतसा त्याग और इन्आम इक्राम दिया; जोधपुर महाराजा अजीतसिंहको इन्होंने अपनी बेटी ब्याही थी. इनका देहान्त विक्रमी १७६४ [हि० १११९ = ई० १७०७] में होगया, इनके दो बेटे पृथ्वीसिंह और कीर्तिसिंह थे.

महारावत् पृथ्वीसिंह.

प्रतापसिंहके बाद पृथ्वीसिंह गद्दीका मालिक हुआ. जोधपुरके इतिहासमें विक्रमी १७६५ वैशाख [हि० ११२० = ई० १७०८] में महारावत् प्रतापसिंहका मौजूद होना लिखा है, जब कि सवाई जयसिंह और अजीतसिंह दोनों बहादुरशाहसे नाराज़ होकर देवलिया होते हुए उदयपुर आये थे. तअज्जुब नहीं कि प्रतापसिंहके इन्तिक़ालका संवत् श्रावणी हो, तो वैशाखके बाद श्रावणी संवत् के हिसाबसे इस संवत्के दो महीने बढ़े, जिनमें महारावत्का देहान्त हुआ होगा. हमने जो संवत् ऊपर लिखा, वह देवलियाकी तवारीख़से दर्ज किया है. एक दूसरा फ़र्क़ मारवाड़की तवारीख़से यह मालूम हुआ, कि जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहकी दो शादियां देवलियामें होना लिखा है, एक तो महाराजा अजीतसिंहने जालौरसे महारावत् प्रतापसिंहकी मौजूदगीमें उनके बेटे पृथ्वीसिंहकी बेटीके साथ की, दूसरी विक्रमी १७६६ चैत्र शुक्ल १२ [हि० ११२१ ता० ११ मुहर्रम = ई० १७०९ ता० २३ मार्च]

को की; सो रावत् पृथ्वीसिंहके समयमें हुई मालूम होती है; लेकिन् प्रतापसिंहकी बेटी का ज़िक्र उसमें नहीं है, जैसा कि देवलियाकी तवारीख़से ऊपर लिखागया है.

रावत् पृथ्वीसिंह भी अपने पिताके मुवाफ़िक़ अच्छे सर्दार थे, जब यह बादशाह फ़र्रुख़-सियरके पास गये; तब उसने ख़ुश होकर इनको 'रावत् राव' का ख़िताब दिया; वहांसे वापस आकर इन्होंने उदयपुरके महाराणा दूसरे संग्रामसिंहकी ख़िद्मतमें अपने बड़े बेटे पहाड़-सिंहको भेज दिया; महाराणाने भी ख़ुश होकर धरियावदका पर्गनह देनेका हुक्म दिया; लेकिन् ईश्वरकी इच्छासे उदयपुरमें ही पहाड़सिंहका देहान्त होगया, और रावत् पृथ्वीसिंह भी विक्रमी १७७३ [हि० ११२८ = ई० १७१६] में इस संसारको छोड़गये. इनके बेटे पहाड़सिंह, उम्मेदसिंह, पद्मसिंह, कल्याणसिंह, और गोपालसिंह थे.

महारावत् रामसिंह.

पृथ्वीसिंहके पोते, पहाड़सिंहके बेटे रामसिंह (१) गद्दीपर बैठकर छः महीने बाद मरगये, तब विक्रमी १७७४ [हिज्री ११२९ = ई० १७१७] में पृथ्वीसिंहके दूसरे बेटे उम्मेदसिंह को गद्दी मिली; यह भी विक्रमी १७७९ [हि० ११३४ = ई० १७२२] में मरगये, तब उनके छोटे भाईको गद्दी मिली.

महारावत् गोपालसिंह.

यह अक़्मन्द और समझदार थे, इन्होंने अपने युवराज कुंवर सालिमसिंहको महाराणा दूसरे संग्रामसिंहकी ख़िद्मतमें भेजदिया, और बाजीराव पेश्वासे भी दोस्ती करली. देवलियाकी तवारीख़ में लिखा है, कि विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] में बाजी राव पेश्वा और महाराणाकी फ़ौजने डूंगरपुरको घेरलिया, तब रावत् गोपालसिंहने समझाकर घेरा उठवाया. इन्होंने अपने नामसे 'गोपालगंज' आबाद किया. विक्रमी १८१४ [हि० ११७० = ई० १७५७] में इनका इन्तिक़ाल होगया, और इनके बेटे सालिमसिंह गद्दीपर बैठे.

महारावत् सालिमसिंह.

यह बड़े होश्यार थे, लेकिन् इनके वक़्में मरहटोंका ग़द्र शुरू होगया, और हरएक राजा उनके साथ दोस्तीका बर्ताव रखने लगा; रावत् सालिमसिंहने भी वैसा

(१) बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें पृथ्वीसिंहके बाद पद्मसिंहका गद्दीपर बैठना लिखा है, लेकिन् हमने देवलियाकी तवारीख़के मुवाफ़िक़ दर्ज किया है.

ही किया; तो भी मुसल्मान बादशाहोंकी बादशाहत फिर चमकनेकी उम्मेद बाक़ी थी, जिससे सालिमसिंह दिल्ली गये, और बादशाह आलमगीर सानीसे रुपयेकी टकशालकी इजाज़त लाकर अपने यहां सालिम शाही रुपया जारी किया. सिवाय उदयपुरके राजपूतानहकी कुल रियासतोंमें रुपयेकी टकशालें जारी होनेका यही वक्त है. सालिम शाही रुपया कुल मालवे और कुछ मेवाड़के हिस्सेमें भी चलता है. देवलियाकी तवारीख़में यह भी लिखा है, कि बादशाह फ़र्रुख़सियरसे महारावत् पृथ्वीसिंहने भी टकशाल जारी करनेका हुक्म लेलिया था, परन्तु जारी नहीं हुई थी, इन्होंने प्रतापगढ़में 'सालिमगंज' बसाया, और शहर पनाहको मज़्बूत किया.

जब माधवराव सेंधियाने उदयपुरको विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में आघेरा, तब रावत् सालिमसिंह भी अपनी जमइयत लेकर महाराणा अरिसिंहके पास आगये, और घेरा उठनेके बाद तक मददगार रहे. इस ख़ैरख़्वाहीके एवज़ इनको महाराणा अरिसिंहने धरियावदका पर्गनह जागीरमें देदिया, और 'रावत् राव' का ख़िताब भी, जो बादशाहने दिया था, इनके नामपर बहाल रक्खा. इस बारेमें एक पर्वानह भी सालिमसिंहके नाम लिख दिया था, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

पर्वानेकी नक़्ल.
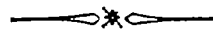
श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री एकलिंग प्रसादातु.

स्वस्ति श्री वीजै कटकातु महाराजा धिराज महाराणा श्री अरसिहजी आदेशातु, देवल्या सुथाने रावत राव सालमसीघ कस्य सुप्रसाद लीषते यथा अठारा समाचार भला हे, आपणा समाचार कहावजो,

१ अप्र, आगे पातसांहजी श्री फुरकसेरजी, थाहरे रावत प्रथीसीघ हे रावत रावरी पदवी मया कीदी थी, सो थाहे सावत करे मया कीदी हे. सवत १८२८ वर्षे फागण वदी ९ गुरे.

सालिमसिंहका इन्तिक़ाल विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में होगया, इनके दो बेटे सावन्तसिंह और लालसिंह थे, इनमेंसे सावन्तसिंह गद्दीके मालिक हुए, और छोटे भाई लालसिंहको अर्णोद जागीरमें दिया, जिसकी औलादमें अब रघुनाथसिंह मौजूद है.

महारावत् सावन्तसिंह.

सावन्तसिंहके वक्तमें मरहटोंका बड़ा ज़ोर शोर था, हर एक रियासतको दबाते थे, देवलियाको भी दबाकर पन्द्रह हज़ार रुपया, जो मुसल्मान बादशाहोंको मातहत होनेके वक्त देते थे, उसके एवज़ ७२०००) रुपया सालिमशाही मल्हार राव हुल्करकी मारिफ़त पेश्वाको देने लगे. महारावत् सावन्तसिंह फ़य्याज़ीमें नामवर शख़्स थे; अब तक कवि लोग उनको बड़ी नामवरीके साथ कवितामें याद करते हैं; मज़्हबी ख़यालात भी इनके बड़े मज़्बूत थे, लेकिन् रियासतकी कर्ज़दारी और मरहटोंका दबाव होनेके सबब तंग रहे, और टांकाके रुपये भी भरना देकर बड़ी मुश्किलसे चुकाते थे. मातहत लोग इनका पूरा भरोसा रखते और मुहब्बतसे बरतते थे. धमोतरका पर्गनह, जो रावत् सालिमसिंहको महाराणा अरिसिंहने लिख दिया था, इनके क़ब्ज़ेमें न रहा. इनके पुत्र दीपसिंह तेरह वर्षकी उ़म्रमें मल्हारराव हुल्करकी ओल (रुपयोंके एवज़में किसी अ़ज़ीज़को देनेका रिवाज था) में गये थे, लेकिन् दो तीन वर्षके बाद हुल्करने रुख़्सत देदी. फिर सेंधियाकी तरफ़से जग्गू बापू फ़ौज लेकर आया, और देवलिया प्रतापगढ़पर बीस दिन तक लड़ाई रही; उस वक्त कुंवर दीपसिंहने बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबलह किया, और सेंधियाकी फ़ौजका एक कुमेदान मारा गया, जग्गू बापूको नाउम्मेदीसे फ़ौज समेत लौटना पड़ा. ऐसी तक्लीफ़ोंके सबब सर्कार अंग्रेज़ीसे तअ़ल्लुक़ करना चाहा, जिसका हाल कप्तान सी० ई० येट साहिबने अपने गज़ेटियरमें इस तरह लिखा है :–

"सर्कार अंग्रेज़ीने पीछेसे मन्दसौरके अ़ह्दनामहके मुवाफ़िक़ हुल्करसे इस ख़िराजका अधिकार लेलिया, लेकिन् यह ते कियागया, कि इस रुपयेका हिसाब हुल्कर ही को दिया जावे, जिसको सर्कार अंग्रेज़ी वुसूल करके हुल्करको अपने ख़ज़ाने

से देती है. सर्कार अंग्रेज़ीका संबन्ध प्रतापगढ़से विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में हुआ, लेकिन् यह तऋल्लुक़ लॉर्ड कॉर्नवालिसके जारी किये हुए बर्तावसे टूट गया. विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] के अह्दनामहसे यह रियासत फिर सर्कारी हिफ़ाज़तमें लीगई."

इनके कुंवर दीपसिंहका तो इन्तिक़ाल होगया, जिनके दो बेटे थे, बड़े केसरी-सिंह, दूसरे दलपतसिंह, जिनको विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] में डूंगरपुरके रावल जशवन्तसिंहने गोद लिया, और बड़े केसरीसिंहका विक्रमी १८९० [हि० १२४८ = ई० १८३३] में देहान्त होगया; तब महारावत् सावन्तसिंहने अपने पोते दलपतसिंहको देवलियामें बुलाया, विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में सावन्तसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब दलपतसिंह मालिक बने, इन्होंने डूंगरपुरको अपने मातहत करना चाहा, लेकिन् वहांके सर्दारों को यह बात ना गुवार गुज़री; तो उन लोगोंने गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त दूसरा राजा बनाना चाहा. गवर्मेंटने समझाइशके साथ डूंगरपुरके हक़दार साबलीसे महारावल उदयसिंहको दलपतसिंहके हाथसे डूंगरपुरका मालिक बनादिया, इनका ज़िक्र डूंगरपुरके हालमें लिखा गया है.

महारावत् दलपतसिंह.

रावत् दलपतसिंह भी अपने बाप दादोंके मुवाफ़िक़ अक़्लमन्द और फ़य्याज़ थे; इनके वक़्में सब तरहसे अम्न व आमान रहा. गवर्मेंट अंग्रेज़ीने उनको देवलिया की गद्दी नशीनीके वक़्त ख़िल्ऋत भेजा, जिसकी तफ़्सील यह है :- हथनी १ चांदीके हौदे समेत, घोड़ा १ बादशाह बख़्श मए ज़ेवर नुक़ई, मोतियोंकी माला १, सर्पेच १, मंदील १, शाल जोड़ा १, चुग़ा १, शाली रूमाल १, गोश्वारा १, तलवार १ मए पर्तलेके, बन्दूक़ दुनाली १, और एक तमंचेकी जोड़ी वग़ैरह. विक्रमी १९२० [हि० १२७९ = ई० १८६३] में इनका देहान्त हुआ, और इनके बेटे महारावत् उदयसिंह, जो अब देवलियाकी गद्दीपर हैं, वारिस रहे.

महारावत् उदयसिंह.

यह फ़य्याज़ी और बहादुरीमें नामवर हैं, और अख़्लाक़ भी इस तारीफ़के लाइक़ है, कि जहां एक बार जो आदमी मिला, उसे अपना बनाया. देवलिया और बांसवाड़ेके पहाड़ी इलाक़ोंके बाशिन्दे भील क़दीमसे सर्कश थे; मैदानके

गांवोंको लूटकर मवेशी वग़ैरह लेजाया करते थे, लेकिन् उन्हें विद्यमान महारावत्ने एकदम सीधा करदिया; जब कभी भीलोंके फ़सादकी ख़बर मिली, वह ख़ुद घोड़ेपर सवार होकर अपने राजपूतोंसे पहिले पहुंचते हैं; सैकड़ों बदमआशोंको सज़ा देकर दुरुस्त किया, यहां तक कि अब इनका नाम सुननेसे डकैत और बदमआश लोग घबराते हैं. भाई बेटे वग़ैरह सब रियासती लोग इनके बर्तावसे ख़ुश हैं. गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी तरफ़से इस रियासतकी पन्द्रह तोपोंकी सलामी है.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०५ = ई० १८८७] में महारावत्के एक कुंवर पैदा हुआ, जिसकी बाबत बहुत ख़ुशी मनाई गई.

उमराव सर्दार.

राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ प्रतापगढ़की रियासतमें भी राजपूत क़ौमके जागीरदार हैं, जिनकी तादाद छोटे बड़े जागीरदारोंको मिलाकर कुल पचास है, और उनकी जागीरों में ११६ गांव हैं, जिनके बाशिन्दोंका शुमार २७६२९ और सालानह आमदनी २४६६०० रुपया है. इस आमदनीमेंसे ३२२९६ रुपया ख़िराजका महारावत्को दियाजाता है.

ऊपर लिखे हुए जागीरदारोंमेंसे सिर्फ़ ९ अव्वल दरजेके हैं, जिनके नाम मए ठिकाना, तादाद गांव व आमदनी वग़ैरहके इस नक़्शेमें दर्ज किये जाते हैं:-

नाम सर्दार मए ठिकाना.	गांव.	आबादी.	आमदनी.	ख़िराज.
केसरीसिंह— धमोतरके	११	३२३३	६००००	६१००
तख़्तसिंह सीसोदिया— झांतलाके	५	८४७	११०००	१४१६
लालसिंह चूंडावत— बर्लियाके	२	७८२	८०००	१३२२
तख़्तसिंह रणमलोत— कल्याणपुरके	२	५७६	७०००	२१९५
रत्नसिंह खानावत— रायपुरके	८	१४७७	३५०००	४३६२
कुशलसिंह खानावत— आम्बेरामाके	४	३८९	९०००	१९२९
माधवसिंह सीसोदिया— अचलोदाके	७	९७६	७०००	१८३३
रघुनाथसिंह सीसोदिया— अणोंदके	६	२८९६	३००००	२०२५
कुशलसिंह सीसोदिया— सालिमपुरके	४	१०४३	११०००	१७६९

धमोतरका ठाकुर सहसमल्लकी औलादमें है, जो बाघसिंहका छोटा भाई था, जो अपने पिता सूर्यमल्लकी गद्दीपर विक्रमी १५३७ [हि० ८८५ = ई० १४८०] में बैठा.

कल्याणपुरका ठाकुर इसी खानदानके छोटे भाईकी औलाद है, जो धमोतरके पहिले ठाकुर गोपालदासके चौथे बेटे रणमल्लसे पैदा हुआ था.

आम्बेरामाका ठाकुर बाघसिंहके दूसरे पुत्र खानसिंहकी सन्तान है.

झांतला ठाकुर केसरीसिंहकी औलादमें है, जो हरीसिंहका छोटा भाई था, और जिसने देवलियाको विक्रमी १६९१ [हि० १०४४ = ई० १६३४] के लग भग मेवाड़से लेलिया, और विक्रमी १७३१ [हि० १०८५ = ई० १६७४] में मरगया.

सालिमगढ़का ठाकुर अमरसिंहके वंशमें है, जो महारावत् हरीसिंहका दूसरा बेटा था.

अचलोदा ठाकुर माधवसिंहकी नस्लमें है, जो कि चौथा पुत्र महारावत् हरीसिंहका था.

महाराज रघुनाथसिंह अर्णोद वाला लालसिंहकी नस्लमें है, जो महारावत् सावन्तसिंहका छोटा भाई था, जिसकी गद्दी नशीनी विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में और देहान्त विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में हुआ.
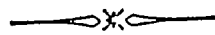
एचिसन्की अह्दनामोंकी किताब तीसरी जिल्द पृष्ठ ५०.

अह्दनामह नम्बर २०.

अह्दनामह जो दर्मियान सामन्तसिंह राजा प्रतापगढ़ और कर्नेल मरे साहिब अफ्सर फ़ौज अंग्रेज़ी, गुजरात, अट्ठावीसी और मालवा वग़ैरहके, विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में हुआ, उसकी नक्ल.

शर्त अव्वल - राजा हर तरह जशवन्तराव हुल्करकी तावेदारी और बुज़ुर्गीसे इन्कार करते हैं.

शर्त दूसरी - राजा वादह करते हैं, कि वह उस क़द्र ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारको दिया करेंगे, जितना कि जशवन्तराव हुल्करको देते थे; और यह ख़िराज उस वक्त दिया जायेगा, जब कि मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरल उसका लेना मुनासिब ख़याल करेंगे.

शर्त तीसरी - सर्कार अंग्रेज़ीके दुश्मनोंको राजा अपना दुश्मन समझेंगे, और वादह करते हैं, कि हर्गिज़ ऐसे लोगोंको अपने इलाक़हमें नहीं रहने देंगे.

शर्त चौथी– अंग्रेज़ी सर्कारकी फ़ौज और उसके लिये सामान हर क़िस्मका राजाके इलाक़ेमें होकर वगैर किसी रोक और टैक्सके गुज़रेगा, बल्कि राजा वादह करते हैं, कि वह हर तरहकी मदद और उसकी हिफ़ाज़त करेंगे.

शर्त पांचवीं– राजाके इलाक़ेसे मक़ाम मल्हारगढ़में पांच हज़ार मन चावल, दो हज़ार मन चना और तीन हज़ार मन ज्वार दी जावेगी; और उसकी वाजिबी क़ीमत चीज़ें सौंपनेके वक्त सर्कारसे मिलेगी; और यह सब चीज़ें चौदह रोज़में आधी, और अट्ठाईस दिनमें कुल देदी जावेंगी.

शर्त छठी – इस सबबसे कि ऊपर लिखी हुई शर्तोंपर राजाका अमल होगा, कर्नेल मरे अफ़्सर अंग्रेज़ी फ़ौज इक़ार करते हैं, कि वह और किसी क़िस्मकी मदद रुपये, मवेशी या गल्लेकी न लेंगे, और न किसी हिस्से अंग्रेज़ी फ़ौजको, जो उनके मातहत होगा, इस तरहकी मदद लेने देंगे.

शर्त सातवीं – राजा वादह करते हैं, कि जिस क़द्र सिक्का वगैरहकी ज़रूरत अफ़्सर अंग्रेज़ी फ़ौजको होगी, और जिस क़द्र चांदी वह भेजेंगे; उस क़द्र सिक्का प्रतापगढ़की टकशालसे तय्यार करके भेजदेंगे, और जो वाजिबी ख़र्च उसमें लगेगा, वह अंग्रेज़ी सर्कार अदा करेगी.

शर्त आठवीं – यह अह्दनामह वगैर तअल्लुक़ दस्तख़त होनेके लिये हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलकी ख़िद्मतमें भेजा जायेगा, मगर ऊपर लिखी हुई शर्तोंकी तामील तस्दीक़ किये हुए काग़ज़के आने तक अफ़्सर अंग्रेज़ी फ़ौज और राजापर वाजिब और ज़रूर होगी.

यह अह्दनामह मेरी मुहर और दस्तख़तसे तारीख़ २५ नोवेम्बर सन् १८०४ ई० को लश्करमें चम्बल दर्याके किनारेपर दिया गया.

दस्तख़त– जे० मरे,
कलेक्टर.

अह्दनामह नम्बर २१.

अह्दनामह जो ५ ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को राजा देवलिया प्रतापगढ़के साथ हुआ.

अह्दनामह, जो ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनी और सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़ और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, मारिफ़त कप्तान

कोलफ़ील्डके, ब हुक्म ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस०, पोलिटिकल एजेएट, मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलके ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से, और रामचन्द भाऊ, सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़की तरफ़से हुआ. ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कमको कुल इख्तियार मोस्ट नोबल फ्रांसिस मार्क्विस ऑव हेस्टिंग्ज़, के० जी०, मोस्ट ऑनरेबल प्रिवी कौन्सिल ब्रिटेनिक मैजेस्टीके मेम्बरने, जिनको ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमत और उसके काम अंजाम देनेके लिये मुक़र्रर फ़र्माया है, अता किये; और रामचन्द भाऊको कुल इख्तियार सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़से मिले थे.

शर्त पहिली - राजा इक़ार करते हैं, कि वह हर तरहके सरोकार दूसरी रियासतोंसे छोड़देंगे, और जहां तक होसकेगा अंग्रेज़ी सर्कारकी इताअ़त किया करेंगे; सर्कार अंग्रेज़ी इसके एवज़में वादह करती है, कि वह तमाम ज़िलोंमें दोबारह अमल जमादेगी, और राजाकी हिफ़ाज़त और हिमायत दूसरी रियासतकी ज़ियादती और दावोंके मुक़ाबिल करेगी.

शर्त दूसरी - राजा वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको कुल बाक़ी ख़िराज, जो महाराजा मल्हार राव हुल्करको मिलता था, और जिसकी तादाद एक लाख चौबीस हज़ार छः सौ सत्तावन रुपये छः आना है, नीचे लिखे मुवाफ़िक़ अदा करेंगेः-

अव्वल साल सन् १८१८ और १९ ईसवी मुताबिक़ सन् १२२६ फ़स्ली व संवत् १८७५ विक्रमी- दस हज़ार रुपये.

दूसरे साल- पन्द्रह हज़ार रुपये.

तीसरे साल- बीस हज़ार रुपये.

चौथे साल- पच्चीस हज़ार रुपये.

पांचवें साल- पच्चीस हज़ार रुपये.

छठे साल- उन्तीस हज़ार छः सौ सत्तावन रुपये छः आना.

राजा यह भी इक़ार करते हैं, कि यह रुपया अदा न होनेकी सूरतमें एक मोतमद अंग्रेज़ी सर्कारसे मुक़र्रर होकर आमदनी शहर प्रतापगढ़से वुसूल करे.

शर्त तीसरी - राजा देवलिया प्रतापगढ़ खुद अपनी और अपने वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको अपनी हिफ़ाज़तके एवज़ उस क़द्र ख़िराज और नज़ानह दिया करेंगे, जो मल्हार राव हुल्करको

दिया जाता था; और यह ख़िराज नीचे लिखे मुवाफ़िक़ अदा होगाः-

अव्वल साल सन् १८१८ और १९ ई० मुताबिक़ सन् १२२६ फ़स्ली और संवत् १८७५ विक्रमी- पैंतीस हज़ार रुपये.

दूसरे साल- पैंतालीस हज़ार रुपये.

तीसरे साल- पचपन हज़ार रुपये.

चौथे साल- पैंसठ हज़ार रुपये.

और पांचवें वर्षमें पूरी रक़म याने बहत्तर हज़ार सात सौ रुपया सालिम शाही.

यह रुपया दो क़िस्तोंमें अदा करेंगे, आधा माघमें, और आधा जेठ मुताबिक़ मार्च और जुलाई में.

शर्त चौथी- राजा वादह करते हैं, कि वह अरब या मकरानीको नौकर न रक्खेंगे, लेकिन् वह पचास सवार और दो सौ पियादे प्रतापगढ़की रिआयामेंसे नौकर रक्खेंगे, और ये सवार व पैदल सर्कार अंग्रेज़ीके इख्तियारमें रहेंगे, और जब उनकी जुरूरत किसी क़रीबके इलाक़ेमें होगी, तो उस वक्त वह अंग्रेज़ी सर्कारकी नौकरीमें हाज़िर रहा करेंगे.

शर्त पांचवीं- राजा प्रतापगढ़ अपने कुल मुल्कके मालिक रहेंगे, और उनके इन्तिज़ाममें अंग्रेज़ी सर्कार कुछ दख्ल न देगी, लेकिन् इतना कि लुटेरी क़ौमोंका बन्दोबस्त और दोबारह इन्तिज़ाम क़ाइम करके मुल्की अम्न फैलाना उसके इख्तियारमें रहेगा. राजा वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहपर अमल करेंगे, और यह भी वादह करते हैं, वह नाजाइज़ महसूल टकशाल या दूसरी चीज़ोंके सौदागरोंपर अपने मुल्कमें न लेंगे.

शर्त छठी- अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह किसी रिश्तहदार या वासितहदार राजाको, जो उनकी ना फ़र्मानी करेगा, पनाह या मदद न देगी; बल्कि राजाकी मदद करके उसको ताबेदारीके रास्तेपर लावेगी.

शर्त सातवीं- अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह मीना और भील लोगोंके ज़ेर करनेमें राजाकी मदद फ़र्मावेगी.

शर्त आठवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह राजाके किसी वाजिबी और पुराने दावेमें, जो मुवाफ़िक़ क़दीम रिवाजके उसकी रिआयाकी निस्बत होगा, मुदाख़लत नहीं फ़र्मावेगी.

शर्त नवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह राजाकी मदद उसके

तमाम वाजिबी दावोंमें, जो रिआ़याकी निस्बत होंगे, करेगी, अगर राजा आप उनके हासिल करनेमें मज्बूर होगा.

शर्त दसवीं- अगर राजा प्रतापगढ़का कोई सच्चा दावा किसी हमसायह रियासत या और किसी आस पासके ठाकुरपर होगा, तो अंग्रेज़ी सर्कार वादह करती है, कि वह उसकी मदद ऐसे दावोंके हासिल, या फ़ैसल करनेमें करेगी; अगर कुछ तक्रार राजा या आस पासके रईसोंके दर्मियान पैदा होगी, तो भी अंग्रेज़ी सर्कार ऐसी तक्रारके फ़ैसल या मौकूफ़ करनेमें मुदाख़लत करेगी.

शर्त ग्यारहवीं- अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह पुण्यार्थकी ज़मीनमें मुदाख़लत न करेगी, और मज़्हबी रस्में और राजा या रिआ़याके दस्तूरोंका कामिल तौरपर लिहाज़ रक्खेगी.

शर्त बारहवीं- राजाने इस अ़ह्दनामहकी तीसरी शर्तमें वादह किया है, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको ख़िराज दिया करेंगे, और इत्मीनानकी नज़रसे इक़ार करते हैं, कि ख़िराज जिसको अंग्रेज़ी सर्कार वुसूल करनेके लिये मुक़र्रर फ़र्मावेगी, उसको देंगे; अगर यह रुपया वादहके मुवाफ़िक़ अदा न होगा, तो राजा इक़ार करते हैं, कि एक मोतमद अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से मुक़र्रर होकर ख़िराजका रुपया शहर प्रतापगढ़की आमदनीसे वुसूल करे.

यह अ़ह्दनामह, जिसमें बारह शर्तें दर्ज हैं, आजकी तारीख़ कप्तान जेम्स कोलफ़ील्डकी मारिफ़त ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम के० सी० बी० और के० एल० एस० के हुक्मसे, जो ऑनरेब्ल कंपनीकी तरफ़से मुक़र्रर थे, और रामचन्द भाऊकी मारिफ़त, जो सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़की तरफ़से मुख़्तार था, तै हुआ; कप्तान कोलफ़ील्डने इसकी एक नक़्ल अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें अपने दस्तख़तोंसे रामचन्द भाऊको इस ग़रज़से दी, कि वह राजा देवलिया प्रतापगढ़के पास भेज दे; और रामचन्द भाऊ मज़्कूरसे एक दूसरी नक़्ल उसकी मुहरी और दस्तख़ती ली.

कप्तान कोलफ़ील्ड वादह करते हैं, कि इस अ़ह्दनामहकी एक नक़्ल दस्तख़ती मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरलकी, जो मुताबिक़ इस अ़ह्दनामेके होगी, जो उन्होंने आप दी है, दो महीनेके अ़र्सेमें रामचन्द भाऊको इस ग़रज़से दीजावेगी, कि वह तस्दीक़ कीहुई नक़्ल सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़को दे; और जब तस्दीक़ कीहुई नक़्ल राजाको दीजायेगी, तो फिर वह नक़्ल, जो कप्तान कोलफ़ील्डने ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम के० सी० बी० और के० एल० एस० के हुक्मसे दी है, वापस

होगी; और रामचन्द भाऊ इसी मुताबिक़ वादह करता है, कि उसकी तरफ़से भी एक नक़्ल दस्तख़ती सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़की बिल्कुल इस अ़ह्दनामहके मुताबिक़, जो उसने दिया है, कप्तान कोलफ़ील्डको दीजावेगी, ता कि वह इस तारीख़से आठ रोज़के अ़र्सेमें मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल बहादुरके पास भेजी जावे; और जब यह नक़्ल दस्तख़ती राजाकी मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल बहादुरको दीजायेगी, तो जो नक़्ल रामचन्द भाऊने अपनी दस्तख़ती और मुहरी, जो उसने अपने हासिल किये हुए इख़्तियारातसे दी है, वह उसको वापस मिलेगी.

मक़ाम नीमच, ता० ५ ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० मुताबिक़ ४ ज़िल्हिज सन् १२३३ हिज्री, और मुताबिक़ आसोज सुदी ६ संवत् १८७५ विक्रमी.

दस्तख़त - हेस्टिंग्ज़. [गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर.]

दस्तख़त - जी० डाउड्ज़वेल.

[कपनीकी मुहर.] दस्तख़त - जे० स्टुअर्ट.

दस्तख़त - सी० एम० रिकेट्स.

मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरलने कॉन्सिलमें मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम पर ता० ७ नोवेम्बर सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त - जे० ऐडम,
चीफ़ सेक्रेटरी, गवर्मेन्ट.

अ़ह्दनामह नम्बर २२

दस्तख़त - रावल सामन्तसिह.

इक़ारनामह, जो रावल सामन्तसिंह रईस प्रतापगढ़ने कप्तान ए० मेक्डोनल्डकी मारिफ़त ऑनरेबल कंपनीके साथ किया.

दो सो पियादे और पचास सवार और एक हज़ार रुपया माहवारी या बारह हज़ार रुपया सालानह उसके लिये सर्कारको मुनासिब क़िस्तोंमें देनेका ज़िक्र अ़ह्दनामहमें है, अब संवत् १८८३ से दो हज़ार रुपया माहवारी या चौबीस हज़ार रुपया सालानह सर्कार कंपनीको दियाजावेगा, और इससे हर्गिज़ इन्कार न होगा; यह रुपया सिक्कए सालिमशाही होगा.

मिती अगहन सुदी ७ संवत् १८८०, मुताबिक़ तारीख़ ९ डिसेम्बर सन् १८२३ ई०.

अ़हदनामह नम्बर २३.

अ़हदनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट और श्री मान उदयसिंह, राजा देवलिया प्रतापगढ़ व उनकी औलाद, वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ लेफ्टिनेन्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन्, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़ने बमूजिब हुक्म लेफ्टिनेन्ट कर्नेल रिचर्ड हार्टकीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी०, एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके किया, जिनको पूरे इख्तियारात राइट ऑनरेबूल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल, हिन्दसे मिले थे; और दूसरी तरफ़ खुद राजा उदयसिंहने किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह, अगर अंग्रेज़ी इलाक़ेमें बड़ा जुर्म करे और प्रतापगढ़की राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो प्रतापगढ़की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी; और सरिश्तहके मुताबिक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी प्रतापगढ़के राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी सीमामें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसे गिरिफ्तार करके सरिश्तेके मुताबिक़ मांगे जानेपर प्रतापगढ़की सर्कारको सुपुर्द करेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो प्रतापगढ़की रअ़य्यत न हो, और उस राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़ेमें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमें होगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक़्पर प्रतापगढ़के इलाक़ेकी निगहबानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि सरिश्तेके मुताबिक़ खुद वह सर्कार, या उसके हुक्मसे कोई उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़ेमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाक़ेके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा; और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं - नीचे लिखेहुए काम बड़े जुर्म समझे जायेंगेः-

१- खून, २- खून करनेकी कोशिश, ३- वहशियाना क़त्ल, ४- ठगी, ५- ज़हर

देना, ६- सख़्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार), ७- ज़ियादह ज़ख़्मी करना, ८- लड़का बाला चुरा लेजाना, ९- औरतोंका बेचना, १०- डकैती, ११- लूट, १२ सेंध (नक़्ब) लगाना, १३- चौपाये चुराना, १४- मकान जलादेना, १५- जालसाज़ी करना, १६- झूठा सिक्का चलाना, १७- धोखा देकर जुर्म करना, १८- माल अस्बाब चुरा लेना, १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लान्ना (बहकाना).

शर्त छठी - ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुवाफ़िक़ मुजिमको गिरिफ़्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

शर्त सातवीं - ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़ तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख़्वाहिश दूसरेको ज़ाहिर न करे.

शर्त आठवीं - अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामेपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ नहोगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम प्रतापगढ़, ता० २२ डिसेम्बर, सन् १८६८ ई०.

[मुहर.] दस्तख़त- ए० आर० ई० हचिन्सन्, लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़.

[मुहर.] मुहर व दस्तख़त- राजा प्रतापगढ़ देवलिया.

[मुहर.] दस्तख़त- मेओ, वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम ता० १९ फ़ेब्रुअरी सन् १८६९ ई० को की.

[मुहर.]

दस्तख़त - डबल्यु० एस० सेटन्कार,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट ऑव इन्डिया,
फ़ारिन डिपार्टमेन्ट.

सिरोहीकी तवारीख.

जुग्राफ़ियह.

सिरोहीकी उत्तरी सीमा मारवाड़; दक्षिणी पालनपुर, ईडर, दांता, व मही कांठा; पूर्वी सीमा मेवाड़; और पश्चिमी सीमा मारवाड़ है. यह रियासत २४° २२′ और २५° १६′ उत्तर अक्षांश और ७२° २२′ व ७३° १८′ पूर्व रेखांशके बीचमें वाके है; इसका रक्बह ३०२० मील मुरब्बा, और आबादी सन् १८८१ की मर्दुमशुमारीके मुताबिक़ १४२९०३ है.

पहाड़ियों व चटानोंके सिल्सिलेसे देश टूटा और कटा है; ख़ासकर आबू पहाड़, जो दक्षिणी सीमाके पास अर्वलीसे दूर है, आधारके पास क़रीब २० मील लम्बा है (१); और मिली हुई पहाड़ियोंकी सकड़ी नालसे अलग है, जो पूर्वोत्तर कोणमें ऐरनपुराकी छावनी तक चलीगई हैं, और राज्यको क़रीब क़रीब दो हिस्सोंमें तक्सीम करती हैं. पश्चिमी हिस्सह खुला और ज़मीन हमवार होनेके सबब ज़ियादह आबाद है, और खेती भी अच्छी होती है. बर्सातके मौसममें पहाड़ियोंकी छोटी छोटी नालेंमें बड़ी तेज़ीसे पानी बहता है. यह देश नीची चटानी पहाड़ियों और धाव, खैर, बंबूल व बेर वग़ैरहके घने जंगलसे ढका हुआ है; आबूके उत्तरी सिरेके पश्चिमी ऊंचे मैदान और नीची पहाड़ियोंका सिल्सिला, जो सिरोहीकी सीधमें है, नदियोंके बहावको रोकने वाला है, जिससे नदियां पश्चिमोत्तर और दक्षिण पश्चिमको बहकर लूनी और पश्चिमी बनासमें जा मिलती हैं. अर्वली पहाड़ पूर्वकी तरफ़ साफ़ दीवारके मुवाफ़िक़ है.

कुओंकी कमीसे खेती कम होती है, और इसी सबबसे अभी तक ज़मीनका $\frac{9}{10}$ हिस्सह बग़ैर जोते बोये जंगल पड़ा है, जो लुटेरोंके पनाह लेनेका मक़ाम है. इस देशमें कुओंकी गहराई ६० फ़ुटसे लेकर १०० फ़ुट तक है, मारवाड़के पासके हिस्सेमें ९० से १०० फ़ुट तक गहराईपर खारा पानी मिलता है, पश्चिमोत्तरी

(१) ख़ास राजधानी शहर सिरोही, इस सिल्सिलेके नीचे पश्चिमको आबू पहाड़के उत्तरी सिरेसे १६ मीलकी दूरीपर है.

भागमें ७० से ९० फ़ुट तक, पूर्वी ज़िलोंमें बनासके किनारे तथा दूसरे पर्गनोंमें ६० फ़ुटके लग भग गहराईपर पानी रहता है, और यह पानी अच्छा होता है. दक्षिणी हिस्सेमें इससे भी कम गहराईपर पानी मिलता है; लेकिन् पश्चिमी भागमें और ख़ास सिरोहीमें भी पानी बहुत नीचा और ख़राब पायाजाता है.

सिरोहीमें सिर्फ़ एक बड़ी नदी पश्चिमी बनास है, जो अर्वलीमें सैमरके पाससे निकली और पूर्वी बनासके निकासके साम्हने पहाड़ी सिल्सिलेके पश्चिमी ढालोंमें बहकर पिंडवाड़ाके पास और आबूके पूर्वी धरातलके किनारे किनारे दक्षिण पश्चिममें बहती है, और चन्द्रावती शहर व मावल गांवके पास होती हुई पालनपुरके राज्यमें दाख़िल होती है; यहांसे डीसा छावनीके पास होकर कच्छके रणके सिरेपर रेतमें ग़ाइब होजाती है. इसकी सहायक नदी बत्रशा है, जो अम्बा भवानीके मशहूर मक़ामसे निकल कर पश्चिममें मानपुर तक बहती है. बनासके सिवा और भी कई नदियां हैं, जिनमें कई महीनों तक पानी बहता रहता है. जवाई नदी अर्वली पहाड़में बेलकार मक़ामसे, जो समुद्रकी सत्हसे ३५९९ फ़ुट ऊंचा है, निकलकर लूनीमें जा मिलती है. दो शूकली नदियां हैं, जो सिल्सिले सिरोहीके पश्चिमी बहावमें लूनीसे मिल-जाती हैं: और दो छोटी नदियां शूकली, जिसे कालेड़ी भी कहते हैं, सिरोहीकी दक्षिणी पश्चिमी सीमापर पहाड़ियोंके सिल्सिले नन्दवानासे निकलकर बनासमें जागिरती हैं. ये दोनों नदियां अहमदाबादकी ख़ास सड़कको पार करती हैं.

सिरोहीके कई हिस्सोंमें बनाई हुई झीलें हैं, लेकिन् आबू पहाड़परकी झीलके सिवा और कोई मश्हूर झील नहीं है.

ऊपर बयान हो चुका है, कि अर्वली पर्वत पूर्वकी तरफ़ एक सीधी दीवारकी तरह है, उसके सिल्सिलेके सिर्फ़ नीचेके किनारे और बाहरी शाख़ें सिरोहीकी सीमामें हैं. पूर्वी घाटके सिरेपर पिंडवाड़ासे उत्तर पहाड़ियोंकी नीची आरपार जाने वाली शाख़ें हैं, जो अर्वलीको सिल्सिले सिरोहीसे मिलाती हैं. घाटीके दक्षिणी सिरेपर भाखर, याने पहाड़ी हिस्सह और आबूके दक्षिणकी पहाड़ियां एक मैदानके हिस्सेको दक्षिणी पूर्वी और दक्षिणी शाख़ोंसे, जो आबूसे निकलती हैं, जुदा करती हैं.

आबू पहाड़ ग्रेनिटकी चटानोंका एक ढेर है, जिसपर पहाड़ियोंका समूह है; और पहाड़ियोंके बीच बीचमें घाटियां हैं; इस सिल्सिलेकी सबसे ऊंची चोटी, जो पहाड़के उत्तरी सिरेके पास गुरू शिखर कहलाती है, २४° ३९′ उत्तर अक्षांश और ७२° ४९′ देशान्तरमें फैली हुई है, और सतह समुद्रसे ५६५३ फ़ुट ऊंची है. यह चोटी हिमालय और नीलगिरीके बीचमें सबसे ऊंची है; सारा पहाड़ बांस, जंगल

और पेड़ोंसे ढका हुआ है. पहाड़ियोंके सबब सिरोहीसे भाखर पर्गनेमें जानेका रास्तह देलदर गांवके पास एक तंग नालमें होकर है. चन्द पहाड़ियों व घाटियोंके जंगलोंमें टीमरू (आबनूस), धामण, सिरस, हल्दू वगैरह बहुत हैं. आबूके दक्षिणमें भी पहाड़ियोंका सिल्सिला पालनपुर तक चलागया है, जिसमें चोटीला और जयराज दो मश्हूर चोटियां हैं; जयराजकी ऊंचाई ३५७५ फ़ुट समुद्रकी सतहसे है. आबूके पश्चिममें नन्दवानाका (१) सिल्सिला सिरोहीके दक्षिण पश्चिममें मारवाड़की सीमाके पास एक बड़ा और लम्बा पहाड़ है. सिरोहीकी श्रेणीमें, जो आबूके उत्तरसे ऐरनपुरकी छावनी तक गई है, ब्रोनिक नामकी एक पहाड़ी मश्हूर है, जिसकी ऊंचाई समुद्रसे २०९८ फ़ुट है; यही सिल्सिला मेवाड़ तक चलागया है, जो मल नामी पहाड़ीसे जा मिला है; और यहां लुटेरे लोग अक्सर रहते हैं.

अर्वली पहाड़में स्लेटके पत्थर और भाखरकी पहाड़ीमें संग मर्मरकी खानें हैं; आबू ज़ियादहतर सिफ़ेद और रवेदार ग्रेनिट पत्थरका बना हुआ है; अब्रकके टुकड़े और बिल्लौरके मुवाफ़िक़ चूनेका पत्थर पहाड़के कई हिस्सोंमें पायाजाता है; ठोस नीला स्लेट कभी कभी निकलता है; आबूका ग्रेनिट सिवाय मकान बनानेके नक़ाशी वग़ैरहके काममें नहीं आसक्ता. सिरोहीमें पहिले तांबेकी खानका होना भी लोगोंकी ज़बानी सुना गया है.

सिरोहीकी रियासतका क़रीब क़रीब $\frac{३}{४}$ हिस्सह जंगलसे ढका हुआ है, जिसमें ज़ियादह झड़बेरी, आंवला, खैर, खेजड़ा, बंबूल, धाव, पीलू और करेल तथा एक क़िस्मका आम भी है; सनाम, ढाक और थूहर भी कस्रतसे है. आबूके ढालोंपर और आधारके चौगिर्दके जंगलोंमें बांस, आम, सिरस, धाव, जामुन, कचनार, हल्दू, बेल, टीमरू, सेमल, गूलर, पीपल, बड़, सैंजणा, फलोदरा, धामण, आंवला; रोहेड़ा गांवके पास नीम, पीपल, बेर, गूलर, बड़ व इमली वग़ैरहके दरख़्त बहुत हैं. सिरोहीके राज्यमें शेर बहुत हैं, जो गांवकी मवेशीको अक्सर मारडालते हैं; हरिन, ख़र्गोश, सिफ़ेद व काले तीतर, कई तरहके बटेर और बहुतसी क़िस्मके जानवर जंगलोंमें पाये जाते हैं; मछलियां सिवाय बनास नदीके और जगह बहुत कम मिलती हैं.

---

(१) यह नीमज पहाड़के नामसे मश्हूर है, जो नीमजके गढ़ व गांवसे प्रसिद्ध हुआ है; और श्रेणीसे पश्चिमकी तरफ़, जहां सिरोहीका रईस रहता है, पश्चिमोत्तर और मारवाड़ी सीमाके भीतर सुंडा नामकी एक पहाड़ी सतह समुद्रसे २२५२ फ़ुट ऊंची है.

सिरोहीकी आबो हवा तन्दुरुस्तीके लिये अच्छी है, आबादी फ़ासिले फ़ासिले पर होनेके सबब हैज़ा कम होता है. गर्मी ज़ियादह नहीं होती, और सर्दी भी कम अर्से तक रहती है. दक्षिण और पूर्वी पर्गनोंमें बारिश अच्छी होती है, लेकिन् बाक़ी हिस्सेमें कम, क्योंकि आबू और अर्वली पहाड़ बादलोंके ज़ियादह हिस्सेको अपनी तरफ़ खेंच लेते हैं; आबूपर औसत ६४ इंचके लग भग और ऐरनपुरामें, जो ५० मीलके क़रीब उत्तरको है, सिर्फ़ १२ या १३ इंच पानी बरसता है; और दक्षिणी पश्चिमी हवा चला करती है. जड़य्या ज्वर तथा आमातीसार बर्सातके आख़िर व जाड़ेके शुरूमें होता है; गुजराती, शीतला, वात, और बालाकी बीमारी भी अक्सर रहती है.

सिरोहीमें ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, गुसाईं, वैरागी वगै़रह कई क़ौमके मनुष्य बसते हैं; कुणबी, रैबारी और ढेड़ भी बहुत हैं; लेकिन् सबसे बड़ा गिरोह आबादीका ग्रासिया, मीना और भीलोंको ही समझना चाहिये.

सिरोहीके राज्यमें उत्तरकी तरफ़ मीने और पश्चिममें भील ज़ियादह आबाद हैं, जो लूट मार व बोलाईसे अपना गुज़र करते हैं; खेती सिर्फ़ बर्सातकी फ़स्लमें बोते हैं. ग्रासिया क़ौमके लोग भीलोंकी तरह हर एक जानवरको नहीं खाते, वे गाय और सिफ़ेद जानवरको पाक समझते हैं, और गायको पूजते हैं; लेकिन् काली भेड़ या बकरीको खालेते हैं. कोली, जिनको इस राज्यमें गुजरातसे आकर बसेहुए १३० वर्षसे ज़ियादह अर्सह हुआ, खेतीका पेशह करते हैं. इस इलाक़ेकी बोली मारवाड़ी और गुजराती भाषासे मिली हुई है.

सिरोहीमें अदालती इन्तिज़ाम बहुत ही कम है, फ़ौज्दारीके मुक़द्दमोंका फ़ैसला राजधानीमें प्रधान और पर्गनोंमें तहसील्दार करलेता है; दीवानीके मुक़द्दमे पंचायतसे फ़ैसल होते हैं. मुज्रिमोंके लिये राजधानीमें एक जेलख़ानह भी है; अगर्चि क़ैदी उसमें तन्दुरुस्त रहते हैं, लेकिन् मकान बहुत तंग है. यहांपर इ़ल्मका प्रचार बहुत कम है; देशी भाषाके लिये सिरोही, रोहेड़ा और मदारमें एक एक पाठशाला, और राजधानीमें एक शिफ़ाख़ानह भी है.

ऐरनपुरा, सिरोही, अनाद्रा, रोहेड़ा और मदारमें डाकख़ाने हैं; और आबूमें एक तार घर है, जहां दो तोपें, ७४ सवार और २६० पैदल रहते हैं. सिरोहीमें टकशाल नहीं है; भीलाड़ी (शाही) रुपया, जोधपुरी (विजयशाही) रुपया और भीलाड़ी व ढब्बूशाही पैसा चलता है.. राजधानीका सेर अंग्रेज़ी तोलसे आधा, और पर्गनोंमें अलग अलग माप है.

जव, गेहूं, चना, मक्की, बाजरा, मूंग, मौठ, उड़द, कुलथ, करांग, चीना, गुवार,

तिल, कूरी, वस्थी, कुदरा, मल, और सांवलाई इस इलाकेमें पैदा होते हैं; लेकिन् चना और ज्वार कम वोयेजाते हैं; घोड़ोंको चनेके एवज़ अक्सर कुलथ खिलाया जाता है. रूई और तम्बाकू और अम्बाड़ी भी कम वोई जाती है. मूली, गाजर, बैंगन, मेथी, चौलाई, मिर्च, चील (बथुवा) और पियाज़ वगैरह तर्कारी पैदा होती है. पड़त ज़मीन ज़ियादह होनेके सबब घास और बरू बहुत ऊगता है, जो मकान छाने व पर्दा वगैरह बनानेके काममें आता है.

सिरोहीमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ दाण लिये जाते हैं:- (१) सिरोहीमें मुख्य दाण, (२) देश दाण (ग़ैर इलाक़ेमें जाने वाली चीज़ोंका दाण), (३) चेला दाण (बाहरसे आने वाली चीज़ोंका), (४) शहर दाण और तुलाई (मापा), जो एक क़िस्मकी चुंगी है. इन महसूलोंमेंसे पहिला तो सिर्फ़ राज्य ही में जमा होता है, बाक़ीमेंसे कुछ हिस्सह जागीरदारोंको भी मिलता है. स्थानीय टैक्स घर गिनतीपर है, जो छः माही पर लगती है. वसन्त ऋतुमें अजय तीज और शर्द ऋतुमें दीवालीपर २) से ६) रुपये सालाना तक हैसियतके मुताबिक़ लियाजाता है. दापा विवाहमें १) से ५०) रुपये तक, जिसमेंसे $\frac{1}{3}$ दुलहिनके बापसे और $\frac{2}{3}$ दूल्हाके बापसे वुसूल कियाजाता है. यह टैक्स महाजन और कारीगरोंसे लियाजाता है. मवेशीपर भी एक क़िस्मका महसूल लगता है, जो ऊंट व भैंसपर १), गायपर ।) और बकरीपर =) के हिसाबसे जमा होता है. दूसरा यह कि हर दूसरे साल बैलोंके टोलेमेंसे एक बैल, सिरोहीकी तोलका आध सेर फ़ी गाय और फ़ी भैंस सेर भर घी सालाना, और बकरियोंके फ़ी झुंड पीछे एक बकरी, एक कम्बल और २) रुपये नक़द लियाजाता है. राव या उनके कुंवरकी शादीमें और रावके मरनेपर भी सब लोगोंसे हैसियतके मुवाफ़िक़ रुपया वुसूल कियाजाता है.

ज़मीनका पट्टा राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ ही यहांपर भी है. इस रियासतमें कुल गांव ५३१ हैं, जिनमेंसे २६२ जागीरदारोंके, २४ मन्दिरोंके भेट, ४२ ब्राह्मण व चारण भाटोंके, १२ ज़नानेके और २११ ख़ालिसेके हैं, जिनमेंसे कई गांव ऊजड़ भी पड़े हैं. ख़ास राजपूत जागीरदार रावको फ़ी रुपया ।=) और दूसरे लोग फ़ी रुपया ॥) के हिसाबसे ख़िराज देते हैं. किसान लोगोंको पैदावारका $\frac{2}{3}$ से लेकर $\frac{3}{4}$ तक हिस्सह मिलता है. गांवोंकी मालगुज़ारी तहसील्दार और उनके नायब तहसील करते हैं. गांवोंके मुख्य अफ़्सर थानेदार, भलावन्या, और भांबी हैं; भलावन्या, लोग बनिये होते हैं, जो बजाय पटवारीके काम देते हैं;

और भांबी चमार या ढेड़ होते हैं. ये लोग थानेदारके मददगार हैं; मुसाफ़िरोंको रास्ता बताने, व सामान एकट्ठा करनेमें मदद और हर्कारेका काम देते हैं.

सौदागरीकी चीज़ें.

घी इस रियासतसे दूसरी जगहोंको बहुत भेजाजाता है, सींगदार जानवर बालोत्राके मेलेमें बिक्रीके लिये पहुंचाये जाते हैं, तिल व शहद गुजरातको बहुत जाता है; देशी सुपारी, अरीठा, आंवला, बहेड़ा, आककी जड़, निसोत, गिलोय, शिलाजीत, नकछिकनी, और खैर वगैरह बहुत होता है. सिरोहीकी बनी हुई तलवार, बर्छी, कटार, और छुरी मश्हूर है. अनाज, चावल, शक्कर, गुड़, दाल, मसाला, नारियल, तम्बाकू, छुहारा, अंग्रेज़ी कपड़े, देशी कपड़े, रेशमी कपड़े, लोहा, तांबा, हाथी दांत वगैरह ख़ासकर बम्बई व गुजरातसे, नमक पचभद्रासे और अफ़ीम मालवासे आती है. बम्बई व गुजरातकी ख़ास सड़क इस राज्यमें होकर गुज़रनेके सबब बहुतसा सामान सौदागरीका आया करता है.

इस राज्यमें होकर जानेवाली ख़ास सड़क अजमेरसे मारवाड़, सिरोही, पालनपुर, और गायकवाड़की अमल्दारीमें होकर अहमदाबादको गई है. यह सड़क ऐरनपुराकी सड़कसे मिलकर शहर सिरोहीमें गुज़रती हुई आबूके पश्चिमी भागके किनारे किनारे डीसाकी छावनीको चली गई है.

मेले.

रवाई पर्गनेमें झाड़ोलीके पास बाणवारजीके मन्दिरपर मार्च महीनेमें एक जैन मत वालोंका मेला होता है, जहांपर २४ महात्माओंकी पूजा होती है. इस मेलेमें कपड़ा, हाथी दांत, अफ़ीम, रूई, नारियल, शक्कर, वगैरह चीज़ें बिकती हैं; यह मेला पांच रोज़ तक रहता है, और क़रीब सात हज़ार आदमीके जमा होते हैं. मगरेके पर्गने फलोदमें बैजनाथकी पूजापर ऑगस्ट महीनेमें मेला होता है. सिरोहीसे दो मीलके फ़ासिलेपर सिरोहीके सर्दारोंके कुलदेव सारणेश्वरका एक बड़ा मेला सेप्टेम्बर महीनेमें होता है, और इसके दूसरे दिन बाणवारजीका मेला होता है. मेष संक्रान्तिको खूणी पर्गनेमें गंगोपिया महादेवके स्थानपर क़रीब दो हज़ार आदमियोंके भीड़ रहती है; यह मेला दो रोज़ तक रहता है. इन मेलोंके सिवा अनाद्राके पास आबूपर करोड़ीध्वजके दो मेले होते हैं, पहिला मार्चमें होलीपर और दूसरा ऑगस्टमें.

ज़िले, शहर और मश्हूर मक़ामात.

रियासतका दर्मियानी (मध्य) पर्गनह चौरा व वारठ और राजधानी शहर सिरोही है; दक्षिणी पर्गनह साठ, और पूर्वी पर्गने रवाई व भीतरोटके नामसे प्रसिद्ध हैं.

शहर सिरोही- रियासतकी राजधानी जिसमें ५००० के क़रीब आदमी बसते हैं. यहांपर कई निशानात ऐसे पाये जाते हैं, जिनसे इस शहरकी दशाका अगले ज़मानेमें अच्छा होना साबित होता है. शहरमें पांच मन्दिर जैनके और चार हिन्दू धर्मके पांच सौ वर्ष तकके पुराने कहे जाते हैं. रावका महल छोटा, पर मज़्बूत ज़ियादह है. शहरसे दो मीलके फ़ासिलेपर सारणेश्वर महादेवके मन्दिरके पास एक कुण्ड है, जिसका पानी जिल्दपरकी बीमारियोंको दूर करता है.

शिवगंज- पर्गने खूणीमें ऐरनपुराकी छावनीके पास एक उम्दह गांव है, जिसको विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में राव शिवसिंहने आबाद किया. इसके सिवा पिंडवाड़ा, रोहेड़ा पर्गनह भीतरोटमें, जावाल, कालिन्द्री, पर्गनह मगरामें, मदार और साठ मश्हूर मक़ामात हैं; पिछले छः क़स्बोंमें दो दो तीन तीन हज़ार मनुष्योंकी आबादी है.

अजारी गांवमें महावीर स्वामीका एक पुराना जैन मन्दिर (१) है, जो विक्रमी ११८५ [हि० ५२२ = ई० ११२८] में चावड़ा क़ौमके राजा कुमारपाल (२) का बनवाया हुआ प्रसिद्ध है. अजारीके पास मारकुण्डेश्वरका मन्दिर भी बहुत पुराना है, जिसको १२०० वर्ष पहिलेका बनाहुआ बताते हैं.

वसन्तगढ़ (३)- यह गढ़ी उदयपुरके महाराणा कुम्भाकी बनवाई हुई है.

नादिया- यह गांव प्राचीन नगरी नन्दीवर्धनकी जगहपर बसा है, जिसमें महावीर स्वामीका एक जैन मन्दिर विक्रमादित्यके समयसे ३०० वर्ष पीछेका बना हुआ कहा जाता है.

भीतरोट पर्गनेका लोटाना } यह गांव प्राचीन नगर लोटाना पाटनकी जगहपर उसी समय बसा था, जब कि परमारोंकी प्राचीन राजधानी चन्द्रावती थी.

---

(१) राणपुरके मन्दिरके लेखसे मालूम होता है, कि राणपुरका मन्दिर और यह मन्दिर एकही शख़्सने बनवाये हैं, इस वास्ते यह ११८५ का नहीं होसक्ता, लेकिन् १५ वें शतक का है.

(२) यह पाटनका राजा जयसिंहकी सन्तानमें से था.

(३) यह परमारोंका बनाया हुआ है, और संवत् १०९९ की परमारोंकी प्रशस्ति भी हमको मिली है, जो शेषसंग्रहमें दर्ज कीजायेगी.

चन्द्रावतीके बारेमें बम्बई गज़ेटियरकी पांचवीं जिल्द्के एष्ठ ३३९ से ३४० तक इस तरह लिखा है:–

"चंद्रावती या चंद्रावली, आबू पहाड़से प्रायः १२ मील दक्षिण एक जंगली हिस्सह अम्बा भवानी और तारिंगाके मन्दिरोंसे १२ मीलके फ़ासिलेपर एक पुराने शहरका खंडहर है. जिसका घेरा किसी ज़मानेमें अठारह मील था.

समुद्रके किनारे और उत्तरी हिन्दुस्तानके दर्मियान एक ख़ास रास्तेके नज़्दीक, और एक तरफ़ अम्बा भवानी और तारिंगाके मन्दिरों और दूसरी तरफ़ अम्बा भवानी और आबूके बीचों बीच होनेके सबब चंद्रावती मक़ाम मज़्हब और तिजारतके लिये मश्हूर था. पुराने शहरके खंडहर और आबूके मन्दिरोंके देखनेसे मालूम होता है, कि वहांके महाजनोंके पास बड़ी दौलत थी; वे इमारतका बड़ा शौक़ रखते थे. और वहांके कारीगर और राजगीर बड़े होश्यार थे; चन्द्रावतीके जुलाहों और रंग्रेज़ोंकी कारीगरीके सबब पिछले ज़मानेमें अहमदाबादके रेशमी कपड़े और छींटें मश्हूर हुई. सातवीं सदीसे लेकर पन्द्रहवीं सदीके शुरू तक इसकी तरक्क़ीका ज़माना क़ाइम रहा. ज़बानी हालसे यह शहर धारकी बनिस्बत ज़ियादह क़दीम और पश्चिमी हिन्दुस्तानकी राजधानी मालूम होता है, जिस वक्त कि परमार लोग राज्य करते थे. और रेगिस्तानके नव (१) गढ़ उनके मातह्त बड़े सर्दारोंके थे. सातवीं सदीमें धारके मातह्त होनेके सबब वहां राजा भोजने आश्रय लिया, जब कि किसी उत्तरी हमलह करने वालोंने उसको भगा दिया. परमारोंसे सिरोहीके चहुवान सर्दारोंने उसको छीनलिया, और अनहिलवाड़ेका सोलंखी ख़ानदान क़ाइम होनेपर चन्द्रावतीके राजा उनके मातह्त होगये– (ई० ९४२) चन्द्रावती और आबूके खंडहरोंसे मालूम होता है, कि ग्यारहवीं और बारहवी सदीमें वहांपर दौलत वग़ैरहकी बड़ी तरक्क़ी थी. ११९७ ई० में यहांके राजा प्रहलाद और धारावर्षने, जो अनहिलवाड़ाके दूसरे भीमदेवके मातह्त थे, आबूके नज़्दीक कैम्प जमाकर कुतुबुद्दीन एबकके बर्ख़िलाफ़ गुजरातमें जानेकी कोशिश की; लेकिन् उनको शिकस्त खाकर भागना पड़ा. बादशाहके हाथ बड़ी दौलत आई, वह आगे बढ़कर अनहिलवाड़े तक पहुंचा, और क़ब्ज़ह करलिया. इससे मालूम होता है, कि उसने रास्तेमें चन्द्रावतीको भी लूटा– (देखो मिरात अहमदी). कुतुबुद्दीनकी चढ़ाई सिर्फ़ चन्दरोज़ा और लूटनेकी ग़रज़से कीगई थी, और धारावर्षका बेटा उसके बाद मालिक होगया; वह या उसका जानशीन १२७० ई० के क़रीब नाडोलके चहुवानोंसे शिकस्त

(१) कर्नेल टॉडने नानकोट, अर्बुध, धात, मन्दोदरी, खेरालू, पारकर, लोदरवा, और पूंगल, आठ गढ़ोंके नाम लिखे हैं.

खाकर ख़ारिज हुआ; और १३०० ई० के क़रीब देवड़ा चहुवानोंने उसे निकाल दिया. तब १३०४ ई० (१) में अलाउद्दीनने आख़िर मर्तबह गुजरातको फ़त्ह किया, और चन्द्रावती व अनहिलवाड़ाकी बिल्कुल स्वाधीनता जाती रही. फिर सौ वर्षमें उसकी बर्बादी पूरी हुई. पन्द्रहवीं सदी ई० के शुरूमें सिरोहीकी बुन्याद पड़नेसे चन्द्रावतीमें हिन्दुओंकी राजधानी नहीं रही."

चन्द्रावतीके खंडहर ज़ियादहतर ग्यारहवीं और बारहवीं सदीके हैं.

अमरावती– एक पुराने शहरका खंडहर ऋषिकृष्णके धामके पास आबूके नीचे पूर्व तरफ़ है. यहां एक मूर्ति बहर कुल देवीकी है, जिसके पीछे एक मन्दिर है, जिसे राठौड़ अमरसिंहका बनवाया हुआ बताते हैं.

भाखर पर्गनेका उपलागढ़ – उदयपुरके महाराणा कुम्भाकी बनवाई हुई गढ़ीके खंडहर हैं.

साठ पर्गनेका विरमन – यहांपर कई बड़ी बड़ी इमारतों व जैन मन्दिरोंके खंडहर पाये जाते हैं. इस शहरको चन्द्रावतीके समयका प्राचीन और बड़ा शहर बताते हैं.

बारठ पर्गनेकी लाखावती नगरी – कोह आबूके दामनमें अनाद्राके पास यह एक पुरानी गढ़ी थी, जिसके चिन्ह अब तक मौजूद हैं; कुछ दूर पहाड़ियोंकी नालमें देवांगनजीका स्थान है, जहां कई प्राचीन मन्दिरोंके चिन्ह हैं; इसके पास ही पहाड़ियोंपर करोड़ीध्वजका पुराना मन्दिर है.

चौरा पर्गनेका कोलर – एक पुरानी गढ़ीका बचा हुआ हिस्सह सारणेश्वरके मन्दिरके पास है, जिसे लोग मेवाड़के महाराणा कुम्भाका बनवाया हुआ बताते हैं.

आबू पहाड़का भूगोल सम्बन्धी बयान.

आबू पहाड़ तमाम राजपूतानहमें एक तन्दुरुस्तीका मक़ाम कहा जासक्ता है. यह एक जुदा पहाड़ राजपूतानहके सब पहाड़ोंसे बलन्द क़रीब क़रीब रियासत सिरोहीके बीचमें वाक़े है, और इसको एक घाटी, क़रीब १५ मील चौड़ी, जिसमें होकर पश्चिमी बनास बहती है, अर्वली पहाड़से जुदा करती है. इस पहाड़का

(१) आबूकी एक प्रशस्तिमें सन् १३३८ ई० तक चन्द्रावतीके एक चहुवान राजाका मौजूद होना लिखा है.

आकार लम्बा और तंग है, चोटीपर लम्बाई १४ मीलके लगभग और चौड़ाई २ से ४ मील तक है; आधारकी लम्बाई २० मीलके अनुमान है. यह पहाड़ उत्तर और उत्तरपूर्व तथा दक्षिण व दक्षिणपश्चिम दशामें उत्तर अक्षांश २४° ३३′ और पूर्व देशान्तर ७२° ४४′ में फैला हुआ है, जिसकी ख़ास चोटी 'गुरू शिखर' इसके उत्तरी सिरेके पास समुद्रकी सत्हसे ५६५३ फ़ीटकी ऊंचाईपर, और आरोग्यता स्थान दक्षिण पश्चिमी सिरेके पास समुद्रकी सत्हसे क़रीब क़रीब ४००० फ़ीट और नीचेके मैदानोंसे ३००० फ़ीट ऊंचा है.

पहाड़की शक्ल– पहाड़की शक्ल एक अ़जीब तरहकी है, चोटीका ज़ियादह हिस्सह चटानी ऊंचे टीलोंसे घिरा हुआ है, जो बहुतसी जगह पहाड़ियों, घाटियों और ढालू हिस्सोंमें टूटा हुआ दिखाई देता है; और एक तरहका पहाड़ी ज़िला बन जाता है; अक्सर हिस्सोंमें दरारें भी हैं, जिनमेंसे नीचेके मैदान दिखाई देते हैं. इस पहाड़की कुद्रती सूरत ऊंची है, ढाल बहुत खड़े हैं, जिनमें ख़ास पश्चिमी और उत्तरी तरफ़, पूर्व और दक्षिणमें बाहरकी तरफ़का सिल्सिलह कई शाख़ोंमें तक्सीम होगया है, जिनके दर्मियान कई गहरी घाटियां (१) हैं. पहाड़ीकी चोटीके किनारे किनारे साइनाइट पत्थरके बड़े बड़े गोल ढोंके गुम्बज़की तरह बड़े ख़ूबसूरत दिखाई देते हैं; कहीं कहीं ये पत्थर ऐसे बेलाग रक्खे हुए मालूम होते हैं, गोया अभी गिर जाएंगे. बाज़ जगहोंमें चोटियोंके मुहरे गोल खोहों व सूराख़ोंके मुवाफ़िक़ बनगये हैं, जो एक बहुत ही बड़े बनावटी स्पंजकी तरह मालूम होते हैं. पहाड़की चोटीके पासका अग्र भाग प्रायः कन्दराके समान है, जो ३०० या ४०० फ़ीटकी ऊंचाई तक सीधा खड़ा हुआ है. उत्तरकी तरफ़ आबू व सिरोहीका पहाड़ी सिल्सिलह एक तंग नालसे जुदा होता है; पश्चिमकी तरफ़ लहरकी सूरत वाला ज़मीनका एक टुकड़ा है, जो मारवाड़के मैदानों और कच्छकी खाड़ीमें मिलगया है, मेवाड़की सीमाके किनारेकी पहाड़ियोंके बड़े ऊंचे सिल्सिलेसे टूटा हुआ है; पूर्वकी तरफ़ बनासकी घाटी आबू पहाड़को अर्वलीसे जुदा करती है; दक्षिणमें कई शाख़ें कुछ दूर मैदानोंमें चली गई हैं, जो यहां जुदा जुदा पहाड़ियोंमें तक्सीम किया गया है. आबूके अन्दरूनी हिस्सेकी कैफ़ियत देखनेके लाइक़ है; पहाड़ियों व घाटियोंका सिल्सिलह वार एक दूसरेके बाद चला जाना, कई बड़ी भारी भारी सिफ़ेद व सियाह कुद्रती

(१) पूर्वकी तरफ़वाली एक घाटीमें गाड़ीकी सड़क बनी है, जो 'ऋषिकृष्ण' मक़ामसे आबूके ऊपर तक चलीगई है.

चटानोंका एक अजीब अन्दाज़से वाक़े होना, दरख़्तों व छोटे छोटे पोदोंकी सब्ज़ी वग़ैरह चीज़ें देखने वालेके दिलको तरोताज़ा करदेती हैं. बाज़ बाज़ मकामोंपर जंगल व दरख़्तोंके कट जाने व उजाड़ होजानेके सबब यह कैफ़ियत जाती भी रही है, जो पहिले देखनेके योग्य थी. किसी किसी घाटीमें पानीके झरनों और बहावसे भी पहाड़ शोभायमान है, लेकिन् आबूपर यह शोभा ज़ियादह नहीं है; क्योंकि जंगलोंके कट जानेसे कई नदियां सूख गई हैं, परन्तु बर्सातके मोसममें और उसके कुछ अर्से बाद तक झरनोंका बहाव शुरू होने व अनेक प्रकारकी वनस्पति जमनेपर अच्छी कैफ़ियत रहती है. कई एक सोते भी हैं, जिनमेंसे 'ऋषिकृष्ण' घाटीके सिरेपर हेतमजीके नीचे बहनेवाला बर्सातके दिनोंमें बहुत ही दिलचस्प दिखाई देता है. आबू पहाड़के पानीका बहाव ज़ियादहतर पूर्वकी तरफ़ बनासकी घाटीमें है, जिसका सबब पश्चिमकी तरफ़ पहाड़का ज़ियादह ऊंचा होना पायाजाता है.

झील व तालाब— आबूपर कई झीलें व तालाब हैं; उड़ियाके पास वाला तालाब बर्सातमें भरजाता और गर्मीमें खुश्क होजाता है, और क़रीब क़रीब यही हाल तमाम झीलोंका है. एक नखी तालाब ही मशहूर है, जो पानीकी एक खूबसूरत चादर आध मीलके क़रीब लम्बी और चौथाईके लग भग चोड़ी आबूके दक्षिण पश्चिमी कोणपर शहरके पास सतह समुद्रसे ३७७० फ़ीटकी ऊंचाईपर वाक़े है, जिसकी औसत गहराई २० से ३० फ़ीट तक और बीचमें तथा बंधके पास १०० फ़ीट है. यह झील एक उम्दह जगहपर पहाड़ियोंसे घिरी हुई है, जहांसे दूर दूरके मैदान एक नालके द्वारा दिखाई देते हैं. दक्षिणकी तरफ़ रामकुंडकी पहाड़ीपर अच्छा जंगल है, वह बहुत ऊंची है; इसके ऊपर व नीचेके रास्तेपरसे झीलकी शोभा और आबूके ऊपर व नीचेकी सुन्दरता नज़र आती है. यहांके लोगोंके ज़बानी बयानके मुवाफ़िक़ इस तालाबका नाम 'नखी' इस सबबसे पड़ा है, कि महिशासुर राक्षससे पनाह लेनेके लिये देवताओंने एक गुफा ज़मीनमें अपने नाखूनोंसे खोदी थी, क्योंकि महिशासुरने ब्रह्माकी खूब सेवा करके उनको प्रसन्न किया, और सर्व शक्तिमान होकर देवताओंको मारने लगा था; लेकिन् ऊपर लिखे सबबसे इस झीलका नाम 'नखी' रक्खाजाना हमारे क़ियासमें ग़लत मालूम होता है; अल्बत्तह यह बात सहीह मालूम होती है, कि इसका बन्द चन्द्रावती नगरीमें राज्य करने वाले प्राचीन परमार वंशके राजाओंमेंसे किसीने बनवाया था.

इस पहाड़का पत्थर मकान बनानेके लिये अच्छा नहीं समझाजाता, क्योंकि ज़ियादह सख़्त होनेके सबब इसपर घड़ाई नहीं होसक्ती, और खानसे निकालते वक़्त बेमौक़ा टूट जाता है. चूनेका पत्थर यहां नहीं होता, लेकिन् ईंटें बनानेके लिये एक

उम्दह क़िस्मकी मिट्टी निकलती है; संग मर्मर भी एक दो जगह खानसे निकलता है, लेकिन् वहुत ही सख़्त होता है.

जंगल- आबूके ढाल और आधार कई तरहके दरख़्तोंके गुंजान जंगलोंसे ढकेहुए हैं, कहीं कहीं बांसके जंगल भी हैं; शहरके नज़्दीक वाली पहाड़ियोंका जंगल पानीके ज़ोरसे वहगया है, जहां सिवाय पथरीली ज़मीनके दरख़्त नज़र नहीं आता; पहिले अक्सर जंगल काटे जाते थे, जिससे पहाड़के कई हिस्सोंकी रौनक़ जाती रही, लेकिन् सन् १८६८ ई० से आबूकी चोटी और ऊपरवाले ढालोंपरके दरख़्तों व पौदोंका काटना वन्द करदिया गया है. पहाड़के आधारपर आम, जामुन, सिरस, धाव, वड़, पीपल, गूलर, एक क़िस्मका चम्पा, करोंदा, कचनार, सेमल, खाखरा, (ढाक), सिफ़ेद चंबेली, दो तरहके जंगली गुलाव और दो क़िस्मकी फूलदार बेलें, जिनमेंसे एक तो गाय बैल वग़ैरहको और दूसरी घोड़ोंको खिलाई जाती है. इनके सिवा कई तरहके फूलदार पौदे और बेलें पैदा होती हैं, और बहुतसी अंग्रेज़ी तर्कारी, फूल व फल भी उगाये जासक्ते हैं; आड़ू, नारंगी, नीबू, अमरूद, इन्जीर, शहतूत वग़ैरह ख़ूब फलते हैं.

इस पहाड़पर कई तरहके शिकारी जानवर शेर, चीता, काला रीछ वग़ैरह होते हैं; लकड़वघा, और मुश्कबिलाव भी कहीं कहीं दिखाई देते हैं; गीदड़ और लोमड़ी विल्कुल नहीं होती. सांभर, हिरण, चीतल, साही, ख़र्गोश और कई क़िस्मके सांप, जिनमें सख़्त ज़हर होता है, पायेजाते हैं; कई तरहके तीतर, वटेर, भुजंगा, कोयल, लाल रंगकी चिड़िया, और गिद्धके सिवा कई जातिके पक्षी हैं.

आबो हवा- आबूकी आबो हवा तन्दुरुस्तीके लिये मुफ़ीद है, गर्मी सर्दी साधारण रहती है, लेकिन् कभी कभी गर्मीके मौसममें पारा ९० दरजे तक पहुंच जाता है, ताहम हवा ख़ुश्क और हल्की होनेके सवव ऐसी गर्मी नहीं पड़ती, कि जिसको अंग्रेज़ लोग न सह सकें; दक्षिण पश्चिमको वहने वाली हवा गर्मीको घटाती है. रातको और सुब्हके वक्त हमेशह सर्दी पड़ती है, जो वदनको तरोताज़ा रखती है. बारिश अच्छी होती है, लेकिन् किसी साल ज़ियादह और किसी साल कम, जिसका सालानह औसत ६८ इंच मानागया है. मौनसून याने मौसमी हवाके पीछे थोड़े दिन तक किसी क़द्र गर्मी होजाती है; वर्सात ख़त्म होनेके बाद बुख़ार और जड़य्या बुख़ार अक्सर देशी लोगोंको आने लगता है. जाड़ेकी फ़स्लमें डिसेम्बर महीनेसे मार्च तक आबोहवा वहुत साफ़ और तन्दुरुस्तीको बढ़ाने वाली रहती है; रातको ओस ज़मीनपर गिरती और किसी किसी झील या तालाबमें पतला वर्फ़ भी

जमजाता है. अगर्चि आबूकी चोटीपर भरने और तालाब, जिनमें सत्ह तक पानी पायाजावे, बहुत ही कम हैं, क्योंकि चटानोंकी रोकसे पानी सत्ह तक नहीं पहुंच सक्ता, लेकिन् पहाड़की नीची घाटियोंमें कुएं खोदनेपर उम्दह पानी २० या ३० फ़ीटकी गहराईपर निकल आता है; जो कुएं घाटियोंके बहुत नीचे हिस्सोंमें गहरे खोदेजाते हैं, उनमें पानी ज़ियादह दिनों तक रहता है, बाक़ी कुओंका पानी गर्मीके ख़त्म होते होते खुश्क होजाता है.

आबूपर अक्सर ग़ैर मुक़र्रर वक्तोंपर ज़ल्ज़ला (भूकम्प) आता रहता है, जिसकी आवाज़ बड़े ज़ोरसे होती है; लेकिन् धक्का हल्का होता है. यहांके देशी लोगोंकी ज़बानी सुनागया है, कि संवत् १८८१ व ८२ (सन् १८२४ व २५ ई०) में बड़ा ज़ल्ज़ला आया था, जिससे मकानों व देलवाड़ेके मन्दिरोंको नुक्सान पहुंचा; और इसी क़िस्मका ज़ल्ज़ला सन् १८४९ व ५० और १८७५ ई० में भी आया; पिछलेका धक्का १५० मीलके फ़ासिलेपर जोधपुर तक पहुंचा.

मुल्की हाकिमों और फ़ौजी अफ्सरोंके रहनेकी जगह- लेफ्टिनेण्ट कर्नेल जेम्स टॉड, साबिक़ पोलिटिकल एजेन्ट पश्चिमी राजपूतानह, जो 'टॉडनामह राजस्थान' नामी किताबके बनानेवालेके नामसे ज़ियादह मश्हूर हैं, वही पहिले अंग्रेज़ थे, जिन्होंने आबूपर क़ियाम किया; और उसको ज़ियादह प्रसिद्ध किया.

टॉड साहिबके आनेके वक्त विक्रमी १८७९ [हि० १२३७ = ई० १८२२] से लेकर विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] तक आबूमें सिरोहीके पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट और जोधपुर लीजनके अफ्सर गर्मीमें कुछ अर्से तक रहा करते थे. सन् १८४० ई० में अंग्रेज़ी बीमार सिपाही गर्मीके दिनोंमें रहनेके लिये आबूपर भेजेगये; विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में बारक और अस्पताल बनवाये गये, और उसी वक्तके लग भग एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह मए अपने अमले व राजपूतानहकी रियासतोंके वकीलोंके वहां रहने लगे. इसी तरह दिन दिन यह मक़ाम ज़ियादह आबाद हुआ; अब यहांपर एक मकान रेज़िडेन्सीका, ४० बंगले दफ्तरके अमले व दूसरे अंग्रेज़ों तथा रियासती वकीलोंके रहनेके लिये बनगये हैं; फ़ौजी अफ्सरों और सिपाहियोंके रहनेका मकान २०० से ज़ियादह आदमियोंकी गुंजाइशका है. जाड़ेके दिनोंमें एजेन्ट गवर्नर जेनरल मए अपने अमलेके दौरा करनेको चले जाते हैं, तब बंगले वग़ैरह मकानात ख़ाली होजाते हैं. इस मौसममें गोरोंकी पल्टनका ज़ियादह हिस्सह डीसाको चलाजाता है.

पाठशाला और गिर्जाघर - यहांकी पाठशालाओंमेंसे सर हेन्‌री लॉरेन्सका

बनवाया हुआ 'लॉरेन्स स्कूल' सबसे ज़ियादह मश्हूर है, जो राजपूतानह व पश्चिमी हिन्दुस्तानकेगोरे सिपाहियोंकी औलादको तालीम देनेकी ग़रज़से विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में जारी कियागया था. इस पाठशालामें पढ़नेवाले लड़के लड़कियोंका औसत ७० से ८० तक है, जिनको उम्दह तालीम दीजाती है; और स्कूलका इन्तिज़ाम बहुत अच्छा है. एक गिर्जाघर, एक तारघर और डाकख़ानह व अस्पताल भी वहां है.

आबादी – आबूपर कभी मर्दुम शुमारी नहीं हुई, और पहिलेकी आबादीकी निस्बत पूरा पूरा सहीह बयान नहीं होसक्ता; लेकिन् इस बातपर भरोसा किया जासक्ता है, कि चन्द सालसे 'लोक' कौमके लोगोंका शुमार बढ़गया है, जो यहांके ख़ास किसान हैं. आबूपर ज़ियादह आबादी नहीं है, सिर्फ़ छोटे छोटे १५ गांव हैं, जिनमें ४७३ घरकी वस्ती है; और छावनी वाले बाज़ार और खेड़ोंमें १७४ घर हैं. इन सबको मिलाकर ६११ घर होते हैं. इस हिसाबसे अगर फ़ी घर पांच आदमी समझेजावें, तो ३०५५ हुए, और इस तादादमें पण्डे व पुजारी (१००), राज्यके सिपाही व अह्लकार (५०), अंग्रेज़ी सिपाही मए उनके नौकरोंके (१००) और लॉरेन्स स्कूलके तालिबुइल्म क़रीब (१००) के जोड़ देनेपर ३४०५ आदमी हुए. गर्मी व बर्सातके दिनोंमें एजेण्ट गवर्नर जेनरल व पोलिटिकल एजेण्ट मारवाड़का डेरा और दूसरे दफ्तर तथा डीसासे कुछ सिपाही आजानेसे आबू पर क़रीब ४५०० आदमियोंकी वस्ती होजाती है. आबूके गांवोंके बाशिन्दे अक्सर एक मिश्रित जातिके लोग हैं, जो अपनेको 'लोक' कहते और राजपूत बतलाते हैं; लेकिन् उनकी पैदाइशका हाल सहीह तौरपर मालूम नहीं, कि वे लोग कहांके क़दीम बाशिन्दे और किस क़ौमसे हैं. लोगोंके ज़बानी बयानसे ऐसा पायागया है, कि जब अनहिलवाड़ेके मश्हूर सौदागर विमलशाहने (१) आबूपर ऋषभदेवका प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया, तो बहुतसे राजपूत नीचेसे आये, और वहांके क़दीम बाशिन्दोंकी लड़कियोंसे विवाह करलिया; इसका कुछ हाल मालूम नहीं, कि क़दीम बाशिन्दोंकी जाति क्या थी, लेकिन् हमारे क़ियाससे उन लोगोंका भील क़ौम होना पायाजाता है. किसी क़द्र भील, महाजन (बनिया), राजपूत, ब्राह्मण, माली, दर्ज़ी व फ़क़ीर गांवोंमें रहते हैं; लेकिन् मुल्की और फ़ौजी मक़ामोंके बाज़ारोंमें और भी कई जातिके लोग हैं.

खेती– आबूपर बोयेजाने वाले अनाज बहुत कम हैं; बर्सातमें मकी, उड़द,

---

(१) टॉड साहिबने अपने सफ़र नामेमें लिखा है, कि यह मन्दिर बिमलशाहने परमार राजा धारावर्षके समयमें बनवाया, जो विक्रमी १२६५ [हि० ६०५ = ई० १२०९] के लग भग होगा.

और सामा बोयाजाता है; और बालरा खेतीमें (जो पहाड़के ढालमें जंगलके हिस्सोंको काटनेपर बर्सातके बाद सूख जानेसे राखमें बोई जाती है) तीन क़िस्मका छोटा अनाज पैदा होता है, जिसको माल, संवलाई और करांग कहते हैं. इस खेतीको आबूके लोक और भील ज़ियादह पसन्द करते हैं. वर्सातके मौसममें आलू बहुत बोये जाते हैं, और डीसाको भेजे जाते हैं. जाड़ेकी फ़स्लमें जव और गेहूंकी खेती होती है.

ज़मीनका पट्टा – ख़ास ज़मीनका अधिकार सिरोहीके हाकिमको है; लेकिन् पीवल (सींची जानेवाली) ज़मीनपर लोक लोग अपनी बापोतीका हक़ रखते हैं, और अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ ज़मीन मोल ले सक्के, बेच सक्के और गिर्वी रख सक्के हैं. रांखड़ (न सींची जानेवाली) ज़मीनपर उनका ऐसा हक़ नहीं रहता, बीड़ों (घासका जंगल) का सबसे ज़ियादह हिस्सा राजका और किसी क़द्र लोकोंका है; बापके मरने बाद, जितने उसके लड़के हों, उनमें उसकी ज़मीन तक्सीम करदी जाती है.

आबूके लोकोंको हासिल बहुत कम देना पड़ता है; बालरा खेतीके सिवा सब बर्सातके अनाज मुआफ़ हैं. सियाली फ़स्ल (जव, गेहूं) के हासिलमें पैदावारकी क़िस्मसे (जव व गेहूं दोनोंके एवज़) सिर्फ़ जव लिया जाता है, जो बोये जानेवाले बीजका आधा हिस्सह होता है. तमाम आबूकी तह्सीलके लिये, एक काम्दार और एक नाइब है, और दो थानेदार एक उत्तरी हिस्सेके वास्ते और दूसरा दक्षिणी विभागके लिये रहता है. लोग हरएक गांवकी तह्सील गांवके ग्रामी (गामेती) के ज़रीएसे करते हैं. लोक लोगोंसे हासिलके सिवा नीचे लिखे कर और लिये जाते हैं:– चराईका कर, जो बर्सातके बाद हर साल फ़ी घर ऽ२ सेर घी लियाजाता है; घर गिनती, घर पीछे ॥) से लेकर रु० १) तक. महाजन लोगोंसे हर छः महीने बाद घर गिनतीका रु० १) से रु० २) तक कर वुसूल होता है. राजपूत, भील, और सरगरा लोगोंका कर मुआफ़ है.

सड़कें – शहरके पास और उसके अन्दर वाली सड़कें अच्छी हैं, और बहुतसी हलकी गाड़ियोंके आने जानेके लाइक़ हैं; ख़ास सड़क हुमानी घाट तक गई है, जिसको यहांके लोग "सूर्य्यास्त विन्दु" कहते हैं, जो अनाद्राके ऊपर और आबूके पश्चिमी तरफ़के मैदानोंके ऊपर है. बहुतसी सड़कें सवारोंकी आमदो रफ़्त की हैं, जिनमेंसे ख़ास ख़ास यहांपर लिखी जाती हैं:– १– उडिया तक देलवाड़ेमें होकर पांच माइल, जिसकी एक शाख़ अचलगढ़को जाती है. २– आबूकी चोटीतक, गौमुखके ऊपर. ३– देलवाड़ा तक, ईंटके मैदानोंमें होकर, जिसको "लम्बी दौड़" (घेरा) कहते हैं. ४– झीलके ऊपरकी सड़क, "सूर्य्यास्त विन्दु" तक. ५– नीचली

सड़क, जो भीलके किनारे किनारे बांध और अनाद्राकी सड़क तक जाती है. मैदानसे पहाड़पर जानेका ख़ास रास्तह अनाद्राकी पुरानी सड़क है, लेकिन् वहांके बाशिन्दोंके आने जानेके बहुतसे रास्ते हैं. एक गाड़ीकी सड़क शहरसे 'ऋषिकृष्ण' तक ११ मीलके अनुमान आबूके पूर्वी आधारपर तय्यार होरही है.

मेले तमाशे - आबूपर कोई मश्हूर मेला नहीं होता, लेकिन् वहांपर जैन मतके मन्दिर प्राचीन और ज़ियादह होनेके सबब अक्सर यात्री लोग आया करते हैं; ज़ियादहतर गुजराती यात्रियोंके गिरोह मए सिपाहियों वग़ैरहके पूरे ज़ाबितेसे आते हैं, जिनमें बहुधा जैन मतके धनवान महाजन होते हैं. एक महात्म जो 'संगत' कहलाता है, हर बारहवें वर्ष होता है; उस वक्त हज़ारों पुजारी और यात्री लोग पहाड़पर जमा होते हैं. इस मेलेपर सिरोहीके राव महाजनोंसे टैक्स लिया करते हैं, जो दूसरे ज़िलोंके सुनारों व कलालों वग़ैरहसे भी वुसूल होता है.

मन्दिर व देवस्थान - अरबुद्ध (१) याने बुद्धिका पर्वत, जो हिन्दुओं और जैनियोंके मतके अनुसार बड़ा पवित्र समझा जाता है, और जो प्राचीन समयसे देवताओं और ऋषियों (२) व मुनियोंके रहनेकी जगह माना गया है; आबूपर बहुतसे मन्दिर व देवस्थान हैं, लेकिन् पुराने मन्दिर अक्सर खंडहर होगये हैं. टॉड साहिबने आबूको हिन्दुस्तानका ओलिम्पस (Olympus) (३) लिखा है, और कई उम्दह उम्दह मन्दिरों वग़ैरहका हाल अपने ईसवी १८२२ [वि० १८७९ = हि० १२३८] के सफ़रनामहमें (४) दर्ज किया है.

आबूपर निम्न लिखित मक़ाम ज़ियादह मश्हूर हैं:- गुरूशिखर, अचलेश्वर, गौमुख, और देलवाड़ा.

गुरूशिखर आबूकी सबसे बलन्द चोटी है, जो पहाड़के उत्तरी सिरेके पास मुल्की हाकिमोंके रहनेकी जगहसे क़रीब १० मीलके फ़ासिलेपर वाके़ है. यहां एक गुफ़ामें चटानपर दत्तात्रेयका चरण और उसी गुफ़ाके एक दूसरे कोनेमें 'रामानन्द' के चरण बने हुए हैं, जिनको लोग पूजते हैं.

अचलेश्वरका मन्दिर, जो महादेवके निमित्त बना है, दर्शन करनेका मकान है; इसके आसपास कई छोटे मन्दिर हैं. अचलेश्वर महादेव आबूकी रक्षा करने

---

(१) यह शब्द संस्कृत अर = पर्वत और बुद्ध = बुद्धिसे निकला है.

(२) ऋषि लोग बड़े महात्मा थे; ख़ासकर पुराणोंमें सातका ज़िक्र है, जिनमेंसे विश्वामित्र और वशिष्ठका नाम यहांपर कई वृत्तांतोंमें सुनाजाता है,

(३) यह पहाड़ ग्रीस (यूनान) देशमें देवताओंके रहनेका मक़ाम माना जाता था.

(४) वेस्टर्न इन्डियाके ७४ और आगेके पृष्ठोंमें देखो.

वाले देवता कहे जाते हैं. इन मन्दिरोंकी तामीरका कोई साल संवत् नहीं मिला, सिर्फ़ एक लेख आदिपालकी मूर्तिकी चरण चौकीके नीचे यह लिखा है, कि "परमार 'श्री धारावर्ष' ने अचलेश्वरके मन्दिरकी मरम्मत कराई", लेकिन् संवत् मितीके अक्षर मिटगये हैं. अल्बत्तह उड़ियामें कंकूलेश्वरके एक लेखसे धारावर्षका विक्रमी १२६५ [हि॰ ६०५ = ई॰ १२०९] (१) में राज्य करना पाया जाता है, जिससे मालूम होता है, कि वह संवत् १२६५ से बहुत अर्से पेश्तरका बना हुआ है. कहते हैं, कि अहमदाबादके हाकिम मुहम्मद बेगड़ाने ख़ज़ाने व मालके लालचसे मन्दिरके पीतलके नन्दिकेश्वरको तोड़ा, लेकिन् इसका बदला उसको जल्द ही मिलगया, कि जब उसकी फ़ौज पहाड़से उतरने लगी, तो उस वक़ इतने भ्रमर उड़े, कि वे लोग हथ्यार छोड़कर भागगये. पश्चिमकी तरफ़ मन्दिरोंके साम्हने चम्पा व आमके पेड़ोंका एक उम्दह कुंज, और उसके आगे एक पुराना कुंड चूने व पत्थरका बना हुआ है, जिसमें बर्सातके बाद थोड़े ही दिनों तक पानी रहता है, और जिसको टॉड साहिबने प्राचीन प्रसिद्ध अग्निकुण्ड ख़याल किया था; लेकिन् यहांके लोग उसको दक्षिणकी तरफ़ कुछ नीचेको एक छोटी झीलकी जगहपर होना बयान करते हैं. इस कुंडके दूसरी तरफ़ परमार राजा आदिपालकी एक हंसती हुई मूर्ति बनी है. कुण्डके उत्तरी घाटपर सिरोहीके राव मानसिंहकी छत्री बनी है; कहते हैं कि यह ज़हरसे मारेगये, तबसे सिरोहीके देवड़ा राजाओंको आबूपर रहना तलाक़ होगया.

अचलगढ़- अचलेश्वरके मन्दिरके पीछे एक पहाड़ीपर परमारोंका प्राचीन गढ़ 'अचलगढ़' है, जो विक्रमी १५०७ [हि॰ ८५४ = ई॰ १४५०] के क़रीब महाराणा कुम्भाका बनवाया हुआ कहा जाता है; शायद महाराणाने गढ़का जीर्णोद्धार कराया होगा, और किसी क़द्र बढ़ाया भी होगा, लेकिन् गढ़ बहुत बरसों पहिलेका बना मालूम होता है, अब सिर्फ़ उसके खंडहर रहगये हैं; यहांपर एक कुंड भी है, गढ़के भीतर दो मन्दिर जैनके हैं- १ ऋषभदेवका और दूसरा पार्श्वनाथका.

गौमुख- यह देवस्थान आबूकी चोटीके नीचे पहाड़ीके दक्षिणी सिरेपर है, यहां एक गायका मुंह पत्थरका बना हुआ है, जिसमेंसे बराबर साफ़ पानी निकलकर एक छोटे कुंडमें गिरता है, और कहते हैं, कि इसको विक्रमी १८४५ [हि॰ १२०३ = ई॰ १७८९] में सिरोहीके राव गुमानसिंहने बनवाया था. थोड़ी दूर आगे बढ़कर वशिष्ठ मुनिका स्थान गुंजान दरख़्तोंमें छिपा हुआ है, जिसके पास और भी कई देवस्थान हैं. वशिष्ठ मुनिकी मूर्ति काले पत्थरकी एक मन्दिरके भीतर है; मन्दिरके पास एक छत्रीमें चन्द्रा-

(१) टॉड साहिबकी बनाई हुई 'वेस्टर्न इन्डिया' किताबका ९० पृष्ठ देखो.

वतीके परमार राजा धारावर्षकी एक पीतलकी मूर्ति है. यह स्थान जंगलके सब्ज़े और दूर दूरके तालाव व घाटियोंकी कैफ़ियत दिखाई देनेके सबब बहुत ही उत्तम और रमणीय है.

अधर देवीका मन्दिर– बहुतसे मन्दिरोंके बीचमें अधर देवीका मन्दिर है, यह देलवाड़ेकी घाटीके ऊपर एक ऊंचे मकामपर वाके है, जिसकी दीवारें शहरसे दिखाई देती हैं.

देलवाड़ेके जैन मन्दिर– मश्हूर देलवाड़ेके मन्दिर, जो जैनियोंके पांच बड़े तीर्थोंमेंसे हैं, देलवाड़ा नामके एक छोटे ग्राममें हैं. यहांके लोगोंके ज़बानी हालसे यह मालूम होता है, कि यह स्थान जैन मन्दिरोंके बननेके पेश्तर शिव और विष्णुके मन्दिरोंसे सुशोभित था. पहिले यहां पंडे लोग जैनियोंको नहीं आने देते थे, लेकिन् अनहिलवाड़ाके साहूकारोंने राजा धारावर्ष परमारको बहुतसा रुपया देकर ज़मीन मोल लेली. इसपर पंडोंने राजाको शाप (बद दुआ) दिया, और उसी समयसे चन्द्रावतीका राज्य नष्ट होगया.

इन मन्दिरोंके समूहमें चार मन्दिर हैं, जिनमेंसे दो तो पिछले ज़मानेके बने हुए सादी बनावटके हैं, जिनको बने हुए क़रीब ४०० वर्षका अ़र्सा हुआ; बाक़ी दो, जो आबूपर बहुत मश्हूर जैन मन्दिर हैं, उनमेंसे एक तो विक्रमी १२६६ [हि० ६०६ = ई० १२०९] के लग भग विमलशाह (अनहिलवाड़ा पाटनके एक सेठ) ने ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया, और दूसरा विक्रमी १२९३ [हि० ६३३ = ई० १२३६] के क़रीब जैन महाजन तेजपाल व वसन्तपाल, दोनों भाइयोंने पार्श्वनाथका मन्दिर बनवाया. यह दोनों मन्दिर बहुत बड़े और ऊंचे नहीं हैं, लेकिन् भीतर जानेपर उनके हर एक हिस्सेकी बनावट और खूबसूरतीको देखकर तअ़ज्जुब होता है. इन मन्दिरोंकी ख़ास चीज़ सामान्य अठपहलू गुम्बज़ हैं, जो पोशीदह कोठरीके एक मंडपके बराबर है, जिसमें मूर्तें रक्खी हुई हैं; और उसके चारों तरफ़ गुम्बज़दार थंभे लगे हुए हैं, जिनपर बहुत उम्दह बारीक नक़ाशी कीहुई छत्तें हैं. तेजपाल व वसन्तपालके मन्दिरकी हाथीशालामें १० बड़े बड़े हाथी संग मर्मरके बने हुए हैं, और इनके पीछे बहुतसे स्वरूप हाथमें थैलियां लिये हुए बने हैं, जो ज़ाहिरी धर्म सम्बन्धी काम कराने वालोंकी तस्वीरें हैं; लेकिन् यह स्वरूप सार्थक हैं, जो उस वक़्का पहिराव और केश रखनेकी चाल दिखलाते हैं. यह मन्दिर शिल्प शास्त्रके अनुसार बनाये गये हैं; अगर कोई शख़्स इस विद्याका जानने वाला इन मन्दिरोंको देखे, तो शायद उसको मालूम होगा, कि ऐसे मन्दिर बहुत ही कम पाये जाते हैं.

तवारीख़.

यह राज्य चहुवान राजपूत जातिके देवड़ा राजाओंके क़ब्ज़हमें है; यह पता मुश्किलसे लग सक्ता है, कि इस ज़िलेपर चहुवानोंके पहिले किस किस घरानेके राजाओंने राज्य किया; परन्तु परमार ख़ानदानके राज्य करनेका सुबूत मिलता है; इन राजाओंका ज़ियादह पता अबतक हमको नहीं मिला, सिर्फ़ पृथ्वीराजरासा में पृथ्वीराजके सावन्तोंमें जैत परमार और उसके बेटे सलख परमारकी पृथ्वीराजके साथ लड़ाइयोंमें बहादुरी दिखलाई है; और विक्रमी ११३६ [हि० ४७१ = ई० १०७९] में पृथ्वीराज चहुवानने, जो सारूडा गांवमें शिहाबुद्दीन गोरीको शिकस्त दी, वह फ़त्ह जैत परमारके ज़रीएसे हुई; और उसके बाद जैत परमारकी बेटी ईछिनीके साथ पृथ्वीराजका विवाह होना वग़ैरह कथा बढ़ावेके साथ लिखी है, परन्तु यह ग्रंथ बहुत समय पीछे बनाया गया, इससे जैसी संवत्‌की ग़लती पड़ी है, वैसी इतिहासमें भी होनेका सन्देह है; क्योंकि जिन जिन प्रशस्तियोंसे हमको परमार राजाओंका कुछ हाल मिला है, उससे पृथ्वीराज रासाका लेख ग़लत ठहरता है; इसलिये, कि एक प्रशस्ति जो विक्रमी १०९९ [हि० ४३३ = ई० १०४२] की बसन्तगढ़ की लान बावड़ीपर है, उसका लेख एशियाटिक सोसाइटी बंगालके जर्नल १० भाग २ में छपा है, जिसमें १ उत्पलराज उसका बेटा २ अरण्यराज, उसका बेटा ३ अद्भुतकृष्णराज, उसका पुत्र ४ श्रीनाथ घोशी, उसका पुत्र ५ महीपाल, उसका पुत्र ६ धंधुक, उसका पुत्र ७ पूर्णपाल, जिसकी बहिन लाहिनीने यह बावड़ी बनवाई थी—(देखो शेष संग्रह नम्बर ८). विक्रमी १०९९ [हि० ४३३ = ई० १०४२] तक परमार राजाओंके वंशमें सात राजा चन्द्रावती, आबू और बसन्तगढ़पर राज्य करचुके थे. आबूके परमारोंका मूल पुरुष धूमराज था. फिर विक्रमी १२८७ [हि० ६२७ = ई० १२३०] की बसन्तपाल तेजपालके जैन मन्दिरकी प्रशस्तिसे, और उसके पहिलेकी अचलेश्वरके मन्दिरकी प्रशस्तिसे (जिसका संवत् मालूम नहीं होता,) परमार राजाओंकी पिछली वंशावली साबित होती है—(देखो शेष संग्रह नम्बर ९–१०). इनमें धंधुकके बाद ध्रुवभट्ट लिखा है, जिससे पायाजाता है, कि धंधुकका पुत्र पूर्णपाल कुंवरपदेमें ही मरगया, क्योंकि उसका नाम इन दोनों प्रशस्तियोंमें छोड़दिया है. ध्रुवभट्टके बाद रामदेव हुआ, और उसके बाद धारावर्ष हुआ, उसका छोटा भाई और उसका सेनापति प्रह्लाददेव बड़ा बहादुर व विद्वान था. वह प्रशस्तिकार लिखता है, कि उसने सामन्तसिंहसे कभी शिकस्त नहीं खाई. सामन्तसिंह चित्तौड़के बापा रावलसे २३ नम्बर पर और समरसिंहसे छः पीढ़ी पहिले हुआ था; और धारावर्षका एक ताम्रपत्र विक्रमी १२३७ [हि० ५७५ = ई० ११८०] का मिला है—(देखो शेष संग्रह नम्बर ११),

और एक लेख आबूपरके ओरीया ग्राममें मिला है, जिसमें धारावर्षको दूसरे भीमदेव सोलंखीके तावे लिखा है; उसका संवत् विक्रमी १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १२). इससे प्रतीत हुआ, कि धारावर्ष विक्रमी १२३७से १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] तक चन्द्रावतीका राजा था, तो यह साबित होगया, कि पृथ्वीराज चहुवानके समयमें सलख परमार और जैत परमारको आबूका राजा लिखना गलत है; राजा पृथ्वीराजके समयमें चित्तौड़पर भी रावल समरसिंह नहीं था, उस वक्त् वहां सामन्तसिंह था, जिसके साथ धारावर्षके भाई प्रह्लाददेवने लड़ाइयां की थीं, और इन लेखोंसे यह भी साबित होगया, कि आबूके राजाओंकी वंशावलीसे विक्रमी १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] तक सलख और जैत नामका कोई राजा नहीं हुआ. धारावर्षका पुत्र सोमसिंहदेव और उसका पुत्र कृष्णराजदेव लिखा है. और उसी मन्दिरके एक दूसरे लेखमें सोमसिंहका दूसरा पुत्र कान्हड़देव लिखा है, जिस लेखका संवत् विक्रमी १२९३ [हि० ६३३ = ई० १२३६] है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १३). इन्डियन ऐन्टिक्वेरीके दूसरे भागके पृष्ठ २१६ में वॉटसन् साहिब लिखते हैं. कि कान्हड़देवके बाद चन्द्रावतीका आख़िरी परमार राजा हुण (१) था. इससे मालूम होता है, कि वह सोमसिंह या कान्हड़देवका पुत्र होगा; परन्तु यह निश्चय होगया, कि विक्रमके तेरहवें शतकमें आबूके राजा परमार वंशके थे; अल्बत्तह यह बात प्रसिद्ध है, कि परमारोंसे यह मुल्क चहुवानोंने लिया.

चहुवान उन चार क्षत्रियोंके वंशोंमेंसे हैं, जिनको वशिष्ठ ऋषिने अग्निकुंडसे निकाला था: यह कथा बूंदीकी तवारीख़में लिखी गई है- (देखो पृष्ठ १०१).

उसके बाद देवरावके नामसे देवड़ा कहलाये, इसके समय और पीढ़ियोंमें बहुत इख़्तिलाफ़ है: नेनसी महता लिखता है, कि १ मालवाहन, २ जैवराव, ३ अंबराव नगोगो भाई, ४ दलराव, ५ सिद्धराव, ६ राव लाखण, ७ वल, ८ सोही, ९ महिराव, १० अनहल, ११ जीदराव, १२ आसराव, इसके घरमें देवीराणी होकर रही, जिसके गर्भसे तीन बेटे पैदा हुए. देवीकी औलाद होनेसे देवड़ा कहलाये. आसरावका बेटा १३ आल्हण, १४ कीतू, १५ महणसी, १६ बीजड़, इसके पांच बेटे थे. और यह लोग गढ़ा बांधकर गुज़र करते थे. चहुवानोंने आबूके परमारोंको बेटियोंकी शादी करना क़बूल करके बुलाया; जब वे लोग विवाह करनेको आये, तब उनको दग़ासे मारकर चहुवानोंने विक्रमी १२१६ माघ कृष्ण १ [हि० ५५४ ता० १६ ज़िल्हिज = ई० ११५९ ता० २८ डिसेम्बर] को आबूका क़िला लेलिया; लेकिन् यह

(१) इस बातमें शुब्ह: मालूम होता है.

बात ग़लत है, क्योंकि विक्रमका तेरहवां शतक पूरा होने तक परमार राजाओंका राज्य प्रशस्तियोंसे ऊपर साबित होचुका है, और इसके बाद भी विक्रमी १३७७ [हि० ७२० = ई० १३२०] की एक प्रशस्ति अचलेश्वरके मन्दिरमें मिली है- (देखो शेप संग्रह नम्बर १४), जिसमें चहुवान लुंभराजने चन्द्रावती और आबू लेलिया, ऐसा लिखा है. उसके पूर्वजोंके नाम इस तरह लिखे हैं- माणिक्यराज, लक्ष्मणराज, अधिराज, सोहीराज, सिन्धुराज, आसराज, आनन्दराज, कीर्तिपाल, समरसिंह, उदयसिंह, मानसिंह, प्रतापसिंह, दशस्यंदन (बीजड़), लावण्यकर्ण, लुंभा; इन्होंने आबू और चन्द्रावतीका राज्य परमार राजाओंसे लेलिया. इसका पुत्र तेजसिंह था, जिसका कान्हड़देव और उसका सामन्तसिंह- (देखो शेषसंग्रह नम्बर १५).

नैनसी महताका लेख इन प्रशस्तियोंसे नहीं मिलता. वह लिखता है, कि बीजड़के बाद १७ तेजसिंह आबूका राव हुआ. १८ लुंभा, १९ सलखा, २० रिणमल्ल, २१ सोभा, २२ राव सहसमल्ल. इन्होंने सरणवा (१) नामी पहाड़के पास विक्रमी १४५२ वैशाख कृष्ण २ [हि० ७९७ ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १३९५ ता० ७ एप्रिल] (२) को शहर आबाद करके उसी पर्वतके नामसे सरणवाही नाम दिया, जिसको समयके बीतनेपर लोग 'सिरोही' कहने लगे.

इसके बाद २३ राव लाखा हुआ, जिसने लाखेलाव तालाब बनवाया. २४ राव जगमाल, २५ राव अखेराजके २६ बड़ा बेटा रायसिंह और छोटा दूदा एकके बाद दूसरा गद्दीपर बैठा.

राव लाखाके बेटा १ जगमाल, २ हमीर, ३ शंकर, ४ उदयसिंह था; जब राव लाखाके बाद जगमाल गद्दी पर बैठा, तो उसके भाई हमीरने राज्यका विभाग करना चाहा, जिसपर आपसमें बहुत लड़ाइयां हुईं, आख़िरकार जगमालके हाथसे हमीर मारा गया.

जगमालके बाद राव अखेराज सिरोहीका मालिक कहलाया, जिसके वक़्की प्रशस्ति विक्रमी १५८९ [हि० ९३९ = ई० १५३२] की मिली है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १६), और उसने जालौरके पठानोंको गिरिफ़्तार किया; बाद उसके रायसिंह सिरोहीका राव हुआ, उसने मेवाड़ और मारवाड़के राजाओंकी फ़ौजोंमें बड़ी बहादुरियां दिखलाईं; चारण माला आसियाको करोड़ पशावमें खेण गांव दिया, जिसमें

---

(१) सरणवाका अर्थ सरणा अर्थात् पनाहका पहाड़ है, जिसमें दुश्मनोंके भयसे पनाह लीजावे.

(२) संवत् १४५२ की जगह बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें संवत् १४६२ और १४८२ भी लिखा है, परन्तु हमने नैनसी महताकी पोथीसे मूलका संवत् लिखा है.

३०० रहट चलते हैं; और अब तक वह उसकी औलादके क़ब्ज़ेमें है. दूसरा करोड़ पशाव चारण पत्ता कलहटको दिया, जिसमें गांव मांडासण गुजरातकी सीमापर उदक करदिया. यह राव दातारीमें बड़ा मश्हूर गिनाजाता है. भिन्नमालमें बिहारी पठानोंका एक थाना था, जिनपर रायसिंहने हमलह किया; उस वक्त एक तीर लगनेसे वह मरगया; उसके साथके राजपूत लाशको कालधरीमें लेआये, और वहीं दाग़ दिया. रायसिंहने मरते समय कहा, कि मेरा बेटा उदयसिंह बच्चा है, इसलिये भाई दूदाको सिरोहीकी गद्दीपर बिठादेना चाहिये, यह उदयसिंहकी पर्वरिश करेगा. सब सर्दारोंने इस बातको कुबूल किया; परन्तु दूदाने कहा, कि उदयसिंह गद्दीका मालिक है, जबतक वह बड़ा हो, मैं रियासतके कामको संभालूंगा; और इसी तरह नेक निय्यतीसे उसने काम चलाया.

जब दूदा मरने लगा, तो उसने उदयसिंह और दूसरे सर्दारोंसे कहा, कि मेरे बेटे मानसिंहको लोहियाना गांव जागीरमें देकर उदयसिंह सिरोहीकी गद्दीपर बैठे; यही बात अमलमें आई; एक वर्षके बाद उदयसिंहने बचपनकी अदावतके कारण मानसिंहको लोहियानेसे निकाल दिया; उसके राजपूतोंने दूदाकी खैरख्वाही बतलाकर बहुत मना किया, लेकिन् रावने एक भी न सुनी; मानसिंह महाराणा उदयसिंहके पास चलागया, जिसको वहां बरकाण बीझेलावका पट्टा मिला. उदयसिंह शीतलाकी बीमारीसे मरगया, और मानसिंह सिरोहीका मालिक हुआ; इसके समयकी एक प्रशस्ति विक्रमी १६३२ [हि० ९८३ = ई० १५७५] की मिली है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १७). यह हाल तफ़्सीलवार महाराणा उदयसिंहके बयानमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ ६५).

मानसिंहके गद्दी बैठनेपर जोधपुरके राव गांगाकी बेटी चंपाबाईने, जो राव रायसिंहको ब्याहीगई थी, और जिसके गर्भसे उदयसिंह पैदा हुआ था, मानसिंहको ललकारकर कहा, कि मेरे बेटे उदयसिंहकी स्त्री गर्भवती है, इसलिये तुझको गद्दीपर नहीं बैठना चाहिये, तब मानसिंहने उदयसिंहकी गर्भवती स्त्रीको मारडाला. (विचार का स्थान है, कि मनुष्य थोड़ी ज़िन्दगीमें लोभसे कैसे कैसे अनर्थ करते हैं; अब वह मानसिंह कहां है ?) राव मानसिंह बड़ा बहादुर और मुन्तज़िम था, उसने कई सर्कश कोलियोंको ताबे किया, जो बड़े फ़सादी और पहाड़ी जागीरदार थे.

पंचायण परमारको उदयसिंहने ज़हर दिलाकर मारडाला था, जिसका भतीजा कल्ला परमार रावकी सेवामें रहनेलगा, और उसने मानसिंहको कटारसे मारडाला. मानसिंहके औलाद न होनेके कारण सुल्तान भाणावतको गद्दी मिली.

राव लाखाका बेटा उदयसिंह, जिसका रणधीर, उसका भाण, उसका बेटा

सुल्तान था. सुल्तान गद्दीपर बैठा, परन्तु कुल कारोबारका मुख़्तार बिजा देवड़ा था, जिसने रावके काका सूजा रणधीरोत को इसलिये मरवाडाला, कि वह ज़बर्दस्त आदमी रियासती कामोंमें दस्तअन्दाज़ी करने लगा. अब नामके लिये सुल्तान मालिक रहगया; बिजाके भाइयोंने उसको बहुत रोका, परन्तु मुसाहिबी ऐसी चीज़ है, कि अगलोंकी दुर्दशा देखनेपर भी पिछले उसी बलामें फंसजाते हैं. राव मानसिंहकी स्त्री बाहड़मेरी को गर्भ था, जिसने अपने पीहर बाहड़मेरमें एक लड़का जना; जब देवड़ा बिजा और राव सुल्तानमें अदावत बढ़ने लगी, तो बिजाने मानसिंहके बेटेको गद्दीपर बिठानेको बाहड़मेरसे बुलाया, और आप उसकी पेश्वाईके लिये गया; परन्तु वह लड़का अकस्मात् मरगया, और पीछेसे राव सुल्तान भागकर रामसेन चलागया. सिरोहीकी गद्दीपर देवड़ा बिजाने बैठना चाहा, परन्तु उसका यह मनोर्थ देवड़ा समरा सूराने रोका; बिजा जब्रन मुख़्तार बना. तब समरा और सूरा दोनों, राव सुल्तानके पास चलेगये; महाराणा प्रतापसिंह अव्वलने बिजाको निकालकर अपने भानजे कल्ला मिहाजलोतको वहांका मालिक बनादिया; राव सुल्तान भी कल्लाके पास चला आया, लेकिन् राजपूतोंने आपसकी तक्रारसे कल्लाको शिकस्त देकर सुल्तानको दोबारह सिरोहीका राव बनाया. फिर बीकानेरके राव रायसिंहकी मारिफ़त सिरोहीका आधा राज बादशाही ख़ालिसेमें होकर महाराणा उदयसिंहके बेटे जग्मालको मिला. यह ज़िक्र तफ़्सीलवार महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १६१).

दुबारह राव सुल्तान सिरोहीपर राज करने लगा, परन्तु महाराणा उदयसिंहके बेटे सगरने अपने भाई जग्मालका बदला लेकर सिरोहीको बर्बाद किया. यह ज़िक्र महाराणा अमरसिंह अव्वलके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ २२०). विक्रमी १६६७ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १०१९ ता० २३ जमादियुस्सानी = ई० १६१० ता० १२ सेप्टेम्बर] को राव सुल्तानका देहान्त होगया.

उसका बेटा राजसिंह गद्दीपर बैठा; वह एक भोला आदमी था, उसका दूसरा भाई सूरसिंह रियासतका हिस्सह करनेके लिये फ़साद करनेलगा, और देवड़ा भैरव-दास समरावत डूंगरोत वग़ैरह उसके मददगार होगये; राव राजसिंहकी तरफ़ देवड़ा पृथ्वीराज सूजावत रहा; दोनों तरफ़ राजपूतोंकी फ़ौजें तय्यार होकर लड़ाई हुई, जिसमें सूरसिंहने शिकस्त खाई. पृथ्वीराज रावकी मुसाहिबी करने लगा. कुछ दिनोंके बाद राव राजसिंह और पृथ्वीराजमें भी नाइत्तिफ़ाक़ी फैली. पृथ्वीराजके पास भाई और बेटोंका बड़ा गिरोह था, रियासतकी बर्बादीके ख़यालसे राव और पृथ्वीराजको महाराणा अमरसिंह अव्वलके कुंवर कर्णसिंहने उदयपुरमें बुलाकर फ़ह्माइश की, परन्तु कुछ कारगर नहीं हुई; तब वे पीछे सिरोही गये. रावने देवड़ा भैरवदासको

पृथ्वीराजपर घात करनेको रक्खा; राव महादेवके दर्शनको गये, और पीछेसे भैरवदासको पृथ्वीराजके कुटुंबियोंने मारडाला. यह सुनकर रावने सब्र किया, और भैरवदासकी जागीर उसके बेटे रामसिंहको दी. एक दिन पृथ्वीराज अपने भाई बेटोंको लेकर गया, और राव राजसिंहको ग़फ़लतकी हालतमें मारडाला; महल वगैरह घेर लिये, और राजसिंहके दो वर्षकी उम्र वाले बेटे अखेराजको मारना चाहा, परन्तु उसको राणियोंने छिपादिया; थोड़ी देरके बाद सीसोदिया पर्वतसिंह व रामा भैरवदासोत वगैरह रावके राजपूतोंने लड़ाई शुरू की, और एक तरफ़से दीवार तोड़कर राव अखेराजको निकाल लिया; उसके बाद हमलह करने लगे; तब पृथ्वीराज भाग निकला, और उसके कई राजपूत भाई बेटे मारे गये.

आख़िरकार विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में पर्वतसिंह, रामा भैरवदासोत, चीबा, दूदा, करमसी, साह तेजपाल वगैरहने दो वर्षकी उम्रके राव अखेराजको गद्दीपर बिठाया; और सब राजपूतोंने मिलकर पृथ्वीराजको मुल्कसे निकाल दिया. वह देवलियामें जारहा, और सिरोहीके इलाकेमें फ़साद करने लगा; तब देवराजोत देवड़ा राजसिंह व जीवाको फ़रेबकी लड़ाई करके सिरोहीसे निकाल दिया. वे पृथ्वीराजके पास जारहे, और ग़फ़लतकी हालतमें उसको मारकर पीछे चले आये.

पृथ्वीराजके बेटे चांदाने अम्बावके पहाड़ोंमें रहकर सिरोहीका मुल्क खूब लूटा; आख़िरकार वह विक्रमी १७०१ [हि० १०५४ = ई० १६४४] में १२० गांवोंपर क़ब्ज़ह करके नीबजमें रहने लगा. तब विक्रमी १७१३ [हि० १०६६ = ई० १६५६] में राव अखेराजने अपने राजपूत सीसोदिया पर्वतसिंह, देवड़ा रामा, चीबा, करमसी, ख़वास केसर वगैरह कुल फ़ौजको लेकर नींबजको जाघेरा; चांदाने मुक़ाबलह किया, और राव अखेराजको शिकस्त दी, जिसमें रावके ५० आदमी मारेगये, १०० ज़ख़्मी हुए, और देवड़ा राघवदास जोगावत बड़ा नामी सर्दार काम आया.

इन्हीं दिनोंमें बादशाह शाहजहांके बेटोंमें तख़्तके लिये अदावत फैलने लगीं, तब बड़े शाहज़ादह दाराशिकोह और छोटे मुरादबख़्शने अखेराजके नाम निशान लिखे; उनकी नक़्लें सिरोहीके दीवान 'ख़ान बहादुर' निअ्मतअ्लीख़ांने हमारे पास भेजीं, जिनको तर्जमह समेत यहां दर्ज किया जाता है:-

१- शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, सिरोहीके राव अखेराजके नाम.

—∞※∞—

(मुहरकी नक्ल)

बराबर वाले सर्दारों और कारगुज़ारोंमें उ़म्दह, राव अखेराज, शाही मिहर्बानियोंसे ख़ातिर जमा और इज़्ज़तदार होकर जाने-

जो अ़र्ज़ी कि इन दिनोंमें ख़ैरख़्वाहीकी बाबत भेजी थी, पाक नज़रसे गुज़री. आला हज़रतने वह सूबह शाहज़ादह (शायद मुरादबख़्श) से उतारा, और कोई दूसरा अ़न्क़रीब बादशाही दर्गाहसे मुक़र्रर होकर वहां पहुंचेगा, और शाहज़ादहको सूबेसे अ़लहदह करेगा. उस सर्दारको चाहिये, कि हर तरह तसल्ली रखकर ख़ैरख़्वाही और

۱- نشان پان شاهزادهٔ دارا شکوه بنام راو اکهی راج
رئیس سروهي *

—∞※∞—

(نقل مهر)

زبدة الامثال والاقران عمدة الاشباه والاعیان
راو اکهی راج به عنایت شاهانه مغرور و مستمال
بوده بداند - که عرضه داشتی که دریبولا مشتمل بر (خیرخواهي) بصاب (عالمیان مآب)
ارسال داشته بود شرف از مطالعهٔ قدسي یافت — چون بندگان اعلیحضرت آن صوبه را از شاهزاده

वफ़ादारीमें मज़्बूत रहे, और शाही मिहर्वानियोंको अपने हालके शामिल जाने. ता० ११रबीउ़ल अव्वल, सन् १०६०हिज्री [वि० १७०६ = ई० १६५०].

२–शाहज़ादह मुरादबख़्शका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक्ल़)

मुरादबख़्श,
इब्न शिहाबुद्दीन मुह-
म्मद शाहजहां, साहिब
क़िरानि सानी,
बादशाह ग़ाज़ी.
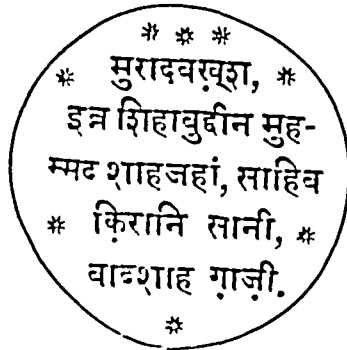
बराबरी वालोंसे उ़म्दह और बिह्तर अखेराज, सिरोहीका
ज़मींदार, शाही मिहर्बानियोंसे सर्बलन्द होकर जाने,
जो अ़र्ज़ी, कि इन दिनोंमें फ़र्मांबर्दारी और ख़ैरस्वाही साबित करनेके लिये

تعبیر نموده بود، وعنقریب از حضرت خلافت وجهانداری (شخصی دیگر) متعین شده در آنجا خواهد رسید، وایشان را از صوبهٔ مذکور خواهد برآورد — می باید که آن زبدة الاشباه خاطر بهمه جهت مطمئن داشته باخلاص وبندگی ثابت باشد، وعنایات شاهانه را شامل حال خود شناسد — تحریر فی تاریخ یازدهم ربیع الاول سنه ۱۰۶۰ هجری نقل

۲ — نشان بادشاهزادهٔ مرادبخش - بنام راو اکهیراج *

(نقل مهر)

مرادبخش،
ابن شهاب الدین
محمد شاهجهان،
صاحب قران ثانی،
بادشاه غازی
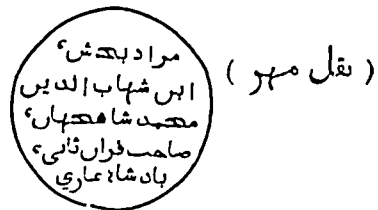
زبدة الاقران، قدوة الاعیان، اکهیراج، زمیندار
سروهی، بعنایت سلطانی سرفراز وسربلند بوده
بداند، که عرضداشتی که دریولا مشتمل بر رسوخ اطاعت وانقیاد ووثوق عقیدت واخلاص
بدرگاه ارسال داشته بود، بوسیلهٔ قرب یافتگان مجلس فردوس منزلت از نظر فیض اثر
گذشت، ومضمون آن معروض نصاب بارگاه، وباعث مزید توجه وعنایت ماذر بارهٔ او
بوقوع آمد — باید خاطرخود بهمه باب جمع داشته ومستمال مراحم سلطانی بوده بزودی
روانهٔ حضور موفورالسرور شود، که بعالی ادراک سعادت ملازمت فیض منقبت هرگونه مرض

हमारी दर्गाहमें भेजी थी, बड़े दरजेके हाज़िर लोगोंके ज़रीएसे बलन्द नज़रसे गुज़री; उसके मज़्मूनसे उसके हालपर हमारी मिहर्बानीकी तरक़्क़ी हुई. मुनासिब है, कि अपनी तबीअ़तको हर बातसे बे फ़िक्र रखकर शाही मिहर्बानियोंके भरोसेपर जल्द हमारे यहां हाज़िर हो. बुज़ुर्ग ख़िदमतकी नेक बख़्ती हासिल करने बाद हर तरहकी अ़र्ज़ और ख़्वाहिश, जो उसके दिलमें होगी, क़बूल फ़र्माई जायेगी. हमारी बे हद मिहर्बानियोंको अपने शामिल हाल जानकर देर न करे, इस मुआ़मलेमें ताकीद समझे. ता० २९ रबीउ़ल अव्वल, २९ जुलूस, मुताबिक़ सन् १०६६ हिज्री [वि०१७१२ = ई०१६५६].

३– शाहज़ादह मुरादबख़्शका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक़्ल)

* * *
मुरादबख़्श, इब्न
शिहाबुद्दीन, मुहम्मद
शाहजहां साहिब क़िरा-
* निसानी, बादशाह *
* * ग़ाज़ी. * *
* * * * *

बराबर वालोंमें उ़म्दह अखेराज, सिरोहीका ज़मींदार शाही मिहर्बानियोंसे ख़ुश हाल होकर जाने,

कि इन दिनों हमारे हुज़ूरमें अ़र्ज़ हुआ, कि सय्यद रफ़ी बलन्द दर्गाहसे रवानह होकर हमारी ख़िदमतमें आता था; जब दांतीवाड़ेकी हद्दमें पहुंचा, तो केसरी नाम

والتماسے که داشته باشد به اجابت مقرون خواهد شد — عنایت بے غایت ما را شامل حال دانسته اهمال نه نماید و درین باب قدغن شناسد — تحریراً فی التاریخ بست و نهم شهر ربیع الاول سنه ۲۹ جلوس مطابق سنه ۱۰۶۶ هجری قدسی صلعم *

۳ — نشان پادشاهزادهٔ مرادبخش بنام راو اکهے راج *

زبدة الاشباه اکهے راج زمیندار سروهی به عنایت سلطانی مستمال گشته بداند که چون درینولا بعرض باریافتگان مجلس رسید که سیادت پناه سید رفیع از درگاه آسمان جاه روانه

राजपूत हाथीवाड़ेके रहनेवालेने, जो अगवेके तौर हम्राह था, बद नसीबीसे नाक़िस ख़याल अपने दिलमें जमाया, सय्यदके दो तीन आदमियोंको क़त्ल और तीन चारको ज़ख़्मी करके, सात आठ हज़ार रुपया नक़्द और सामान लूटलिया. इस वास्ते बलन्द दरजेका ज़बर्दस्त हुक्म जारी किया जाता है, कि मुबारक निशानके हासिल होते ही ज़िक्र किये हुए नालाइक़को पूरी सज़ा देकर तलाशके साथ तमाम माल अस्बाब हमारे हुजूरमें भेज देवे, कि उसका फ़ाइदह और बिह्तरी इस बातमें है; अगर "खुदा न करे" इस मुआमलेमें टाल कीगई, तो ज़रूर यह हक़ीक़त बड़े हज़रतकी दर्गाहमें अर्ज़ कीजायेगी; इस सूरतमें नेक नतीजा न होगा; शर्मिन्दगी और पशेमानी भी फ़ाइदह न देगी. इस बाबत हुक्मके मुवाफ़िक़ बहुत जल्द ताकीद समझकर बर्ख़िलाफ़ी न करे. माह मुहर्रम, सन् ३० जुलूस मु० सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१३ = ई० १६५६].

४- शाहजहां बादशाहका फ़र्मान, राव अखेराजके नाम.

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम, व बिही नस्तईन.

(मुहरकी नक़्ल)

बराबर वाले सर्दारोंमें उम्दह, मुसल्मानी बादशाहतका ताबेदार, अखेराज, सिरोहीका ज़मींदार, बादशाही मिहर्बानियोंका उम्मेदवार होकर जाने,

ملازمت فیض منقبت شده، در حدود دانتی واڑه کیسری نام راجپوت متوطن هاتهی واڑه که بطریق بدرقه همراه بود، از روے بدبختی خیال ناشایسته بخود راه داده، دو سه کس از همراهیان مشار الیه را کشته، و سه چهار کس را زخمی ساخته، هفت و هشت هزار روپیه نقد و جنس بغارت برده، لهذا امر رفیع القدر منیع الشان واجب الاطاعت لازم الاذعان صادر مے شود، که بمجرد ورود نشان فرخنده عنوان، مفسد را تنبیه واقعی رسانیده، اموال مذکور به تجسس بدست آورده، بحضور پرنور بفرستد، که خیریت و بهبود درین ست، و اگر عیاذاً بالله درین باب دفع الوقت نماید، ضرور میشود که این حقیقت بدرگاه ملک اشتباه عرضداشت نموده آید، درینصورت نتیجهٔ نیک نخواهد یافت، ندامت و پشیمانی سود نخواهد داشت - درین باب قدغن بلیغ لازم دانسته تخلف و انحراف نورزد - تحریر فی التاریخ هفتم شهر محرم الحرام سنه ۳۰ جلوس میمنت مانوس، موافق سنه ۱۰۶۷ هجری *

इन दिनोंमें बादशाही दर्गाहके हाज़िर लोगोंकी मारिफ़त अ़र्ज़ हुआ, कि उसकी जागीरके इलाकेमें बाज़े लोगोंका माल अस्बाब चोरी गया; इसलिये बुज़ुर्ग व ज़बर्दस्त हुक्म जारी होता है. कि अपने इलाकेमें ऐसा बन्दोबस्त करे, और ज़ाबितह रक्खे, कि ऐसी बातें हर्गिज़ वाके न हों; और जो माल उसके इलाकेमें चोरी गया, उसको पैदा करके माल वालोंको दे. उस जगहकी ज़मीदारी हुज़ूरसे इसलिये इनायत फ़र्माई गई है, कि ऐसी वारिदातें वहां न हों, और आदमी और मुसाफ़िर बे फ़िक्रीसे अपना आना जाना जारी रक्खें. मुनासिब है, कि आगेको अपने इलाकेसे अच्छी तरह ख़बरदार रहे, और ख़ातिर जमा रक्खे, कि वह इस दर्गाहका ताबेदार है, कोई उसकी ज़मींदारीमें ख़लल न डालेगा; इस बाबत ताकीद जाने, और अ़मल करे. ता० २३ सन् ३० जुलूस, मुताबिक़ सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१४ = ई० १६५७].

---

۴ — فرمان شاهجهان بادشاه، بنام راو اکهی راج *

بسم الله الرحمن الرحیم و به نستعین *

(نقل مهر)

زبدة الامثال والاقران مطلع الاسلام اکهی راج
زمیندار سروهی بعنایت بادشاهانه مستمال
و امیدوار بوده بداند، که درینولا بعرض ایستادهای پایهٔ سریر خلافت مصیر رسید، که
در محال زمینداری او مال و اسباب جمعی بدزدی رفته — بنابر آن حکم جهان مطاع لازم الاذعان
واجب الاتباع صادر می‌شود، که درین محال این نوع امور اصلا واقع نشود، و بندوبست نموده
از مردم در محال زمینداری او بدزدی رفته باشد، آنرا پیدا ساخته بصاحبان مال رساند —
چون دولت زمینداری آنجا را باو برای این عنایت فرموده‌ایم، که این قسم امور
واقع نشود، و خلق الله و متردین بفراغ بال و رفاه حال تردد و آمد و شد نمایند — باید که
من بعد از سر زمین و حدود متعلقهٔ خود بواقعی خبردار باشد، و خاطرجمع دارد که چون
او بندهٔ این درگاه خلایق پناه است هیچکس متعرض زمینداری او نخواهد شد — درین باب
قدغن داند، و در عهده شناسد — تاریخ ۲۳ — سنه ۳۰ از جلوس مبارک، مطابق سنه ۱۰۶۷
هجری تحریر یافت *

५ - बादशाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखैराजके नाम.

(मुहरकी नक्ल)

* * शाहे बलन्द *
इक़्बाल, मुहम्मद दारा-
शिकोह, इब्ने शाहजहां
* बादशाह ग़ाज़ी. *
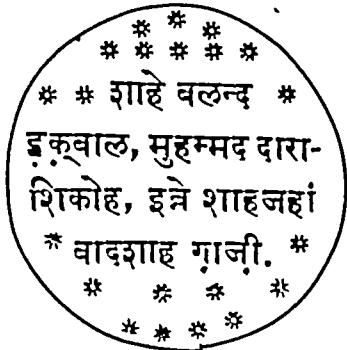
बराबरी वाले सर्दारोंमें उम्दह मिहर्बानियोंके लाइक़, राव अखैराज,
शाही मिहर्बानियों से इज़्ज़तदार और शामिल होकर जाने,

जो अर्ज़ी कि बुज़ुर्ग मिज़ाजकी दुरुस्ती पूछनेकी बाबत भेजी थी, पाक नज़रसे गुज़री, और ख़ैरख़्वाहीका मज़्मून मालूम हुआ. ज़बर्दस्त हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़र्मान जारी कियाजाता है, कि वह ख़ैरख़्वाह अपने इलाक़ेमें जमइयत समेत अच्छी तरह इन्तिज़ाम रखकर होश्यार रहे; जिस हालतमें कि लाचार होकर वहांका रहना मुनासिब न समझे, तो हुज़ूरमें चला आवे; फिर और तद्बीर कीजावेगी. ता० १४ मुहर्रम सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१३ = ई० १६५६].

۵— نشان بادشاهزادهٔ داراشکوه، بنام راو اکهی راج *

(نقل مهر)

***
شاه بلند اقبال،
محمد داراشکوه،
ابن شاهجهان،
بادشاه غازی
***
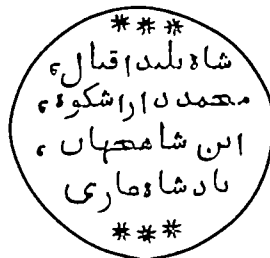
زبدة الاماثل والاعیان، عمدة الاشباه والاقران،
راو اکهی راج، بعنایت شاهی معزز و مستمال بوده
بداند، که عرضداشتی که مشتمل بر خیریت حضرت عالمیان مآب ارسال داشته بود، شرف
از مطالعهٔ قدسی یافت، و مضمون اخلاص مشحون آن واضح گشت، و فرمان بموجب حکم
والا قدر نافذ می شود، که آن زبدة الاشباه بخاطر جمع با جمعیت شایسته در محال خود انتظام
داده، و خبردار باشد، و درصورتیکه کار برو تنگ شود، و بودن آنجا مناسب بحال خود نه داند، روانهٔ
حضور پرنور شود، که بعد از ملازمت کیمیا خاصیت تدبیری دیگر کرده خواهد شد فقط تحریر
فی تاریخ چهاردهم شهر محرم سنه ۱۰۶۷ هجری *

६– शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, सिरोहीके राव अखेराजके नाम.

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम.

(मुहरकी नक्ल)
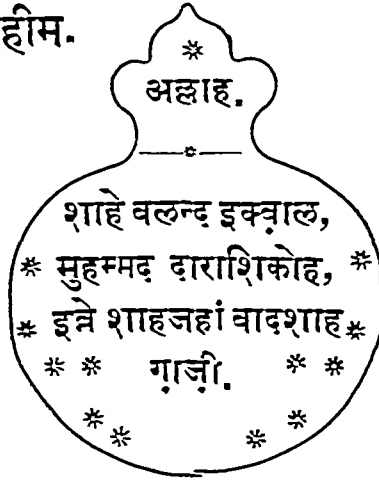
बराबरी वाले सर्दारोंमें बिह्तर उम्दह ख़ानदान वाला, मिहर्बानियों और इह्सानके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिहर्बानियोंसे ख़ातिरजमा होकर जाने,

जो अर्ज़ी ख़ैरख़्वाहीके साथ उस तरफ़की ख़बरोंकी बाबत हमारे हुज़ूरमें भेजी

---

۶ — نشان بادشاهزاده دارا شکوه بنام راو اکهے راج *

بسم الله الرحمن الرحیم *
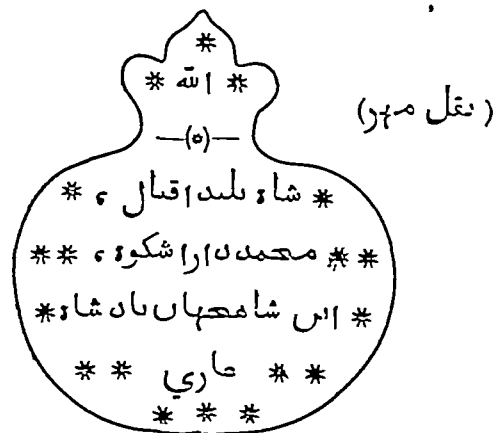
(نقل مهر)

زبدة الاماثل والاعیان، عمدة القبائل والاقران،
لائق العنایت والاحسان، راو اکهے راج،
بعنایت شاهی مستمال بوده بداند که عرضداشتے که مشتمل بر اخبارات آن صوب و مراتب
اعتقاد خیر اندیشی بجناب عالمیان مآب ارسال داشته بود، از نظر کیمیا اثر گذشت، ومضمون

थी, बुज़ुर्ग नज़रसे गुज़री; ख़ैरख़्वाहीका मज़्मून अच्छी तरहपर ज़ाहिर हुआ. हम उसको अपनी दर्गाहका वफ़ादार ख़ैरख़्वाह जानकर उसकी बिह्तरीमें मस्रूफ़ रहते हैं, इसलिये और ज़बर्दस्त हुक्म जारी कियाजाता है, कि अच्छी मज़्बूती और बे फ़िक्रीसे अपने इलाक़ेमें रहकर ऐसा बन्दोबस्त रक्खे, कि कोई मुख़ालिफ़ उस. तरफ़से न गुज़र सके. उम्दह सर्दार, इज़्ज़तदार, बहुतसी मिहर्बानियोंके लाइक़, महाराज जशवन्तसिंह, जो निहायत दरजे दिलसे हमारी ख़ैरख़्वाही और वफ़ादारी करता है, उसने उम्दह फ़ौज जालोरमें ठहरा रक्खी है; उस महाराजाने इरादह करलिया है, कि मौक़ेपर, जब कि वह सर्दार मददका मुह्ताज हो, जमइयत उसके पास पहुंच जावे; मुनासिब है, कि वक्त पर उस जमइयतको इशारह करदे, कि वह उसका साथ देगी. अपनी तबीअ़त हर तरह बे फ़िक्र रखकर शाही मिहर्बानियोंको अपने हालपर जारी समझे, और उस तरफ़की हक़ीक़त रोज़ बरोज़ अ़र्ज़ियोंके ज़रीएसे ज़ाहिर करता रहे. अगर शाहज़ादह (मुरादबख़्श वग़ैरह) उसको तलब करें, हर्गिज़ जानेका इरादह न करे. हिज्री १०६८, ता० १७ मुहर्रम [वि० १७१४ कार्तिक कृष्ण ३ = ई० १६५७ ता० २४ ऑक्टोबर].

اخلاص مشحون به تفصیل مفهوم رای مهرانجلای گردید — چون آن زبدة الاشباه را ازعقیدت مندان درست اخلاص این آستان فیض نشان دانسته طبع مایل رعایت حال آن تهور شعار مصروف ست، حکم والا قدر صادر می شود، که باستقلال تمام و جمعیت خاطر دران سرزمین بوده بندوبست بایدنمود، ونه گذارد، که مخالفی از اطراف تواند عبورکرد — چون جمعیت خوبی از عمدة الاشباه والاقران، قدوة الاماثل والاعیان، قابل اللطف والاحسان، لائق العنایت والامتنان مورد مراحم بیکران شایستهٔ الطاف نمایان، مهاراجه جسونت سنگه، که بنهایت اخلاص واختصاص به ما دارد، در پرگنهٔ جالور میباشد، ومهاراجه مشارٌ الیه مقرر نموده است، که جمعیت مذکور دروقت کار، وصورتی که آن زبدة الاقران محتاج به کمک باشد، خود را باو برساند، میباید که درآن وقت بجماعهٔ مذکور اشاره نماید، که طریقهٔ همراهی به آن شهامت اطوار بجا خواهد آورد، وخاطر خود را بهمه جهت مطمئن داشته عنایت شاهانه را شامل حال خود شناسد، واز حقیقت آن صوب روزبروز عرضداشت می نموده باشد، وگر شاهزاده (مرادبخش وغیره) اورا طلب نماید، زنهار ارادهٔ رفتن نه کند — فقط تحریر فی التاریخ هفدهم محرم الحرام سنه ۱۰۶۸ هجری *

७- शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक्ल)

शाहे बलन्द इक्बाल, मुहम्मद दाराशिकोह, इब्ने शाहजहां बादशाह ग़ाज़ी.

बराबरी वालोंमें उम्दह, नेक ख़ानदान, मिहर्बानियोंके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिहर्बानियोंसे ख़ातिरजमा होकर जाने,

जो अर्ज़ी इन दिनोंमें ख़ैरख़्वाहीके साथ हमारे हुजूरमें भेजी थी, बुज़ुर्ग नज़रसे गुज़री; मुनासिब है, कि वह अपनी जमइयत समेत अपने इलाक़हमें रहकर पूरा बन्दोबस्त रक्खे; हम उसको हुजूरमें बुलालेंगे, जो तद्बीर उसके फ़ाइदोंके लिये दर्कार होगी, कीजावेगी; हर तरह ख़ातिर जमा रख कर शाही मिहर्बानियोंको अपने हालपर जारी समझे; किसी तरह न घबरावे. ता॰ ६ सफ़र सन् ३१ जुलूस, मुताबिक़ हिज्री १०६० [वि॰ १७०६ माघ शुक्ल ७ = ई॰ १६५० ता॰ ७ फ़ेब्रुअरी].

---

٧ — نشان بادشاهزادهٔ داراشکوه، بنام راو اکهیراج *

(نقل مهر)

شاه بلند اقبال، محمد داراشکوه ابن شاهجهان بادشاه غازی

عمدة الاماثل والاعیان، زبدة القبائل والاقران،
لائق العنایت والاحسان، راو اکهیراج بعنایت

شاهی مستمال بوده بداند، که عرضداشتے که درینولا مشتمل بر مراتب عقیدت واخلاص بجناب عالمیان مآب ارسال داشته بود، ازنظر کیمیا اثر گذشت، ومضمون آن واضح رائے جهان آرا گردید — مے باید که آن زبدة الاشباه باجمعیت خود درآنجا بوده ازان سرزمین بواقعی (خبردار باشد)، آن قدوة الاماثل را بحضور پرنور طلب خواهیم فرمود، فکرے که درباب سرانجام او باید کرد، نموده خواهد شد، خاطر بهمه جهت جمع نموده عنایات وتفضلات شاهانه را شامل حال خود شناسد، وبه هیچ وجه مضطرب نه باشد — تاریخ ششم شهر صفر ختم المرسلین، سنه ۳۱ جلوس میمنت مانوس، مطابق سنه یك هزار وشصت هجری قدسی صلعم *

८– शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखेराजके नाम.
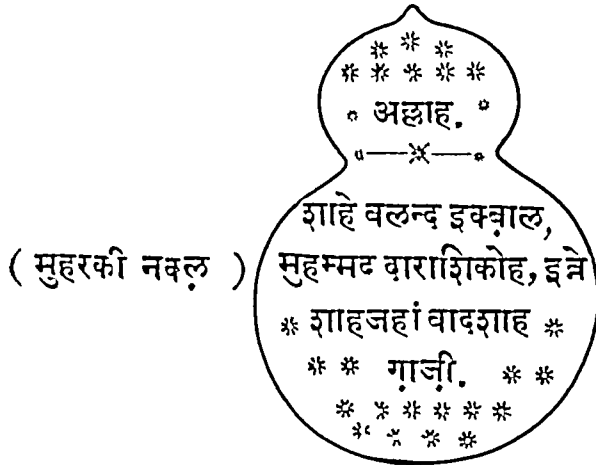
(मुहरकी नक्ल)

बराबरी वाले सर्दारोंसे उ़म्दह, नेक ख़ानदान, मिह्र्बानी और इह्सानके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिह्र्बानीसे इ़ज़्ज़तदार और उम्मेदवार होकर जाने,

इन दिनोंमें जो अ़र्ज़ी उस इ़लाक़हकी ख़बरोंकी बाबत हमारे हुज़ूरमें भेजी थी, बुज़ुर्ग नज़रसे गुज़री; उसका मज़्मून मालूम हुआ. उस मिह्र्बानियोंके लाइक़को मालूम हो, कि नामी राजाओंका बुज़ुर्ग, बड़े दरजेका अमीर, बहुत एतिबारी बादशाही सर्दार, मिह्र्बानी और इह्सानोंके लाइक़, महाराजा जशवन्तसिंह, और बहादुरीकी निशानी, दिलेर सर्दार, बादशाही हुज़ूरका पसन्दीदह, निहायत कार्गुज़ार, बादशाही अमीर, नेक ज़ात, उ़म्दतुल् मुल्क, क़ासिमख़ां, उज्जैनसे आगेको रवानह हुए हैं, कि अहमदाबाद
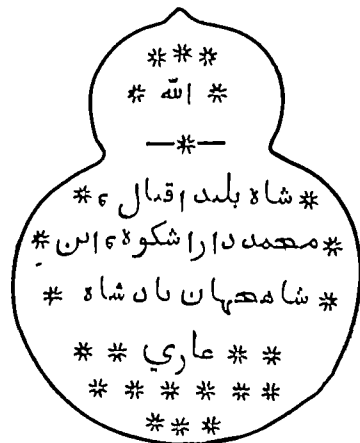
۸ — نشان بادشاهزاده دارا شکوه بنام راو اکهی راج

(نقل مهر)

عمدة الاماثل والاعيان، زبدة القبائل والاقران،
لائق العنايت والاحسان، راو اکهی راج،

به عنايت شاهى معزز و مستمال بوده بداند، كه عرضداشتے كه دريولا مشتمل بر اخبارات
آنصوب بحضور عالمشان ما ارسال داشته بود، از نظر کیمیا اثر گذشت، و مضمون آن مفهوم

पहुंच जावें. इन दिनोंमें आला हज़रत खुदाके साये, हज़रत बादशाहने नेक खानदान मिहर्बानियोंके लाइक़, नेक बादशाही सर्दार, उम्दतुल् मुल्क ख़लीलुल्लाहख़ां, और बहादुरीकी निशानी, बराबरी वालोंमें उम्दह, मिहर्बानियोंके लाइक़, दिलेर सर्दार, राव शत्रुशालको बीस हज़ार मज्बूत सवारों समेत, बीस लाख रुपया फ़ौज ख़र्च देकर उस तरफ़ जानेको मुक़र्रर किया है. यह लोग बहुत जल्द महाराजाके पास पहुंचेंगे, और हिम्मतसे उस बेअदब (मुरादबख़्श वग़ैरह) हक़् न पहिचानने वालेको सख़्त सज़ा देंगे.

मुनासिब है, कि वह ख़ैरख़्वाह भी इस वक़ अपनी जमइयत समेत फ़त्हमन्द लश्करमें पहुंचे, और उस तरफ़के ज़मींदारोंमेंसे, जो कोई नज़्दीक हो, उसको शाही मिहर्बानियोंका उम्मेदवार करके साथ लेजावे. हर तरफ़ ज़मींदारोंको लिख दे, कि अगर वह गुनाहगार नालाइक़ उस तरफ़से भागना चाहे, तो उसको गिरिफ़्तार और क़त्ल करनेमें पूरी कोशिश करें, जैसा कि राजा गोकुल उज्जैनियाने शिकस्त और भागनेके पीछे नाशुजाअ्के आदमियोंको लूट मारसे सताया; जो कुछ नाशुजाअ् और उसके हम्राहियोंके माल व अस्बाबमेंसे उस राजाके हाथ आया, सब हमने उसको बख़्श दिया; और हज़रत बादशाहने और हमने बहुत मिहर्बानियां ज़ाहिर कीं. इसी तरह बद नसीब नामुराद बाग़ी और उसके साथियोंका अस्बाब वग़ैरह, जहांतक हो सके,

---

رای جهان آرا گردید — معلوم آن لائق العنایة باد که زبدهٔ راجگان نامدار، عمدهٔ امرای عالی مقدار، رکن السلطنت العلیه، مؤتمن الدوله، شایستهٔ الطاف بیکران، سزاوار اعطاف بی پایان، مورد عواطف نمایان، مهاراجه جسونت سنگه، و شجاعت و شهامت پناه، امارت و ایالت دستگاه، منظور انظار عنایات بادشاهی، مطرح اعطاف و تلطفات نامتناهی، رکن السلطنت العظمی، عضد الخلافة الکبری، یعنی سعادت نشان عمدة الملک قاسم خان از آنجین روانهٔ پیشتر شده اند، که به احمدآباد بروند — در ینولا بندگان اعلیحضرت خاقانی قبلهٔ دوجهانی، خلیفة الرحمانی ظل سبحانی — سیادت و نجابت پناه، شایستهٔ الطاف بیکران، سزاوار مراحم بی پایان، مورد عنایات گوناگون ظل الهی، مهبط توجهات روز افزون بادشاهی، عمدة الملک خلیل الله خان، و شجاعت و شهامت پناه، تهور و جلادت دستگاه، قدوة الاشباه والاعیان، شایستهٔ الطاف و مکارم بیکران، راو شترسال را با بست هزار سوار باجمعیت تعین فرموده، و بست لک روپیه بجهت اخراجات لشکر ظفر منصور همراه آنها مرستاده اند، و عنقریب به مهاراجه ملحق خواهند شد، و بتوفیق آن بی ادب ناحق شناس (مرادبخش وغیره) را به سزای گران خواهند رسانید *

می باید که آن زبدة الاشباه نیز درینوقت باجمعیت خود خود را به لشکر ظفر پیکر برساند، و از زمینداران نواحی، هرکس که به آن زبدة الاقران نزدیک باشد، او را امیدوار عنایات

उधरके ज़मींदार छीनलें; हम साफ़ तौरपर मुआफ़ फ़र्माते हैं; और आलीशान निशान, जो कान्हजीके नाम भेजाजाता है, उसके पास पहुंचादे; और अपनी तरफ़से भी कुछ लिखकर रग़बत दिलावे, कि इस वक्त जो कुछ कोशिश की जावेगी, उसके फ़ाइदहका सबब होगी. ता० ७ रजब हिज्री १०६८ [वि० १७१५ = ई० १६५८].

९– शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मका निशान, राव वैरीशालके नाम.

(मुहरकी नक्ल)
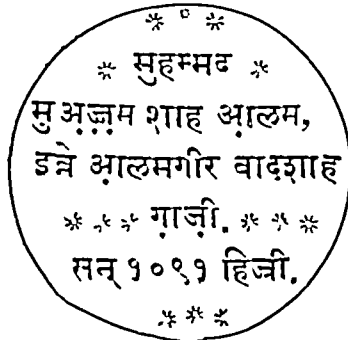
बहादुरीकी ख़ासियत, दिलेरीकी निशानी, वैरीशाल,
बड़ी शाही मिहर्बानियोंसे सर्बलन्द होकर जाने,
कि इन दिनोंमें अक्बर बाग़ी दुर्गा और सोनंग वग़ैरह बदनसीब राठौड़ों

شاهانه نموده بود — به زمینداران اطراف و جوانب بنویسد، که اگر آن عاصی حق ناشناس خواهد که برود، مساعی موفور بکار برند، چنانچه راجه گوکل آجینه بعد از شکست و هزیمت با شجاع آورده، و مردم اورا تاراج نموده آنچه از مال و متاع او و همراهانش بدست آورده، به راجهٔ مزبور معاف و مسلم داشتیم، و مورد عنایات بادشاهی و مراحم شاهی گردیده — همچنین آنچه از اسباب و اشیای نامراد بے سعادت باغی و همراهان او، که زمینداران مذکور بدست توانند آورد، متصرف شوند، که دیده و دانسته به آنها معاف فرمودیم، و نشان عالی شان که بنام کانهجی صادر شده، به او برساند، و به او از خود نیز چیزے بنویسد، و ترغیب نماید، که درین وقت هرگونه سعی و تلاش، که درین باب خواهد نمود، موجب بهبود خواهد شد — تحریراً فی التاریخ هفتم رجب سنه ۱۰۶۸ هجری فقط *

समेत उस दिलेर ख़ासियतके इलाक़हसे निकलता हुआ भागा है, और उसने फ़ौज जमा न होने और बाग़ियोंकी ख़बर न पानेके सबब उनके क़त्ल और क़ैद करनेमें कोशिश न की; लेकिन् अब सुननेमें आया, कि वह इस मुआमलेमें कोशिश करना चाहता है; इसलिये ज़बर्दस्त हुक्म जारी किया जाता है, कि अगर बद नसीब बाग़ी लोग फिर उसके इलाक़हमें आवें, तो बुज़ुर्ग मिहर्बानीसे ख़ातिर जमा रखकर वफ़ादारी और मिह्नतके साथ उनकी गिरिफ़्तारी और क़त्लमें कमी न करे, सबको क़ैद या क़त्ल करडाले, कि यह बात बुज़ुर्ग बादशाही दर्गाह और हमारे हुज़ूरमें बड़ी कार्गुज़ारी समझी जावेगी; इसका नेक नतीजह मिलेगा; इसमें सख़्त ताकीद जाने. ता० ९ रबीउल् अव्वल हिज्री.

---

۹ — نشان پادشاهزادهٔ محمد معظم بنام راو بیری شال *

(نقل مهر)

تهور شعار حلادت دثار ابیری سال به عنایت
عالی متعالی شاهی سرفراز بوده بداند که چون

دریںولا اکبر باغی با درگا و سونگ و دیگر راتهوران ادبار نصیب از حدود متعلقهٔ زمینداری آن تهور شعار آوارهٔ دشت فرار شده اند و او بسبب فراهم نیامدن جمعیت و خبرداری باغیان مذکور چندان سعی در قتل و اسر آنها نه کرده ؛ والحال باستماع آمده که آن تهور شعار کوشش و سعی در گرفتن و کشتن طاغیان کرده ؛ لهذا حکم محکم عز اصدار و شرف ورود می یابد که اگر بار باغی مذکور با سائر گروه شقاوت پژوه بحد زمینداری آن حلادت دستگاه برسد باید که خاطر خود مستمال تفضلات والا داشته مراتب فدویت و جانفشانی را در قتل و اسر آنها کما یسعی بجا آورده همه را اسیر و دستگیر نماید یا به قتل رساند که باعث مجرای کلی او در پیشگاه خلافت و جهانداری و هم درحضور فیض گنجور عالی متعالی شاهی خواهد بود و نتیجهٔ نیک خواهد یافت ؛ درین باب تاکید بلیغ داند — نهم شهر ربیع الاول سنه جلوس *

विक्रमी १७२० [हि० १०७३ = ई० १६६३] में राव अखेराजको उनके कुंवर उदयसिंहने क़ैद करदिया, और आप सिरोहीका मालिक बन गया. इस बग़ावतमें डूंगरोत देवड़ा कुंवर उदयसिंहके शामिल थे, तब देवड़ा रामा भैरवदासोत व साहिबख़ान वगैरह राजपूतोंने महाराणा राजसिंह अव्वलसे मदद लेकर रावको क़ैदसे निकाला. राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठ सर्ग ३५-३६ श्लोकमें महाराणाका राणावत रामसिंहको फ़ौज देकर राव अखेराजकी मददके लिये भेजना लिखा है. (देखो पृष्ठ ५९७).

यहां तक सिरोहीकी तवारीख़का ज़ियादह हाल हमने बीकानेरके महता नैनसीकी तह्क़ीक़ातसे लिया है, जिसने विक्रमी १७२१ माघ [हि० १०७५ रजब = ई० १६६५ जैन्यूअरी] में सिरोहीके चारण आढ़ा महेपदासकी तहरीरसे, और विक्रमी १७१७ आश्विन [हि० १०७१ सफ़र = ई० १६६० ऑक्टोबर] में देवड़ा अमरसिंहके प्रधान वाघेला रामसिंहकी ज़बानी और महता सुन्दरदासकी तहरीरसे लिखा है.

अब अगला हाल सिरोहीके वर्तमान दीवान ख़ान बहादुर निअ्मतअलीख़ांकी तह्रीरसे लिखते हैं, जिसने हमारी मददके लिये बड़वा भाट ज़ोरजी वगैरह लोगोंसे तह्क़ीक़ात करके हमारे पास भेजा है; और राजपूतानह गज़ेटियरसे भी लिया जायेगा, क्योंकि उक्त समयसे पहिला हाल बड़वा भाटोंके पास कहानी क़िस्सोंके तौर लिखाहुआ मालूम होता है.

राव अखेराजके दो बेटे थे, बड़ा उदयसिंह, दूसरा उदयभान; उदयसिंहने अपने बापको क़ैद किया, इस क़ुसूरसे अखेराजने उसको मरवाडाला. अखेराजके बाद उदयभान और उसके बाद विक्रमी १७३३ [हि० १०८७ = ई० १६७६] में उसका बेटा बैरीसाल गद्दीपर बैठा.

विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] में राव सुर्तानसिंह गद्दीपर बैठा, इसके बाद उदयसिंहका दूसरा बेटा छत्रसाल गद्दीपर बैठा. दीवान निअ्मतअलीख़ां लिखता है, कि छत्रसाल उदयपुरके महाराणा संग्रामसिंहकी मदद लेकर आया, और सुर्तानसिंह भागकर जोधपुरके राजा अजीतसिंहके पास गया; उस वक़्तसे सिरोहीके गांव पालड़ी और कोटरा उदयपुरके क़ब्ज़हमें गये.

छत्रसालके बाद मानसिंह गद्दीपर बैठे, जिनको उम्मेदसिंह भी कहते हैं. इनके वक़्तमें जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने चढ़ाई की, तब इन्होंने कुछ फ़ौज ख़र्च और अपनी बेटी महाराजाको देकर पीछा छुड़ाया. इनके चार बेटे १- पृथ्वीराज, २- जगत्सिंह, ३- ज़ोरावरसिंह, ४- उम्मेदसिंह थे. विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई०

१७४९] में राव पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे, जिनके बाद विक्रमी १८३८ ज्येष्ठ कृष्ण ६ [हि० ११९५ ता० २० जमादियुल्अव्वल = ई० १७८१ ता० १४ मई] को उनके भाई जगत्सिंह गद्दीपर बैठे, जिनको भारजा गांव जागीरमें मिला था. इनके बाद राव वैरीसाल गद्दीपर बैठे. इनके तीन बेटे थे, उदयभान, अखेराज, और शिवसिंह. जोधपुरके महाराजा भीमसिंहने, जब अपने भाई मानसिंहको जालौरसे निकालनेके लिये फ़ौज भेजी, तब महाराजा मानसिंहने अपना ज़नानह सिरोहीमें भेजना चाहा; लेकिन् महाराजा भीमसिंहके भयसे रावने इन्कार किया.

वैरीसालके बाद उदयभानको सिरोहीकी गद्दी मिली. इनकी आदत ख़राब थी, जब वह गंगास्नानको गये, तब पीछे लौटते वक़्त जोधपुरके महाराजा मानसिंहने अगली रंजिशसे उनको गिरिफ्तार करलिया, और पचास हज़ार रुपया दंडका लेकर छोड़ा; इस रक़मके वुसूल करनेको उदयभानने सिरोहीके राजपूत व रअय्यतको तंग किया, जिसका नतीजह यह हुआ, कि सर्दारोंने मिलकर उदयभानको क़ैद करलिया, और उसके भाई शिवसिंहको विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] में गद्दीपर बिठाया; उदयभान विक्रमी १९०३ [हि० १२६२ = ई० १८४६] में क़ैदकी हालतमें मरा. शिवसिंहके विरुद्ध जोधपुरके महाराजा मानसिंहने फ़ौज भेजकर उदयभानको छुड़ाना चाहा था, लेकिन् महाराजाका मनोर्थ पूरा न हुआ.

राव शिवसिंहकी हुकूमत बहुत ज़ईफ़ होगई थी, उत्तरकी तरफ़से मारवाड़की चढ़ाइयों और मीना लोगोंकी लूट खसोटके सबब बड़ी दुर्दशा होने लगी; राव अपनी रिआयाको मदद देनेके लाइक़ न रहे; इसी ज़ोफ़ हुकूमतसे कई सर्दारोंने दीवान पालनपुरको अपना मालिक बनालिया, यहां तक कि राज्य बर्बाद होनेका वक़्त आपहुंचा; तब राव शिवसिंहने विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] में गवर्मेंट अंग्रेज़ीका आश्रय लिया, और विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में एक अह्दनामह लिखागया. हक़ीक़तमें यह राज्य गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मददसे बच गया. कर्नेल टॉडने इस रियासतके हुकूक़ और इलाक़हकी हिफ़ाज़तमें बहुत कोशिश की; उक्त कर्नेलको वहांके लोग मुहब्बतके साथ याद करते हैं. राज्यकी ख़राबी देखकर गवर्मेंट अंग्रेज़ीने कप्तान स्पीयर्सको वहांका पोलिटिकल एजेंट मुक़र्रर किया, जिससे बहुत फ़ाइदह हुआ, और बंबईकी फ़ौजसे एक गिरोह मीना व डकैतोंको दबानेके लिये वहां रक्खा गया. गवर्मेंट अंग्रेज़ीके अफ्सरोंसे राज्यकी जिस क़द्र बिह्तरी हुई, उसका हाल हम राजपूतानह गज़ेटियरसे नीचे दर्ज करते हैं:-

" बहुतसे ठाकुर इताअतमें लाये गये, और बन्दोबस्त हुआ; नीबजके ठाकुरके

साथ भी एक सुलहनामह किया गया, जो सिरोहीके सब सर्दारोंमें ज़ियादह टेढ़ा था. कप्तान स्पीयर्स साहिबके भेजे जानेके थोड़े ही दिन बाद शिवसिंहको पोलिटिकल एजेंटने इन्तिज़ामकी तब्दीलातके लिये जो कुछ राय दी, उससे वह अपनेको लाचार जानकर आबूको भागगया; और बहुतसे ठाकुर उसके मददगार होगये; सिर्फ़ नीबजका ठाकुर प्रेमसिंह अलग रहा; लेकिन् यह बखेड़ा बहुत दिनों तक नहीं रहा, और सब ठाकुर अपने अपने ठिकाने आगये; रावने भी मुत्राफ़ी मांगी, और सिरोहीको लौट आया. ईसवी १८३२ [वि० १८८९ = हि० १२४७] में सिरोहीका प्रबन्ध नीमचकी एजेन्सीके, और ईसवी १८३६ [वि० १८९३ = हि० १२५२] में मेवाड़की एजेन्सीके सुपुर्द किया गया; लेकिन् मेवाड़के एजेंट नीमचमें रहते थे, और वहांसे राज्यकी संभाल अच्छी तरह नहीं होसक्ती थी; इससे यह रियासत मेजर डाउनिंगके सुपुर्द करदी गई, जो जोधपुर लीजेन याने पल्टनके अफ्सर थे, और जिनकी छावनी एरनपुरामें थी, जो सिरोही और मारवाड़की सीमापर है; वहां एक अंग्रेज़ी फ़ौजी अफ़्सरके रहनेसे बन्दोबस्तमें अच्छी मदद मिली; और इसी वक्तसे सिरोहीकी दुरुस्ती समझना चाहिये. इस वक्त लूटके लिये मारवाड़की रअय्यतके हमले, मेवाड़की तरफ़से भीलोंकी चढ़ाई और खुद मुख्तारी चाहनेवाले ठाकुरोंकी रद्दो बदल कई बार हुई, जिससे सिरोहीमें बहुत पीछे तक बुराइयां रहीं; क्योंकि देश पहाड़ी और विकट जंगलोंसे भरा होनेके सबब वह उन भीलों और मीनोंको लालच देने वाला आश्रय बना रहा, जो कि किसी बाग़ी ठाकुरकी मदद करनेको हमेशह तय्यार रहते हैं."

"ईसवी १८४३ [वि० १९०० = हि० १२५९] में रावकी मर्ज़ी और सर्कार अंग्रेज़ीकी सलाहसे कुछ शर्तोंपर एक शिफ़ाख़ानह जारी हुआ; इस वक्त भटानाका ठाकुर नाथूसिंह बाग़ी हो गया, इससे सिरोहीमें कई वर्ष तक बड़ी ख़राबी रही. इसका सबब यह मालूम होता है, कि सिरोही और पालनपुरके बीच सीमा क़ाइम करनेमें इस ठाकुरके दो गांव पालनपुरको देदिये गये थे; और दूसरी ज़मीन जो उसे दी जाती थी, उसने लेनेसे इन्कार किया. अकेला सिरोहीका राज्य इस ठाकुरसे लड़नेके लाइक़ न था, लेकिन् ईसवी १८५३ [वि० १९१० = हि० १२६९] में जोधपुर लीजेनकी मददसे नाथूसिंह और उसके साथी ऐसे दबाये गये, कि उन्होंने ताबेदारी मंजूर करली. नाथूसिंहको छः वर्षका जेलख़ानह हुआ, और उसके साथियोंको भी क़ैदकी सज़ा मिली, लेकिन् ईसवी १८५८ [वि० १९१५ = हि० १२७४] में नाथूसिंह जेलख़ानहसे भागगया; उसके पकड़नेकी कोशिश की गई, जो फ़ुज़ूल गई, और फिर वह राज्यके लिये तक्लीफ़ और अन्देशेका एक ज़रीअह हुआ."

"ई० १८५४ [वि० १९११ = हि० १२७०] में रावने यह देखकर कि कर्ज़ह बहुत बढ़गया, और राज्यका प्रबन्ध नहीं होसक्ता; सर्कार अंग्रेज़ीसे एक अंग्रेज़ी अफ्सर इन्तिज़ामके लिये मांगा. यह इन्तिज़ाम पहिले तो आठ वर्षके लिये किया था, पीछे ग्यारह वर्षके लिये होगया; क्योंकि राज्यका कर्ज़ह चुकानेमें ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] का ग़द्र एक रोक होगया. पहिले कर्नेल एन-डरसन सुपरिन्टेन्डेण्ट हुए, इनकी लियाक़त और समझदारीके सबब बहुत कुछ इन्तिज़ाम और तरक़ी हुई, जिससे उन्होंने सर्कार अंग्रेज़ीसे शुक्रगुज़ारी और नेकनामी पाई; उसका नाम सिरोहीके लोग अबतक शुक्रके साथ याद करते हैं. इस वक्तमें राज्य ख़र्चको छोड़कर, जो मुक़र्रर होगया था, सुपरिन्टेन्डेण्टका काम सिर्फ़ इतना ही था, कि उन बातोंका इन्तिज़ाम करे, जिससे देशकी हालतमें नुक्सान न हो; बाक़ी सब बातोंमें रईसकी मर्ज़ी रही, और ख़ानगी कामोंमें कुछ दख़्ल नहीं दिया; इतनी ही निगरानीसे व्यापार और खेतीने तरक़ी पाई, जिससे सिरोहीकी बिह्तरी हुई. इसी तरह ईसवी १८६१ [वि० १९१८ = हि० १२७७] तक यह प्रबन्ध चला, जब शिवसिंहके ज़ईफ़ होनेके सबब उसके दूसरे बेटे उम्मेदसिंहको वहांका इन्तिज़ाम दिया गया, उससे पहिले उसका बड़ा बेटा गुमानसिंह मरगया था. वृद्ध रावकी इज़्ज़त उसके मरनेके दिन यानी ईसवी १८६२ ता० ८ डिसेम्बर [वि० १९१९ पौष कृष्ण २ = हि० १२७९ ता० १५ जमादियुस्सानी] तक बनी रही."
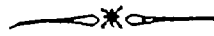
"शिवसिंहने ४४ वर्ष तक राज्य किया; वह मुश्किलसे अच्छा राजा समझा जासक्ता है, उसकी आदत समयके अनुसार नहीं थी. ई० १८५७ के ग़द्रमें उसने बड़ी ईमान्दारीका काम किया, जिससे उसका आधा ख़िराज मुआफ़ करदिया गया, जो पहिले पन्द्रह हज़ार भीलाड़ी रुपयोंपर मुक़र्रर हुआ था. जब शिवसिंहसे इख़्ति-यार लेलिया गया, तो उसके बेटोंके गुज़ारेके लिये कुछ बन्दोबस्त करना ज़ुरूर हुआ, उस वक्तके पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट मेजर हालने सुफ़ारिश की, कि चन्द गांव चार बड़े बेटोंके लिये अलग करदिये जायें. हमीरसिंह, जैतसिंह, जवानसिंह और जामतसिंहके सिवाय सबसे छोटा लड़का तेजसिंह राव उम्मेदसिंहका सगा भाई सिर्फ़ तेरह वर्षका था; इस कारण उसके निर्वाहके लिये इस वक्त कुछ बन्दोबस्त करना ज़ुरूर नहीं समझा. सब बेटोंने इस बातसे इन्कार किया, लेकिन् हमीरसिंहको छोड़कर बाक़ी सबने सिरोहीमें पांच सौ रुपये माहवारपर, जब तक कि शादी न हो, रहना क़ुबूल किया; हमीरसिंह ऐसा मालूम होता है, कि बुरी सलाह देने वालोंकी

वहकावटसे ईसवी १८६१ नोवेम्बर [वि० १९१८ कार्तिक = हि० १२७८ जमादियुल् अव्वल] में बाग़ी होगया; तब मेजर हॉल एक फ़ौज लेकर उसपर गये; हमीरसिंह अर्बलीके पहाड़ोंमें भागकर भीलों और गिरासियोंकी पनाहमें रहा; मेजर हॉलने उसका पीछा करना ठीक न समझा; परन्तु रास्तोंपर सिर्फ़ गार्ड रखदिये. उसी वक़ दूसरे दो भाई रंजीदह होकर महीकांठामें दांताको चलेगये, और थोड़े ही दिन पीछे ईसवी १८६२ [वि० १९१९ = हि० १२७९] में यह दोनों सिरोहीसे आये हुए तीसरे भाईके साथ पहाड़ोंमें जाकर हमीरसिंहसे मिले; लेकिन् ईसवी १८६२ ता० ८ डिसेम्बर [वि० १९१९ पौष कृष्ण२ = हि० १२७९ ता० १५ जमादियुस्सानी] को वृद्ध राव शिवसिंहके मरजानेपर चन्द सर्दारोंने तीनों छोटे लड़कों को बुलाया. हमीरसिंह उस वक़ भी अलग रहा; लेकिन् कुछ दिनों बाद आगया, और उनके गुज़ारेके लिये गांव मुक़र्रर करदिये गये."
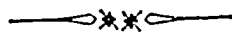
राव उम्मेदसिंह.

"इनको ईसवी १८६५ ता० १ सेप्टेम्बर [वि० १९२२ भाद्रपद शुक्ल १० = हि० १२८२ ता० ९ रबीउस्सानी] को सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से राज्यका पूरा इख्तियार मिला. रावने अच्छे वक़पर हुकूमत पाई, ख़ज़ानह अच्छी हालतमें था, राज्यकी हालत, भी पहिलेके बनिस्बत उम्दह थी. अगर वह ज़ियादह ताक़त वाले होते, और ख़र्चका बन्दोबस्त करते, तो उसकी तरक्कीके लिये बहुत कुछ सामान करसक्ते; लेकिन् वह ऐसे हिम्मतवर न थे, जैसा कि सिरोहीके रईसको होना चाहिये; पुजारियोंकी बात मानने, नर्म दिल होने और नई बातें न चाहनेके सबब उनका राज्य ख़राबीमें पड़गया. राव दयालु, बुरे कामोंसे दूर और ज़ियादहतर रिश्तहदारोंसे राज़ी थे, उनके वक़में नीचे लिखी हुई बातें हुईः-

"ईसवी १८६८ या ६९ [वि० १९२५ या २६ = हि० १२८५ या ८६] का बड़ा काल, नाथूसिंहका दुबारा बाग़ी होना, और मारवाड़की तरफ़से भीलोंका हमलह; नाथूसिंहके बाग़ी होनेसे राज्यको बहुत नुक्सान पहुंचा, उसको ज़ेर करनेके लिये जितनी तद्बीरें कीगईं सब बेकार गईं, जो अंग्रेज़ी सिपाही भेजेगये थे, वे भी बुलालिये गये, और सिरोहीका राज्य उसके और उसके साथियोंके साथ लड़नेको छोड़ दिया गया; अंजाम यह हुआ, कि लुटेरोंका ज़ोर बढ़गया; मारवाड़के भीलोंने, जो सिरोहीकी पश्चिमी हदके किनारेपर हैं, हमले किये; और नाथूसिंहके नामसे लूट मचा दी. यह बातें ऐसी बढ़ीं, कि

सिरोहीसे अहमदाबादकी सड़कपरके मुसाफ़िरों और व्यापारियोंके लिये तक्लीफ़ होगई. ऐसी हालतमें फ़सादियोंको दबानेके लिये ऐरनपुराकी पल्टन भेजनेके सबब रियासतका इन्तिज़ाम फिर फ़ौजी हाकिम मेजर कर्नेलीके सुपुर्द करदिया गया. उन्होंने इख़्तियार पाते ही भीलोंको ज़ेर करके लूट बन्द कराई, लेकिन् बाग़ी सर्दारोंको तावे नहीं किया; नाथूसिंह सिरोहीकी हदके नज़्दीक मारवाड़के गांवमें ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] के लग भग मरगया, और उसका बेटा भारथसिंह अपने साथियों समेत ईसवी १८७१ [वि० १९२८ = हि० १२८८] के अन्दर, जब कि वह बे क़ैद था, बुलाया गया. नाथूसिंहके बाग़ी होनेका बयान सिरोहीके समान कठिन स्थानमें बाग़ियोंके दबानेके लिये अंग्रेज़ी सिपाहियोंके भेजनेसे, जो नुक़्सान होता है, उसके जतानेके लिये मुफ़ीद है."

"राव उम्मेदसिंह ईसवी १८७५ ता० १६ सेप्टेम्बर [वि० १९३२ भाद्रपद शुक्ल १५ = हि० १२९२ ता० १४ शञ्अ्बान्] को सिरोहीमें मरगये. उनके एक ही राणी ईडरके वंशकी थी, उससे एक कुंवरके सिवा एक बेटी भी हुई, जो ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] में महाराजा कृष्णगढ़के बड़े कुंवरको व्याही गई."
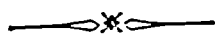
राव केसरीसिंह.

"यह अपने पिताके बाद गद्दीपर बैठे, जो अब सिरोहीके राव हैं. इन्होंने राजपूतानहके दूसरे रईसोंके मुवाफ़िक़ गोद लेनेकी सनद पाई है, और इनको राज्यके पूरे इख़्तियार ईसवी १८७५ ता० २४ नोवेम्बर [वि० १९३२ मार्गशीर्ष कृष्ण १० = हि० १२९२ ता० २४ शव्वाल] को मिले हैं." इन्होंने विक्रमी १९३३ [हि० १२९२ = ई० १८७६] में बंगाला और बम्बई वग़ैरहकी तरफ़ फ़र्ज़ी नाम रखकर सफ़र किया, जिससे थोड़े ख़र्चमें ख़ूब सैर और ज़ियादह तज्रिबह हासिल हुआ. इनके विक्रमी १९४५ आश्विन् [हि० १३०५ मुहर्रम = ई० १८८८ सेप्टेम्बर] में एक कुंवर पैदा हुआ है. सिरोही रावकी पन्द्रह तोपोंकी सलामी होती है, और अंग्रेज़ी सर्कारको सालानह ख़िराज सात हज़ार पांच सौ भिलाड़ी रुपया यहांसे दिया जाता है, लेकिन् भिलाड़ी रुपयेका भाव एकसा न रहनेके सबब ६८८१ $\frac{?}{४}$ कल्दार सालानह मुक़र्रर होगया है.
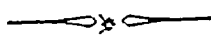
एचिसन् साहिबकी अ़ह्दनामोंकी किताब जिल्द ३.

अ़ह्दनामह नम्बर ८६.

अ़ह्दनामह ऑनरेब्ल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कंपनी और राव शिवसिंह मुख़्तार रियासत सिरोहीके दर्मियान, जो ऑनरेब्ल कंपनीके एजेंट कप्तान अलिग्ज़ेन्डर स्पीयर्सकी मारिफ़त, बहुक्म मेजर जेनरल सर डेविड् ऑक्टरलोनी, बैरोनेट्, जी० सी० बी०, रेज़िडेन्ट मालवा व राजपूतानहके, जिनको पूरे इख़्तियार राइट ऑनरेब्ल विलिअम पिट लॉर्ड ऐमहर्स्ट, गवर्नर जेनरल मए कौन्सिलसे मिले थे, और राव शिवसिंह, मुख़्तार राज सिरोहीकी मारिफ़त उनकी अपनी तरफ़से हुआ.

जो कि अब राव शिवसिंह मुख़्तार रियासत सिरोही और रियासतके ख़ान्दानके प्रतिनिधिने दर्ख़्वास्त की, कि सर्कार अंग्रेज़ीकी हिफ़ाज़त इस मुल्कपर रहे, और गवर्मेंट अंग्रेज़ीको साबित हुआ, कि रियासत सिरोही राजपूतानहके किसी और रईस या राजाके मातह्त नहीं है; इस वास्ते राव साहिबकी दर्ख़्वास्त मन्ज़ूर हुई, और नीचे लिखी हुई शर्तें दोनों तरफ़से मन्ज़ूर हुईं, जो हमेशह जारी रहेंगी; और शर्तोंका बयान किया जावे, जिसके मुताबिक़ दोनों फ़रीक़ चंद्र और सूर्य्यकी मौजूदगी तक अमल रक्खेंगे.

शर्त अव्वल- सर्कार अंग्रेज़ी मन्ज़ूर फ़र्माती है, कि वह रियासत और इ़लाक़ह सिरोहीको अपनी मातह्ती और पनाहमें ली हुई रियासतोंके मुवाफ़िक़ शुमार करेगी, और अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी.

शर्त दूसरी- राव शिवसिंह, मुन्सरिम, अपनी, राव साहिबकी, उनके और वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इस तह्रीरके ज़रीएसे सर्कार अंग्रेज़ीकी बुज़ुर्गीको क़ुबूल करते हैं, और इक़्रार करते हैं, कि दोस्तीका बर्ताव ताबेदारीके साथ रक्खेंगे; और इस अ़ह्दनामेकी दूसरी शर्तोंका पूरा लिहाज़ रक्खेंगे.

शर्त तीसरी- राव साहिब सिरोही किसी दूसरे रईस या रियासतसे दोस्ती न करेंगे, और दूसरेपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और अगर इत्तिफ़ाक़से किसी हम्सायहके साथ झगड़ा पैदा होगा, तो वह सर्कार अंग्रेज़ीकी सरपंचीके सुपुर्द किया जावेगा, और सर्कार अंग्रेज़ी मंज़ूर फ़र्माती है, कि वह अपने ज़रीएसे हरएक दावेका फ़ैसलह करादेगी, जो सिरोही और दूसरी रियासतोंके दर्मियान ज़ाहिर होगा, चाहे वह दूसरी रियासतोंकी तरफ़से या सिरोहीकी तरफ़से ज़मीन, नौकरी, रुपया या

मददकी बाबत, या किसी और मुआमलेकी निस्बत हो.

शर्त चौथी- अंग्रेज़ी हुकूमत रियासत सिरोहीमें दाखिल न होगी, मगर यहांके हाकिम हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके अफ़्सरोंकी सलाहके मुताबिक़ रियासती इन्तिज़ाम चलावेंगे, और उनकी रायके मुवाफ़िक़ अमल किया करेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि अब सिरोहीका राज्य इलाक़ोंके बटने और बदख्वाहोंकी बद चलनी, और ग़ारतगरोंकी लूट मारसे बिल्कुल वीरान होगया है; इसलिये मुन्सरिम रियासत वादह करते हैं, कि वह सर्कारी हाकिमोंकी सलाहके मुवाफ़िक़, जिस बातमें कि मुल्की बिह्तरी और खुश इन्तिज़ामी समझी जावेगी, अमल किया करेंगे; और यह भी इक़ार करते हैं, कि वह अब और आगेको मुल्की फ़ाइदे, चोरी और ग़ारत गरीके रोकने, और रिआ़याके इन्साफ़में पूरी कोशिश किया करेंगे.

शर्त छठी- अगर सिरोहीके सर्दार या ठाकुरोंमेंसे कोई शख़्स किसी जुर्म या ना फ़र्मानीका मुल्ज़म होगा, उसको जुर्मानह, इलाक़ेकी ज़ब्ती, या और कोई सज़ा, जो क़ुसूरके मुनासिब होगी, अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी सलाह और उनके इत्तिफ़ाक़ रायसे दीजावेगी.

शर्त सातवीं- सिरोहीके रहने वालों, क्या अमीर और क्या ग़रीब, सबने इत्तिफ़ाक़के साथ बयान किया है, कि राव उदयभान अगला हाकिम वाजिबी तौरपर बर्तरफ़ होकर क़ैद किया गया; और इसमें तमाम सर्दारों और ठाकुरोंकी रायका इत्तिफ़ाक़ होगया है, कि वह इस सज़ाको अपने ज़ुल्म और ज़ियादतीके सबब पहुंचा; और राव शिवसिंह सबकी मंज़ूरीसे उसकी जानशीनीके लाइक़ क़रार दिया गया; इस वास्ते अंग्रेज़ी सर्कार राव शिवसिंहको उसकी ज़िन्दगी तक रियासतका मुन्सरिम मंज़ूर फ़र्माती है, और उसके मरने बाद राव उदयभानकी औलादमेंसे कोई वारिस होगा, तो वह गद्दीपर बिठाया जायेगा.

शर्त आठवीं- रियासत सिरोही उस क़द्र ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारको अपनी हिफ़ाज़तके खर्चोंकी बाबत आजकी तारीख़से तीन बरस गुज़रने बाद दिया करेगी, जितना कि तज्वीज़ व मुक़र्रर होगा, इस शर्तसे कि उसकी तादाद छः आने फ़ी रुपये आमदनी मुल्कसे ज़ियादह न हो.

शर्त नवीं- सौदागरीकी तरक़्क़ी और आम रिआ़याके फ़ाइदोंकी ज़ियादतीके लिये सर्कारी अफ़्सरोंको यह मुनासिब होगा, कि वह राहदारी व पर्मट वग़ैरहके महसूलकी शरह रियासत सिरोहीके इलाक़हमें इस तौर मुक़र्रर करें, जो तज्वीज़से मुनासिब और ज़रूरी मालूम हो; और वक़्त वक़्तपर उसके जारी करने और कमी वग़ैरहमें मुदाख़लत करें.

शर्त दसवीं- जब कोई अंग्रेज़ी फ़ौजका सिरोहीमें या उसके आस

पास किसी कामपर तईनात हो, तो रावको मुनासिब होगा, कि वह सर्कारी ख़िद्मतोंके लिये फ़ौजके ज़रूरी सामानकी तय्यारी बग़ैर किसी मह्सूलके करे; और फ़ौजके कमानियर अफ़्सरको वाजिब होगा, कि वह इलाक़हकी फ़स्ल और ज़मीन पैदावारको फ़ौजकी लूट मारसे बचावे; अगर अंग्रेज़ी सर्कारकी यह राय होगी, कि कुछ फ़ौज सिरोहीमें क़ियाम रक्खे, तो उनको इस बातका इस्तियार हासिल होगा, और राव साहिबकी तरफ़से नाराज़गीकी कोई निशानी इस काममें ज़ाहिर न होगी; इसी तरह अगर यह ज़रूर हो, कि कुछ फ़ौज रियासत सिरोहीकी ज़रूरतोंके वास्ते भरती हो, और उसमें अंग्रेज़ अफ़्सर रहें, तो राव साहिब इस बातका वादह करते हैं, कि वह इस मुआमलेमें, जहां तक हो सकेगा, सर्कारी तह्रीर और हिदायतके मुवाफ़िक़ कोशिश करेंगे; मगर इस हालतमें, जो ख़िराज राव साहिब अदा करते हैं, उसमें कमी कीजावेगी, और जो फ़ौज अस्लमें राव साहिबकी है, वह हर वक्त अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी मातह्तीमें ख़िद्मत गुज़ारीको तय्यार रहेगी.

मक़ाम सिरोही तारीख़ ११ सेप्टेम्बर सन् १८२३ ई०

मुहर राव शिवसिंह.	कंपनीकी मुहर.	दस्तख़त- ऐमहर्स्ट.

राइट ऑनरेब्ल गवर्नर जेनरल बहादुर मए कौन्सिलने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें तारीख़ ३१ ऑक्टोबर सन् १८२३ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जॉर्ज स्विन्टन्,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट.

अ़हदनामह नम्बर ८७.

राइट ऑनरेब्ल गवर्नर जेनरल बहादुर मए कौन्सिल मिहर्बानीके साथ इजाज़त देते हैं, कि पचास हज़ार रुपया सिक्के सोंठ क़र्ज़के तौर तीन बरसके लिये बग़ैर सूद महाराव शिवसिंह मुन्सरिम रियासत सिरोहीको किसी क़द्र बे क़वाइद फ़ौजकी भरतीके ख़र्चके लिये, जो पोलीसका इन्तिज़ाम और रियासतकी तह्सील साहिब एजेंट बहादुर अंग्रेज़ीकी सलाह और निगहबानीसे करेगी, दियाजावे. महाराव शिवसिंह वादह करते हैं, कि तीन साल गुज़रने बाद फ़ौज ख़र्च अदा करनेकी अव्वल तारीख़से वह क़र्ज़ेका रुपया पमेंटके तीन चौथाई हिस्सेकी ज़ब्तीसे अदा करना शुरू करेंगे.

जो कुछ कमी ज़ियादती सिक्केकी तब्दीली या रुपयेकी तह्सीलमें होगी, वह

राव साहिबके ज़िम्मह समझी जावेगी; क्योंकि यह बात साफ़ बयान होचुकी है, कि जिस सिक्कहमें रुपया दिया गया है, उसीके मुताबिक़ अदा होगा.

नक्ल मुताबिक़ अस्ल.
दस्तख़त- आर० रॉस,
अव्वल असिस्टेंट, रेज़िडेण्ट.

अह्दनामह नम्बर ८८.

इक्रारनामह, जो रायसिंह ठाकुर नीवजने सिरोही मक़ामपर वैशाख सुदी ६ संवत् १८८१ मुताबिक़ ४ मई सन् १८२४ ईसवीको किया उसका तर्जमह.

मिती वैशाख सुदी १ संवत् १८८१ मुताबिक़ २९ एप्रिल सन् १८२४ ई० को रायसिंह ठाकुर व प्रेमसिंह ठाकुर नीवज राज़ी होकर इस तह्रीरके ज़रीएसे महाराव शिवसिंह रईस सिरोहीकी इताअत और बुज़ुर्गीका इक्रार करते हैं, और नीचे लिखी हुई सात शर्तें मंज़ूर करते हैं; ये शर्तें हर पुश्तमें जारी रहेंगी, और इनमें कभी कुछ उज़ पेश न किया जायेगा.

शर्त अव्वल- गांव नीवजकी हर क़िस्मकी पैदावार याने ज़मीनकी आमदनी, राहदारी और पर्मट वग़ैरहके मह्सूलसे छः आना फ़ी रुपया श्री दर्बार साहिब सिरोहीको दिया जावेगा, और जुर्मानह वग़ैरह हर क़िस्मकी ज़ियादती रिआयापरसे मौक़ूफ़ होगी.

शर्त दूसरी- ठाकुर नीवजका बेटा कुंवर उदयसिंह चाहता है, कि गिरवर, परनेरा और मूंगथला गांवोंका मह्सूल, जो अगले ठाकुर लखजीकी जागीरमें थे, और अब पालनपुरके मातह्त क़रार दिये गये हैं, उनको मिले; अगर ये गांव सिरोहीको वापस मिलें, तो महाराव ख़ुद इस बातका फ़ैसलह इन्साफ़से करेंगे.

शर्त तीसरी- नीवज और उसके मातह्त गांवोंके अन्दर तह्सील और फ़ैसलहके मुआमले सिरोहीके कामदारोंकी सलाहसे तै पावेंगे, और कोई बात ग़ैर इन्साफ़ी और ज़ियादतीकी रवा न रक्खी जायेगी.

शर्त चौथी- जब कभी सिरोहीके सर्दार और वहांकी फ़ौज किसी मुआमलेके वास्ते जमा हो, तो ठाकुर नीवज और उसकी फ़ौज भी बग़ैर उज़ हमराह हुआ करेगी.

शर्त पांचवीं- ठाकुर नीवज किसी ग़ैर रियासतसे न इत्तिफ़ाक़ रक्खेगा, न नया

पैदा करेगा; वह हर्गिज़ उन फ़सादोंमें शरीक न होगा, जो रियासत जोधपुर और पालनपुरमें उसके भाइयों व रिश्तहदारों, और कोलियोंके दर्मियान पैदा हों; अगर किसी ग़ैरसे तक्रार हो, तो ठाकुर उसकी इत्तिला दर्बार सिरोहीको करेगा, और जो हुक्म उसको वहांसे मिलेगा, उसकी तामील करेगा.

शर्त छठी- ठाकुर नीबज अपनी रिआयाके अम्न और इत्मीनानके लिये हर एक तद्बीर अमलमें लावेगा, जिससे उसकी रिआया भील, कोली और मीनामें इन्तिज़ाम रहे; जो कुछ अस्बाब उसके इलाक़हमें चोरी जायेगा, वह उसका एवज़ ज़ुरूर देगा.

शर्त सातवीं- दर्बार सिरोहीने नीबजके ठाकुरके कुंवरों, ठकुरानियों, और दूसरी औरत रिश्तहदारोंकी पर्वरिश और गुज़रके लिये नीचे लिखे हुए अठारह कूएं बग़ैर ख़िराज दिये हैं; इसमें किसी तरहका फ़र्क़ न होगा.

कूओंकी तफ्सील.

मौज़ा धोली - दो कूएं, गांव जेजतीवाड़ा - दो कूएं, गांव अनाद्रा - सात कूएं, गांव सोलन्दा - सात कूएं; कुल १८ कूएं.

नम्बर ८९.

राव साहिब सिरोहीके ख़रीतेका तर्जमह, जो लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल सर एच० एम० लॉरेन्स, के० सी० बी० एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके नाम ता० २६ जैन्युअरी सन् १८५४ ई० को लिखा गया.

मामूली अल्क़ाबके बाद, रियासत सिरोही क़र्ज़दार होगई है, इस वास्ते मेरी ख़ास ख़्वाहिश यह है, कि अंग्रेज़ी सर्कार सात या आठ बरसके वास्ते उसका इन्तिज़ाम करे, ताकि सालानह ख़र्च आमदनीकी तादादके अन्दर आजावे; क़र्ज़ेका रुपया अदा हो, और मुल्क आबाद हो; अगर इस सात आठ बरसके अ़र्सेमें यह मत्लब हासिल न हो, तो मीआ़द ज़ियादह कीजावेगी. यह रियासत सिर्फ़ सर्कार अंग्रेज़ीके सबबसे बची रही है, इसी वास्ते उनकी मिहर्बानीसे पूरी उम्मेद है, कि सर्कार उसकी बिह्तरीकी और तद्बीरें भी फ़र्मावेगी. सय्यद निअ़मतअ़ली वकीलको हुक्म हुआ है, कि वह आपके हमराह नीमच तक जाये; यह शख़्स सिरोहीके अगले और मौजूद हालसे ख़ूब वाक़िफ़ है; जो सवाल इस मुआ़मलेमें उससे किया जावेगा, उसका जवाब पूरे तौरपर देसक्ता है- फ़क़त.

राव साहिब सिरोहीके ख़रीतेका तर्जमह, जो लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल सर एच० एम० लॉरेन्स, के० सी० बी०, एजेंट गवर्नर जेनरल, राजपूतानहके नाम ११ फ़ेब्रुअरी सन् १८५४ ई० को लिखा गया.

मामूली अल्क़ाबके बाद, मेरे पास आपकी चिट्ठी ३ फ़ेब्रुअरीकी लिखी हुई मेरे ख़रीतेके जवाबमें इस मज़्मूनसे पहुंची, कि मेरी दर्ख्वास्त मंज़ूर करनेसे पहिले यह ज़ुरूर हुआ, कि मैं आपको इस बातकी इत्तिला दूं, कि जो कुछ साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट मुनासिब तसव्वुर फ़र्माकर जो तद्बीर और तज्वीज़ ख़र्चकी कमीमें करेंगे, वह मुझको मंज़ूर करनी होगी; और मेरी इज़्ज़त व दरजह बहाल रहेगा; और यह वादह करूं, कि जो तद्बीरें साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट रियासती इन्तिज़ामके लिये करेंगे, उसकी कोई रोक न होगी; और इन बातोंका जवाब मुझसे जल्द तलब हुआ था.

इसके जवाबमें लिखता हूं, कि मैंने ख़तके मज़्मूनको ख़ूब समझ लिया; जो कि मेरी इज़्ज़तमें कुछ फ़र्क़ नहीं आया, इस वास्ते मैं ख़ुशीसे तहरीर करता हूं, कि जो तद्बीरें और तज्वीज़ें क़रार दीजावें, वह जल्दी ज़ुहूरमें आवें; और वादह करता हूं, कि कोई रोक साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्टके इन्तिज़ाममें मीआदी मुद्दत तक न होगी.

सय्यद निअ्मतअ्ली, जो आपके हमराह हैं, वह पूरे तौरपर मुख़्तार किया गया है, कि आप जो कुछ इस मुआमलेमें दर्याफ़्त फ़र्माएं, उसका काफ़ी जवाब देगा; मैं उसको अपना ख़ैरख़्वाह जानता हूं - फ़क़त.

अह्दनामह नम्बर ९०.

पहाड़ आबूके हवाख़ोरीके मक़ामकी बाबत शर्तें.

अव्वल - जो मक़ाम हवाख़ोरीके लिये तज्वीज़ हो, वह हत्तल् इम्कान नखी तालाबके मुतअ़ल्लिक़ ज़मीनके अन्दर हो.

दूसरे - सिपाहियोंको मनाही हो, कि वह गांवमें न जायें, और किसी तरहकी तक्लीफ़ वहांके रहने वालोंको न दें, ख़ुसूसन औरतोंकी ख़राबी और बेइज़्ज़ती न करने पावें.

तीसरे - गाय या बैल न मारेजावें; मोर और कबूतरोंका शिकार न हुआ करे, गाय या बैलका गोश्त पहाड़पर लानेकी सख़्त मनाही हो.

चौथे- मन्दिरों और इबादतके स्थानों और उनके तअ़ल्लुक़की जगहोंमें, आमदो रफ्त न हो.

पांचवें- पुजारियों और फ़क़ीरोंसे कोई छेड़ छाड़ न हो.

छठे- आबूपर कोई दरख़्त साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्टके ज़रीएसे राव साहिब या उनके काम्दारकी इजाज़त हासिल किये बग़ैर न काटा जावे, और न उखाड़ा जावे.

सातवें- सिपाहियोंको मनाही हो, कि मछलीका शिकार फ़क़ीरों और पुजारियोंके मकानोंके क़रीब याने तालाबके दक्षिणी और पूर्वी कोनेपर न किया करें.

आठवें- पूरी इह्तियात अ़मलमें लाई जावे, कि कोई चोर फ़ौजको न लूटे, क्योंकि राव साहिब खुदको उसका ज़िम्मह्दार नहीं क़रार देसक्ते.

नवें- ऐसा इन्तिज़ाम किया जावे, कि खेती वग़ैरह और दूसरे अस्बाबका नुक़्सान न हो, और सिपाहियोंको मनाही हो, कि वह आम, जामुन और शहद वग़ैरह, जो रिआ़याकी जायदाद है, ज़बर्दस्ती न लें; मगर करोंदा, जो कस्रतसे होता है, ले सक्ते हैं.

दसवें- कोई रास्तह और पगडंडी वग़ैरह बन्द न कीजावे.

ग्यारहवें- राव साहिबसे कोई ख़्वाहिश बाज़ारकी बाबत न कीजावे, बल्कि तमाम तद्बीरें ज़ुरूरी सामानके हासिल करनेको अपने तौरपर अ़मलमें लाई जावें.

बारहवें- कोई शख़्स अंग्रेज़ हो, या हिन्दुस्तानी बग़ैर एक अगुवेके सिरोहीके इ़लाक़ेमें सफ़र न करे, क्योंकि यही एक तद्बीर लूटसे बचनेकी है; अगुवे, कुली और मज़्दूरोंको सिरोहीके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ और कर्नेल सदर्लैण्ड साहिबकी तज्वीज़के तौर अपना अपना हक़ मिला करे.

तेरहवें- तमाम कुली और मज़्दूरोंको आबू पहाड़पर उसी हिसाबसे मज़्दूरी मिलेगी, जो वहांपर राइज है, और जिसको कर्नेल सदर्लैण्ड साहिबने तज्वीज़ किया था.

चौदहवें- सिपाही, सिर्फ़ घाटा अनाद्रा और घाटा दमानीसे आमदो रफ्त रक्खें.

पन्द्रहवें- अगर ऐसे मुआ़मले पेश आएं, कि जिनसे और शर्तें या तद्बीरें ज़ुरूरी समझी जाएं, तो वह शर्तें और तद्बीरें भी राव साहिबकी तह्रीरपर साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्टकी मारिफ़त तै पासकेंगी.

ग़लत ख़याल दूर करनेके लिये मैंने ऊपर वाली शर्तें मुफ़स्सल लिख दीं, अगर्चि ज़ाहिर है, कि खुद फ़ौजके कूचके वक्त ऐसी बातोंका लिहाज़ रक्खा जाता है.

नम्बर ९१.

तर्जमह ख़रीतह, अज़ तरफ़ राव सिरोही, ब नाम क़ाइम मक़ाम पोलि-
टिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट, मुवर्रख़े श्रावण सुद १२ सम्वत्
१९२३ मु० २३ ऑगस्ट सन् १८६६ ई०.

मैंने आपका ख़रीतह ता० ६ जुलाई सन् १८६६ ई० का लिखाहुआ ठीक वक़्पर पाया, जिसमें कि आप बयान करते हैं, कि पहिलेकी ब निस्वत आबूपर अब बहुत ज़ियादह यूरोपिअन शरीफ़ लोग और आदमी रहते हैं, कि हिन्दुस्तानी परदेशी लोगोंका शुमार भी बहुत बढ़गया है; और इन कारणोंसे साबिक़ राव साहिबके किये हुए बन्दोबस्त काफ़ी नहीं हैं; और इसलिये ज़रूर है, कि पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट साहिबके इख़्तियारात दस्तूरके मुताबिक़ पुख़्तह कियेजावें, वग़ैरह, वग़ैरह.

मेरी इस बातमें पूरी सम्मति है, और इसलिये मैं अपनी भी राय ज़ाहिर करता हूं, कि सन् १८६० के ऐक्ट नम्बर ४५, सन् १८६१ के ऐक्ट नम्बर २५ और सन् १८५९ के ऐक्ट नम्बर ८ व सफ़ाई और सड़क बनानेके क़ानून म्युनिसिपैलिटीके, आबूपर जारी कर दिये जावें, और गज़टमें छापे जावें.
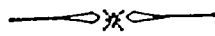
तर्जमह ख़रीतह, अज़ तरफ़ राव सिरोही, बनाम क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट, मुवर्रख़े २२ सेप्टेम्बर सन् १८६६ ई०

आपका ख़रीतह ता० २७ ऑगस्टका लिखा हुआ ठीक वक़्पर मैंने पाया. मैंने पेश्तर ता० २३ के ख़रीतेमें आपको लिखा है, कि आबू और अनाद्रापर सन् १८६० का ऐक्ट नम्बर ४५, सन् १८६१ का ऐक्ट नम्बर २५, सन् १८५९ का ऐक्ट नम्बर ८ और म्युनिसिपल ऐक्ट जारी होना मुझे मंज़ूर है; और अब मैं लिखता हूं, कि आबू और अनाद्रापर इन ऐक्टोंके जारी करनेमें जो कोई तब्दीलात या सुधार कियेजावें, वह भी मुझे मंज़ूर हैं.

और यह भी मैं मंज़ूर करता हूं, कि सन् १८६४ का ऐक्ट नम्बर ६, सन् १८६२ का ऐक्ट नम्बर १० और १८५९ का ऐक्ट नम्बर १४ उन दोनों मक़ामातपर जारी कियेजावें. स्टाम्पसे जो आमदनी हो, वह आबूकी सड़कों व बाज़ारोंमें ख़र्च कीज़ावे.

सुप्रीम (बड़ी) गवर्मेन्ट पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्टके इख़्तियारात दीवानी व फ़ौज्दारीके मुआमलोंमें भी क़ाइम करसक्ती है. इन इख़्तियारातके बाहर मुक़द्दमोंकी सुनाई

एजेएट गवर्नर जेनरल साहिबके इज्लासमें होगी, जिनके इज्लासमें पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट साहिबके फ़ैसलोंकी अपील भी सुनी जायेगी; लेकिन् मैं यह शर्तें दर्ज करता हूं– अव्वल कि, आबू या अनाद्रापर कोई दीवानी या फ़ौज्दारीके मुक़द्दमे सिरोहीकी रिआयाके दर्मियान होवें, तो उनका फ़ैसला पहिलेकी तरह हमारे दस्तूरोंके मुताबिक़ सिरोहीकी अदालतोंमें होवे; दूसरा कि, हमारे मज़्हब और रीति रस्ममें किसी तरह फ़र्क़ न पड़े; तीसरा कि, ऊपर लिखेहुए इख्तियारात, जो कि मैंने सुप्रीम गवर्मेन्टके सुपुर्द करदिये हैं, जब मैं चाहूं, वापस लेलिये जावें.

नम्बर ९२.

तर्जमह ख़रीतह, अज़ तरफ़ श्रीमान राव सिरोही, बनाम साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, रियासत हाज़ा, मुवर्रख़े ९ मार्च सन् १८६७ ई०.

मैंने आपका ख़रीतह ता० ७ मार्चका पाया, जिसमें आबू और अनाद्रापर सन् १८६५ का ऐक्ट नम्बर ११ जारी करनेकी इजाज़त मांगी गई. मैं उस ऐक्टका जारी कियाजाना उन शर्तोंपर मंज़ूर करता हूं, जिनकी तफ़्सील २२ सेप्टेम्बर गुज़श्तहके ख़रीतेमें लिखी है.

अह्दनामह नम्बर ९३.

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट और श्री मान उम्मेदसिंह राव सिरोही व उनकी औलाद, वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ लेफ़्टिनेएट विलिअम जेम्स वेमिस् म्यूर, पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट सिरोहीने बमूजिब हुक्म कर्नेल विलिअम फ़्रेड्रिक ईडन्, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके किया, जिनको पूरे इख्तियारात राइट ऑनरेबल् सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दसे मिले थे; और दूसरी तरफ़ खुद राव उम्मेदसिंहने किया.

शर्त पहिली– कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह, अगर अंग्रेज़ी इलाक़ेमें बड़ा जुर्म करे, और सिरोहीकी राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो सिरोहीकी सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और सरिश्तहके मुताबिक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी– कोई आदमी सिरोहीके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़हमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उस

को गिरिफ्तार करके सरिश्तेके मुताबिक़ मांगेजानेपर सिरोहीकी सर्कारके सुपुर्द करेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो सिरोहीकी रअय्यत न हो, और उस राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़हमें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और मुक़द्दमहकी तहक़ीक़ात उस अ़दालतमें होगी, जिसके लिये सर्कार अंग्रेज़ी हुक्म देवे; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंकी रूबकारी उस पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएटके इजूलासमें होगी, जिसके तह्तमें सिरोहीकी पोलिटिकल निगहबानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जिसपर कोई बड़ा जुर्म क़ाइम हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि सरिश्तेके मुताबिक़ खुद वह सर्कार, जिसके इलाक़हमें जुर्म हुआ हो, या उसके हुक्मसे कोई शख़्स उस आदमीको नहीं मांगे, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पाया जावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा; और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे जुर्म बड़े जुर्म समझे जायेंगे- १ खून, २ खून करनेकी कोशिश, ३ वह्शियानह क़त्ल, ४ ठगी, ५ ज़हर देना, ६ सख़्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार); ७ ज़ियादह ज़ख़्मी करना, ८ लड़का बाला चुराना, ९ औरतोंका बेचना, १० डकैती, ११ लूट, १२ सेंध (नक़ब लगाना), १३ चौपाये चुराना, १४ मकान जला देना, १५ जालसाज़ी करना, १६ जाली सिक्का बनाना या खोटा सिक्का चलाना, -१७ धोखा देकर जुर्म करना,- १८ माल अस्बाब चुराना, १९ ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लान्ना (बहकाना).

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें जो ख़र्च लगेगा, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

शर्त सातवीं- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़्त तक बर्क़रार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करने वाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख़्वाहिश दूसरेपर ज़ाहिर न करे.

शर्त आठवीं- इस अह्दनामेकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामोंके, जो कि इस अह्दनामेकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हों.

मक़ाम सिरोही ता० ९ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० मुताबिक़ आसोज सुद ११ सम्वत् १९२४.

दस्तख़त- डब्ल्यू० म्यूर,
पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, सिरोही.

मुहर राव सिरोहीकी.

दस्तख़त- जॉन लॉरेन्स,
वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अ़ह्दनामेकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दने ता० ३१ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को मक़ाम शिमलेपर की.

दस्तख़त- डब्ल्यू० म्यूर,
फ़ॉरेन सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.
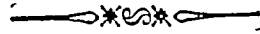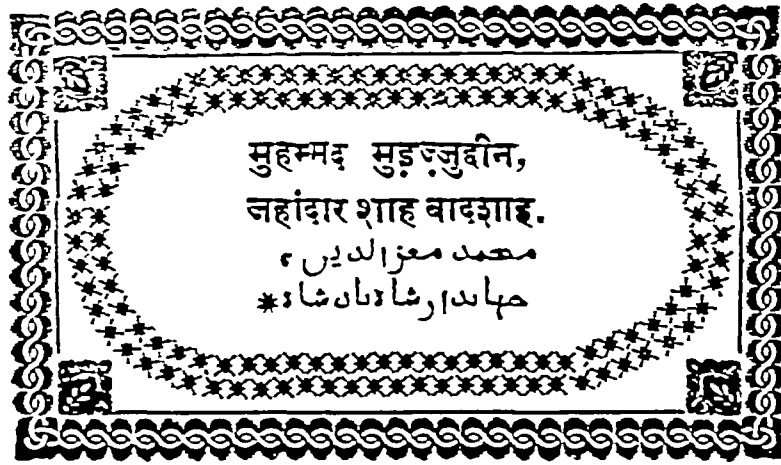
जब बहादुरशाह मरा, उस वक्त शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शान उसके पास मौजूद था; लेकिन् वह डरसे भागकर अपने लश्करमें चला आया, और उसने अमीनुद्दौलहको बादशाहकी आख़िरी हालत देखनेके लिये भेजा; उसने वापस आकर बादशाहके मरनेकी ख़बर सुनाई. यह बात सुनते ही अ़ज़ीमुश्शान बहुत रोया, बाद उसके अमीनुद्दौलहके कहनेसे बादशाह बनकर खुशीका नक़ारा बजवाया, और हाज़िरीन दर्बारने नज़्रें दिखलाईं.

हमीदुद्दीनख़ां, हकीमुल्मुल्क, हकीम सादिक़ख़ां, महावतख़ां, शाहनवाज़ख़ां वग़ैरह लोग भी उससे आमिले; रुस्तमदिलख़ां और किसी क़द्र दूसरे लोग जहांशाहसे मिले; ज़ुल्फ़िक़ारख़ां जहांदारशाहके पास गया, जिसकी सलाहसे उसने जहांशाह याने खुजस्तह अख़्तर व रफ़ीउल्क़द्रको भी मिला लिया. तीनों शाहज़ादे बड़ा भारी लश्कर लेकर अ़ज़ीमुश्शानसे मुक़ाबलह करने लगे; सात रोज़ तक बराबर गोलन्दाज़ी रहनेके बाद निअ़्मतुल्लाहख़ां, अ़ज़ीज़ख़ां, दया बहादुर नागर, राजा मुह्कमसिंह खत्री, कृष्णगढ़के राजा राजसिंह बहादुर और शाहनवाज़ख़ांने हमलह करना चाहा; लेकिन् अ़ज़ीमुश्शानने रोक दिया; क्योंकि वह जानता था, कि तीनों शाहज़ादोंके पास ख़ज़ानह नहीं है, इसलिये वे आपही बिखर जायेंगे.

आठवें दिन ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने एक ऊंची जगहसे अ़ज़ीमुश्शानके लश्करपर गोलन्दाज़ी शुरू की, जिससे उसका लश्कर भाग निकला. तब नागर दया बहादुर, और राजा मुह्कमसिंह बहादुर अ़ज़ीमुश्शानके मना करनेपर भी ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके तोपख़ानेपर चढ़गये, और उसे छीन लिया; लेकिन् पिछली मददके न पहुंचनेसे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, रुस्तमख़ां और जानीख़ांने हमला करके शिकस्त दी; और वे दोनों ज़ख़्मी होकर मारेगये. फिर सुलैमानख़ां पन्नीने एक हज़ार सवारों समेत अ़ज़ीमुश्शानके लश्करसे निकलकर लड़ाई की, और मारागया. अ़ज़ीमुश्शानकी बे इन्तिज़ामीसे

साठ सत्तर हज़ार सवारोंमेंसे दस बारह हज़ार बाक़ी रहगये; और उनमेंसे भी रातके वक्त़ निकलकर बहुतसे शहरमें चलेगये, सिर्फ़ दो या तीन हज़ार सवार पास रहे; जब सुब्हको अ़ज़ीमुश्शान लड़ाईके लिये चला, तो कुल दो हज़ार सवार साथ थे. इसपर भी तेज़ हवा रावी नदीके रेतको लेकर अ़ज़ीमुश्शानके साम्हने इस तरहपर आई, कि मानो परमेश्वरने उसे ग़ारत करनेका शस्त्र बना भेजा था. अमीनुद्दौलहने इस वक्त़ अ़ज़ीमुश्शानको निकलनेकी सलाह दी, लेकिन् उसने इन्कार किया. फिर हाथी सूंडपर गोला लगनेसे अ़ज़ीमुश्शानको लेभागा, और वह रावी नदीमें हाथी समेत गिरकर डूब मरा.

इस लड़ाईका ख़ातिमह होनेपर खुजस्तहअख़्तर, याने जहांशाहने बादशाहसे कहा, कि सल्तनत तक्सीम करनेका वादह पूरा होना चाहिये. उसी वक्त़ अस्सी छकड़े अश्रफ़ी और सौ छकड़े रुपयोंके जो मिले थे, उसके तीन बराबर हिस्से करने चाहे. तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने कहा, कि पांच हिस्से होने चाहियें, जिनमेंसे तीन मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाहके, और दो दोनों शाहज़ादोंके. इसपर बखेड़ा हुआ, तीन दिनतक दोनों तरफ़की फ़ौजें तय्यार रहीं, चौथे दिन शामको जहांशाहने अचानक मुइज़्ज़ुद्दीनके लश्करपर हमलह किया, और फ़त्ह पाई. मुइज़्ज़ुद्दीन पोशीदह तौरपर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके पास पहुंचा; ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने हैरान होकर अपने ख़ास तीन चार सौ बर्क़न्दाज़ोंको नज़्रके बहानेसे जहांशाहके पास भेजा, जिन्होंने बाढ़ मारकर जहांशाहका काम तमाम किया; और मुइज़्ज़ुद्दीन बजाय शिकस्त पानेके फ़त्हयाब होगया. दूसरे रोज़ सुब्हको रफ़ीउश्शान याने रफ़ीउल्क़द्रने लड़ाईकी तय्यारी की; तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ां मुइज़्ज़ुद्दीनको हाथीपर सवार कराकर मुक़ाबलेके लिये लेआया. लड़ाई होनेके बाद रफ़ीउल्क़द्र भी साथियों समेत मारागया.

मुइज़्ज़ुद्दीनने बे खटके सल्तनत पाकर चारों तरफ़ फ़र्मान भेजे, और लाहौरसे रवाना होकर हिज्री ११२४ ता० १८ जमादियुल्अव्वल [वि० १७६९ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १७१२ ता० २३ जून] बृहस्पतिवारको तीन घंटे दिन बाक़ी रहे दिल्ली पहुंचा, जहां तख़्तपर बैठकर आसिफ़ुद्दौलह असदख़ांको वकीले मुत्लक़ रक्खा, जैसा कि वह बहादुरशाहके वक्त़में था; ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको वज़ीरे आज़म बनाया, और अ़ज़ीमुश्शानके बड़े बेटे सुल्तान करीमुद्दीनको मरवाडाला, जिसे हिदायतकेशख़ां लाहौरसे गिरिफ़्तार कर लाया था. आ़लमगीर बादशाहके बेटे मुहम्मद आज़मका शाहज़ादह आ़लीतबार, कामबख़्शका बेटा मुह्युस्सुन्नह और फ़ीरोज़मन्द क़ैद किये गये. फिर अपने धायभाईको ख़ानेजहांका ख़िताब दिया, जो ज़ुल्फ़िक़ारख़ांका विरोधी था. लालकुंवर बेगमका

बादशाहने बड़ा रुत्बा बढ़ाकर उसके भाइयोंको सात हज़ारी और पांच हज़ारी मन्सबदार बनाया; ये लोग गवय्ये थे. जुल्फ़िक़ारख़ां, बेगमके भाई ख़ुशहालख़ांसे हंसी ठट्ठा किया करता था, उसने अपनी बहिनकी मारिफ़त बादशाहका दिल वज़ीरसे फेरा; जुल्फ़िक़ारख़ांने ख़ुशहालख़ांको नालाइक़ हरकतोंके सबब गिरिफ़्तार करके सलीमगढ़में क़ैद कर दिया. इसी तरह लालकुंवरकी दोस्त जुहरा कोंजड़ीको ग़ाज़ियुद्दीनख़ांके बेटे चीन क़िलीचख़ांने पिटवाया, जो रास्तेमें उसके साथ बे अदबीसे पेश आई थी. बादशाह कमीन लोगोंके फन्देमें गिरिफ़्तार होकर ऐश इश्रत व शराबको अपनी बादशाहत जानते थे, और बड़े बड़े ख़ानदानी आदमियोंकी दिलशिकनी होने लगी.

अज़ीमुश्शानके बेटे फ़र्रुख़सियरका हाल यह है, कि बादशाह आलमगीरके समय अज़ीमुश्शानको बंगालेकी सूबहदारी मिली थी, और बहादुरशाहके राज्यमें उड़ीसा, इलाहाबाद (प्रयाग) और अज़ीमाबाद (पटना) भी उसको मिलगया; तब अज़ीमुश्शान तो बादशाहके पास रहने लगा, और सय्यद अब्दुल्लाहख़ांको इलाहाबाद और सय्यद हुसैनअलीख़ांको अज़ीमाबाद और जाफ़रख़ांको सूबह बंगाल व उड़ीसाकी सूबहदारी दी. जब बहादुरशाह और आज़मकी लड़ाई हुई, तबसे अज़ीमुश्शान बंगालेकी तरफ़ नहीं गया; परन्तु अपने बेटे फ़र्रुख़सियरको मए अपनी हरमसराय व मुलाज़िमोंके अक्बर नगर उर्फ़ राजमहलमें छोड़ आया था; वह शाहज़ादह उसी जगह तईनात रहकर इस समय तक वहां बर्क़रार था. अब जहांदारशाहने बादशाह होकर एक फ़र्मान जाफ़रख़ांको लिखभेजा, कि फ़र्रुख़सियरको गिरिफ़्तार करके भेजदो; उस नेक आदमीने अज़ीमुश्शानकी पर्वरिशको याद करके फ़र्रुख़सियरको ख़ानगी तौरपर ख़बर दी, कि मेरे पास यह हुक्म आया है, आप अपने बचावकी सूरत कीजिये. शाहज़ादहने पटनेकी राह ली, और हुसैनअलीख़ांके पास पहुंचकर बहुत लाचारी की; पहिले तो हुसैनअलीख़ांने टाला टूली की, पर आख़िरमें फ़र्रुख़सियरका मददगार बनगया, और अपने भाई अब्दुल्लाहख़ांको भी शामिल किया; चारों तरफ़ फ़र्रुख़सियरके नामसे फ़र्मान जारी होगये. हुसैनअलीख़ांने अपने भान्जे ग़ैरतख़ांको अज़ीमाबादमें छोड़कर मए फ़र्रुख़सियरके कूच किया. इधर मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाहने इस बातको सुनकर सय्यद अब्दुल्ग़फ़्फ़ारख़ां कुर्देजीको दस बारह हज़ार सवारों समेत इलाहाबादकी हुकूमतपर भेजदिया, जिसे अब्दुल्लाहख़ांने अपने भाइयोंको भेजकर मुक़ाबलेमें शिकस्त देने बाद मारडाला. यह पहिला मुक़ाबलह था, जो मुइज़्ज़ुद्दीनके मुलाज़िमोंसे फ़र्रुख़सियरके मुलाज़िमोंने किया.

इसके बाद फ़र्रुख़सियर भी मए हुसैनअ़लीख़ां व सफ़्शिकनख़ां नाइब सूबहदार उड़ीसा व अहमदबेग, मुइज़्ज़ुद्दीन कोके, व ख़्वाजह आ़सिम ख़ानिदौरां वग़ैरह सर्दारोंके आन पहुंचे; और अ़ब्दुल्लाहख़ांको लेकर इलाहाबादसे आगे बढ़े. यह ख़बर सुनकर जहांदारशाहने भी अपने बड़े शाहज़ादे अ़ज़्ज़ुद्दीनको मए पचास हज़ार सवार व तोपख़ानह व बड़े बड़े सर्दारोंके रवानह किया. शाहज़ादेकी मदद व फ़ौजकी दुरुस्तीके लिये ख़्वाजह अह्सनख़ांको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब व ख़ानिदौरांका ख़िताब देकर भेजा. इन सबके पीछे ग़ाज़ियुद्दीनख़ांके बेटे चीन क़िलीचख़ांको तसल्ली देकर रवानह किया. ये सब खजवा गांवमें पहुंचकर ठहरे थे, कि फ़र्रुख़सियर भी आपहुंचा; और गोलन्दाज़ी होने लगी; पिछले पहर रातमें शाहज़ादह अ़ज़्ज़ुद्दीन भाग गया, और माल अस्बाब, ख़ज़ानह व तोपख़ानह वग़ैरह फ़र्रुख़सियरकी फ़ौजके क़ाबूमें आया. भागते हुए अ़ज़्ज़ुद्दीनको चीन क़िलीचख़ांने आगरेके पास रोका, और बादशाह जहांदारशाहको ख़बर दी.

यह सुनकर मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाह हिज्री ११२४ ता० १२ ज़िल्क़ाद [वि० १७६९ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० १७१२ ता० ११ डिसेम्बर] सोमवारके दिन फ़र्रुख़सियरके मुक़ाबलेको दिल्लीसे रवानह हुआ. हरावल ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, और मददगार कोकलताशख़ां, आज़मख़ां, जानीख़ां, मुहम्मद अमीरख़ां वग़ैरह तूरान, व ईरानके सर्दार कुल सत्तर अस्सी हज़ार सवार तोपख़ानह और पैदल फ़ौजके साथ आगरेकी तरफ़ चले. जब आगरेको पीछे छोड़कर समूनगरके पास पहुंचे, उधरसे फ़र्रुख़सियर भी लश्कर सहित आया, और जहांदारशाहको धोखा देनेके लिये हुसैनअ़लीख़ांको डेरोंमें छोड़कर आप मए अ़ब्दुल्लाहख़ांके जमना नदी पार आगरेसे ४ कोस दिल्लीकी तरफ़ रोज़बिहानी सरायमें आठहरा. जहांदारशाह भी पीछा फिरकर उसके मुक़ाबलेमें आया. इधर ज़ुल्फ़िक़ारख़ां और उधर अ़ब्दुल्लाहख़ां हरावलके अफ़्सर थे. हिज्री ११२४ ता० १४ ज़िल्हिज [वि० १७६९ पौष शुक्ल १५ = ई० १७१३ ता० १२ जैन्युअरी] को दोनों फ़ौजोंकी लड़ाई शुरू हुई; अ़ब्दुल्लाहख़ांने जहांदारशाहके तोपख़ानहको हटाकर बड़ी बहादुरीके साथ हमलह किया, और मुइज़्ज़ुद्दीनके हाथी तक पहुंचगया. वह कम नसीब अपने बेटे और बेगम लालकुंवरको लेकर भागा, और आगरेके क़िलेमें जा ठहरा. ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने बहुतेरा ढूंढा, परन्तु कुछ पता न लगा. फ़र्रुख़सियरकी फ़ौजमें फ़त्हके शादियाने बजे. मुइज़्ज़ुद्दीन मए अपने बेटेके भागकर दिल्ली पहुंचा, जिसको आसिफ़ुद्दौलह असदख़ांने नज़र बन्द करदिया. पीछेसे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां भी पहुंच गया, जो दुबारा फ़र्रुख़सियरसे लड़ना चाहता था; लेकिन् उसने असदख़ांके समझानेसे यह इरादह छोड़ दिया. उसको फ़र्रुख़सियरकी तरफ़से ख़ौफ़ था, क्योंकि उसके बाप अ़ज़ीमुश्शानको उसने मारकर मुइज़्ज़ुद्दीनको तख़्तपर बिठाया था; असदख़ांसे कहा,

कि मैं दक्षिणको चला जाऊं; उस बुड्ढेने समझाया, कि हम आलमगीरके ज़मानेके पुराने नौकर हैं, फ़र्रुख़सियर हर्गिज़ हमको बर्बाद न करेगा. हुसैनअलीख़ां ज़ख़्मी होकर बेहोश पड़ा था, जिसको अब्दुल्लाहख़ांने तलाश करके उठाया. हिज्री ११२४ ता० १५ ज़िल्हिज [वि० १७६९ माघ कृष्ण १ = ई० १७१३ ता० १२ जैन्युअरी] को फ़र्रुख़सियरने शाहाना दर्बार किया, जिसमें चीन क़िलीचख़ां, अब्दुस्समदख़ां, मुहम्मद अमीनख़ां वग़ैरह तूरानी सर्दारोंने अब्दुल्लाहख़ांकी मारिफ़त हाज़िर होकर नज़्रें दिखलाईं.

(फ़र्रुख़सियर बादशाह.)

फ़र्रुख़सियरने अब्दुल्लाहख़ांको मए लुत्फ़ुल्लाहख़ां, सादिक़ख़ां वग़ैरह उमरावोंके दिल्लीका बन्दोबस्त करनेको रवानह किया; और आप एक हफ़्ते ठहरकर दिल्लीकी तरफ़ चला, जो हिज्री ११२५ ता० १४ मुहर्रम [वि० १७६९ माघ शुक्ल १५ = ई० १७१३ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को दिल्लीके पास बारह पुलेमें पहुंचा, और वहां अब्दुल्लाहख़ांको कुतुबुल् मुल्कका ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर अपना वज़ीर आज़म बनाया; हुसैनअलीख़ांको इमामुल्मुल्कका ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर अमीरुल् उमरा बख़्शियुल् मुल्क अव्वल बनाया; मुहम्मद अमीनख़ांको एक हज़ारी ज़ात व सवार पहिले मन्सब पर बढ़ाकर एतिमादुद्दौलहका ख़िताब देने बाद दूसरे दरजेका बख़्शी किया; चीन क़िलीचख़ांको, जो पहिले पांच हज़ारी था, सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर 'निज़ामुल्मुल्क' का ख़िताब इनायत किया; और दक्षिणकी सूबहदारी दी; ख़्वाजह आसिमको समसामुद्दौलह ख़ानेदौरांका ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व ६ हज़ार सवारका मन्सब दिया; अहमदबेग मुइज़्ज़ुद्दीनके कोकाको, जो फ़र्रुख़सियरसे पहिले आमिला था, ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुर ग़ालिब जंगका ख़िताब व ६ हज़ारी ज़ात व पांच हज़ार सवारका मन्सब और तीसरे दरजेकी बख़्शीगरी दी; क़ाज़ी अब्दुल्लाह तूरानीको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और ख़ानख़ानां मीर जुम्लाका ख़िताब दिया; यही बादशाहकी तरफ़से तह्रीरपर दस्तख़त करता था. इनके सिवा बहुतसे आदमियोंको इन्आम, इक्राम, मन्सब और ख़िताब दिये.

वज़ीर असदख़ां मए अपने बेटे ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके बारहपुलेपर हाज़िर हुआ; पहिले हुसैनअलीख़ांने चाहा था, कि वह हमारी मारिफ़त पेश हो; परन्तु अब्दुल्लाहख़ां मीरजुम्लाने उन दोनों ज़बर्दस्तोंका एक होना ना पसन्द करके अपनी मारिफ़त पेश किया. इस इख़्तिलाफ़से इन बेचारोंपर आफ़त आई; असदख़ांको रुख़्सत देकर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको बाहर डेरेमें ठहराया, जो बादशाहके हुक्मसे थोड़ी देरमें मारा

गया. उसी दिन ता० १६ मुहर्रम [वि० फाल्गुन् कृष्ण २ = ई० ता० १३ फ़ेब्रुअरी] को जहांदारशाहको भी फांसी देकर मारडाला, और ता० १७ मुहर्रम [वि० फाल्गुन् कृष्ण ३ = ई० ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को फ़र्रुख़सियर क़िलेमें दाख़िल हुआ, जिसके पीछे मुइज़ुद्दीनका सिर बांसपर, लाश हाथीपर और ज़ुल्फ़िक़ारख़ांकी लाश उसी हाथीकी पोंछसे उलटी लटकती हुई बंधी आती थी. उन लाशोंके पीछे पालकीमें बेचारे बुड्ढे असदख़ांको चलाया गया था. फिर असदख़ांको ख़ानेजहां बहादुरकी हवेलीमें क़ैद किया, लाशोंको क़िलेके दर्वाज़ेपर डाला, और ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके दीवान राजा सभाचन्दकी ज़बान कटवा डाली; इन सबका माल अस्बाब ज़ब्त हुआ. इनके सिवा दूसरे भी कई सर्दारोंको शुब्हेमें फांसियां देकर मरवाडाला; मुइज़ुद्दीनके बेटे अअ़ज़ुद्दीन, आज़मशाहके बेटे आ़लीतबार और ख़ुद फ़र्रुख़सियरके भाई हुमायूं बख़्तकी आंखोंमें सलाइयां फिरवा दीं. इस ज़ुल्मसे हर एक सर्दारके दिलमें बड़ा ख़ौफ़ होगया.

फ़र्रुख़सियरने शुरू सल्तनतसे सय्यद अ़ब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ उह्दे देना तज्वीज़ किया, जिससे बादशाह और वज़ीरके दिलोंमें फ़र्क़ आने लगा; लुच्चे और बद मआ़श लोग बादशाही हुज़ूरमें पहुंचने लगे; लेकिन् कुल इख़्तियार अ़ब्दुल्लाहख़ांके हाथमें होनेसे, जो नुक़्सान दिखाई देते, वे रफ़ा हो जाते; अ़ब्दुल्लाहख़ां भी बड़ा अ़य्याश था, वह अपने दीवान राजा रत्नचन्द महाजनको कुल इख़्तियार देकर ऐ़शमें पड़ा; रत्नचन्द बादशाहतका काम संभालनेकी लियाक़त नहीं रखता था; अल्बत्तह अ़ब्दुल्लाहख़ांका भाई हुसैनअ़लीख़ां बड़ा बहादुर सिपाही था, जिसके दबावसे कोई कुछ नहीं कर सक्ता था. मीर जुम्ला जुदा बादशाहको बहकाकर काममें ख़लल डालता था. इस तरहकी बे तर्तीबीसे बादशाहतका अ़जब ख़राब ढंग होगया था.

मीर जुम्लाने बादशाहसे कहा, कि अ़ब्दुल्लाहख़ांसे हुसैनअ़लीख़ांको जुदा करना चाहिये; इस बातके लिये अभी यह मौक़ा है, कि राजा अजीतसिंहने बादशाह आ़लमगीरके मरने बाद मारवाड़ और जोधपुरपर क़ब्ज़ह करलिया, बांग देना मौक़ूफ़ करदिया, और मस्जिदोंको गिरवाकर उस जगह मन्दिर बनाये; इसलिये हुसैनअ़लीख़ांको उस तरफ़ भेज दीजिये. बादशाहने ऐसा ही किया, और हुसैनअ़लीख़ां मए फ़ौजके जोधपुरकी तरफ़ रवानह हुआ. बादशाहने महाराजाको एक फ़र्मान पोशीदह लिख भेजा, कि तुम हुसैनअ़लीख़ांको मारडालना. पीछेसे अ़ब्दुल्लाहख़ांको गिरिफ़्तार करना चाहा; अ़ब्दुल्लाहख़ां इस भेदसे वाक़िफ़ होगया, और उसने अपने भाईको पीछा आनेके लिये लिखा. उधर राजा अजीतसिंहने भी बादशाहका फ़र्मान हुसैनअ़लीख़ांको दिखलाया. इसपर भी बहादुर हुसैनअ़लीख़ां, महाराजाकी बेटी इन्द्रकुंवरको

बादशाहके लिये, और कुछ पेश्कश व महाराजाके कुंवरको साथ लेकर दिल्ली पहुंचा. आपसके रंज व फ़रेबसे सल्तनतके कामोंमें दिन दिन बिगाड़ होता जाता था, वज़ीर और अमीरुल्उमरा अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम करना चाहते थे, और बादशाहका सलाहकार मीर जुम्ला उनके बर्ख़िलाफ़ चाल चलता था; वज़ीर व उसका दीवान रत्नचन्द रिश्वत वगैरह खूब लेने लगे; और बादशाह अब्दुल्लाहखांको गिरिफ्तार करना चाहता था. फ़र्रुख़सियरकी मा, जिसने सय्यदोंसे कुर्आनकी सौगन्द खाकर क़ौल क़रार किया था, हरएक बातकी उनको ख़बर देती थी; यहां तक कि दोनों भाई दर्बारमें जाना छोड़कर होश्यार रहने लगे.

फ़र्रुख़सियरकी मा अब्दुल्लाहखांके मकानपर जाकर दोनों भाइयोंको ले आई, और बादशाह व दोनों सय्यदोंमें सुल्ह करवादी; उन दोनोंने बादशाहके साम्हने तलवार रखकर कहा, कि हम कुसूरवार हों, तो यह तलवार और सिर हाज़िर है, सज़ा दीजिये; और मौकूफ़ करना हो, तो हमको वह भी मंजूर है, ता कि मक्केको चले जावें; हमसे काम लेना हो, तो नालाइक़ आदमियोंकी बातोंपर ध्यान न देना चाहिये. बादशाहने इस बातपर सुलह करली, कि मीर जुम्लह तो अज़ीमाबादकी सूबहदारीपर, और हुसैनअलीखां दक्षिणकी सूबहदारीपर चलाजावे; निज़ामुल्मुल्क दक्षिणका सूबहदार दिल्लीमें चलाआवे; और दाऊदखां गुजरातके सूबहदारको लिखाजावे, कि वह अहमदाबादसे बुर्हानपुर चला जावे, वहां हुसैनअलीखांके हुक्मकी तामील करना चाहिये; लेकिन् पोशीदह दाऊदखांको फ़र्मान लिख भेजा, कि हुसैनअलीखांको मारडालोगे, तो कुल दक्षिणकी सूबहदारी तुमको मिलेगी.

मीर जुम्लाको तो अज़ीमाबादको रवानह करदिया, और हुसैनअलीखांको हुक्म दिया, कि तुम महाराजा अजीतसिंहकी बेटीका विवाह करजाओ. तब अमीरुल्उमराने उस राजकुमारीका पिता बनकर बड़ी धूमधामसे तय्यारी की, और हिन्दुओंके रवाजके मुवाफ़िक़ हिज्री ११२७ ता० २२ ज़िल्हिज [वि० १७७२ पौष कृष्ण ७ = ई० १७१५ ता० २६ डिसेम्बर] बृहस्पतिवारकी रातको उसका विवाह बादशाहके साथ कर दिया.

इन्हीं दिनोंमें सिक्खोंके गुरू बिन्दाने पंजाबमें बड़ी भारी बग़ावत की, और हज़ारहा मर्द, औरत बच्चे वगैरह मुसल्मानोंको बड़ी बे रह्मीके साथ क़त्ल किया, जिसको अब्दुस्समदखां सूबहदार कश्मीरने गिरिफ्तार करके दिल्ली भेजा; वह भी बड़ी सख़्तीके साथ मए अपने बेटे और साथियोंके बादशाहके हुक्मसे हिज्री ११२८ [वि० १७७३ = ई० १७१६] में मारागया.

हुसैनअलीखांको बादशाहने दक्षिणकी तरफ़ रवानह किया, तो उसने अर्ज़ की, कि मेरे भाईके साथ किसी तरहकी दग़ा न कीजिये, वर्नह मैं २० दिनमें यहां आसक्ता

हूं. हुसैनअ़लीख़ां हिज्री ११२८ शुरू रमज़ान [वि० १७७३ भाद्रपद शुक्ल २ = ई० १७१६ ता० २० ऑगस्ट] को बुर्हानपुर पहुंचा; गुजरातका सूबहदार दाऊदख़ां पहिलेसे वहां मौजूद होगया था, जो बादशाही इशारेके मुवाफ़िक़ हुसैनअ़लीख़ांसे लड़नेको मुस्तइद हुआ; हुसैनअ़लीख़ांने बहुत समझाया, लेकिन् वह न माना; आख़िरकार दाऊदख़ां मारा गया, और अमीरुल्उमराने फ़त्ह पाई. यह ख़बर बादशाहके कान तक पहुंची, तो उसने रंजके साथ कहा, कि ऐसे बहादुर सिपाहीको मारना न चाहिये था; तब अ़ब्दुल्लाहख़ां वज़ीरने अ़र्ज़ की, कि मेरा भाई उस पठानके हाथसे माराजाता, तो शायद मर्ज़ी मुबारकके मुवाफ़िक़ होता. इस तरह फिर ज़ियादह रंजकी सूरत पैदा होने लगी; मीरजुम्लासे अ़ज़ीमाबादका बन्दोबस्त न होसका, वह फ़ौजकी तनख़्वाह भी न देसका, और भागकर दिल्ली पहुंचा. इस बातसे शक हुआ, कि बादशाहने उसको बुलाया है; लेकिन् बादशाहने उसका मन्सब घटाकर पंजाबकी तरफ़ भेजदिया; तो भी बादशाह और वज़ीरका रंज दिन दिन बढ़ता गया.

हिज्री ११२९ [वि० १७७४ = ई० १७१७] में आ़लमगीरके वज़ीर असदख़ांका ९४ वर्षकी उ़म्रमें इन्तिक़ाल होगया. यह अपने बेटे ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके क़त्ल होनेसे गोशह नशीन था; जब अ़ब्दुल्लाहख़ांसे बादशाहकी नाइत्तिफ़ाक़ी बहुत बढ़गई, और फ़र्रुख़सियरने उस बुड्ढे वज़ीर असदख़ांसे सलाह पूछनेको अपना एतिबारी आदमी भेजा, उसने यह जवाब दिया, कि हमारे पुराने ख़ानदानको आपने बर्बाद किया, जिसका यह नतीजा है; अब मुनासिब यही है, कि सय्यदोंको खुश रखा जावे; क्योंकि सल्तनतको ज़वाल आचुका, और उसकी लगाम सय्यदोंके हाथमें है; बर्ख़िलाफ़ीसे आपके हक़में ख़राब नतीजा होगा.

बादशाही मुलाज़िम बड़ी हैरतमें थे, कि अब बादशाहके हुक्मकी तामील करें, या वज़ीरको खुश रक्खें. इनायतुल्लाहख़ां, आ़लमगीरी मुलाज़िम मक्कहसे वापस आया, जिसके बेटे हिदायतुल्लाहख़ांको फ़र्रुख़सियरने अपने पहिले जुलूसमें मरवाडाला था; बादशाहने उस पुराने अह्लकारका इस समय आना ग़नीमत जानकर ख़ालिसहकी दीवानी और कश्मीरकी सूबहदारी उसके लिये तज्वीज़ की; उसने जलती हुई आगमें और ईंधन डाला, याने ग़ैर मज़्हबी लोगोंपर जिज़्यहका लगान, जो इस बादशाहके पहिले जुलूसमें मौक़ूफ़ किया गया था, इसने मक्कहके शरीफ़की अ़र्ज़ीके ज़रीएसे फिर जारी करवादिया. इस बारेमें फ़र्रुख़सियरने एक फ़र्मान अपने हाथसे महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके नाम लिखा था, जिसका तर्जमह ऊपर दर्ज होचुका है- (देखो पृष्ठ ९५४-९५).

दूसरी बात उसने यह बताई, कि हिन्दू वग़ैरह लोगोंके मन्सब व जागीरोंमें

कमी कीजावे. इन वातोंसे रत्नचन्द वगैरह मुलाज़िम व आम लोग वज़ीरके पास फ़र्यादी हुए; वज़ीरने उस हुक्मको रोक दिया. इससे सब लोग इनायतुल्लाहख़ांसे नाराज़ और वज़ीरसे खुश थे. फिर बादशाहने इनायतुल्लाहख़ांके कहनेसे रत्नचन्दको वर्तरफ़ करनेका हुक्म दिया, लेकिन् वज़ीरने इस हुक्मकी तामील न की.

हिज्री ११२९ के शुरू शव्वाल [वि० १७७४ भाद्रपद शुक्ल २ = ई० १७१७ ता० १०सेप्टेम्बर]में आंवेरके महाराजा सवाई जयसिंहको राजा धिराजका ख़िताव, मन्सबकी तरक़ी, जवाहिर, हाथी और कई लाख रुपया देकर चूड़ामण जाटको सज़ा देनेके लिये रवानह किया, जो सर्कश होरहा था; और पीछेसे सय्यद ख़ानेजहां वज़ीरके मौसेको भी बड़ी फ़ौज देकर मददके लिये भेजा. एक साल तक लड़ाई होनेके बाद चूड़ामणने तंग होकर बाला बाला वज़ीरकी मारिफ़त सुलह करली, जिससे महाराजा जयसिंह भी रंजीदह हुआ, और बादशाह भी दिलमें नाराज़ था.

इसी तरह राजा साहू वगैरह दक्षिणियोंके नाम बादशाहने पोशीदह फ़र्मान भेजदिये थे, कि हुसैनअलीख़ांको मारडालना. इससे दक्षिणके इन्तिज़ाममें भी ख़लल आगया. हुसैनअलीख़ांने मरहटोंसे मेल मिलाप करके उनके हुकूक़ बढ़ा दिये, देशमुखी व चौथ उन लोगोंको लिखदी, जिससे लोगोंने बादशाहको ज़ियादह भड़काया. एक शख़्स मुहम्मद मुराद नामी कश्मीरीको रुक्नुद्दौलह एतिक़ादख़ांका ख़िताब देकर बादशाहने बढ़ाया, जो सय्यदोंको ग़ारत करनेका ज़िम्महवार होगया था. उसीकी सलाहसे महाराजा अजीतसिंहको अहमदाबादसे, सर्बलन्दख़ांको पटना अज़ीमाबादसे, और निज़ामुल्मुल्कको मुरादाबादसे बुलाया; राजा अजीतसिंहको महाराजाका ख़िताब और बहुतसी इ़ज़्ज़त देकर इस काममें शरीक करना चाहा, परन्तु अब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ होनेसे उसने इन्कार किया, और वज़ीरके शरीक होगया. निज़ामुल्मुल्क व सर्बलन्दख़ांने बादशाहकी सलाहमें शामिल होकर अर्ज़ की, कि हम दोनोंमेंसे एकको विज़ारतका ख़िल्अत दे दीजिये, जिससे अब्दुल्लाहख़ांकी ताक़त कम हो; फिर वह सर्कशी करेगा, तो सज़ा दीजावेगी; लेकिन् उस कम अक़्ल बादशाहसे यह भी न होसका. इसी सालमें ईदके मौक़ेपर फ़र्रुख़सियरके पास सत्तर अस्सी हज़ार फ़ौज राजाओं वगैरहकी एकट्ठी होगई थी, और अब्दुल्लाहख़ांके पास कुल चार पांच हज़ारसे ज़ियादह न थी, अफ़्वाह थी, कि इस मौक़ेपर अब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई होगी; लेकिन् उस कम हिम्मत बादशाहसे यह भी न बन पड़ा. इस अफ़्वाहसे वज़ीरने बीस हज़ार सवार बन्दोबस्तके लिये भरती करलिये थे, और हुसैनअलीख़ांकी भी अर्ज़ी हाज़िर होनेकी बाबत बादशाहके पास

आगई थी. इन बातोंसे दबकर महाराजा अजीतसिंहकी मारिफ़त बादशाहने वज़ीरसे सुलह चाही, और उसके घरपर जाकर ईमान और सौगन्दके साथ सफ़ाई की; हुसैनअ़लीख़ांके न आनेके लिये इख़्लासख़ांको भेजकर तसल्ली करवादी, जिसने फिर आनेमें चन्द रोज़ तअम्मुल किया; परन्तु बादशाहका फिर वही ढंग होगया, और निज़ामुल्मुल्क व सर्बलन्दख़ां भी बेचारे बे क़द्री और बे ख़र्चीसे तंग होरहे थे. वज़ीरने उनकी तसल्ली करके सर्बलन्दख़ांको क़र्ज़ह वग़ैरह चुकाने बाद काबुलकी सूबहदारीपर भेजदिया, और निज़ामुल्मुल्क व मुहम्मद अमीनख़ां वग़ैरहको अपनी तरफ़ करलिया; अपने भाई हुसैनअ़लीख़ांको लिखभेजा, कि जिस तरह होसके, जल्दी चले आओ.

बादशाहने इसी अ़र्सेमें यह इरादह किया, कि शिकारको सवार होकर लौटते हुए वज़ीरके घर आवें, और महाराजा अजीतसिंहका मकान उसीके पास है, इसलिये वह नज़्र और सलामके लिये हाज़िर होगा, तो उस वक़् महाराजाको गिरिफ़्तार करलेवेंगे, जिससे वज़ीरकी ताक़त टूट जायेगी. यह बात महाराजाके कान तक पहुंच गई, जिससे वह इरादह भी पूरा न हुआ. इन ख़बरोंके सुननेसे हुसैनअ़लीख़ां भी हिज्री ११३० आख़िर ज़िल्हिज [वि० १७७५ मार्गशीर्ष शुक्ल १ = ई० १७१८ ता० २३ नोवेम्बर] को औरंगाबादसे दिल्लीको रवानह हुआ, जिसके साथ बाईस सर्दार बादशाही मन्सब्दार और तीस हज़ार दूसरे सवार थे, जिनमें दस या बारह हज़ार मरहटे और बाक़ी बादशाही मुलाज़िम थे. उसने बुर्हानपुरमें दो चार मक़ाम किये, और हिज्री ११३१ ता० २२ मुहर्रम [वि० १७७५ पौष कृष्ण ८ = ई० १७१८ ता० १५ डिसेम्बर] को वहांसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह हुआ. इस अफ़्वाहको सुनकर डरपोक बादशाह अ़ब्दुल्लाहख़ांके घरपर गया, क़ुर्आन बीचमें देने बाद पगड़ी अपने सिरसे उतारकर वज़ीरके सिरपर रखदी, और दूसरे दिन वज़ीरको मए महाराजा अजीतसिंहके क़िलेमें बुलाकर बहुत ख़ातिर तसल्ली की. हुसैनअ़लीख़ांने आख़िर रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७७५ फाल्गुन् शुक्ल १ = ई० १७१९ ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को दिल्ली पहुंचकर फ़ीरोज़शाहकी लाटके पास डेरा किया. उस वक़् महाराजा जयसिंहने बादशाहसे कहा, कि वज़ीर और हुसैनअ़लीख़ांने रंग बदला है, अगर आप हिम्मत फ़र्माकर सवार हों, तो उनसे ज़ियादह फ़ौज और सिपाह आपके साथ होकर दोनोंको सज़ा दे सक्ते हैं; बल्कि उनके पास जो बहुतसे बादशाही मुलाज़िम हैं, वे भी आपके पास चले आवेंगे; लेकिन् उस कम अ़क़्ल और कम हिम्मत बादशाहसे कुछ भी न बन पड़ा.

क़ुतुबुल्मुल्क याने वज़ीरने अपने भाईकी तरफ़से बादशाहको कहलाया, कि

राजा सवाई जयसिंह, जो हमारा दुश्मन है, वतनको रुख़्सत करदिया जावे, और सर्कारी तोपख़ानह व क़िला वग़ैरह कुल हमारे इख़्तियारमें कर देवें, तो हम वेधड़क आपके पास हाज़िर होजावें, जिसपर बादशाहने महाराजा सवाई जयसिंहको ता० ३ रबीउस्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ४ = ई० ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को घरकी रुख़्सत देदी. वज़ीर व महाराजा अजीतसिंहने क़िलेमें ता० ५ रबीउस्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ६ = ई० ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को बन्दोबस्त कर लिया; उसी दिन हुसैन-अलीख़ां शामको क़िलेमें आया; मरहटी फ़ौजके सवार क़िलेके गिर्द तईनात करदिये. जब वह बादशाहके पास गया, तो अदब आदाबका ख़याल भी पूरा नहीं रक्खा; बादशाहने ख़िलअ़त, घोड़ा, हाथी, वग़ैरह देकर ख़ुश रखना चाहा; परन्तु वह जैसा चाहिये, ख़ुश न हुआ; और अपने लश्करमें लौट आया. ता० ८ रबीउस्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ९ = ई० ता० २ मार्च] को वज़ीर अब्दुल्लाहख़ां और महाराजा अजीतसिंह दोनों क़िलेमें आये और पांचवीं तारीख़के मुताबिक़ फिर बन्दोबस्त किया; बादशाहसे दीवान ख़ास, ख़्वाबगाह व अ़दालत ख़ासकी कुंजियें लेलीं. यह ख़बर अमीरुलउमराको मिली, तो वह उसी शानो शौकतसे फ़ौज लेकर आया, और क़िलेके पास शाइस्तहख़ांकी बारहदरीमें ठहरा. अब्दुल्लाहख़ां व महाराजा अजीतसिंह बादशाहके पास गये, और आपसमें बहुत कुछ सख़्त सुस्त बहस हुई, जब बादशाहने बिल्कुल अपनेसे बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई देखी, तो ज़नाने महलोंमें चला गया; सारी रात क़िलेके गिर्द फ़ौज बन्दी व गली कूचों और दर्वाज़ोंपर बन्दोबस्त रहा.

अब्दुल्लाहख़ां व महाराजा अजीतसिंह शाही महलोंमें, और बादशाही आदमी बाहर पड़े रहे. ता० ९ रबीउस्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल १० = ई० ता० ३ मार्च] को शहरमें कई अफ़्वाह उड़ रही थीं. बादशाहका श्वशुर सादातख़ां, दूसरा ग़ाज़ियुद्दीनख़ां ग़ालिबजंग और आग़रख़ां बहादुर तुर्कजंग, तीनों बादशाहकी मददको चले; निज़ामुल्मुल्क व सम्साम्रुद्दौलह अपने घरोंमें बैठ रहे; एतिमादुद्दौलह हुसैनअलीख़ांकी मददको पहुंचा. दूसरी तरफ़से एतिक़ादख़ां, सय्यद सलावतख़ां व मनोहर हज़ारी दो तीन हज़ार आदमीकी फ़ौज समेत बादशाहकी मददको आये. चांदनी चौकमें शाही मददगारोंसे हुसैनअलीख़ांके मुलाज़िमोंका मुक़ाबलह हुआ, लेकिन् पहिले ही मुक़ाबलेमें कई ज़ख़्मी हुए, और कुछ कुछ लड़ भिड़कर बिखर गये. इस हुल्लड़से सादुल्लाहख़ांका चौक बाज़ार लुट गया. क़िलेके भीतर वज़ीर और महाराजाने चाहा, कि किसी तरह फ़र्रुख़सियर बाहर निकल आवे, पर वह न निकला; तब हुसैनअलीख़ांके इशारेसे उन दोनों सर्दारोंने नज्मुद्दीनअलीख़ां वज़ीरके

भाईको ज़नानेमें घुसनेका हुक्म दिया, वह कई पठान और चेलोंके साथ बादशाही ज़नानख़ानहमें घुस गया, बेचारी बहुतसी लौंडियोंने रोकना चाहा, लेकिन् ये लोग न रुके, और बादशाहको गिरिफ्तार करलिया; उसकी माता, और बेगमात व बेटीने बहुत कोशिश की, पर कुछ पेश न गई; बादशाहको क़िलेमें त्रिपोलियाके ऊपर एक तंग मकानमें क़ैद कर दिया.

(रफ़ीउ़श्शान.)

इस कामसे निवटकर वज़ीर और महाराजाने हिज्री ११३१ ता० ९ रबीउ़स्सानी [वि० १७७५ फाल्गुन् शुक्ल १० = ई० १७१९ ता० ३ मार्च] पहर दिन चढ़े रफ़ीउ़श्शान के छोटे बेटे रफ़ीउ़द्दरजातको तख़्तपर बिठाकर "शम्सुद्दीन अबुल्बरकात रफ़ीउ़द्दर-जात" के ख़िताबसे प्रसिद्ध किया. यह आलमगीरके बेटे अक्बरकी बेटीके पेटसे पैदा हुआ, और इस वक्त २० वर्षकी उम्रमें था. इसके तख़्त नशीन होतेही शहरका हुल्लड़ घटा, और वज़ीरने बन्दोबस्तके साथ क़िलेमें रहना इख़्तियार किया. महाराजा अजीतसिंहकी बेटीके सिवाय फ़र्रुख़सियरके कुटुम्ब और तरफ़दारोंका माल अस्वाब सब ज़ब्तीमें आया. अब्दुल्लाहख़ांने सब कारख़ानोंपर अपने भरोसेके आदमी रख दिये. फ़र्रुख़सियरको क़ैदमें रखकर किसी तरहकी तक्लीफ़ न देना सैरुल्मुतअख़्ख़िरीनमें लिखा है, लेकिन् तारीख़ मुज़फ़्फ़रशाहीका बनाने वाला मुहम्मदअ़लीख़ां अन्सारी अपनी किताबमें उसकी आंखोंमें सलाई फेरना, और तंग मकानमें तस्मा खेंचकर बड़ी तक्लीफ़के साथ मारना लिखता है; रॉबर्ट आर्म अपनी किताबकी पहिली जिल्दके २० पृष्ठमें, जो ई० १८६१ सन् में चौथी बार मदरासमें छपी है, लिखते हैं- कि "फ़र्रुख़सियर पहिला मुग़ल बादशाह था, जिसका वालिद बादशाह नहीं हुआ. जिन लोगोंने उसे बड़े दरजेको पहुंचाया था, उन्हींने अपनी हिफ़ाज़त ज़रूरी समझकर उसे तख़्तसे उतारा, उसको क़ैद करने बाद बे फ़िक्र होकर उन्होंने उसकी आंखें निकलवा दीं; लेकिन् इस बातसे भी उनका ख़ौफ़ या गुस्सह कम न हुआ; इसलिये उन्होंने उसको बड़ी बे इ़ज़्ज़ती और हिक़ारतके साथ १६ फ़ेब्रुअरी सन् १७१९ ई० [वि० १७७५ फाल्गुन् कृष्ण ११ = हि० ११३१ ता० २९ रबीउ़ल्अव्वल] को क़त्ल किया."

मुन्तख़बुल्लुबाब, ख़ानदानि आलमगीरी, मिरातिआफ़्ताबनुमा वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें भी तक्लीफ़के साथ तस्मेसे फांसी देकर मारना लिखा है; परन्तु सैरुल्मुतअख़्ख़िरीन वाला ख़ुद शीअ़ह और सय्यद होनेके सबब कुछ कुछ सय्यदोंकी तरफ़्दारी दिखलाकर दूसरी किताबोंके हवालेसे अस्ली हाल भी दर्ज करता है.

इस बादशाहके मरनेकी तारीख़ नहीं मिलती, सिर्फ़ टामस विलिअम बील साहिबने जो फ़ार्सी ज़बानमें मिफ़्ताहुत्तवारीख़ लिखी है, उसमें हिज्री ११३१ ता० १२ जमादियुस्सानी [वि० १७७६ वैशाख शुक्ल १३ = ई० १७१९ ता० २ मई] को इस बादशाहका मरना लिखा है. इसकी एक लड़की, जिसका नाम बादशाह बेगम था, मुहम्मदशाहसे ब्याही गई, जिसको मलिकह ज़मानीका ख़िताब मिला था.

महाराजा अजीतसिंह तो फ़र्रुख़सियरके क़ैद होने बाद अपनी बेटी इन्द्र-कुंवर बाईको लेकर जोधपुर चलेगये, और उस बेगमके ख़र्चके लिये अहमदाबादकी सूबहदारीसे बारह हज़ार रुपया सालानह मुक़र्रर होगया था, जहांके सूबहदार यही महाराजा थे. रफ़ीउ़द्दरजातको सिलकी बीमारी पहिलेसे थी, जिससे वह इसी वर्ष याने हिज्री ११३१ ता० १२ रजब [वि० १७७६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १७१९ ता० १ जून] शनिवारको तीन महीने और कुछ दिन बादशाहत करके मरगया.
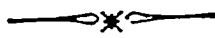
(रफ़ीउ़द्दौलह).

रफ़ीउ़श्शानके मन्शासे उसके बड़े भाई रफ़ीउ़द्दौलहको तख़्तपर बिठाया, जिसका पूरा नाम मिफ़्ताहुत्तवारीख़में "शम्सुद्दीन रफ़ीउ़द्दौलह मुहम्मद शाहजहां सानी" लिखा है. इसकी थोड़ीसी बादशाहतके समयमें लोगोंने आलमगीरके शाहज़ादे मुहम्मद अक्बरके बेटे नीकोसियरको आगरेमें तख़्तपर बिठा दिया, जो वहां क़ैद था; लेकिन् सय्यदोंने रफ़ीउ़द्दौलहको साथ लेकर नीकोसियरको क़ैद किया, और साथियोंको सज़ा दी. परमेश्वरकी इच्छासे यह बादशाह भी इसी साल यानी हिज्री ११३१ ता० ७ ज़िल्क़ाद [वि० १७७६ अधिक आश्विन शुक्ल ८ = ई० १७१९ ता० २२ सेप्टेम्बर] को तीन महीने और कुछ दिन बादशाहत करके मरगया.

(मुहम्मदशाह बादशाह).

आलमगीर बादशाहके पोते खुजस्तह अख़्तर जहांशाहके बेटे रौशन अख़्तरको अब्दुल्लाहखांने तख़्तपर बिठाया. कहते हैं, कि रफ़ीउ़द्दौलहकी मौतको छुपाया था. इससे तवारीख़ोंमें तारीख़का इख़्तिलाफ़ है. ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि रफ़ीउ़द्दौलहके मरनेसे एक हफ़्ते बाद ता० ११ ज़िल्क़ाद [वि० अधिक आश्विन शुक्ल १२

= ई० ता० २६ सेप्टेम्बर] को मुहम्मदशाह फ़त्हपुरमें लायागया, और उसी महीनेकी ता० १५ [वि० अधिक आश्विन कृष्ण १ = ई० ता० ३० सेप्टेम्बर] को तख़्तपर बिठाया गया, जिसका पूरा नाम "अबुल्मुज़फ़्फ़र नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह बादशाह ग़ाज़ी" होकर सिक्कह व खुत्बह जारी किया गया. इस बादशाहने अपने जुलूसका दिन वही रक्खा, जिस दिन कि फ़र्रुख़सियर तख़्तसे उतारा गया था. कुल उह्दोंपर जो सय्यदोंके आदमी तईनात थे, वे बर्क़रार रहे.

अब हम वह बात लिखते हैं, जो दोनों भाई सय्यदों और चीन क़िलीचख़ां निज़ामुल्मुल्कके बीच ना इत्तिफ़ाक़ीका सबब हुई. वज़ीर और अमीरुल्उमराने निज़ामुल्मुल्कका बादशाहके पास रहना ना मुनासिब जानकर सूबह मालवापर भेजदिया, और मांडूके क़िलेदार मरहमतख़ांसे क़िलेदारी ताग़ीर करके ख़्वाजह क़िलीचख़ां तूरानीको वहां भेजदिया; लेकिन् मरहमतख़ांने क़ब्ज़ह नहीं होने दिया. तब वज़ीरने निज़ामुल्मुल्क सूबहदार मालवाको लिखभेजा, कि अगले क़िलेदारको निकालकर ख़्वाजह क़िलीचख़ांका क़ब्ज़ह करादेवें; तब निज़ामुल्मुल्कने मरहमतख़ांको समझाकर अपने पास बुला लिया, और नये क़िलेदारने मांडूपर क़ब्ज़ह करलिया. आमझराके राजा जयरूपसिंह (१) और उसके भाई जगरूपसिंहमें अदावत थी; जगरूपकी हिमायत करके जयरूपसिंहको विश्वासके साथ अपने पास बुलाया, और उसे मारडाला. तब उसका बेटा लालसिंह छोटी उम्रका निज़ामुल्मुल्कके पास फ़र्यादी आया; उसने जगरूपको गिरिफ़्तार करके लालसिंहको आमझरेपर बिठा दिया. इसी तरह राणागढ़का क़िला शत्रुसाल बुंदेलेके बेटे जानचन्दने लेलिया, जो सिरोंजके पास ख़ालिसेका था; हुसैनअ़लीख़ांकी लिखावट और बादशाही हुक्मके पहुंचनेसे निज़ामुल्मुल्कने मरहमतख़ांको फ़ौज समेत भेजकर क़िला ख़ाली करवा लिया. इसी प्रकार निज़ामुल्मुल्कके पास ख़ानगी रुक़े भी पहुंचगये थे, जिनमें यह लिखा था, कि बादशाहको सय्यदोंके पंजेसे निकाले. निज़ामुल्मुल्क और सय्यदोंके आपसमें अदावत बढ़गई, तो हुसैनअ़लीख़ांने कोटाके महाराव भीमसिंहको बहुत कुछ लालच देकर अपनी तरफ़ मिला लिया. महारावको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब ख़िल्अ़त और माही मरातिब दिलाया; नर्वरके राजा गजसिंह व दिलावरअ़लीख़ां वग़ैरह सर्दारोंको १५००० सवारों समेत भीमसिंहके साथ देकर यह हुक्म दिया, कि बूंदीमें सालिमसिंहको सज़ा देकर हमारे हुक्मकी राह देखना; क्योंकि दर पर्दा निज़ामुल्मुल्कपर तय्यारी थी. इन लोगोंने सालिमसिंहपर फ़त्ह पाकर हुसैनअ़लीख़ांको इत्तिला दी. निज़ामुल्मुल्कने

---

(१) तारीख़ मालवामें इसका नाम जसरूप लिखा है.

दोस्तोंकी लिखावट और बादशाहके इशारेसे दक्षिणकी तरफ़ कूच किया, और आसेरके क़िले व बुर्हानपुरको अपने क़ब्ज़ेमें करलिया.

इसके बाद हुसैनअलीख़ांके इशारेसे महाराव भीमसिंह और दिलावरअलीख़ां भी मालवाको चले; बुर्हानपुरसे सोलह सत्रह कोस रत्नपुरके क़रीब दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. हिज्री ११३२ ता० १३ शअ्बान [विक्रमी १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १४ = ई० १७२० ता० २१ जून] को इस लड़ाईमें दिलावरअलीख़ां, महाराव भीमसिंह, राजा गजसिंह कछवाहा वग़ैरह बड़ी बहादुरीके साथ चार पांच हज़ार आदमियों समेत मारे गये, जिसका मुफ़स्सल हाल कोटेकी तवारीख़में लिखा जायगा. निज़ामुल्मुल्कने फ़त्ह पाकर तोपख़ानह व कुल सामान लूट लिया. यह ख़बर हुसैनअलीख़ां और अब्दुल्लाहख़ांके पास पहुंची, तो उन्हें बहुत रंज हुआ; लेकिन् अब तक सय्यदोंके दिलपर ज़ियादह ख़त्रह नहीं था, और आलम अलीख़ां औरंगाबादसे तीस हज़ार सवार लेकर बुर्हानपुर आपहुंचा था; दिलावरअलीख़ां, महाराव भीमसिंह, व राजा गजसिंह वग़ैरहका हाल सुनकर उसके साथियोंने वापस लौटनेकी सलाह दी; लेकिन् उस जवांमर्दने यह बात मंजूर नहीं की, और मुनासिब भी यही था; क्यौंकि निज़ामुल्मुल्क एक फ़ौजसे लड़कर कम ताक़त हो चुका था.

निज़ामुल्मुल्क अपनी फ़ौज लेकर बुर्हानपुरसे पन्द्रह सोलह कोस पश्चिमको पूर्णा नदीपर मुक़ाबलहके इरादेसे जा ठहरा, और उसके पास ही हरताले तालाबपर आलमअलीख़ांने डेरा आ जमाया. बर्सातके सबब दोनों लश्करोंने चन्द रोज़ क़ियाम किया; लेकिन् निज़ामुल्मुल्क अपनी हिम्मतसे पन्द्रह सोलह कोस उस नदीको पायाब उतर गया, और बारिशकी ज़ियादतीसे तक्लीफ़ पाता हुआ बालापुरके पास पहुंचा. आलमअलीख़ां भी साम्हने आया, परन्तु उसके साथ कई सर्दार निज़ामुल्मुल्कके तरफ़दार थे, और आधेके क़रीब मरहटोंकी फ़ौज थी, जो राजा साहूने आलमअलीख़ांकी मददको भेजी थी. हिज्री ११३२ ता० ६ शव्वाल [वि० १७७७ श्रावण शुक्ल ७ = ई० १७२० ता० १२ ऑगस्ट] को दोनों तरफ़से मुक़ाबलह हुआ. यह लड़ाई बड़ी तेज़ी और जोशके साथ हुई, जिसकी मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़फ़ीख़ांने बहुत कुछ कैफ़ियत लिखी है. बाईस वर्षकी उ़म्रमें आलमअलीख़ां १७ या १८ दूसरे सर्दारों समेत नामवरीके साथ मारागया, और अमीनख़ां उ़मरख़ां, फ़िदाईख़ां, तुर्क ताज़ख़ां वग़ैरह निज़ामुल्मुल्कसे मिलगये, जो पेश्तरसे उन्हें चाहते थे; बाक़ी आदमी आलमअलीख़ांकी फ़ौजवाले भाग गये. निज़ामुल्मुल्कने फ़त्हयाबीके बाद सय्यदोंकी फ़ौजका अस्बाब लूटकर फ़त्हका शादियानह बजवाया. यह ख़बर सुनकर दिल्लीमें शोर मचगया.

हिज्री ११३२ ता० ९ ज़िल्क़ाद [वि० १७७७ भाद्रपद शुक्ल १० = ई०

१७२० ता० १४ सेप्टेम्बर] को हुसैनअ़लीखांने बादशाह समेत आगरेसे दक्षिणकी तरफ़ कूच किया. इस वक्त पचास हज़ार सवारकी भीड़भाड़ साथ थी. आगरेसे चार कोसपर पहुंचने बाद अ़ब्दुल्लाहखांको राजधानीकी तरफ़ भेज दिया, और बादशाही फ़ौज फ़त्हपुरसे पेंतीस कोस दक्षिणको मक़ाम तोरामें पहुंची. इसी सालकी ता० ६ ज़िल्हिज [वि० १७७७ आश्विन शुक्ल० ७ = ई० १७२० ता० १० ऑक्टोबर] को हुसैनअ़लीखां, मीर हैदरखां काशग़रीके हाथसे मारा गया, जिसका हाल ख़फ़ीखांने इस तरहपर लिखा हैः—

एतिमादुद्दौलह मुहम्मद अमीनखां, सआ़दतखां, और मीर हैदरखां काशग़री, तीनोंने बादशाहकी माके मन्शा और सलाहसे हुसैनअ़लीखांको मारडालनेका इरादह किया. इस बातको यहां तक छिपा रक्खा, कि बादशाह भी बे ख़बर थे. जब बादशाह अपने डेरोमें पहुंचे, तो मुहम्मद अमीनखां जी घबरानेका बहाना करके हैदरकुलीखांके डेरेमें चला आया, और हुसैनअ़लीखां बादशाहको पहुंचाकर अपने डेरेको जाता हुआ गुलाल बाड़ेके दर्वाज़ेपर पहुंचा था, कि इसी अ़र्सेमें मीर हैदरखां काशग़री एक अ़र्ज़ी लेकर गया, जिसमें मुहम्मद अमीनखांकी शिकायत लिखी थी; हुसैनअ़लीखां उसे पढ़ने लगा; इतनेमें काशग़रीने ख़न्जर निकालकर बड़ी फ़ुर्ती और चालाकीसे हुसैनअ़लीखांके पहलूमें ऐसा मारा, कि उसका काम तमाम होगया. मीर हैदर भी नूरुल्लाहखांके हाथसे उसी जगह मारागया. नूरुल्लाहखां, जो हुसैनअ़लीखांका चचा ज़ाद भाई था, उसे भी दूसरे मुग़लोंने मार डाला; और हुसैनअ़लीखांका सिर काटकर बादशाहके पास पहुंचाया. ख़्वाजह मक्बूल, सक्के और भंगियों तकने हुसैनअ़लीखांकी तरफ़से बड़ी बहादुरीके साथ तलवार चलाकर जान दी. इनके सिवाय दूसरे सिपाही भी बन्दूक़ और रामचंगियां चलाने लगे, और हुसैनअ़लीखांका भान्जा इ़ज़्ज़तखां अपने डेरोमें यह ख़बर सुनने बाद चार पांच सौ सवारों समेत, जो उस वक्त मौजूद थे, हाथीपर सवार होकर बादशाहके डेरोंकी तरफ़ चला. इस तरह चारों तरफ़ ग़द्रकी सूरत देखकर हैदरकुलीखां एतिमादुद्दौलहके कहनेसे सआ़दतखां शाही डेरोंमें गया और एतिमादुद्दौलह बादशाहको हाथीपर सवार कराके आप ख़वासीमें बैठने बाद थोड़ी ही जमइयत लेकर आगे बढ़ा. सय्यदोंकी फ़ौजके लोग इ़ज़्ज़तखांके साथ बढ़ते आते थे, लेकिन् मुहम्मदशाहको हाथीपर सवार देखकर हज़ारों बादशाही मुलाज़िम इकट्ठे होगये. आख़िरकार इ़ज़्ज़तखां लड़कर मारा गया; हुसैनअ़लीखांके डेरे जलाकर उसका लश्कर व बाज़ार लूटलिया; जिस क़द्र उसकी फ़ौजके लोग बाक़ी थे, भाग गये.

ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि "हुसैनअलीख़ांका नक्द और जिन्स, जो एक करोड़से ज़ियादहका था, लुट गया; और जवाहिर व ख़ज़ानह जो पीछे रहगया था, बादशाही ज़ब्तीमें आया. नागौरके मुह्कमसिंहको, जो हुसैनअलीख़ांका दोस्त था, हैदरकुलीख़ांने तसल्ली देकर बादशाहके पास बुला लिया; अस्ल और तरक़ीसे छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिलाया. अब्दुल्लाहख़ांके दीवान रत्नचन्दको क़ैद किया, और उसका वकील राय शिरोमणिदास फ़क़ीर बनकर निकल भागा, जो अब्दुल्लाहख़ांके पास पहुंच गया. हुसैनअलीख़ां, इज़्ज़तख़ां और नूरुल्लाहख़ांकी लाशें अजमेर भेजी गईं, जो शहरसे पूर्व ऊसरी दर्वाज़ेके बाहर हुसैनअलीख़ांके बापकी क़ब्रके पास दफ़्न हुईं. इस वक़्त उस जगह क़ब्रें नहीं हैं, बल्कि मक्बरेके दर बन्द करके पहिले गवर्मेंट कालिज बना था, अब उसमें साहिब लोग किरायेपर रहते हैं. यह हाल मुन्शी मुहम्मद अक्बरजहांकी किताब अहसनुस्सियरमें दर्ज है.

एतिमादुद्दौलह मुहम्मद अमीनख़ांको आठ हज़ारी ज़ात व सवार दो अस्पह का मन्सब, वज़ीर आज़मका उह्दह 'वज़ीरुलममालिक ज़फ़रजंग' का ख़िताब और डेढ़ करोड़ दाम इन्आम मिले; सम्सामुद्दौलहको मीरबख़्शीका उह्दह, आठ हज़ारी मन्सब और अमीरुल् उमराका ख़िताब दियागया; एतिमादुद्दौलहका बेटा क़मरुद्दीनख़ां दूसरे दरजेका बख़्शी व गुस्लख़ानहका दारोग़ा हुआ; हैदरकुलीख़ांको छः हज़ारी ज़ात व सवार दो अस्पह सि अस्पहका मन्सब, नासिरजंगका ख़िताब अता हुआ; सआदतख़ांको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, 'सआदतख़ां बहादुर' का ख़िताब और नक़्क़ारह दियागया. इसी तरह सब लोगोंको इन्आम इक्राम देकर बादशाहने ख़ुश किया.

अब्दुल्लाहख़ां यह ख़बर सुनकर फ़िक्रमन्द हुआ, लेकिन् सब्रके साथ दिल्ली पहुंचगया, और हिज्री ११३२ ता० ११ ज़िल्हिज [वि० १७७७ आश्विन शुक्ल १२ = ई० १७२० ता० १५ ऑक्टोबर] को रफ़ीउद्दरजातके बेटे सुल्तान इब्राहीमको तख़्तपर बिठाकर "अबुल फ़तह ज़हीरुद्दीन, मुहम्मद इब्राहीम बादशाह" के लक़बसे मश्हूर किया; उससे कई अमीरोंको ख़िताब, मन्सब और उह्दे दिलाये. रिसालह फ़ी सवार ८० रुपया माहवारकी तन्ख़्वाहपर भरती करना शुरू किया, एक करोड़ रुपया राजा रत्नचन्दके ख़ज़ाने समेत फ़ौज बन्दीकी तय्यारीमें ख़र्च हुआ; लेकिन् बहुतसे लोग अब्दुल्लाहख़ांसे दिली नफ़रत रखते थे, और अक्सर लोग एक महीनेकी

पेश्गी तन्ख्वाह लेकर चलदेते थे. इसी सालमें ता० १७ ज़िल्हिज [वि० कार्तिक कृष्ण ३ = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को अब्दुल्लाहखांने इब्राहीमशाहके साथ शहरसे बाहर ईदगाहके पास डेरा किया; और दिल्लीकी संभालके लिये अपने भतीजे नजावतअलीखांको गुलामअलीखां समेत छोड़ा. इब्राहीमशाहके साथ हर मन्ज़िलमें बारहके सय्यद और बड़े बड़े पठान सर्दार अपने अपने गिरोह समेत शामिल होते जाते थे. हिज्री ११३३ ता० १० मुहर्रम [वि० १७७७ कार्तिक शुक्ल ११ = ई० १७२० ता० १२ नोवेम्बर] को सुल्तान इब्राहीमके साथ नव्वे हज़ारसे ज़ियादह सवार इकट्ठे होगये थे. यह बात ख़फ़ीखांने सय्यद अब्दुल्लाहखांकी ज़बानी व दफ़्तरसे तहक़ीक़ करके लिखी है. चूड़ामणि जाट व मुहक्मसिंह (१) और आस पासके ज़मींदारोंकी जमइयत इसके सिवा थी. सब मिलाकर एक लाख सवारसे ज़ियादहका तख़्मीनह किया गया.

मुहम्मदशाहकी फ़ौजमें भी दुरुस्ती हो रही थी, और आंबेरके राजा धिराज सवाई जयसिंह व लाहोरके सूबहदार सैफ़ुद्दौलह दिलेरजंगकी भी राह देखीजाती थी; लेकिन् ये लोग दूर होनेके सबब शामिल न होसके; राजा धिराजकी तरफ़से तीन चार हज़ार सवारोंकी जमइयत बादशाही लश्करमें आ मिली, और बाज़ बाज़ दूसरे सर्दार भी आगये; लेकिन् सुल्तान इब्राहीमकी फ़ौजके आगे मुहम्मदशाहकी फ़ौज आधी भी न थी, जिसमें भी मुहक्मसिंह वगैरह सर्दार सय्यदोंसे मिलावट रखते थे. मुहम्मदशाहने हैदरक़ुलीखांको हरावल व तोपख़ानहका अफ़्सर बनाया; सआदतखां बहादुर व मुहम्मदखां बंगशको दाहिनी तरफ़का इख़्तियार दिया; समसामुद्दौलह व नुस्रतयारखां व साबितखां वगैरहको बाईं तरफ़ रक्खा. आज़मखां वगैरहको मददगार फ़ौजका अफ़्सर बनाया; वज़ीर आज़म वगैरहको अपने साथ रक्खा; मीर जुम्लह, मीर इनायतुल्लाहखां, ज़फ़रखां, इस्लामखां, राजा गोपालसिंह भदौरिया और राजा बहादुर वगैरहको बहीर (डेरों) की हिफ़ाज़तके लिये मुक़र्रर किया; असदअलीखां, सैफ़ुल्लाहखां, महामिदखां, अमीनुद्दीनखां, व राजा धिराज सवाई जयसिंहकी फ़ौज वगैरहको जुरुन्गार बुरुन्गारकी मदद और ज़नानख़ानेकी हिफ़ाज़तके लिये तईनात किया.

फ़ौजकी तर्तीब होने बाद इसी सालकी ता० १३ मुहर्रम [वि० कार्तिक

---

(१) चूड़ामणि जाट खुद आया, और मुहक्मसिंह मुहम्मदशाहके साथ था, उसकी जमइयत यहां आ मिली.

शुक्ल १४ = ई० ता० १५ नोवेम्बर] की रातको नागोरवाला मुह्कमसिंह, खुदादादखां और खाने मिर्ज़ा सात आठ सौ सवारों समेत बादशाही लश्करमेंसे अब्दुल्लाहखांके पास चले गये. दूसरे दिन सुब्ह होतेही बादशाह लड़ाईके लिये हाथीपर सवार हुए, और उसी वक्त अब्दुल्लाहखांके दीवान रत्नचन्दका सिर काटा गया, जो मुहम्मदशाहकी फ़ौजमें क़ैद था. हसनपुरके पास दो पहरके वक्त दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ; तोप, बन्दूक़ और बानोंसे ऐसी बहादुराना लड़ाई हुई, कि दोनों तरफ़के सूर वीरोंने अपनी मुराद पूरी करनेका मौक़ा पाया; लड़ते लड़ते ता० १४ की रात होगई, लेकिन् चन्द्रकी चांदनीमें दिनके मानिन्द तरफ़ैनके बहादुर लड़ते रहे. मुहम्मदशाहकी तरफ़से हैदरकुलीख़ांने तोपख़ानहसे ऐसे गोले बर्साये कि अब्दुल्लाहखांकी फ़ौजमें ख़लल आगया; और बहुतसे आदमी जान लेकर भागे. पिछली रात तक एक लाख सवारमेंसे कुल सत्तरह अठारह हज़ार सवार अब्दुल्लाहखांके साथ बाक़ी रहगये; और सूर्य निकलने तक नागौर वाला मुह्कमसिंह भी भाग गया. हिज्री ता० १४ मुहर्रम (१) [वि० कार्तिक शुक्ल १५ = ई० ता० १६ नोवेम्बर] की प्रभातको मुहम्मदशाहने हमलह करनेका हुक्म दिया, और अब्दुल्लाहखांका भाई नज्मुद्दीनअलीखां अपने साथियों समेत आगे बढ़ा; इस वक्त बाक़ी बचेहुए बहादुर खूब दिल खोलकर लड़े, और अब्दुल्लाहखांकी फ़ौजके सर्दार शहामतखां, फ़त्हयारखां, तहव्वुरअलीखां, अब्दुलक़दीरखां, अब्दुलग़नीखां, मुहयुद्दीनखां, सिब्ग़तुल्लाहखां वग़ैरह बहादुरीके साथ मारे गये. बादशाही लश्करमेंसे दर्वेशअलीखां, अब्दुन्नबीखां, मयाराम मुन्शी और मुहम्मद जाफ़र वग़ैरह काम आये. आख़िरकार नज्मुद्दीनअलीखां बहुत ज़ख़्मी हुआ, जिसकी मददको हाथीपर सवार होकर सय्यद अब्दुल्लाहखां पहुंचा; चूड़ामणि जाटने डेरोंकी तरफ़ कई हमले किये; फिर वह भी अब्दुल्लाहखांकी मददको आगया, और खास बादशाहसे मुक़ाबलह हुआ. इस हमलहसे बादशाही फ़ौजके पैर उखड़ा चाहते थे, लेकिन् हैदरकुलीखां, सआदतखां और मुहम्मदखां वग़ैरह मददको पहुंच गये; सख़्त लड़ाई होनेपर सय्यद अब्दुल्लाहखां हाथीसे उतरा; उस वक्त उसके साथ सिर्फ़ दो तीन हज़ार सवार बाक़ी रहे थे, वह भी उसे हाथीपर न देख कर भाग निकले. अब्दुल्लाहखांको हैदरकुलीख़ांने गिरिफ़्तार करलिया, और रिसालेका बख़्शी सय्यदअलीखां भी पकड़ा गया; बाक़ी बहुतसे अफ़्सर बादशाही फ़ौजमें आमिले; सुल्तान इब्राहीम भी पकड़े आये.

हिज्री ११३३ ता० १४ मुहर्रम [वि० १७७७ कार्तिक शुक्ल १५ = ई० १७२०

---

(१) हिज्री सन्के हिसाबमें तारीख़ शामसे शुरू होती है.

ता० १६ नोवेम्बर] की शामको मुहम्मदशाहकी फ़ौजमें फ़त्हके शादियाने बजगये, और तोपख़ानह व अस्बाब वग़ैरह सब बादशाही ज़ब्तीमें आया; इनायतुल्लाहख़ांको दिल्ली भेजकर सय्यदोंके ख़ज़ाने व अस्बाब वग़ैरहका बन्दोबस्त करादिया. हिज्री ता० १६ मुहर्रम [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण २ = ई० ता० १८ नोवेम्बर] को कूच दर कूच बादशाह भी दिल्लीके क़रीब पहुंचे, और सबको कारगुज़ारीके मुवाफ़िक़ मन्सब, इन्आम व इक्राम दिया. हिज्री ता० २२ मुहर्रम [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण ८ = ई० ता० २४ नोवेम्बर] को बादशाह क़िलेमें दाख़िल हुए. हिज्री शुरू सफ़र [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल २ = ई० ता० १ डिसेम्बर] में राजाधिराज जयसिंह आंबेरसे, और दयाबहादुरका बेटा राजा गिरधर नागर ब्राह्मण अवधसे बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुए; राजाधिराजकी अर्ज़से क़ह्त वग़ैरहकी तक्लीफ़के सबब जिज़्यह मुआफ़ होगया. समसामुद्दौलह क़मरुद्दीनख़ां और हैदरक़ुलीख़ांको जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहपर चढ़ाईके लिये तय्यार किया; लेकिन् ख़ज़ानेकी कमीके सबब समसामुद्दौलहने इस चढ़ाईको बन्द रक्खा. दक्षिणसे निज़ामुल्मुल्कके आनेकी ख़बर सुनकर महाराजा अजीतसिंहने अहमदाबादकी सूबहदारीका इस्तिअ्फ़ा भेजकर ताबेदारीका इक़ार करलिया, सिर्फ़ अजमेर अपने क़ब्ज़ेमें रखना चाहा; अहमदाबादकी सूबहदारी हैदरक़ुलीख़ांको मिली.

हिज्री ११३४ ता० २२ रबीउस्सानी [वि० १७७८ फाल्गुन् कृष्ण ८ = ई० १७२२ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को निज़ामुल्मुल्क बादशाही हुज़ूरमें दिल्ली आया; और ता० ५ जमादियुल्अव्वल [वि० फाल्गुन् शुक्ल ६ = ई० ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को विज़ारतका ओहदह, जड़ाऊ क़लम्दान, हीरेकी अंगूठी, ख़िलअ्त व ख़ंजर बादशाहकी तरफ़से पाया. इस वज़ीरने बादशाहतका अच्छा इन्तिज़ाम करना चाहा, लेकिन् बदमआश लोग बादशाहके मुँह लग रहे थे, जिससे उसका कुछ बस न चला. इस ख़राब हालतको देखकर हैदरक़ुलीख़ां अहमदाबादकी सूबहदारीपर चला गया. हिज्री ११३४ ता० ३० ज़िल्हिज [वि० १७७९ आश्विन शुक्ल १ = ई० १७२२ ता० १२ ऑक्टोबर] को सय्यद अब्दुल्लाहख़ां मरगया, जिसे ज़हर दिया जाना भी लिखा है. अब वज़ीर निज़ामुल्मुल्कसे भी चुग़लख़ोर लोगोंने बादशाहको बहकाया; जो कोई नेक बात वज़ीर कहता, उसको उलटी बताते. ऐसी हालत देखकर निज़ामुल्मुल्क शिकारके बहानेसे निकला, और गंगाके किनारे सोरम तक पहुंचा, कि दक्षिणसे ख़बर मिली, कि मरहटे मालवा और गुजरात तक लूटमार करने लगे. तब वज़ीर अर्ज़ीके ज़रीएसे बादशाहसे रुख़्सत

लेकर दक्षिणको चला, जिसकी रवानगी सुनकर मरहटे नर्बदासे वापस दक्षिणको चलेगये; लेकिन् इसी अ़र्सेमें बादशाहने मुहम्मद अमीनख़ांके बेटे क़मरुद्दीनख़ांको विज़ारतका उ़हदह देदिया. ऐसी ख़राब ख़बरें सुनकर निज़ामुल्मुल्क, जो बादशाहके पास आनेका इरादह रखता था, बेदिल होकर दक्षिणको चलागया; और हिज्री ११३६ ता० आख़िर रमज़ान [वि० १७८१ आषाढ़ शुक्ल १ = ई० १७२४ ता० २३ जून] को औरंगाबाद पहुंचा.

बादशाहने मुबारिज़ख़ां इ़मादुल्मुल्कको लिख भेजा, कि तुम निज़ामुल्मुल्कको मार डालोगे, तो सारे दक्षिणकी सूबहदारी तुमको मिलेगी, जिससे वह निज़ामुल्मुल्कका दुश्मन होगया. निज़ामुल्मुल्कने बहुतेरा समझाया, लेकिन् उसने न माना; हैदराबादसे मुबारिज़ख़ां औरंगाबादकी तरफ़ रवानह हुआ, और निज़ामुल्मुल्क भी मुक़ाबलह को चला; बरारके इ़लाक़हमें सक्करखेड़ेके पास, जो औरंगाबादसे चालीस कोस है, हिज्री ११३७ ता० २३ मुहर्रम [वि० १७८१ कार्तिक कृष्ण ८ = ई० १७२४ ता० १२ ऑक्टोबर] को दोनोंका मुक़ाबलह हुआ; लड़ाई होनेके बाद मुबारिज़ख़ां कई सर्दारों व अपने दो बेटों समेत मारागया, और दो बेटे व कई सर्दार ज़ख़्मी होकर गिरिफ़्तार हुए. निज़ामुल्मुल्क औरंगाबाद आया; और मुबारिज़ख़ांका बेटा ख़्वाजह अहमद, जो हैदराबादमें अपने बापका नाइब था, उसने मुहम्मदनगरके क़िलेपर क़ब्ज़ह किया. निज़ामुल्मुल्क औरंगाबादसे चलकर हिज्री ११३७ ता० ३० रबीउ़स्सानी [वि० १७८१ माघ शुक्ल १ = ई० १७२५ ता० १६ जैन्युअरी] को हैदराबाद पहुंचा. यह सुनकर ख़्वाजह अहमदख़ांने बहुतसी भीड़ इकट्ठी करली, लेकिन् निज़ामुल्मुल्कने रसाईसे क़िलेपर क़ब्ज़ह करलिया, और अन्वरुद्दीनख़ांको हैदराबादका सूबहदार बनाया. ग़रज़ कि दक्षिणका बहुत उ़म्दह बन्दोबस्त करलिया, जिससे मुहम्मदशाहने भी निज़ामुल्मुल्कके लिये 'आसिफ़जाह' का ख़िताब मए हाथी व जवाहिरके भेजा; लेकिन् कुछ दिनोंके बाद मुहम्मदशाहने गुजरातका सूबह निज़ामुल्मुल्कसे उतारना चाहा, क्योंकि उसका चचा हामिदख़ां अहमदाबादका नाइब सूबहदार मरहटोंसे मिलकर अक्सर फ़साद उठाया करता था. इस कामपर मुबारिज़ुल्मुल्क सर्बलन्दख़ांको मुक़र्रर किया, जो पहिले काबुलका सूबहदार और सय्यदोंका तरफ़दार था. एक करोड़ रुपया ख़र्चके लिये देकर हिज्री ज़िल्हिज [वि० १७८२ भाद्रपद = ई० सेप्टेम्बर] में सर्बलन्दख़ांको रवानह किया, जिसे हिज्री ११४३ ता० ८ रबीउ़स्सानी [वि० १७८७ आश्विन शुक्ल १० = ई० १७३० ता० २२ ऑक्टोबर] को जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने लड़ाई करके अहमदाबादसे निकाला; क्योंकि जब जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह अपने छोटे बेटे बख़्तसिंहके हाथसे मारेगये, तो

अहमदाबादकी सूबहदारी हैदरकुलीखां, निज़ामुल्मुल्क और उसके बाद सर्बलन्दखांको मिली थी; इस वक्त उक्त महाराजाके बड़े बेटे महाराजा अभयसिंहको फिर वही सूबहदारी मिली; लेकिन् सर्बलन्दखांने कब्ज़ह नहीं होने दिया, जिससे लड़ाई हुई. इसका ज़िक्र महाराणा दूसरे अमरसिंहके प्रकरण जोधपुरकी तवारीख़में लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ८४४ व ४५).

जब सर्बलन्दखां आगरे पहुंचा, तो बादशाहकी तरफ़से गुर्ज़ बर्दारोंने जाकर उसे रोका; यह कार्रवाई वज़ीर आसिफ़जाहकी तरफ़से हुई थी; लेकिन् बादशाह सर्बलन्दखांको चाहते थे. इसी सबबसे आसिफ़जाहने मरहटोंके सर्दार बाजीराव पेश्वाको उभारा, जिसने राजा गिरधर बहादुर, सूबहदार मालवा, व राजा अभयसिंह सूबहदार गुजरातपर हमले किये. इन मुलाज़िमोंकी अ़दावतसे मुग़लोंकी सल्तनत बर्बाद होने लगी. हिज्री ११४८ [वि० १७९२ = ई० १७३६] में मालवेकी सूबहदारी बादशाहकी तरफ़से बाजीराव पेश्वाके नामपर होगई, जिससे लुटेरे मुल्कके मालिक होगये, और गुजरात भी मरहटोंने महाराजा अभयसिंहसे छीन लिया; फिर यहां तक बढ़े, कि इलाहाबाद व आगरेके ज़िलेकी फ़ौज्दारीमें भी दस्ल देनेलगे; और गवालियर व अजमेर कब्ज़हमें करलिया. बुन्देलोंने मरहटोंकी हिमायतके लिये उनको अपने मुल्कमें बुला लिया; और बड़े बड़े मुसाहिब 'दौलह' व 'जंग' का ख़िताब रखने वाले मरहटोंसे सुलह चाहते थे, अल्बत्तह सआ़दतखां बुर्हानुल्मुल्क सूबहदार अवधने मुक़ाबलह करके मलहार रावको हिज्री ११४९ ता० २२ ज़िल्क़ाद [वि० १७९३ चैत्र कृष्ण ७ = ई० १७३६ ता० २२ मार्च] में शिकस्त दी. ये मलहार राव भदावरके राजाको बर्बाद कर रहा था, जो सआ़दतखांके हिमायतियोंमेंसे था. सैरुल्मुतअख़्ख़िरीनका बयान है, कि इस लड़ाईमें मलहार राव भी सख़्त ज़ख़्मी हुआ था.

बाजीराव दिल्लीके पास पहुंचा, और लूट खसोट की; जब फ़ौजें दौड़ धूप करके दिल्ली आईं, उसने लौटकर रेवाड़ी और पाटौदीकी तरफ़ लूट मचाई; फिर दक्षिणकी तरफ़ चला गया. तब बादशाहने अमीरुल्उमराकी सलाहसे मरहटोंको चौथ देना क़बूल करलिया, और इन बातोंसे लाचार होकर बादशाहने बहुत बड़े बड़े ख़िताब देकर निज़ामुल्मुल्कको दक्षिणसे बुलाया; वह हिज्री ११५० ता० १६ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७९४ श्रावण कृष्ण २ = ई० १७३७ ता० १५ जुलाई] को बादशाही हुज़ूरमें दिल्ली पहुंचा; बादशाहने आगरेकी सूबहदारी राजा धिराज जयसिंहसे व मालवाकी बाजी रावसे उतारकर आसिफ़जाह निज़ामुल्मुल्कके बेटे ग़ाज़ियुद्दीनखांके नामपर लिख दी, और इसी कारण निज़ामुल्मुल्क पेश्वासे लड़ाई करनेके इरादेपर

भूपालके पास पहुंचा; लेकिन् नादिरशाहकी हिन्दुस्तानपर चढ़ाई सुनकर उसने पेश्वासे सुलह करली, और दिल्ली चला आया. अब हम नादिरशाहके हिन्दुस्तानमें आनेका हाल शुरू करते हैं:-

नादिरशाहका हमलह.

नादिरशाह हिज्री ११०० ता० २८ मुहर्रम [वि० १७४५ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ = ई० १६८८ ता० २३ नोवेम्वर] शनिवारको मुल्क ईरानमें तूस शहरसे बीस कोसके फ़ासिलेपर दस्तजर्द क़िलेमें इमामकुलीवेगसे पैदा हुआ था, जिसका जन्म नाम नादिरकुलीवेग पड़ा, और वह क़ौम तुर्कमान व खानदान अफ़्शारमें था. वह जवानीमें ईरानके सफ़वी बादशाहोंका इज़्ज़तदार मुलाज़िम और सिपहसालार होगया. ईरानकी यह हालत थी, कि कन्धारसे इस्फ़हान तक पठान ग़ल्ज़ई, हिरातमें अब्दाली, शिर्वानातमें लकज़ई और ख़ास फ़ारिसमें सफ़वी मिर्ज़ा, किर्मानमें सय्यद अहमद, विलोचिस्तान व वन्दरोंमें सुल्तान मुहम्मद, जानकीमें अब्बास, गीलानमें इस्माईल, ख़ुरासानमें मलिक महमूद सीस्तानी, आज़र वायजान वगैरहमें रूमी, दरवन्दसे माज़िन्दरान तक रूसी और अस्तरावादमें तुर्कमान मुख़्तार बनगये थे; लेकिन् नादिरशाहने इन सबको शिकस्त देकर मुल्कपर क़ब्ज़ह करलिया. वह हिज्री ११४८ ता० २४ शव्वाल [वि० १७९२ चैत्र कृष्ण १० = ई० १७३६ ता० ७ मार्च] वृहस्पतिवार को सफ़वी बादशाह तहमास्प सानीको क़ैद करके आप ईरानके तख़्तपर बैठगया, और नादिरशाहके खिताबसे मश्हूर हुआ. उसने रूम व तूरान वगैरह मुल्कोंपर भी दबाव डाला.

हिन्दुस्तानपर नादिरशाहकी चढ़ाईकी बुन्याद इस तरह पड़ी, कि जब इस्फ़हानपर पठान क़ाबिज़ होगये, तो उन्हें नादिरने मार पीटकर निकाल दिया, और अलीमर्दानख़ां शामलूको ईरानसे हिन्दुस्तानमें भेजकर बादशाह मुहम्मदशाहको लिख भेजा, कि हमारे इलाक़ोंसे बाग़ी लोग भागकर जावें, तो काबुल वगैरह आपके सूबोंमें उन्हें पनाह न मिलनी चाहिये. इसका जवाब मुहम्मदशाहने मिठासके साथ लिख दिया; लेकिन् उस वक्त ख़ास दिल्लीके गिर्दनवाहका बन्दोबस्त ही ठीक नहीं था, काबुलकी ख़बरदारी कब मुम्किन थी. तब ईरानसे नादिरशाहने मुहम्मदअलीख़ां नामी दूसरा एल्ची भेजा, और यह लिखा, कि कन्धार, जो हमारे क़ब्ज़ेमें है, वहांके बाग़ी पठानोंको अपने इलाक़हमें न आने देवें. इसका भी यहांसे सर्सरी जवाब गया, कि हमने बन्दोबस्त करवा दिया है. दोनों काग़ज़ नादिरशाहने अपनी सिपाहसालारीके वक्त भेजे थे. तीसरी बार उसने ईरानका बादशाह बनने बाद हिज्री ११५० ता०

११ मुहर्रम [वि० १७९४ वैशाख शुक्ल १२ = ई० १७३७ ता० १२ मई] में मुहम्मदखां तुर्कमानको एल्ची बनाकर मुहम्मदशाहके पास भेजा, और दो काग़ज़, एक मुहम्मदशाहके, दूसरा बुर्हानुल्मुल्क सआदतखांके नाम पहिले लिखेहुए मज़्मूनके मुवाफ़िक़ रवानह किये. हिन्दुस्तानका यह हाल था, कि एल्चीको लुटेरोंने रास्तेमें ही लूट लिया, वह बेचारा बड़ी मुश्किलसे काग़ज़ लेकर मुहम्मदशाहके पास पहुंचा; लेकिन् उसे बेपर्वाईसे जवाब ही नहीं मिला. तब नादिरशाहने क़न्धारमें आकर अपने एल्चीके नाम फ़र्मान लिखा, कि तुम जिस कामके लिये गये थे, उसका क्या बन्दोबस्त हुआ, और अब तुम जल्दी यहां चले आओ.

क़न्धारमें नादिरशाह बहुत दिनों तक ख़तका इन्तिज़ार करता रहा, जब दिल्लीसे कुछ जवाब न मिला, और एल्ची ख़ाली लौट कर गया, तो हिज्री ११५१ ता० १ सफ़र [वि० १७९५ ज्येष्ठ शुक्ल २ = ई० १७३८ ता० २१ मई] को वह क़न्धारसे रवानह होकर ग़ज़नी और काबुलकी तरफ़ गया; हिज्री ता० २२ सफ़र [वि० आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० ता० ११ जून] को ग़ज़नी, और हिज्री ता० १२ रबीउ़ल्अव्वल [वि० आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० ता० १ जुलाई] को काबुल उसने अपने क़ब्ज़ेमें करलिया. उसी जगह मुहम्मदखां एल्चीकी अर्ज़ी पहुंची, कि बादशाहकी तरफ़से न हमको जवाब मिलता है, न रुख़्सत! यह पढ़कर एक अहदी चापारीके हाथ ता० २६ रबीउ़ल्अव्वल [वि० श्रावण कृष्ण १२ = ई० ता० १५ जुलाई] को मुहम्मदशाहके नाम फिर एक काग़ज़ लिख भेजा, जिसमें बहुत दोस्तीके लफ़्ज़ और सिर्फ़ पठानोंको सज़ा देनेका मत्लब था; लेकिन् वह बेचारा क़ासिद अफ़्ग़ानिस्तानकी हद्दसे भी बाहर न निकला था, कि मारा गया. तब हिज्री ता० रबीउ़स्सानी [वि० श्रावण = ई० ता० जुलाई] को बादशाह काबुलसे आगे चला, हिज्री ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० अधिक आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को जलालाबादपर क़ाबिज़ हुआ. वहां पहुंचने बाद उसने अपने शाहज़ादह रज़ाक़ुलीको बल्ख़से बुलाकर हिज्री ता० ३ शअ्बान [वि० कार्तिक शुक्ल ४ = ई० ता० १७ नोवेम्बर] को ईरान भेजदिया, ताकि वहांका मुल्क ख़ाली न रहे. दूसरे छोटे बेटे नस्रुल्लाहको अपने साथ रक्खा. काबुलके सूबहदार नासिरख़ांने, जो पिशावरमें रहता था, बीस हज़ार पठानोंको जमा करके ख़ैबरका घाटा रोक लिया; लेकिन् नादिरशाह हिज्री ता० १३ शअ्बान [वि० कार्तिक शुक्ल १४ = ई० ता० २७ नोवेम्बर] को दूसरे रास्ते होकर नासिरख़ांके पास आपहुंचा, और मुक़ाबलहमें उसे गिरिफ़्तार करने बाद हिज्री ता० १५ रमज़ान [वि० पौष कृष्ण १ = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को पिशावरसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह

हुआ; वह अटकपर किश्तियोंका पुल बांधकर उतर आया. जब वह लाहौरके शालामार बाग़में पहुंचा, तो दूसरे दिन वहांका सूबहदार ज़करियाख़ां बीस लाख रुपये व कई हाथी लेकर हाज़िर हुआ (१), नादिरशाहने पेश्कश लेने बाद ख़िल्अ़त वग़ैरह देकर उसे सूबहदारीपर बहाल रक्खा. यह सूबहदार मुहम्मदशाहके वज़ीर क़मरुद्दीनख़ांका बहिनोई और अब्दुस्समदख़ां दिलेरजंगका बेटा था. फ़ख़्रुद्दौलहख़ां कश्मीरका नाज़िम, जिसे कश्मीरियोंने निकालदिया था, और लाहौरमें रहता था, वह नादिरशाहके पास गया; उसे भी कश्मीरका सूबह मिलगया; और नासिरख़ां काबुलका सूबहदार, जो नादिरशाहके साथ क़ैदमें था, लाहौरसे काबुल व पिशावरकी सूबहदारीपर भेज दिया गया. इस दरजह तक नौबत पहुंचने पर भी मुहम्मदशाहको कुछ ख़बर नहीं थी. सैरुलमुतअख़्ख़िरीन वाला लिखता है, कि किसीने नादिरशाहके काबुल वग़ैरहमें आजानेका ज़िक्र हुज़ूरमें किया, तो हाज़िर रहने वाले लोगोंने उसे ठठ्ठेमें उड़ादिया; और कह दिया, कि तूरानी निज़ामुलमुल्क वग़ैरह अपना बड़प्पन दिखलानेको शैख़ियां मारते हैं.

जब नादिरशाहकी ज़ियादह अफ़्वाह सुनीगई, तो मुहम्मदशाह फ़ौज समेत दिल्ली से रवानह होकर दो महीनेमें कर्नाल पहुंचा, जो दिल्लीसे सिर्फ़ चार मन्ज़िल था. सम्सामुद्दौलह ख़ानिदौरांने राजाधिराज जयसिंह वग़ैरहको बहुत कुछ लिखा, पर कोई न आया. मुहम्मदशाह यहां तक ग़ाफ़िल थे, कि नादिरशाह क़रीब आ गया, और हिन्दुस्तानी घसकटे ज़ख़्मी होकर फ़र्यादी आये, तब यक़ीन हुआ, कि वह आपहुंचा है. अब हम नादिरशाहका ज़िक्र 'जहां कुशाय नादिरी' से लिखते हैं:-

नादिरशाहने फिर मुहम्मदशाहके नाम दोस्ती और नर्मीसे लिखभेजा, कि ये पठान लोग हमारे मुल्क ईरानको ही तक्लीफ़ नहीं देते, बल्कि इन्होंने हिन्दुस्तानमें भी पूरी अब्तरी डाल रक्खी है; और हम इन्हें सज़ा देनेके सिवाय कोई दूसरी बात नहीं चाहते. इसीलिये पहिले जो एल्ची भेजे, उनपर भी आपने हमारे आख़िरी एल्ची मुहम्मदख़ांको रुख़्सत न दी; और न जवाब दिया, तो जिन लोगोंको हमने सज़ा देना चाहा है, उन्हें सज़ा देने बाद हम आपकी सुफ़ारिशको मन्ज़ूर करेंगे. यह ख़त रवानह करके उसने हिज्री ११५१ ता० २६ शव्वाल [वि० १७९५ माघ कृष्ण ११ = ई० १७३९ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को लाहौरसे कूच किया; और हिज्री ११५१ ता० ७ ज़िल्क़ाद [वि० १७९५ माघ शुक्ल ८ = ई० १७३९ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को सर्हिन्दमें पहुंचा. वह हिज्री ता०

---

(१) सैरुलमुतअख़्ख़िरीनमें लिखा है, कि ज़करियाख़ांने पहिले कुछ मुक़ाबलह किया, फिर पेश्कश देकर ताबेदारी क़बूल की.

९ को अंबालेमें अपना सब खटला छोड़कर फ़त्हअलीख़ां अफ़्शारको हिफ़ाज़तके लिये मुक़र्रर करने बाद हिज्री ता० १० को फ़ौज समेत पन्द्रह कोस शाहाबादमें दाख़िल हुआ. उसकी फ़ौजका अगला हिस्सह, जिसे क़रावुल बोलते हैं, उसी रातको मुहम्मदशाहकी फ़ौजके इर्द गिर्द आपहुंचा; और उसने ता० ११ में कई आदमियोंको नादिरशाहके पास पकड़कर भेजादिया. क़रावुल अज़ीमाबादमें ठहरा, जो कर्नालसे छः कोसपर है. हिज्री ता० १३ को नादिरशाह अज़ीमाबादमें आगया, और १४ तारीख़को उसने मुहम्मदशाहकी फ़ौजके मुक़ाबिल तीन कोसके फ़ासिले पर अपना लश्कर ला जमाया. वह आप घोड़ेपर सवार होकर मुहम्मदशाहके लश्करको अपनी आंखसे देख आया.

जब नादिरशाहको ख़बर मिली, कि अवधका सूबहदार बुर्हानुल्मुल्क सआदतख़ां तीस हज़ार फ़ौज लेकर मुहम्मदशाहकी मददको आया है, तो उसने उसके मुक़ाबलेके लिये एक गिरोह मुक़र्रर करदिया; लेकिन् सआदतख़ां दूसरे रास्तेसे मुहम्मदशाहके पास जापहुंचा, और नादिरशाह उस जगहसे कूच करके मुहम्मदशाहकी फ़ौजसे पूर्व तरफ़ डेढ कोसके फ़ासिलेपर आजमा. अब हम दिल्लीवालोंका हाल सैरुल मुतअख़्ख़िरीन वग़ैरह किताबोंसे यहां दर्ज करते हैं, क्यों कि जहां कुशाय नादिरीका मुसन्निफ़ मुन्शी मिर्ज़ा मुहम्मद महदी अपने बादशाहके बड़प्पनकी बातोंको लिखकर मुहम्मदशाहके सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीका हाल जानकारी या अजानकारीसे छोड़ गया है; लेकिन् महीना व तारीख़ हम उसी किताबसे दर्ज करेंगे.

मुहम्मदशाह, सआदतख़ां बुर्हानुल्मुल्कके आनेका इन्तिज़ार देख रहा था, कि हिज्री ११५१ ता० १५ ज़िल्क़ाद [वि० १७९५ फाल्गुन् कृष्ण १ = ई० १७३९ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को उसके आनेकी ख़बर मिली, और ख़ानदौरां अमीरुल्उमरा आध कोस पेश्वाई करके लेआया. बादशाहने उसीके पास अपने डेरे जमानेका हुक्म दिया; इसी वक़्त बुर्हानुल्मुल्कने सुना, कि जो डेरे आते थे, उनको नादिरशाहकी फ़ौज लूट रही है. वह इस ग़ैरतसे उसी दम मददको चढ़ दौड़ा; निज़ामुल्मुल्क वग़ैरह सर्दारों और बादशाहके मना करनेपर भी वह चलदिया, और पीछेसे ख़ानदौरां भी उसकी मददको पहुंचा. नादिरशाह भी तय्यार हुआ, क़रीब दो घंटेके लड़ाई रही; अन्तमें कुल फ़ौज बुर्हानुल्मुल्क व ख़ानदौरांकी बर्बाद होकर ख़ुद अमीरुल्उमरा ख़ानदौरां सख़्त ज़ख़्मी हुआ, और डेरेपर आकर मरगया; मुज़फ़्फ़रख़ां उसका भाई व उसका बड़ा बेटा अलीअहमदख़ां, शाहज़ादख़ां, यादगारख़ां, मिर्ज़ा आक़िलबेग वग़ैरह अक्सर सर्दार मारे गये. अमीरुल्उमरा ख़ानदौरां जांकन्दनीकी हालतमें डेरोंपर लायागया था, उस वक़्त उसने आंख खोलकर मुहम्मदशाहको कहलाया, कि

नादिरशाहको दिल्ली न लेजाना, और बादशाहसे मुलाक़ात भी न कराना; जैसे होसके, इस बलाको वापस लौटा देना. यह कहकर वह मरगया. बुर्हानुल्मुल्क क़ैद होकर नादिरशाहके पास लाया गया, और शाम होजानेसे लड़ाई बन्द होगई. नादिरशाह डेरोंमें पहुंचा, तो बुर्हानुल्मुल्कने दो करोड़ रुपया देना क़बूल करके उसे ईरानको लौट जानेपर राज़ी करलिया. इस खुश ख़बरीका रुक़ा बादशाह और निज़ामुल्मुल्कके नाम लिखा, जिसे देखते ही ये बहुत खुश हुए, और मुहम्मदशाहने आसिफ़जाह निज़ामुल्मुल्कको नादिरशाहके पास भेजकर दो करोड़ रुपयेका पक्का इक़ार करलिया; आसिफ़जाह वापस आया, तो मुहम्मदशाहने खुश होकर उसे अमीरुल्उमराका ख़िताब देदिया, जिसका उम्मेदवार बुर्हानुल्मुल्क था. यह सुनकर बुर्हानुल्मुल्क नाराज़ हुआ, कि ख़िदमत मैंने की, और ख़िताब आसिफ़जाहको मिला; इसलिये उसने फिर नादिरशाहको बहकाया.

हिज्री ता० २० ज़िल्क़ाद [वि० फाल्गुन् कृष्ण ६ = ई० ता० २ मार्च] को मुहम्मदशाह, आसिफ़जाहकी सलाहसे नादिरशाहकी मुलाक़ातको गया, तब बुर्हानुल्मुल्कने नादिरशाहसे कहा, कि सिवाय आसिफ़जाहके और कोई लाइक़ आदमी नहीं है, और दो करोड़की क्या हक़ीक़त है, मैं इतने रुपये अपने ही घरसे नज़ करूंगा; आप दिल्ली तक चलिये, वहां बहुतसा ख़ज़ानह आपको मिलेगा. तब नादिरशाहने आसिफ़जाहको अपने लश्करमें बुलाकर कहा, कि बादशाह मुहम्मदशाहको बुलाओ; लाचार उसने अर्ज़ी लिखी, और बादशाहको जाना पड़ा. नादिरशाहने उसे एक दूसरे डेरेमें ठहराकर नज़र क़ैदीके मुवाफ़िक़ रक्खा. इसी तरह वज़ीर क़मरुद्दीनख़ांको भी अपने डेरेमें बुलालिया, और बुर्हानुल्मुल्कको तह्मास्प जलायरके साथ मुहम्मदशाहके फ़र्मान समेत दिल्ली भेजा, कि क़िला, ख़ज़ानह व कारख़ानोंकी कुंजियां लुत्फुल्लाहख़ां सादिक़ इनको सौंपदे, जो वहांका नाइब था. पीछेसे दोनों बादशाह भी चले, ता० ८ ज़िल्हिज [वि० फाल्गुन् शुक्ल ९ = ई० ता० २० मार्च] को मुहम्मदशाह, और ता० ९ को नादिरशाह दिल्लीके क़िलेमें दाख़िल हुए. दूसरे दिन ज़िल्हिजकी ईद, नौरोज़का जश्न और शुक्रवारका दिन था, जामिअ् मस्जिद वग़ैरहमें नादिरशाहके नामका खुत्बा पढ़ागया (१).

ता० ११ को तीसरे पहर शहरमें यह अफ्वाह मश्हूर हुई, कि नादिरशाह मारागया. इससे शहरके बदमआशोंने ईरानियोंको मारना शुरू किया; तमाम रात यही हाल रहा. नादिरशाहने यह ख़बर सुनकर अपनी फ़ौजमें कहला भेजा, कि जो जहां मौजूद है, वहीं तईनात रहे; और हिन्दुस्तानी उनपर आवें, तो रोके;

(१) जहांकुशाय नादिरीमें शुक्रवारको ता० ९ लिखी है.

इस हंगामहमें सात सौ ईरानी मारेगये. दूसरे दिन प्रभात ता० १२ को नादिरशाह घोड़ेपर सवार होकर रौशनुद्दौलहकी सुनहरी मस्जिदमें आया, और क़त्ल आमका हुक्म दिया, कि जिस महल्लेमें एक ईरानी मरा पाओ, वहांके सब आदमियोंको क़त्ल करो; और ऐसा ही हुआ. सैरुल् मुतअख़्ख़िरीनमें दो पहर तक, और जहांकुशाय नादिरीमें शाम तक क़त्ल होना व तीस हज़ार आदमी माराजाना लिखा है; आसिफ़जाह व क़मरुद्दीनख़ांको भेजकर मुहम्मदशाहके मुआफ़ी मांगनेपर अम्न व आमानका हुक्म हुआ. बुर्हानुल्मुल्कने अपने घरसे दो करोड़ रुपया देनेका वादह किया था, लेकिन् वह क़त्ल आम होनेके एक दिन पहिले अदीठ वग़ैरहकी बीमारीसे मरगया, इसलिये शेरजंगख़ां सर्दार एक हज़ार जमइयत समेत अवधको भेजागया, जो वहां जाकर उसके दामादसे रुपये लेआया. नादिरशाहने 'तख़्त ताऊस', ज़ेवर, ख़ज़ानह वग़ैरह, जो कुछ हाथलगा, लिया; और अपने छोटे बेटे नस्रुल्लाह मिर्ज़ाकी शादी शाहज़ादह यज़्दांबख़्शकी बेटीके साथ की, जो दावरबख़्शका बेटा और शाहज़ादह मुरादबख़्शका पोता था.

ख़ानदान आलमगीरीमें बादशाही ख़ज़ानह वग़ैरहसे अस्सी करोड़ रुपयेका माल नादिरशाहको मिलना लिखा है, और बाबू शिवप्रसादने भूगोल हस्तामलकमें सत्तर करोड़ दर्ज किया है. नादिरशाहने तमाम सूबह सिन्ध व किसी क़द्र पंजाब और काबुलको ईरानमें मिला लिया, और एक बड़े भारी दर्बारमें अपने हाथसे मुहम्मदशाहके सिरपर बादशाही ताज रखकर सब सर्दारोंको ख़िल्अत देने बाद बहुतसी नसीहतें कीं, और हिज्री ११५२ ता० ७ सफ़र [वि० १७९६ वैशाख शुक्ल ८ = ई० १७३९ ता० १६ मई] को दिल्लीमें ५७ दिन रहकर कूच करगया; ईरानमें पहुंचने पर उसने अपने मुल्ककी कुल रिआयाको तीन वर्षका हासिल छोड़ दिया; सारी ईरानी सिपाह लूटमार व इनआम इक्रामसे मालामाल होगई. नादिरशाह हिज्री ११६० ता० ११ जमादियुस्सानी [वि० १८०४ ज्येष्ठ शुक्ल १२ = ई० १७४७ ता० २२ मई] को मुल्क ईरानके ज़िले फ़त्हाबादमें मारा गया. नादिरशाह, जो इस मुल्कसे हज़ारों आदमियोंकी जान और करोड़ोंका माल लेगया, यह सिर्फ़ मुहम्मदशाहके सर्दारोंकी अदावतका नतीजह था. सआदतख़ां बुर्हानुल्मुल्क भी बड़ी भारी बदनामीका दाग़ अपने नामपर लगा गया. अवधमें उसका दामाद अबुल्मन्सूरख़ां सफ़्दरजंग क़ाइम मक़ाम हुआ, जिसकी औलादमें अवधकी रियासत वाजिदअलीशाह तक क़ाइम रही जो हिज्री १३०५ [वि० १९४४ = ई० १८८७] में तीस वर्ष सर्कार अंग्रेज़ीसे पेन्शन पाने बाद कलकत्ता मक़ामपर गुज़र गया. यह धक्का दिल्लीकी डूबती हुई बादशाहतको ऐसा लगा, कि फिर दम लेनेका मौक़ा न मिला, और बादशाही अमीरोंकी

ना इत्तिफ़ाक़ी इस बड़े नसीहत आमेज़ सफ़्हेसे भी न मिटी, बल्कि दिन दिन बढ़ती गई. मुहम्मदशाहकी अख़ीर बादशाहतमें अह्मदशाह अब्दाली दुर्रानीका हमलह जामिउत्तवारीख़में मौलवी फ़क़ीर मुहम्मद इस तरह लिखता है:-

"यह अह्मदशाह हिरातका रहनेवाला मुहम्मद ज़मांख़ांका बेटा और नादिर-शाहका मुलाज़िम था; वह नादिरशाहके मारेजानेपर लश्करसे भागकर मश्हद पहुंचा, और उसने अपनी क़ौमका एक गिरोह इकट्ठा करके काबुल व कन्धारको अपने क़ब्ज़हमें करलिया. फिर वहांसे सात हज़ार सवार लेकर पेशावर होता हुआ लाहोर पहुंचा, जहांका सूबहदार शाह नवाज़ख़ां उससे शिकस्त खाकर दिल्लीकी तरफ़ भागा; अह्मदशाह भी दिल्लीकी तरफ़ चला. मुहम्मदशाहने यह ख़बर सुनकर अपने वली अह्द शाहज़ादह सुल्तान अह्मदको फ़ौज व तोपख़ानह समेत मुक़ाबलहको रवानह किया; सहिन्दके पास हिज्री ११६१ ता० १५ रबीउ़ल्अव्वल [वि०१८०४ चैत्र कृष्ण २ = ई० १७४८ ता० १६ मार्च] से हि० ता० २८ [वि० चैत्र कृष्ण १४ = ई० ता०२९ मार्च] तक मुक़ाबलह रहा, जिसमें मुहम्मदशाहका वज़ीर क़मरुद्दीनख़ां तोपका गोला लगनेसे मारा गया, और अह्मदशाह अब्दाली शिकस्त खाकर काबुल कन्धारकी तरफ़ चलागया; शाहज़ादहकी फ़त्ह हुई. बादशाह इसको वज़ीरकी जांफ़िशानी और सफ़्दरजंग व मुईनुलमुल्ककी तनदिहीका नतीजह समझकर खुश हुआ; और क़मरुद्दीनख़ांके बेटे मुईनुलमुल्कको लाहोर व मुल्तानकी सूबह्दारी दी. इसके बाद इसी सन्में हिज्री ता० २७ रबीउ़स्सानी [वि० १८०५ वैशाख कृष्ण १३ = ई० १७४८ ता० २६ एप्रिल] को मुहम्मदशाहका इन्तिक़ाल होगया, जो निज़ामुद्दीन औलियाकी दर्गाहमें अपनी माकी क़ब्रके पास दफ़्न किया गया.

तीमूरके ख़ानदानमें हिन्दुस्तानकी बादशाहत बाबरसे आलमगीर तक तरक़्क़ी पाती रही, और शाहआलम बहादुरशाहसे मुहम्मदशाहकी अख़ीर हुकूमत तक दिन दिन तनुज़्ज़ुलीकी हालतमें आती गई, यहां तक कि मुहम्मदशाहके मरने बाद नामको बादशाहत थी; न बादशाहको कोई मानता था, न सूबहदारियां शाही हुक्मसे मिलती थीं; सिर्फ़ दिल्लीमें 'ख़ान-' 'जंग-' 'दौला-' 'मुल्क' वग़ैरह लंबे चौड़े ख़िताब देकर बेचारे बादशाह अपनी जान बचाते थे; लेकिन् इसपर भी बड़े बड़े ख़िताब पानेवाले नालाइक़ लोग एकका गला काटते, और दूसरेको तख़्तपर बिठाते थे. इस वास्ते हम तीमूरिया ख़ानदानकी तवारीख़का इस जगह ख़ातिमह करना मुनासिब जानकर पिछले बादशाहोंका मुख़्तसर हाल दर्ज करते हैं, जिनमें दो तो मरहटोंके खिलौने और तीन अंग्रेज़ोंके पेन्शनदार थे. इन पांचों बादशाहोंका हाल इस तरहपर है:-

मुजाहिदुद्दीन, अह्मदशाह बहादुर, बादशाह गाज़ी.

यह हिज्री ११३८ ता० २७ रबीउस्सानी [वि० १७८२ पौष कृष्ण १३ = ई० १७२६ ता० ३ जैन्युअरी] को अद्हम बाईसे दिल्लीमें पैदा हुआ, और हिज्री ११६१ ता० २ जमादियुल् अव्वल [वि० १८०५ वैशाख शुक्ल ३ = ई० १७४८ ता० २ मई] को पानीपतमें अपने बाप मुहम्मदशाहके मरनेकी खबर मिलनेपर तख्तनशीन हुआ. सफ्दरजंगने नज्र दी, और बादशाह उसे वज़ीर बनाकर दिल्ली आया. कुछ अर्से बाद अह्मदशाह अब्दालीने हिन्दुस्तानपर दो बारह चढ़ाई की, लेकिन् लाहोरके सूबहदार मुईनुलमुल्कने उसे सियालकोट, औरंगाबाद, और गुजरात वगैरह चार पर्गने देकर पीछा लौटा दिया. तीसरी बार अह्मदशाह अब्दाली फिर आया, और लाहोरमें मुईनुलमुल्कने चार महीने तक लड़नेके बाद उसकी ताबेदारी कुबूल की; अब्दाली लाहोर और मुल्तानको अपने मुल्कमें मिलाने बाद उसे नाइब बनाकर लौट गया. अह्मदशाहकी बादशाहत कमज़ोर होगई थी, निज़ामुलमुल्क आसिफ्-जाह गाज़ियुद्दीनखांके बेटे इमादुलमुल्कने, जो अपने बापके मरने बाद मीरबख्शी होगया था, मल्हारराव हुल्कर और समसामुद्दौलहको मिलाकर विज़ारतका उहदह लिया; और अह्मदशाहको लाचार देना पड़ा. इसी वज़ीरने हिज्री ११६७ ता० १० शअ्बान [वि० १८११ ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ई० १७५४ ता० २ जून] में बेचारे अह्मदशाह बादशाहको उसकी मा समेत कैद करके आंखोंमें सलाई फेर दी, जो बीस वर्ष कैद रहकर हिज्री ११८८ ता० २७ शव्वाल [वि० १८३१ पौष कृष्ण १३ = ई० १७७५ ता० १ जैन्युअरी] को मर गया. इसकी लाश मर्यम मकानीके मक्बरेमें गाड़ी गई.

इसके बाद मुइज़ुद्दीन जहांदारशाहके छोटे बेटे अज़ीज़ुद्दीनको तख्तपर बिठाया, जो फ़र्रुखसियरके वक्से कैद था.

अबुलअद्ल अज़ीज़ुद्दीन मुहम्मद, आलमगीर सानी, बादशाह.

इसका जन्म हिज्री १०९९ [वि० १७४५ = ई० १६८८] को अनोपबाईके पेटसे मुल्तानमें हुआ था. इमादुलमुल्क इसे तख्तपर बिठाकर आप खुद मुख्तार मुसाहिब होगया. वह बादशाहके वलीअह्द आलीगुहर वगैरहको साथ लेकर लुधियाना पहुंचा, इस इरादेसे कि अह्मदशाह अब्दालीके मुलाज़िमोंको निकालकर लाहोर व मुल्तान कब्ज़हमें करलेवे; लाहोरका सूबहदार मुईनुलमुल्क इन दिनोंमें मरगया

था, लेकिन् उसकी बीबी लाहोरपर क़ाबिज़ थी; इमादुल्मुल्कने उसे फ़ौज भेजकर बुलालिया, और अपनी तरफ़से आदीनाबेगको लाहोरका सूबह बना आया. यह ख़बर पाते ही अह्मदशाह अब्दाली लाहोर पहुंचा; आदीनाबेगख़ां भागा, और अह्मदशाह वहां क़ब्ज़ह करके दिल्ली आया; बादशाहसे मुलाक़ात करके एक महीने तक दिल्लीको ख़ूब लूटा, और अपने बेटे तीमूरशाहकी शादी बादशाहकी भतीजीके साथ की. फिर आगे बढ़कर मथुरा व बल्लमगढ़को लूटने बाद सूरजमल जाटको सज़ा देनेका इरादह था, क्योंकि वह आलमगीर सानीके बर्ख़िलाफ़ फ़साद करता था; परन्तु अब्दालीशाह अपनी फ़ौजमें वबा फैलनेके सबब दिल्लीमें लौट आया, और मुहम्मदशाहकी बेटी मलिकह ज़मानीसे अपनी शादी की. इसके बाद अपने बेटे तीमूरशाहको लाहोर, मुल्तान व ठठेका मालिक बनाकर आप कन्धार चलागया. उसके जाने बाद इमादुल्मुल्कने मरहटोंकी मददसे दिल्लीको आ घेरा, पैंतालीस दिन तक घेरा रहने बाद सुलह होगई; नजीबुद्दौलह, जिसे अब्दालीशाह वज़ीर बना गया था, निकलकर सहारनपुर चला गया.

इमादुल्मुल्क व बादशाहके दिलोंमें सफ़ाई न थी, तो भी इमादुल्मुल्क कारोबारका मुख़्तार बन गया. बादशाहने इमादुल्मुल्कके डरसे अपने शाहज़ादह आलीगुहर को हांसी वग़ैरह जागीरमें देकर कुछ फ़ौज समेत वहां भेजदिया. इमादुल्मुल्कने बादशाहके नामके रुक़्के लिखकर शाहज़ादहको बुलालिया; और जब वह आगया, तो क़िलेमें जानेसे रोककर अलीमर्दानख़ांकी हवेलीमें ठहराया; शाहज़ादहको गिरिफ़्तार करनेके इरादहसे दस बारह हज़ार सवार भेजकर घेर लिया, और दीवार तोड़कर शाहज़ादहके बहुतसे साथियोंको मारडाला; लेकिन् शाहज़ादह बचे हुए साथियों समेत भाग निकला, और नजीबुद्दौलहके पास सहारनपुरमें आठ महीने तक रहा; वहांसे शुजाउद्दौलह जलालुद्दीन हैदरके पास लखनऊ चला गया. उसने ख़ातिर्दारीके साथ एक सौ एक अश्रफ़ी, एक लाख रुपया और दो हाथी नज़्र देकर विदा किया. वहांसे शाहज़ादह इलाहाबाद गया. इमादुल्मुल्कने इस अदावतसे नजीबुद्दौलह व शुजाउद्दौलहको बर्बाद करनेके लिये मरहटोंको दक्षिणसे अन्तरवेदकी तरफ़ भेजा; उन्होंने नजीबुद्दौलहको जा घेरा, चार महीने तक लड़ाई रही; तब शुजाउद्दौलह लखनऊसे उम्दह फ़ौज लेकर आ पहुंचा; और मरहटोंको क़त्ल व क़ैद करके दूर भगा दिया. इस फ़त्हके बाद सादुल्लाहख़ां, अलीमुहम्मदख़ांका बेटा, जिसकी औलादमें अब रामपुरके नव्वाब हैं, हाफ़िज़ रहमतख़ां, जिसकी औलादमें बरेलीके नव्वाब थे, दूंदेख़ां, जिसकी औलादमें मुरादाबादके रईस थे, पठान नजीबुद्दौलह समेत शुजाउद्दौलहसे

मिलगये; लेकिन् शुजाउद्दौलह अपने हिमायती अहमदशाह अब्दालीके जानेकी ख़बर सुनकर मरहटोंसे सुलहके साथ लखनऊ चला गया.

दिल्लीमें इमादुल्मुल्क कुल काम करता था, परन्तु बादशाही तरफ़से उसको भरोसा न था, इसके सिवा इन्तिज़ामुद्दौलह क़मरुद्दीनख़ां वज़ीरके बेटेसे भी बर्ख़िलाफ़ी थी, जो इमादुल्मुल्कका मामू था. पहिले तो इन्तिज़ामुद्दौलहको मार डाला, और उसके तीन दिन बाद किसी फ़क़ीरके दर्शनके बहानेसे बादशाहको शहरके बाहर नदीके किनारेपर एक मकानमें लेजाकर, दूसरे साथी लोगोंको बाहर ठहराया; भीतर इमादुल्मुल्कके आदमियोंने बादशाहको छुरियोंसे मारकर उसकी लाश नदीमें डलवा दी. यह वारिदात हिज्री ११७३ ता० ८ रबीउस्सानी [वि० १८१६ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० १७५९ ता० २९ नोवेम्बर] को हुई. इमादुल्मुल्कने दिल्लीमें आकर कामबख़्शके बेटे मुह्युस्सुन्नहको तख़्तपर बिठाकर उसका लक़ब शाहजहां सानी रक्खा.

अबुल्मुज़फ़्फ़र, जलालुद्दीन मुहम्मद,
आली गुहर, शाहआलम सानी
बादशाह.

इसका जन्म हिज्री ११४० ता० १७ ज़िल्क़ाद [वि० १७८५ आषाढ कृष्ण ३ = ई० १७२८ ता० २७ जून] को ज़ीनत महल उर्फ़ लालकुंवरके पेटसे हुआ था. इसने अपने बापके मरनेकी ख़बर अज़ीमाबादके ज़िले कथौली गांवमें पाई, और उसी जगह तख़्तपर बैठनेका दस्तूर अदा किया; लेकिन् राजधानी दूसरोंके क़ब्ज़हमें होनेसे मुनीरुद्दौलहको एलची बनाकर अहमदशाह अब्दालीके पास भेजा, कि वह मदद करे; और शुजाउद्दौलह व नजीबुद्दौलहको क़लमदान व ख़िल्अ़त वग़ैरह भेजा. फिर कामगारख़ां वग़ैरह पठान एक फ़ौज समेत बादशाहके पास आये. जब अहमद-शाह अब्दाली क़न्धारको लौट गया, तब शिख और मरहटोंने आदीनाबेगख़ांके बहकानेसे अब्दालीके शाहज़ादह तीमूरको लाहोरसे निकाल दिया. अहमदशाह अब्दाली नादिरशाहके साथ आनेके सिवाय पांचवीं बार बड़ी फ़ौजके साथ अटक उतरकर हिन्दुस्तानमें आया. रास्तेमें दत्ताराव वग़ैरह और हुल्करकी फ़ौजको शिकस्त दी; तीन सौ आदमियोंसे हुल्कर भाग गया. इसी अ़र्सेमें नजीबुद्दौलह व शुजाउद्दौलह दस हज़ार फ़ौज समेत अब्दालीकी फ़ौजमें जामिले. यह ख़बर सुनकर सदाशिवराव भाऊ दक्षिणकी बड़ी जर्रार फ़ौज लेकर चला, आगरेके पास उससे राजा

सूरजमल जाट, मल्हार राव हुल्कर व इमादुल्मुल्क भी आमिले. भाऊने दिल्ली पहुंच कर मुह्युसुन्नहको तख़्तसे उतार दिया, और पोलिटिकल कार्रवाई करनेके लिये शाहआलमके शाहज़ादह मिर्ज़ा जवांबख़्तको तख़्तपर बिठादिया; अगले क़िलेदारके एवज़ नारूशंकर ब्राह्मणको मुक़र्रर किया. फिर कुंजपुरेके क़िलेमें अब्दुस्समदखां व कुतुबख़ांको मार कर क़िला फ़त्ह करलिया. भाऊने पानीपत पहुंचने बाद ख़न्दक़ वग़ैरह खोदकर फ़ौज समेत लड़ाईका बन्दोबस्त किया.

वहां अह्मदशाह भी आ पहुंचा; वह लड़ाईके ढंगसे खूब वाक़िफ़कार था (१). उसने मरहटोंकी फ़ौजमें रसद आनेका रास्तह बन्द कर दिया, और छोटी छोटी लड़ाइयोंपर अपने सर्दारोंको तईनात किया. इन्हीं लड़ाइयोंमें सदाशिवराव भाऊका साला बलवन्तराव मारागया. इसी अर्सेमें ख़बर लगी, कि गोविन्द पण्डितने दस हज़ार सवार समेत नजीबुद्दौलहके इलाक़ह मेरठ वग़ैरहको लूट लिया; शाहअब्दालीने अताख़ां दुर्रानीको पांच हज़ार सवारों के साथ भेजा; वह नारूशंकर व गोविन्दराव वग़ैरहको मारकर बहुतसा अस्बाब लूट लाया. हिज्री ११७४ ता० ६ जमादियुस्सानी [वि० १८१७ पौष शुक्ल ७ = ई० १७६१ ता० १४ जैन्युअरी] को अब्दाली शाहके मुक़ाबलहको मरहटी फ़ौज निकली, और शाह अब्दाली भी शुजाउद्दौलह व नजीबुद्दौलह समेत तय्यार हुआ; इस लड़ाईमें बहुतसे मरहटे काम आये, और बाक़ी बचेहुए भाऊकी फ़ौजमें जामिले; भाऊ तीस हज़ार फ़ौज लेकर अब्दाली शाहपर टूट पड़ा, अब्दालीशाहके बहादुर सिपाहियों व शुजाउद्दौलह, नजीबुद्दौलह वग़ैरह बहादुरोंने अच्छा मुक़ाबलह किया; मरहटे भी बड़ी वीरताके साथ लड़े; भाऊ हज़ारों मरहटे सर्दारों समेत मारागया; माधवराव सेंधिया एक पैरपर ज़ख़्म खाकर भागा; और मल्हार राव हुल्कर भी फ़रार हुआ; अब्दालीशाहने फ़त्ह पाई. यह हाल तफ़सीलवार मौक़ेपर लिखा जावेगा.

इस लड़ाईमें बाईस हज़ार औरत, मर्द और बच्चे अब्दालीशाहने लौंडी और गुलाम बनाकर अपने सर्दार व सिपाहियोंको बांट दिये; और नक़्द, जिन्स, जवाहिर, तोपख़ानह, पचास हज़ार घोड़े, एक लाख गाय, बैल, पांच सौ हाथी और कई हज़ार ऊंट वग़ैरह अब्दालीशाहके हाथ आये. इसके बाद अह्मदशाह दिल्ली आया, और शाहआलमको बादशाह, शुजाउद्दौलहको वज़ीर, नजीबुद्दौलहको अमीरुल्उमरा और शाहज़ादह जवांबख़्त मिर्ज़ाको वलीअह्द बनाकर लाहोरमें अपने नाइब छोड़ने

---

(१) यह हमेशह कहा करता था कि नादिरशाह तो अस्सी हज़ार फ़ौजसे दस हज़ारको, और मैं बीस हज़ारको लड़ा सक्ता हूं.

बाद कन्धारको चलागया. शाहआलम व शुजाउद्दौलह वज़ीरने अन्तरवेद व काल्पीके ज़िलेसे मरहटोंके गुमाश्तोंको निकालकर अपने मुलाज़िमोंको मुक़र्रर किया. राजा सूरजमल जाटने अह्मदशाहका कन्धार जाना सुनकर आगरेके क़िलेपर क़ब्ज़ह करलिया और पंजाबसे सिक्खोंने शाह अब्दालीके आदमियोंको निकाल दिया. यह सुनकर छठी बार फ़ौज समेत अह्मदशाह अब्दाली फिर हिन्दुस्तानमें आया, और जब वह लाहौर पहुंचा, तब सिक्ख लोग भागकर सर्हिन्दकी तरफ़ चले गये, जहां इन लोगोंने दो लाख सवार व पैदल इकट्ठे करलिये थे. हिज्री ११७५ ता० ११ रजब [वि० १८१८ माघ शुक्ल १२ = ई० १७६२ ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को लड़ाई हुई, जिसमें बीस हज़ार सिक्ख मारेगये, और अब्दाली शाहने फ़तह पाई. वह लाहौर व कश्मीर वगैरहपर अपने आदमी मुक़र्रर करके लौटगया. इसके बाद लाहौर व मुल्तान वगैरह इलाके सिक्खोंने अफ़्ग़ानोंसे ले लिये, क्योंकि ख़ुरासानकी तरफ़ अह्मदशाह किसी ज़रूरतसे चलागया. इस वक़्से सिक्खोंका ज़ोर बढ़ता ही गया, अन्तमें कुल पंजाबका मालिक रणजीतसिंह बन बैठा.

शाहआलम सानी, आख़िरी बादशाहके अह्द हिज्री १२०२ [वि० १८४५ = ई० १७८८] को ज़ाबितहख़ांका बेटा और नजीबुद्दौलहका पोता गुलामक़ादिर, दिल्ली आया, और उसने क़िलेमें जाकर बादशाह शाहआलमको बे रह्मीके साथ अन्धा करदिया. इस वक़्त भी बचा हुआ माल और जो कुछ बादशाही लवाज़िमह था, बर्बाद हुआ; लेकिन् मरहटा सर्दार माधवराव सेंधियाने शाहआलमको दो बारह तख़्तपर बिठाया, और गुलामक़ादिरख़ांको, जो भाग गया था, पकड़कर मार डाला. इसपर शाहआलमने उसको 'फ़र्ज़न्द आलीजाह' का ख़िताब दिया, जो अबतक ग्वालियर वालोंके नामपर बोला जाता है.

हिज्री १२१८ [वि० १८६० = ई० १८०३] में लॉर्ड लेक, दिल्ली पहुंच गया, और उसने शाहआलमको मरहटोंके पंजेसे निकालकर एक लाख रुपया माहवार पेन्शनके तौर उसके गुज़ारेके लिये मुक़र्रर कर दिया. यह बादशाह हिज्री १२२१ ता० ५ रमज़ान [वि० १८६३ कार्तिक शुक्ल ६ = ई० १८०६ ता० १८ नोवेम्बर] को मर गया.

अबुन्नस्र, मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद, अक्बर शाह सानी, बादशाह.

इसका जन्म हिज्री ११७३ ता० ७ रमज़ान [वि० १८१७ वैशाख शुक्ल ८ = ई०

१७६० ता० २४ एप्रिल] बृहस्पतिवारको मुबारक महलसे हुआ था. यह हिज्री १२५३ ता० २८ जमादियुस्सानी [वि० १८९४ आश्विन् कृष्ण १४ = ई० १८३७ ता० २९ सेप्टेम्बर] शुक्रवारको दिल्लीमें मरगया.

अबुज़फ़र, सिराजुद्दीन मुहम्मद, बहादुरशाह सानी, बादशाह.

इसका जन्म हिज्री ११८९ ता० २८ शअ्बान [वि० १८३२ कार्तिककृष्ण १४ = ई० १७७५ ता० २४ ऑक्टोबर] मंगलवारको लालबाईके पेटसे हुआ था. यह भी अपने बापकी तरह बराय नाम बादशाह हुआ, और सन् १८५७ ई० के ग़द्रमें अंग्रेज़ोंने इसे क़ैद करके रंगून भेजदिया; वह वहीं हिज्री १२७९ ता० १९ जमादिउल् अव्वल [वि० १९१९ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ = ई० १८६२ ता० ११ नोवेम्बर] में मरगया. बलवे वग़ैरहका ज़िक्र ब्योरेवार अंग्रेज़ोंकी तवारीख़में लिखा जायेगा.

इस बादशाहके बारह बेटे थे, १- मिर्ज़ा दाराबख़्त, २- मिर्ज़ा शाहरुख़, ३- गुलाम फ़ख़्रुद्दीन मिर्ज़ा फ़त्हुल्मुल्क, ४- मिर्ज़ा अब्दुल्लाह, ५- मिर्ज़ा सद्दू, ६- मिर्ज़ा फ़र्खुन्दहशाह, ७- मिर्ज़ा कूमाश, ८- मिर्ज़ा बख़्तावरशाह, ९- मिर्ज़ा अबुन्नस्र बुलाक़ि, १०- मिर्ज़ा मुहम्मदी, ११- मिर्ज़ा ख़िज़्रसुल्तान, १२- मिर्ज़ा जवांबख़्त, ये रंगूनमें हिज्री १३०१ ज़ीक़ाद [वि० १९४१ भाद्रपद = ई० १८८४ ता० सेप्टेम्बर] शुक्रवारको मर गया. अब शाहआलम सानीकी औलादमेंसे कुछ लोग बनारस वग़ैरहमें बाक़ी रहगये हैं, जो किसी क़द्र जागीरपर गुज़र करते हैं.

शेष संग्रह नम्बर १.

वड़ी पालके पीछे नीलकंठ महादेवके पास छोटे कुंडपर श्री दक्षिणा मूर्तिमें महादेवजीके मन्दिरके दर्वाज़ेके साम्हने, जो प्रशस्ति है, उसकी नक़्ल.

—✶✶—

स्वस्ति श्री मन्महागणपतयेनमः॥ श्री गुरुभ्योनमः वालन्यग्रोधवंशाब्धि भासमान-सुधांशवे॥ मंत्रदेवतरूपायगुरवेकुसुमांजलिः॥१॥ ब्राह्मंतेजोदधानःश्रुतिविपयलसन्मंत्र भावैरनेकैःशंभोराराधोल्लसद्भिस्त्वगणितमनुभीरोद्रमाधत्तएव॥ श्रौतस्मार्त्तक्रियाभिर्वि-गलितकलुपःपोपयन्विप्रवृन्दं कारुण्यौदार्ययुक्तःसजयतिनितरां दक्षिणामूर्तिरेकः॥२॥ कलास्वपि कलाधरः प्रथितकीर्तिरंभोनिधे रुदारगुणसंयुतः सकलशास्त्रसारान्वितः॥ तपोमयतनुः स्वयं निगमतंत्रवोधोल्लसत्परामृतपरिप्लुतः सजयतीह विप्राग्रणी॥३॥ ज्ञाने देवगुरुः प्रतापतुलितं कालाग्निरुद्रोपरस्तेजस्वी जमदग्निवर्जितहृषीकः कार्त्तिकेयोपरः॥ इष्टापूर्तक्रियासु प्रतिनिधिरनिशं याज्ञवल्क्यस्ससाक्षादाचार्य-त्वेवशिष्टः सजयति नितिरां दक्षिणामूर्तिरेकः॥ ४॥ सनाथीकुर्वन् वै सदुदयपुरा-धीशमनिशंनृपोत्तंसं शश्वत् प्रतिवसति संग्रामनरपं॥ ततः श्रेयोधिक्यं सकल-दुरितध्वंसनविधिर्विधत्ते निर्विघ्नः सचजनपदः सोपि नृपतिः॥५॥ श्रीमद्भानुरिव प्रताप महसा प्रोन्मीलिताशः स्वयं शत्रुध्वांतविदारणेतिनिपुणः संसारसौख्य-प्रदः॥ स्वर्णाभिः परिपूर्ण सद्गुणहृदः सन्मित्रपद्माटवीहर्षोत्पादनहेतवे समुदितः संग्रामसिंहः प्रभुः॥६॥ यत्सैन्ये चलति क्षितावरिजयप्रस्तारकर्मण्यथो गर्जत्कुंभि-मदार्द्रगंडमिलितैर्भृंगैरनेकैः कटं॥ पीत्वामोदितविग्रहैरनुदिशं भंकारशब्दान्वितैः श्रीसंग्राममहीपते: प्रतिदिनं मन्ये यशोगीयते॥ ७॥ दोर्लीलादलितारि-दंतिनिवहः कीर्त्याशिरश्चंद्रकां स्पर्द्धिन्याधवलीकृतक्षितितलः प्रोद्दामशौर्यान्वितः॥ पाड्गुण्यामलधीस्त्रिवर्गकुशल: शक्तित्रयालंकृतो मेवारप्रभुरीप्सितार्थफलदो वर्वर्ति सर्वोपरि॥८॥ अथ श्रीदक्षिणामूर्तिः शिवालयमकारयत्॥ वापींच माधुर्य-जलां शास्त्रोक्तविधिना ततः॥ ९॥ स्वास्ति श्रीविक्रमादित्यराज्योद्गमनकालतः॥ गगनाद्यश्वभूसंख्ये (१७७०) वत्सरे शोभनाव्हये॥ १०॥ तथा च शकबंधस्य शालिवाहनभूपतेः पंचाग्न्यष्टिप्रमितिके (१६३५) रसंनिवहइष्टदे॥ ११॥ सोम्यायने सवितरि गुरुशुक्रोदये शुभे॥ चैत्रस्य पूर्णिमायां च शंभो स्थापनमाचरन्॥ १२॥ विप्रांश्च शतसंख्याकान् वेदविद्याविशारदान्॥ यज्ञांतकर्मकुशलान् मासात्प्रागेव संवृतान्॥ १३॥ कुंडमंडपनिर्माणं निगमागममार्गतः॥ विधाय

कोटिहोमं तत्कल्पद्रव्यसमन्वितं ॥ १४ ॥ प्रतिष्ठादिवसे प्राप्ते ज्योतिर्विद्भिर्निवेदिते ॥ नित्यं नैमित्तिकं कर्म विधायोक्तेन वर्त्मना ॥ १५ ॥ स्वच्छांत : शुचिरासीनो विप्रवृंद पुर : सरं ॥ ननद्भिः पंचवाद्यैश्च वेदध्वनिपुर : सरं ॥ १६ ॥ अथ तत्रागमद्राजा भक्त्या संयुतमानस : ॥ ब्राह्मणान् शतसंख्याकान् गंधपुष्पाद्यलंकृतान् ॥ १७ ॥ नियुक्तान् शुद्धभावेन स्वस्तिवाचनकर्मणि ॥ प्राणे प्रतिष्ठामकरोद्राजराजेश्वरस्यच ॥ १८ ॥

———✲०✲———

शेषसंग्रह नंबर २.

सीसारमा गांवके वैद्यनाथ महादेवजीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमदेकलिंगो विजयतु ॥ अथ प्रशस्तिप्रारंभः ॥ हरि : ॐम् ॥ शिवं सांबमहं वंदे विद्याविभवसिद्धये ॥ जगज्जनिकरं शंभुं सुरासुरसमर्चितं ॥१॥ गुंजद्भमद्भमरराजिविराजितास्यं स्तंबेरमाननमहं नितरां नमामि ॥ यत्पादपंकजपरागपवित्रताया : प्रत्यूह राशय इह प्रशमं प्रयांति ॥ २ ॥ शारदा वसतु शारदांडज स्वानना मम मुखांबुजे सदा ॥ यत्कृपायुतकटाक्षभाग्यतो भाग्यतोपमयमेति मानव : ॥ ३ ॥ स भूयादेकलिंगेशो जगतां भूतये विभु : ॥ यस्य प्रसादात्कुर्वंति राज्यं राणा भुव : स्थितं ॥ ४ ॥ यदेकलिंगं समभूत्पृथिव्यां तेनैकलिंगेत्यभिधाभ्यधायि ॥ चतुर्दशी माघभवाहि कृष्णा तस्यां समुद्भूतिरभूच्छिवस्य ॥ ५ ॥ तदा मुनीनां प्रवरस्तपस्वी हारीतनामा शिवभक्त आसीत् ॥ सएकलिंगं विधिवत्सपर्या विधेरतोपीष्ट शिवेष्ट निष्ट : ॥ ६ ॥ बापाभिधो रावल उन्नतेच्छो हारीतमेनं गुरुमन्वमंस्त ॥ विद्याप्रसादोदयवृद्धिवृद्ध्यै यथा मरुत्वानिव वागधीशं ॥ ७ ॥ तस्योपदेशेन समग्रसिद्धेर्बापान्नपस्याथ बभूव सिद्धि : ॥ आराधनात्तुष्टिमतोस्य शंभोः स्तदैकलिंगस्य विभोः प्रसादात् ॥ ८ ॥ सूर्यान्वयोसाविवतिग्मरश्मि : प्रतापसंशोषितकर्दमारि : ॥ समुल्लसत्स्वीयमुखांबुजश्री दूरीभवद्दुष्टखलांधकार : ॥ ९ ॥ अथाभवद्राणपदं वितन्वन् राहप्पराण : पृथित : पृथिव्यां ॥ तदादितद्वंशभवानरेंद्रा राणेति शब्दं ग्रहितं भजंति ॥ १० ॥ रणस्थिरत्वात्तुतदा नृपाणां दिनाधिनाथान्वयसंभवानां ॥ चतुर्दिगंतप्रथितं हि राणपदं हि तत्सार्थकता मवाप्तं ॥ ११ ॥ राहप्पराणान्नरपाल आसीद्धनुर्भृतां मुख्यतर : पृथिव्यां ॥ जितारिवर्ग : परसप्रधान : सुश्राव कीर्तिन्नरवन्नरेंद्र : ॥ १२ ॥ दिनकरस्तु ततोप्यभवत्सुतो दिनकर द्युतिभाङ् नरपालतः ॥ अवनिमंडलभूपतिमंडलीमुकुटरत्नविराजितयत्कजः ॥ १३ ॥ यशकर्ण इहाभवत्ततो यशसैवाति समुज्वलां भुवं ॥ बुभुजे युगदीर्घ बाहुभृन्निज

धीरत्वमवन् दिशतुस्वपि ॥ १४ ॥ ततस्तुनागपालोभून्नागायुतबलोत्कटः ॥ शशास वसुधामेतां प्रजां धर्मेण पालयन् ॥ १५ ॥ ततोभवत्पूर्णमनोरथोयः कृपाणपाणिः किल पूर्णपालः ॥ पूर्णं सुखैः पालयतीतिविश्वं तत्पूर्णपालत्वमवापितेन ॥ १६ ॥ तस्मादभूदुग्रतरश्च पृथ्वीमल्लोरिहस्तिष्विव हस्तिमल्लः ॥ ये युद्धमल्ला बलदर्पनद्धास्तस्मादवापुः खलुभंगमेव ॥ १७ ॥ तस्माद्भुवनसिंहोभूद्धराधीशो महेंद्रभः ॥ युधिभूपालमातंगाः पलायंते यदीक्षिताः ॥ १८ ॥ तत्सूनुरुग्रः किल भीमसिंहो भयंकरो भीम इवाहितानां ॥ एकातपत्रां भुवमेत्यवीरो निष्कंटकीं दीर्घभुजो बुभोज ॥ १९ ॥ तदंगजन्मा जयसिंहराणो भुवं समग्रां प्रथितः शशास ॥ जयोहि यस्मिंस्थिरतामुपेत्य पुनर्न कस्मिं स्थिरतांबभाज ॥ २० ॥ तदात्मजः सागरधीरवेत्ता नाम्ना ततो लक्ष्मणसिंहश्चासीत् ॥ यो मेघनादं च विजित्य गोभिः स्थितो हि रामानुजवन्नरेंद्रः ॥ २१ ॥ तस्मान्महीयानरिसिंहभूपो भूमंडलाखंडलतां जगाम ॥ लसद्विषत्कुंजरमस्तकाद्यन् मुक्ताभिराकीर्णपदाग्रभूमिः ॥ २२ ॥ ततोरिसिंहादभवद्धमीरः समिद्धतेजा इवशंभुरीड्यः ॥ शिरस्खलत्स्वर्धुनिसुप्रवाहपवित्रिताशेषजगज्जनौघः ॥ २३ ॥ यश्चैकलिंगस्य शिवस्य लिंगं पुनर्वशिलाद्द्रुतमद्धधार ॥ शिवाज्ञयैव प्रमथाधिनाथसेवाविधिं सस्वयमन्वकार्षीत् ॥ २४ ॥ हम्मीरदेवादलभत्सुरश्रीर्यः क्षेत्रसिंहः पितुरेव राज्यं ॥ यस्मिन्महीं शासति वीरवर्ये स्थिता श्रुतौ तस्करता प्रजासु ॥ २५ ॥ लक्षावधीन्योधगणान्विधत्ते लक्षावधि द्राग्धनमत्रदत्तं ॥ योलक्षवारं विवभंजशत्रून् लक्षाभिधोस्मादुदभून्नरेंद्रः ॥ २६ ॥ मकारवाच्यः खलु विष्णुशब्द उकारवाची किल शंभुशब्दः ॥ तौचेतसि स्वेकलयत्यभीक्ष्णं तस्मान्नृपो मोकलइत्यभाणि ॥ २७ ॥ समोकलः सर्वगुणोपपन्नं संप्राप पुत्रं किल कुंभकर्णं ॥ यः कुंभजन्मेव त्वेपक्षसैन्यमहार्णवस्यान्यइहावतीर्णः ॥ २८ ॥ यः कुंभकर्णादपि युद्धशाली यः कुंभकर्णारिमनाः सदैव ॥ यः कुंभिदानोद्धृतचित्तवृत्तिः सकुंभकर्णोथ भुवं बभार ॥ २९ ॥ सरायमल्लो गुरुकुंभकर्णाद्भुवं समग्रां विधिवच्छशास ॥ योराजमल्लप्रतिमल्लयोद्धा धरातलेस्मिन्नबभूव कश्चित् ॥ ३० ॥ तदंगजन्मा भुवनप्रकाशः संग्रामसिंहो भुवमन्वशासीत् ॥ म्लेच्छाधिपंयोधगृहीतमुक्तं चकार कारुण्यरसाभराढ्यः ॥ ३१ ॥ तेनासमुद्रांतजिगीषुणायं भूपाललोको वशमभ्यनायि ॥ संग्रामसिंहेन गुणैकधाम्ना रामाभिरामेण नृपोत्तमेन ॥ ३२ ॥ पार्थिवात् समभवत्ततः परं दीप्तिमानुदयसिंहभूपतिः ॥ येन विश्ववलयैकभूषणं भूभृतोदयपुरं विनिर्मितं ॥ ३३ ॥ प्रतापसिंहोथबभूव तस्माद्धनुर्धरो धैर्यधरो धरिण्यां ॥ म्लेच्छाधिपात् क्षत्रिकुलेन मुक्तो धर्मोप्यथैनं शरणं जगाम ॥ ३४ ॥ प्रतापसिंहेन सुरक्षितोसौ पुष्टः परं तुंदिलतामगच्छत् ॥ अकब्बरम्लेच्छगणाधिपस्य परं मनःशल्पमिवासवद्यः ॥ ३५ ॥ अशेषभूमंडल-

मंडितश्री : समग्रभूमावमरेंद्रभूप : ॥ आसीत्तुतेनैवकृता : सुमार्गा भूपै : स्ववंश्यै-रपितेषुचेले ॥ ३६ ॥ तस्मादभूत्कर्णसमानदानप्रवाहभृद्भूभृदिहैव कर्ण : ॥ ततो जगत्सिंहधराधिपोभूद्भाग्याधिपोसावमरेंद्रकल्प : ॥ ३७ ॥ ततोर्जिता षो-डशदानमाला मांधातृतीर्थादिवरेपुतेने ॥ राजांगणादग्रणिरेवविष्णो : प्रासा-दमभ्रंलिहमाततान ॥ ३८ ॥ ततो भवद्भूमिपति : पृथिव्यां धराधिराज : किल राजसिंह : ॥ येनेह पृथ्वीवलयैकरूपं सर : समुद्रोपममाबबंधे ॥ ३९ ॥ दिल्लीपतेर्मालपुरापुरंयद् बाढं बलाद्भूरिबलश्चकुंथ ॥ धराधिपन्यं विधिवद्वि-धाय शक्रासनस्यार्धमथाधितस्थौ ॥ ४० ॥ तदंगजन्मा जयसिंहराणो धुरं धरित्र्या विभरांबभूव ॥ योदानदाक्षिण्यगुणैकसिंधुर्भाग्याधिको बुद्धिमतां वरिष्ठ : ॥ ४१ ॥ नृणामहं भूमिपतिर्यदुक्तं कृष्णेन सत्यं जयसिंहराणे ॥ वचोस्तियद्वेगवती नदीयं सर: कृतासेतुविबंधनेन ॥ ४२ ॥ अमरनरपतिस्ततस्तनूजोरेवाभवद्य : सकलनरपतीना-मेष मूर्द्धन्य आसीत् ॥ विधिविरचितरेखां योदरिद्रो भवेति स्वविहितबहुदानैरर्थिनामे-व मार्ष्टि ॥४३॥ शिवप्रसादामरसद्विलासपदाभिधासोंधमथो तनिष्ट ॥ सराजराजा-द्रिसमानधाम महेंद्रतेजा अमरेशराण : ॥ ४४ ॥ अंतस्तडागं जगमंदिरंयन् मध्ये समुद्रं रजताद्रय : किं ॥ अकारितेनामरसिंहनाम्ना विभाति वैकुंठमिव द्वितीयं ॥ ४५ ॥ अथामरेंद्रश्च सुरेंद्रकल्पो हठादसौ शाहपुरं बभंज ॥ ज्वलद्धुताशावलिदग्ध-दीर्घ स्तंबं बभौ किंशुकयुग्वनं वा ॥ ४६ ॥ अखंडितांगं भवनप्रकाशं विस्तारिताशाकिरणैकरम्यं ॥ य : कीर्तिचंद्रं प्रविधाय भूमौ बलारिरेखं बहुवित्तवेगात् ॥ ४७ ॥ वंशो विस्तरतां यातु राणभूमिभुजामयं ॥ यावच्छेष-धराधारि यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ४८ ॥ इति श्रीदेवकुमारिकानाम भिधा मातृकारितवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ वंशवर्णनम् ॥ मुन्यंगसप्तेंदु (१७६७) मि-युतेब्द शुक्रमासे सिते नाग (८) तिथौ गुरौच ॥ पट्टाभिषेकोत्सव-सन्मुहूर्तं संग्रामसिंहस्य शुभंतदासीत् ॥ ५० ॥ पुरोहित : श्रीसुखराम-नाम वृद्ध : सुराणामिव यो बृहस्पति : ॥ सर्वं तनोतिस्म विधिं विधानवि-पट्टाभिषेकोत्सवयोग्यमंत्रत : ॥ ५१ ॥ तीर्थोदकै : कांचन कुंभसंस्थै-र्मूर्द्धाभिषेकोथनृप : समंत्रै : ॥ ततस्तुनेपथ्यविधिं दधानो धर्माभिमुक्तार्क इवव्यराजत् ॥ ५२ ॥ अशोभतासौ भ्रमुकामुकेन मतंगजेनेहमदोत्कटेन ॥ क्रामन्पुरीं देवपुरीमिवेंद्रो लोकाभिरामां नरदेवनद्धां ॥ ५३ ॥ यस्याभि-षेकांबुसमार्द्रदेवी यावन्नचास्यायततावदेव ॥ सुदु : सह : शत्रुगणै : प्रतापो दिगंतराण्येवसमभ्यगच्छत् ॥ ५४ ॥ ततोनिजस्योद्धतवंशनामधरम्महोग्रं शवलेशपुत्रं ॥ मेवातिनामेवपराजयाय संग्रामनामानमुपादिशत्स : ॥ ५५ ॥

कायस्थउग्र: किलकान्हजियस्तमादिशद्दुष्टवधाय वीरं ॥ गतौतु युद्धाय महोजसौतौ यत्रास्ति मेवातिगण: सदृप्त: ॥ ५६ ॥ म्लेच्छाधिपैस्तैरपि युद्धदक्षै: संग्रामसिंहस्यच योधमुख्य: ॥ घोरं महाचित्रकरं नियुद्धं देवासुराणामिवतत्र आसीत् ॥ ५७ ॥ तज्जन्यभूमेरिदमंतरालं पतज्ज्वलद्योतिरिवव्यरोचत् ॥ निस्त्रिंशबाणावलिकुंतशक्तिप्रासादिभिस्तत्र दिवापिनूनं ॥ ५८ ॥ दलेलखानो रणरंगधीरस्तंमानसिंहो युधि संजघान ॥ सचावधीत्तं समरेपिदेवासुरेंद्रलोकं प्रति जन्मतुस्तौ ॥ ५९ ॥ सचित्रकूटाधिपतेर्वलौघस्तद्यावनं सैन्यमपिव्यजैपीत् ॥ निशीथिनीसंभवमंधकारं सूर्यांशुसंदोह इवोदिताभ: ॥ ६० ॥ बंदीमिवोद्गृह्य जयश्रियं ते म्लेच्छाधिपेभ्याथ नृपस्ययोधा: ॥ न्यवर्तयंताशुरणप्रदेशादुद्धृत्य सर्वं शिविरादिकंयत् ॥ ६१ ॥ जयश्रियासंवृतसुंदरांगा अनीनमत् भूमिपहेत्यवीरा: ॥ नृपोपिसुप्रीतमनास्तदानीं यथार्हसंभावनयाग्रहीत्तान् ॥ ६२ ॥ ततो निष्कंटकां पृथ्वीमशासीत् पृथिवीश्वर: ॥ संग्रामसिंहो विरहत् स्वेच्छया मुदितोयुवा ॥ ६३ ॥ याक्षत्रियाणां किल शस्त्रविद्या अशिक्षतासौ सकलापिनूनं ॥ मुक्त: शरस्तेन विकृष्यवेगात् स्थितिंलभेदेव न कुंजरेपि ॥ ६४ ॥ विश्वंभरोपि स्वयमेवतावत् संग्रामसिंहे वनिपालमुख्ये ॥ तस्मिंस्तु विश्वंभरणक्षमत्वं निधाय लक्ष्मी सुखमेव भुंक्ते ॥ ६५ ॥ नृपस्य मंत्री च विदां वरिष्ठो विहारिदासोतितरांसुधर्मा ॥ कायेन वाचा मनसापि गोपीनाथं समन्वास्त इहावतीर्ण: ॥ ६६ ॥ विहारिदासे वरमंत्रिमुख्ये सर्वाधिकारेषु नियुज्यमाने ॥ विंशोपका विंशतिरेवलेख्या धर्मस्य सत्यस्य च शास्त्रविद्भि: ॥ ६७ ॥ तस्यैवानुमतेदत्त नृपोदानानिकानिच ॥ पर्जन्य इव सत्येभ्यो द्विजेभ्यस्तुनोदित: ॥ ६८ ॥ सदानुकूलेतिकिरातपद्यमस्मिन्द्वये सार्थक नामवाप्तं ॥ संग्रामसिंहे नृपतौ वरिष्ठे विहारिदासे वरमंत्रि मुख्ये ॥ ६९ ॥ संग्रामसिंहप्रभुणा कथंकल्पद्रुम: सम: ॥ वांछितार्थप्रदोह्येष इष्टार्थाधिकदोनृप: ॥ ७० ॥ वरनरपतिसेवितांध्रिपद्म: सकलसुखैक निधि: प्रतापशाली ॥ अमरमनुज एष राजराजो हरिरिव शास्तु बुधार्चित: पृथिव्यां ॥ ७१ ॥ इति देवकुमारिकानाम राजमातृकृतवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ महाराणा श्रीसंग्रामसिंहपट्टाभिषेकादि वर्णनं नाम द्वितीयप्रकरणं ॥

दाक्षिणात्य इह मंत्रशास्त्रविद्दक्षिणादिपदमूर्तिनामभृत् ॥ यो द्विजातिवरमंडलीवृत्तो भाति भर्गइव पार्षदावृत: ॥ १ ॥ ग्रामवस्त्रवरभूषणादिभिस्तं सदा वरमसावपूपुजत् ॥ चित्रकूटपतिरेवसद्द्विजं देववंद्यमिव पाकशासन: ॥ २ ॥ वैद्योवाग्भटसुश्रुतात्रिरचितग्रंथाब्धिपारंगतो योलोकेष्विहमंगलं वितनुते नाम्नाप्यसौ मंगल: ॥ तस्मै क्षीरसमुद्रलब्धजनुषा तुल्या-

लसहुदये भूपोग्रामवरेणुकार्पणविधिं संग्रामसिंहो करोत् ॥ ३ ॥ संवत् खाद्रिमुनींदुभिः (१७७०) परियुते ऽब्देशंभुसूनोस्तिथौ शुक्रे मासि सितेतिपंडितवरः शास्त्रार्थ पारंगमः ॥ काशिस्थोतितरां सुधी- र्दिनकर (१) स्तस्मै हिरण्याश्वयुग्ग्रामं विप्रवराय यो नृपवरः संग्रामसिंहो ऽददात् ॥ २ ॥ वाजपेयमुखयज्ञशालिने पुंडरीकयतिनामविभृते ॥ ग्राममे- वसितवाजिसंयुतं चंद्रपर्वणि समर्पयत्प्रभुः ॥ ३ ॥ राजतीनां च मुद्राणा- मयुतं चंद्रपर्वणि ॥ पुंडरीकाय यज्ञार्थमदात्संग्रामभूपतिः ॥ ४ ॥ अथागमत्कैश्चिदहोभिरासीत्पुनीतमर्द्धोदयनामपर्वणि ॥ दानोदकोत्सर्गमना- नरेंद्रो घर्मात्यये मेघइवापिकश्रीः ॥ ५ ॥ अथो महादेवपरैकचित्तो देवाभिरामो भुवि देवरामः ॥ द्विजाग्रणीः पुण्यवलस्तदानीं तुलातिरुद्रो विधिनाकृषीष्ट ॥ ६ ॥ द्विजाय सत्पात्रवरायदेवरामायतस्मै नरवाह्य- यानं ॥ ग्रामं हनुमातियनामभाजं संग्रामसिंहश्च समर्पयत्सः ॥ ७ ॥ ब्रह्मज्योतिविवर्तस्य गुणाः सर्वेप्यशेषतः ॥ देवरामस्य विप्रैर्वक्तुंकेनेहशक्यते ॥ ८ ॥ ज्योतिःशास्त्रविदांवरः सुमतिमान् तत्वार्थवित्कोविदः शिष्याणां प्रतिपा- ठनेतिचतुरो भूभृत्सभाभूषणं ॥ तस्मै पात्रवराय भट्टकमलाकांताय चार्द्धो- दये ग्रामंयस्तिलपर्वतादि सहितं संग्रामसिंहो ददात् ॥ ९ ॥ मोरडी- संज्ञया ग्रामं विश्रुतं विश्वमंडले ॥ कमलाकांतभट्टाय संग्रामेशो ददात्प्रभुः ॥ १० ॥ हेमहस्तिरथदानमादृतो दीप्तिमानवनिपाकशासनः ॥ वंधु- रोद्धुरसमिद्धसिंधुरानेकलिंगशिवतुष्टये ददात् ॥ ११ ॥ श्री मत्संग्रामनृपति- र्जीयात्सशरदांशतं ॥ पात्राय प्रत्यहं दत्ते हेममुद्रायुतां च गां ॥ १२ ॥ इतिश्री वैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ प्रकरणं ॥

संग्रामसिंहजननी चाहुवाणान्वयोद्भवा ॥ पितुर्वंशोद्भवं तस्या भ्मतः परमिहो- च्यते ॥ १ ॥ पुरामहांस्तक्षकनागराज उत्तंगनाम्नः किल कर्णभूषां ॥ हलागमद्भूतलमेवसद्यो मुनिस्ततश्चातितरांचुकोप ॥ २ ॥ काष्टांग्रहीत्वा- थखनंतमुच्चैर्मुनिं विलोक्याथ सुराधिराजः ॥ द्विजकृपामार्द्रमनादयालुर्वज्रं मुमोचाथ धराविदारिः ॥ ३ ॥ तेनैव मार्गेण च लब्धभूपो द्विजः परंतु- मनाबभूव ॥ तद्गर्त्तपूर्त्यै तु वशिष्ठनामा यत्नंचलोककृपयावतिष्ठत् ॥ ४ ॥ हिमालयं याचितवान्मुनींद्रस्तद्गर्तपूर्त्यै सुतमेकमेव ॥ दत्तेन तेनाद्रिवरेण

---

(१) दिनकरभट्टको कोयाखेड़ी ग्राम हिरण्याश्वदानमें दिया था, वह ग्राम उसके पौत्रने कविराजा श्यामलदासजीको बेचा है. इस प्रशस्तिके अन्तमें उसके ताम्रपत्र वगैरह दिये गये हैं.

ईशोहि कांत्या रमतीतिहेतोः श्रीशारमग्रामवरोयदास्ते ॥ शिवस्थितिं तत्र विलोक्यदेव्याः प्रासादसिद्ध्यर्थमकारि बुद्धिः ॥ २५ ॥ सदश्मसंघट्टितरूपराशिः शिवस्थितिप्रोज्झितकल्मषौघः ॥ सुवर्णशृंगप्रतनाद्भुतश्रीः प्रासादईशाद्रिरिवावभास ॥ २६ ॥ राहप्पनामा किल भूसुरेशो यः श्रीनिवासः शुभधर्मधामा ॥ तत्पुण्यकर्माणि कविः कथंचित् संख्यां विधातुं निपुणोपिनेष्टे ॥ २७ ॥ तंज्ञातिवर्गार्पितसद्दुकूलं पात्रादिकं रायमिहोग्रबुद्धिः ॥ शिवालयस्योद्भवकर्मसिंधौ स श्रीनिवासं कुशलंन्ययुक्तः ॥ २८ ॥ तत्र स्वादूदकं कुंडं व्यधत्तरावलात्मजा ॥ धर्मकर्मार्थसिध्यर्थं जनानां च सुखाप्तये ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवकुमारिकानाम्नि राजमातृकृतवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ चाहुवाणोद्भवप्रकरणं चतुर्थं ॥

अथ प्रतिष्ठां विधिवद्व्यकार्पीच्छुभे मुहूर्ते सति राजमाता ॥ आहूय सर्वांश्च पुरोहितादींस्तान् भूमिगीर्वाणवरान्सुवंद्यान् ॥ १ ॥ तस्यास्ति मंत्री हरजीतिनामा गुणाधिकः पुण्यभृतांवरिष्टः ॥ यः सर्वकार्याणि निदेशमात्रात् सदाकरोत्येव सुबुद्धिराशिः ॥ २ ॥ प्रेमाभिधाकापि च राजमातुर्विश्वासपात्रं परिचारिकाभूत् ॥ तस्यासुतो बुद्धिबलैकसिंधुर्लोकैर्य ऊदाभिधयाभ्यधायि ॥ ३ ॥ ऊदाभिधं बुद्धिमतांवरिष्टं तदर्हवक्तुं प्रतिपादनेषु ॥ समादिशत्सर्वगुणोपपन्नमुदारचित्ताजननी नृपस्य ॥ ४ ॥ ऊदाभिधानो तितरांचदक्षस्तत्कर्मसिंधौ कुशलस्तरस्वी ॥ पुंजीकृतान्वस्तुचयान्समग्रान् बुद्ध्याचिनोत्सर्व हितार्थबुद्धिः ॥ ५ ॥ यज्ञांगसामग्रविधिं व्यधत्त पुरोहितश्रीसुखरामसंज्ञः ॥ संग्रामसिंहस्य यथेवजिष्णोर्महीमहेंद्रस्य गुरुर्गुरुर्यः ॥ ६ ॥ विचार्यतेनाथ पुरोहितेन वृत्ताद्विजास्तत्र वसिष्ठकल्पाः ॥ द्विजातिसंघः खलुसर्ववेदपारायणं चात्र समभ्यगीष्ट ॥ ७ ॥ वेदध्वनिः सोप्यथतुर्यनादैः संवर्द्धितो शोभत दिग्विदिक्षु ॥ केकारवः सुस्वरमंडितांगो घनाघनस्यस्तनितैरिवेह ॥ ८ ॥ हव्यैर्हुतैश्चातितरांस मंत्रैः सौहित्यभाजस्तुसुरा अभूवन् ॥ भोज्यैरनेकैरचितैश्चतुर्धा वर्णाश्रमा भूमिगता इवाः ॥ ९ ॥ अथोभ्यगछत् किलराजमाता वेदिं च तत्कर्मविधिं विधित्सुः ॥ पुरोहितस्यानुमतेनदानैर्धरासुराणामपि तर्पणाय ॥ १० ॥ तुलांचतुर्थीमिव तत्र देवचरीकरीति स्म विधिप्रयुक्तां ॥ एकीकृतः पुण्ययशः समूहः सरूप्यराशिस्तुलितविभाति ॥ ११ ॥ वाराणसीस्थोप्यथचेंदुभट्टः सुपंडितः पत्रवरस्तपस्वी ॥ तस्मै गजोग्रामवरश्चदत्तः सदक्षिणासंयुतमानपूर्वं ॥ १२ ॥ रथाश्वनरयानानि भूहिरण्यादिकंबहु ॥ अदाद् द्विजेभ्यः पात्रेभ्यो राज्ञी शंकरतुष्टये ॥ १३ ॥ शब्दः संश्रूयते तत्र दीयतांभुज्यतामिति ॥ दीनानाथादयोप्यत्र मोदेरन्स्तुष्टमानसाः

॥ १४ ॥ प्रासादवैवाह्यविधिंदिदृक्षु : कोटाधिपो भीमनृपोभ्यगछत् ॥ रथाश्वपत्तिद्विपनद्धसैन्यो दिल्लीपसंमानितबाहुवीर्यः ॥ १५ ॥ योडुंगराख्यस्य पुरस्यनाथो दिदृक्षया रावलरामसिंहः॥ सोप्यागमत्तत्र समग्रसैन्यो देशांतरस्था अपिचान्यभूपाः ॥ १६ ॥ देवालयाद्योजनभूमिरेषा नृपैर्जनैः संघवती तथासीत् यथा समुच्छालित मुष्टयोपि तिलस्तलंनेयुरहो धरिण्याः ॥ १७ ॥ संवद्गुजाब्धिमुनिचंद्रयुताब्द माघे शुक्ले 'विशाखतिथियुग्गुरुवासरेच ॥ श्रीवैद्यनाथशिवसद्मभवां प्रतिष्ठां देवी चकार किल देवकुमारिकाख्याः ॥ १८ ॥ शेषनागमणिसुप्रभावलीभूपितोद्धतजटाकलापकः ॥ कोटिसूर्यसमभासमन्वितो वैद्यनाथ इह भूतयेस्तुनः ॥ १९ ॥ हेतुरेवच गुणत्रयस्ययः सिद्धिदः स्वभजनार्द्रचेतसां ॥ शैलजारुचिविभूपिताङ्कं वैद्यनाथमिहतं नमाम्यहं ॥ २० ॥ विष्टपत्रितयवंदितेनवा वाग्मनोनिगमहात्म्यशोभिना ॥ सौख्यदेनचयुनक्तु मन्मनो वैद्यनाथचरणांवुजेनतु ॥ २१ ॥ संसृतेर्भयहराय सेवनात् त्र्यंबकाय मदनांतकाय च ॥ शीतदीधितिलसत्किरीटिने वैद्यनाथगिरिशायतेनमः ॥ २२ ॥ वेदगीतिमहिमोद्धताद्विभोर्भूतिभूपिततनोर्महेशितुः ॥ ब्रह्मणः परमतत्वमस्तिनो वैद्यनाथगिरिशादतः परं ॥ २३ ॥ वेदमंत्रविधिवत्सपर्यया पूजितस्य विबुधैरहर्निशं ॥ भक्तिरस्तुसकलाघहारिणी वैद्यनाथपरमेश्वरस्यमे ॥ २४ ॥ अष्टसिद्धि परिचारिकाते नाममात्रजपतांतुसिद्धिदे ॥ बुद्धिरस्तु विमलाद्यमेसदा वैद्यनाथउमया विराजते ॥ २५ ॥ आर्तिभंजनकृपैकवारिधे राजराजविधिसेवित प्रभो ॥ मन्मनोस्तु तव पादपंकजे प्रार्थनेति ममवैद्यनाथ भोः ॥ २६ ॥ हरिश्चंद्रनाम द्विजन्माभ्यभाणीदिदंवैद्यनाथाष्टकं भक्तियुक्तः ॥ प्रभाते पठेत् स्तोत्रमेतन्नरोयो मनोवांछितार्थंचसिद्धिं लभेत ॥ २७ ॥ इतिश्रीदेवकुमारिकानाम राजमातृकारितवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ प्रतिष्ठाप्रकरणं पंचमम् समाप्तिमगात् ॥ श्रीरस्तु.

पंचद्वीपमुनींदुसंमितशरच्छुक्लासिता ऽ द्रींद्रजा दास्रे सूर्यसूतान्विते द्विजवरो गोवर्द्धनस्यात्मजः प्रत्यर्थिक्षितिभृत्पराजयकरः श्रीमंडित — — — — — पामतरेश्वरस्य वचनात् श्रीरूपभट्टो लिखत् ॥ १ ॥ संवत् १७७५ वर्षे ज्येष्ठवदि तृतीया ३ शनौ लिपिकृतं भट्ट गोवर्द्धनसुतेन रूपजिता श्रीरामकृष्णाभ्यां नमः॥

प्रशस्ति नम्बर २ के प्रकरण ३ श्लोक ४ में दिनकरभट्टको हिरण्याश्व दानमें गांव कोद्याखेड़ी, जो महाराणा संग्रामसिंह दूसरेने दिया था, उसको दिनकर भट्टके

प्रपौत्र रामभट्टने कविराजा श्यामलदासजीको उन्हीं अपने हुकूक समेत वेचदिया; उसके वावत काग़ज़ातकी नक्ल यह हैः—

तामपत्रकी नक्ल.

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु.   श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ महाराजाधिराज महाराणा श्रीसंग्रामसिंहजी, आदेशातु, भट्टदिनकर महादेवरा न्यात महाराष्ट्र कस्य, ग्राम कोद्यापेडी पडगने भरपरे पेहली थारे पटेयो, सो हिरण्याश्व महादान जेठसुदि १५ भोमेरे दिन दीधो, जदी दक्षिणारो लागत पडलाकड गामटका केलुपुंट तथा सर्वसूधी ऊदक आघाट करे श्रीरामार्पण कीधो, दुवे श्रीमुप स्वदत्तां परदत्तां वा ये हरंति वसुंधरां पष्टि वर्ष सहस्राणि विष्टायां जायते क्रमिः प्रतदुवे पंचोली विहारीदास, लिपतं पंचोली लपमण छीतरोत. सं० १७७० वर्षे दुती असाढ सुदी १२ भोमे

रामभट्टकी अर्ज़ी और महाराणा
साहिबके हुक्मकी नक्ल.

॥ श्री रामजी.

श्री एकलिंगजी.

॥ नकल अरजी रामभट चरण कासीनाथ, बपिदमत श्री जी हजूर दाम इकबालहू मारुजा असाड सुद ७ सं० १९४० का.

चुंकी साअेलको करजदारीकी
तकलीफ पूरी हे, ओर इसने रुपैयेभी
लेलिये हें, ओर करज दारीसे तंग व
लचार होकर रजस्टरी होजानेकी
अरजी पेसकी, अलावे इसके इस
तरह होनेमेंभी यह गाम उसी हालत
सासणमें रहेगा, जेसे साएलके था,
इसलिये हुक्म हुवा,
नम्बर १, महकमे रजस्टरीमें
लिपाजावे, कि साएलकी तकलीफातका
पयाल फरमा रजिस्टरी होजानेकी
दरष्वास्त पास हालतमें ईसीके वास्ते
मंजूर फरमाई गई हे, सो रजस्टरी
करदेवें. सं० १९४१ सावण वीद १३,
ता० २१ जोलाई सन् १८८४ ई०
छाप-
दस्तखत-

ख़ासमें दस्तख़त मुनशीके

॥ अपरंच ॥ मारो गाम १ कोद्यापेडी, कपासण प्रगणे हे, सो अबार मे कविराजाजी सावलदासजीने विकाव रु० १२००१) अषरे बारा हजार एकमे करदीदो, जीरो

खत मांड दीदो, सो खतपर रजस्टरीको हुक्म हुओ चावे; मारे क़रज़दारीकी बहुत तक्लीफ़ है, और मारे पिता गोविंद भटजीका काशीजीमें देहांत होगया, और श्री खाविंदां का शुभचिंतकहां, वींसु पांच रुपया ज़ियादा खर्च पड्या, और आगे पण मारी कंन्यारो विवाह कऱ्यो जीमें पण पांच रुपया खर्च पड्या, सो देणा है; और आगे मारे पिता गोविंद भटजीरा हात सुं क़रज़दारीमें यो गाम रु० ८००० में गेणे है, फेर मारे अतरो सबब हुवो जीमें पांच रुपया खर्च पड्या, जीसुं गाम म्हे विकाव करदीदो है, सो पत ऊपर रजस्टरीको हुकम हुवो चावे. मारे या क़रज़दारां आगे बहुत अरचन है, सो श्री जी हज़ूर खाविंदी कर हुक्म रजस्टरीको बख़्शे, या मारी अ़र्ज़ है, फ़क़त

किअ़्त　　　　समाअ़्त
द: नाथूलाल पं०　　　　द: अंबालाल पं०

महद्राज्य सभाका रुक़ा.

श्री एकलिंगजी.　　　　श्रीरामजी.

नम्बर ९८

॥ कविराजाजी श्रीश्यामलदासजी योग्य, राजे श्री महद्राज सभा लि० अपरंच- गांव कोद्याखेड़ीका रामभट काशीनाथने गांव मज़कूर रु० १२००१ में राजके हात वेच रजस्टरी होजावाकी दरख़्वास्त श्री जी हुज़ूरमें पेश की, अर सायलकी लाचारी और क़रज़दारी देखके वींकी तक्लीफ़ रफ़े करनेकी ग़रज़से रजस्टरी करादेवाको हुक्म श्री जी हुज़ूर दाम इक़्बालहूसे हुवा, जो तामीलन रजस्टरीमें लिखा गया है; और नक़्ल उस हुक्मकी इत्तिलाअन राज पास भेजी जाती है. फ़क़त. सं० १९४१ का सावण विद ११ ता० २२-७-१८८४ ई०

छाप-
हस्ताक्षर- मोहनलाल पंड्याका.

शेषसंग्रह नम्बर ३.

(यह प्रशस्ति बेदले गांवकी सुर्तानबावमें अन्दर जाते हुए बाईं तरफ़के आलेमें है.)

श्री गणेशगोत्रदेव्याः प्रसादात् ॥ श्री रामजी सत्य हे जी ॥
स्वस्ति श्रीमंगलाभ्युदयाय अद्यश्रीब्रह्मणोद्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे श्रीवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जंबूद्वीपे

आर्य्यावर्त्तान्तर्गतब्रह्मावर्त्तैकदेशे कुमारिकानाम्नि क्षेत्रे स्वस्ति श्रीनृप विक्रमातीतशालिवाहनकृतराज्ये संवत् १७७४ वर्षे शाके १६३८ प्रवर्त्तमाने उत्तरायणगते श्रीसूर्ये मासोत्तममासे वैशाखमासे शुक्लपक्षे पूर्णमासीतिथौ घटी ३६ स्वातिनक्षत्रे घटी ५६ सिद्धिनामयोगे घटी ४२ मेदपाटदेशे नगरउदयपुरमध्ये महाराणाजी श्रीसंग्रामसिंहजी त्रातराज्ये महाराजाधिराजगोब्राह्मणप्रतिपालकशरणागतवत्सलगंगाजलनिर्मलस्य उभयकुलप्रकाशनमार्तंडचहुवाणकुलउत्पन्नस्य वत्सगोत्रस्य आशापुरावरलवंधस्य महारावजी श्री वलभद्रजी सुत महारावजी श्री रामचंद्रजी सुत महारावजी श्री सवलसिंघजी सुत महाराजाधिराजमहारावजी श्रीसुर्ताणसिंहजी सप्तगोत्र एकोत्तरशतकुल स्वयमात्मा उद्धारणार्थे वापी हरिमन्दिर वाग कृताः नानानामगोत्र महाराजाधिराज महारावतजी श्रीनेतसिंहजी, सुत रावतजी श्रीजगनाथजी, सुत रावतजी श्रीमानसिंहजी, तस्य पुत्री राजश्री वाई श्रीअनंदकुंवरजी तस्याः कुक्षे पुत्ररत्न महारावजी श्रीसुर्तानसिंहजी, वापी हरिमंदिर वाग निमितार्थे : ज्यागतत्र: १३००१ वावडी तथा हरिमंदिर कमठाणा लेखे ६०७७९ श्रीदीवाणजी वाई राजकी देवकुंवर वाई गोते पधारया, सो खरचाणा जणीरी वीगत २२६६६, घोड़ा ५६, खरच्या ८६००, सीधो खरचाणो १५१३, गेणो खरचाणो ७०००, कपड़ा खरचाणा ७५००, रोकड़ खरचाणा जीरा रुपया ६०७७९ हुवा; कमठाणा वागरा हजार तेरा वीगेरा साव सर्व जमा रुपया ७३७८०; सरव सुधी खरचाणा संवत् १७७४ असाढ़ सु० १ रवे साह सुजारा परधाना माही कमठाणो हुवो. लिखितं मावट किरपारां गजधर, उदा सोमपुरा.

शेषसंग्रह नम्बर ४.

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीअंविकायैनमः ॥ अस्ति श्रीमानमानुर्वीमंडलेखंडमंडले ॥ जंवूद्वीपगते खंडो भारतोतिसुभारत ॥ १ ॥ तत्रदेशा नृपावेशा कामंसंति सहस्रशः ॥ तथापि संप्रशंसंति गुणा वागडनामभिः ॥ २ ॥ पंचत्र्यंशशतान् ग्रामान् विविधाभूतिभूतयः ॥ वहुदवोलया यत्र यत्रपुण्यजनाश्रितः ॥ ३ ॥ यत्र तीर्थान्यनेकानि यत्र धर्मः सनातनः ॥ तत्रदेशे महानद्यो विश्रुताः पुण्यवारिणा ॥ ४॥ एवं सर्वगुणे देशेनिवेशे पुण्यकर्मणां ॥ आस्ते गिरिपुरं नाम

नगरं नगरंजितं ॥ ५ ॥ यत्तदावितताेद्यानवापीकूपसरोवरैः ॥ शुशुभे शुभपर्यंते-बृहत्प्राकारगोपुरैः ॥ ६ ॥ यत्राट्टश्रेणयो नानाविधाविर्भूत भूतयः ॥ यत्रागण्यानि पण्यानि पणिनः सन्ति वैपुरे ॥ ७॥ यत्रासन्रम्यहर्म्याणि यत्राक्षेत्रकुलाश्रियः (?) ॥ विप्रा विप्राकृतायत्र सत्यः सत्यव्रतास्त्रियः ॥ ८ ॥ मंदुरा सुंदरा वाजिराजराजि-विराजिताः ॥ शालागृहं गजा यत्र रेजिरे राजसद्मसु ॥ ९ ॥ शुश्राव यत्र सततं वेदशास्त्रध्वनिं जनः ॥ समेधितसमाधीनां पठतामग्रजन्मनां ॥ १० ॥ वीराणां रणधीराणां धनुर्विद्याविवादिनां ॥ प्रासादानु प्रतिध्वाने र्यद्धनुर्गुण-गर्जितैः ॥ ११ ॥ रणन्नरणमंजीरैः संचारं राजवर्त्मसु ॥ शशंसुरिव लोकानां नक्तं यत्राभिसारिकाः ॥ १२ ॥ यत्र वेदविदोविप्राः प्रत्यहं विहितेष्टयः ॥ स्वधर्म-मन्ववर्त्तंत स्मृतिसंसक्तदृष्टयः ॥ १३ ॥ राजसंवर्हिताःपौरा यत्र यत्र महोत्सवान् ॥ परस्परस्पृहावंतः संतः कुर्वंतु संततं ॥ १४ ॥ सर्वदा संविधानेन मानेन मह तार्थिने ॥ यत्र दानं ददात्येव देहदानावधीकृतं ॥ १५ ॥ यत्पुरं पुरहूतस्य पुरस्यार्द्धिसमृधिजित् ॥ पुरंदरपुरीस्पर्धी यत्रमल्लनृपोभवत् ॥ १६ ॥ राज्ञः सहस्रमल्लस्य भोजराजसमप्रभः ॥ संपूर्णकवितामाद्यो धत्तेर्द्धकवितांपरः ॥ १७ ॥ द्विपत्तापकर्ता बृहच्चापधर्त्ता महासत्वपूरः प्रसन्नः प्रशूरः ॥ कलौयः कृपालुः कवींद्रैकपालः क्षितिं याति धीरः क्षमी मल्लदेवः ॥ १८ ॥ करधृतशरचापः शत्रुदुःसह्यतापः प्रवलखलनिहंता सुप्रमत्तेभयंता ॥ सकलविधिपुदक्षः कल्पनाकल्पवृक्षः समरसमयधीरो राजते मल्लदेवः ॥ १९ ॥ महादानकर्त्ता सलीलं विहर्त्ता गुणापारसिंधुर्द्विजन्मैकबंधुः ॥ समुद्यच्चरित्रः सदाय:पवित्रः सुराजच्छरीरः क्षितौ मल्लदेवः ॥ २० ॥ ततः प्रभुत्वं जगृहेथ शक्रात्प्रतापसग्ने-श्वयमाद्यकोपं ॥ धनंधनेशाच्छिव विष्णुतश्च शक्तिं — — — — स्वरसंनुमन्ये ॥ २१ ॥ तत्सर्वमेकीकृतमेवमूहे पंचस्फुरद्भूतमहासमूहे ॥ निधाय कर्त्तुं भुवि धर्मरक्षां त्रिपुक्षुणातं नृपमल्लदेहं ॥ २२ ॥ श्रीआशकर्णतनयो हरिचरणपूजने रसिकः ॥ राउलसहस्रमल्लो ज्ञानकलाकोविदः सोऽत्र ॥ २३ ॥ तस्यवंशे महाराज सूर्यवंशसमुद्भवः ॥ सराजा पृथिवीपालो भोगयोगरतः सदा ॥ २४ ॥ तत्र राउलसहस्रमल्लस्य वंशनाम लिख्यते आदिनारायणः तस्य सुत कमल कमल सुत ब्रह्मा ब्रह्मानु मरिचिः मरीचिनु कश्यपः क. सूर्यः सूर्यनु मनुः मनुनु ईक्ष्वाकुः ई. कुक्ष: कुक्षनु विकुक्षः वि. जांणुः जां. पुष्पधन्वा. पु. अनुरण्य. अ. काकुस्थ. का. विश्वावसु. वि. महापति. म. चवन. च. प्रद्युम्न. प्र. धनुर्धर. ध. महीदास. म. यौवनाश्व. यौ. समेधा. स. मांधाता. मां. कुरुस्थ. कु. प्रबुध. प्र. कुरूस्थ. कु. वेण. वे. प्रथु. प्र. हरिहर.

ह. त्रिशंकु. त्रि. हरिश्चंद्र. ह. रोहिताश्व. रो. हरिताश्व. ह. अंबरीप. अं. ताड़जंग. ता. धनुर्धर. ध. नाडिजंग. ना. धंधुमार. ध. सगर. स. असमंजा. अ. अंशुमंत. अं. भगीरथ. भ. अरिमदन. अ. थिरथूर. थि. थिरुज. थि. दिलीप. दि. रघू. र. अज. अ. दशरथ. दशरथनु श्रीरामचंद्र. रामनु कुश. कु. अतिथ. अ. निपध. नि. नल. न. पुंडरीक. पु. क्षेमधन्वा. क्षे. देवानीक. दे. अहिनु. अ. नगु. न. अहिनगु. अ. जितमंत्र. जि. पारिजात. पा. शीला. शी. अनाभि. अ. विजय. वि. वज्रनाभ. व. वज्रधर. व. नाभि. ना. विजनध. वि. ध्युपिताश्व. ध्यु. विश्वतित. वि. हनु. ह. नाभिमुख. ना. हिरण्य. हि. कौशल्य. कौ. ब्रह्मिणु. ब्र. पुष्कर. पु. पत्रनेत्र. प. हव्यनेत्र. ह. पुष्पधन्वा. पु. धावशद्धि. धा. सुदर्शन. सु. सेंहवर्णन्. सै. अग्निवर्णन्. अ. विजिरथ. वि. माहारथ. मा. हैहय. है. माहानंद. मा. आनंदराजा. आ. अचल. अ. अभंगसेन. अ. प्रजापाल. प्र. कनकसेन. क. जितसत्र. जि. सूजिति. सू. शिलाजित. शि. सौवीर. सौ. श्रुकेत. श्रु. श्रुमति. श्रु. चंद्रसिंह. चं. वीरसिंह. वी. श्रुजय. श्रु. श्रुजित. श्रु. बीलरा पान शरपी गोत्र गोस्वामी हंसनिवास हं. विजयादित्य. वि. येन विजयादित्येन नागराजोपासनं कृत्वा तेन पुत्रद. क्रतस्यनामं भासादित्य. भा. ना. भोगादित्य. भो. जोगादित्य. जो. केशवादित्य. के. गृहादित्य. गृहादित्य दक्षणदेशे सर्पापुरपटने निवास. गृ. भोजादित्य. भो. बापा राउल. बा. पुमाण राउल. पु. गोविंद रा. गो. महिद रा. म. आलु रा. आ. भादू रा. भा. शीह रा. शी. शक्तीकुमार रा. श. शालिवाहन रा. शा. नरवाहन रा. न. यशोभ्रम रा. य. नरब्रह्म रा. न. अंबाप्रसाद रा. अं. कीर्तिब्रह्म रा. की. नरवीर रा. न. उत्तम रा. उ. भालु रा. भा. सूरपुज रा. सू. करण रा. क. गात्रुड रा. गा. हंस रा. हं. जोगराज रा. जो. विरड रा. वि. वीरसिंह रा. वी. राहप रा. रा. देदू रा. दे. नरू रा. न. हरीअंड रा. ह. वीरसिंह रा. वी. अरिसिंह रा. अ. रयणसिंह रा. र. सामंतसिंह रा. सा. कुंवरसिंहरा. कु. मयण-सिंहरा. म. रेणसिंहरा. रे. सामन्तसिंहरा. सा. अरसींह रा. अ. रतनसिंह रा. र. श्रीपुंज रा. श्रीपुं. कुरमेर रा. कु. पदमसि रा. प. जीतशीह रा. जी. तेजसिंह रा. ते. समरसी राउल भूपति भर्तु शाखा द्वितयं विभाति भूर्लोके एकानाम्नी राणा-नाम्नी चपरमहती॥ धर्मे यस्य मतिर्नतिर्गुरुजने प्रीतिः सदा सद्गुरौ दात्रीपात्र गुणाच (?) निर्भयरणे सद्भिः समं संगतिः ॥ गीतिर्लौकिककर्मनर्मसुविधो निर्धूतलोभो-व्रती तेजःसिंहनराधिपो विजयतां संप्राप्य राज्य श्रियं ॥ अहह समरसिंहस्तस्य-सूनुः सवाहः त्रिभुवनपरिसंपत् कीर्तिगंगाप्रवाहः ॥ धरति धरणिभारं कूर्मपृष्ठा-वतारं ॥ निजकरकमलेनाप्यापनायंप्रयासं अजनिसमरसिंहः कौस्तुभः

क्षीरसिंधोः ॥ वि - निधिरधिधामामन्वयायेत्र भूपः अधिगतपरिभागः पुंडरीकाक्षवक्ष स्थलपरिसरधृत्या प्राप्तसाम्राज्यलक्ष्मीः ॥ दुर्गे श्रीचित्रकूटे विलसति नृपतौ सर्वसामंतचूड़ारत्नप्रद्योतताज्ञावतवदतिमति : दिक्पथं संप्रयाति ॥ सत्य कृष्णातिकृष्णो भवदुचितमिदं कृत्तिवासा शेवोभूत् शीतांशुप्रतिहायच्छविमतिकलुषां युक्तमेतद्वभार ॥ असुनृसुरजैत्रं चित्रकूटं पुरास्मिन् भवति समरसिंहे शासतिक्षोणिपाले ॥ कनककलशहेलिप्रस्फुरद्रम्यजालेः दिनमणिकिरणालीं सप्रकाशेत प्रेक्ष्यं ॥ जगति कति न संति प्रार्थितार्थप्रदान प्रकटितनिजशक्तेर्व्यक्तकीर्तिप्रपंचः ॥ परमिह परलोकः श्रीवशीकारसारं श्रयति समरसिंहे दान्तमस्ताभिमानं ॥ क्वचित् कदाचिद्दानांवुहस्तो वर्षति वा नवा ॥ श्रीमत्समरसिंहस्य एतत् सर्वत्र सर्वदा ॥ तुरंगलाला गजदान नीर प्रवाहयोः संगममुद्वहंति ॥ अस्य प्रमाणे निखिलापि भूमिः प्रयागलक्ष्मी विभरां बभूव ॥ आकर्ण्य पन्नगीगीतं यस्यबाहुपराक्रमं ॥ शिरश्चालनयाशेषश्चक्रेकंपं परंभुवः ॥ त्यागेनापि मनोहरेण कृतिनो यं कर्णमाचक्षते यं पार्थं प्रथयंति वैरि सुभटाः शौर्येण सत्वाधिकं ॥ यंरत्नाकरमामनंति गुणिनो धैर्येण मर्यादया यं मेरुं हि समाश्रयेण विबुधाः शंसंति सर्वोन्नतं ॥ तस्यकालीकन्ह समरसिंह पुत्रः रतनसिंह रा. नरब्रह्म रा. भालु रा. भा. केशरी रा. के. शामंतसींह रा. शां. सिहड़दे रा. सि. देदु रा. वरसंग रा. व. भचुंड रा. भ. डूंगरसींह रा. डूं. करमसींह रा. क. कांनड़दे रा. का. प्रतापसीं रा. प्र. गेपु रा. यस्यगेपालेन गोपिनाथविरदं धृत्वा तस्यपुत्र शोमदास रा. शो. गांगु रा. गां. उदिसिंघ रा. उ. प्रथीराज रा. राउल प्रथीराज पुत्र आसकर्ण राउल ॥ कर्णं कर्णावतारं च सर्वधर्मैकसाधनं ॥ हेमधारप्रवर्षेण गृहं पूर्य धरा मरा ॥ भृगुपतिरिव दृप्तारातिसंहारवारी सुरगुरुरिवशश्वन् नीतिमार्गानुसारी ॥ स्मरद्रवसुरतेषु प्रेयसीचित्तहारी शिवरिव सवभूव त्रीपुसत्वोपकारी ॥ सोपिमित्र कमलानिबोधयन् लोकशोकशमलान्यशोधयन् ॥ तेजसाखिलजगत्प्रकाशयन् विद्विषति निरमा - - - - - - - - - - राउल आशकर्णयेनराउल आसकर्णेन पातसाह अकब्बरेणसार्द्धं युद्धंकृत्वा तस्य राउल आशकर्ण सुत महाराया राउल श्रीसहस्त्रमल्लगृहे भार्यापट्टराज्ञी चाउड़ावंशे चापोत्कटराज अणहलपुरपत्तने निवास राउल श्री वनराजतस्य पुत्रपुंजु पुंजापुत्र सामतसीतस्य पुत्रजयसींघदत्त तस्यपुत्र षीमराज तस्यपुत्र चुंडराज तस्यपुत्र सवदास तस्यपुत्र सामंतसी तस्यसुत जेसींगदे तस्यसुत सुरुराउल तस्यपुत्री सुरजदे नाम्नी राउल श्री सहस्त्रमल्लपट्टराज्ञीतेन सूरिजपुर ग्रामनिर्वास्य

प्रासादोद्धारित : अनेकपुण्यदानध्वजाप्ररोहणं कृत्वा संवत् १६४७ प्रवर्त्तमाने उत्तरायण गते श्रीसूर्ये ग्रीष्मऋतौ माहा मांगल्यप्रदे श्रीमज् ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे ५ पंचम्यां तिथौ घटि ३४ सोमवासरे पुष्यनक्षत्रघटि २७ ध्रुवनाम्नियोगे बालवकर्णे एवंयोगे प्रतिष्ठा कृता राउल श्री सहस्रमल्लसुत कुएर श्रीकरमसींगजी कुएरश्रीजसोदाबाईजी तस्यप्रधान नागरीज्ञातीमहं भाभलव्यासफाउ गांधीसंघासाह कल्यांणमहं सोमनाथ प्रशस्तिकृता गोहिलशार्दूलसुत गोहिलदेवा सुतमहेसदास प्रसाद उपरिमहषोषा कोठारीकचरा श्री शुभं भवतु राउल श्री सहस्रमल्लजी रांणी श्री सूरजदेजीने लेखक दीक्षत वेणीदासे मार्कंड ऋषीश्वरनोउ आयहयो एहवो आशीर्वाद सांभल्योछिजी शुभं दशाअवतार लषिऐछि प्रथमं मत्स्यरूपेण प्रविष्ठो जलसागरे ॥ वेदमादायदेवानां सदेवः शरणंमम ॥ १ ॥ द्वितीयं कूर्मरूपेण मंदरंधारितं गिरिं ॥ समुद्रं मथितं येन सदेवः शरणंमम॥२॥ तृतीयं शुक्लरूपं च वाराहं गुरुवाहनं॥ पृथिवीचोद्धृतास्येन सदेवः शरणंमम ॥ ३॥ चतुर्थं नारसिंहंच — — — — — — — — — ॥ हिरण्यकश्यपो हंता सदेवः शरणंमम ॥ ४ ॥ पंचमं वामनरूपं ब्राह्मणोवेदपारगः ॥ पाताले च बलिर्बद्धः सदेवः शरणंमम ॥ ५ ॥ जमदग्निसुतश्रेष्ठो पर्शुरामो महाबलः ॥ सहस्रार्जुन हंताच सदेवः शरणं मम: ॥ ६ ॥ सप्तमो दशरथपुत्रो रामोनाम धनुर्धरः ॥ रावणश्च हतोयेन सदेवः शरणं ममः ॥ ७ ॥ अष्टमो देवकीपुत्रो वासुदेव इतिस्मृतः ॥ कंसासुर हतोयेन सदेवः शरणं मम ॥ ८ ॥ नवमो बुद्धरूपेण योगध्यान व्यवस्थितः ॥ गुरुरूपयतिर्जोगी सदेवः शरणं मम ॥ ९ ॥ दशमो कलियुगस्यांते कल्कीनाम भविष्यति ॥ म्लेच्छानां छेदनार्थाय सदेवः शरणं ममः ॥ १० ॥ एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ तस्यरोगाः क्षयं यांति गृहेलक्ष्मीः प्रवर्त्तते ॥ ११ ॥ एदशावतारनु फलभणीहो एते एहनु कल्यांणकारी उजे फलहोए ते श्री राउल श्री सहस्रमल्लजीनी तथा रांणी श्री सुरजदेजीनी फल प्राप्तह ज्यो लेषक दीक्षत वेणीदासे लषूछि सही कंदोई कांहांनां महं आउ आश्रु.

यावत् चंद्र तपेत्सूर्य तावत्तिष्ठंति मेदिनी ॥ यावत् रामकथा लोके अश्वत्थामा स्थिरं भवेत्॥ १ ॥सूत्रधार गोदाः तस्यपुत्र हरदास : हीरा : प्रशस्ति लपी छे.

(यह प्रशस्ति बहुत अशुद्ध है, जैसी मिली वैसी ही दर्ज की है).

शेषसंग्रह नम्बर ५

प्रशस्ति १.

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमहागणपतये नमः ॥ स्वस्ति श्री जयक्षेमांगल्यमभ्यु-

दयश्च ॥ श्रीमन्नृपविक्रमार्कसमयातीतसंवत् १६७९ वर्षे शाके १५४५ प्रवर्त्तमाने वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठी ६ तिथौ भृगुवासरे अद्येह श्रीगिरिपुरे महाराज श्रीमहाराउल श्री ५ पुंजाजी नामा श्रीगोवर्द्धननाथप्रीतये प्रतिष्ठा सहितप्रासादवरं उद्धरन् अस्ति स्वस्ति श्रीमन्महाराज: पुंजनामा प्रतापवान् ॥ प्रासाद मुद्धरन् भाति गोवर्द्धनधरस्यवै ॥ १ ॥ नवमुनि रसचंद्रै: संमिते व्दे्धरेशो कृतविकृत विहीनश्चंद्रम: शुभ्रकीर्ति: ॥ अमर गिरिवराभं कृष्णदेवस्यरत्यै सकलसुरनिशेषं पुंजराज: प्रसादं ॥ २ ॥ तत्र सूर्यवंशतिलकमहाराउल श्रीपुंजाजीकस्यप्रासादोद्धारकारिण: तावत् वंशावली लिख्यते ॥ अथ श्लोका: ॥ निरंजनं पूर्वमिदंवभूव तदेव नारायणरूपमादात् ॥ नारायणस्योदरनाभिनालाद् विनिर्गत: सृष्टिकरो विधाता ॥ १ ॥ मरीचिनामाथ विधातृपत्यं यं मानसं पूर्वमुदाहरंति ॥ मरीचि-पुत्र: किलकश्यपो भूत् संभूतिनाम्नीयमसोष्ट माता ॥ २ ॥ य: कश्यपो गोत्र-कृतांवरिष्ठ स्ततोदितो सूर्यभजीजनत्स:॥ वैवस्वतो नाम मनुस्ततोभून् महीभृता-मादिम एप यज्ञा ॥ वेदाक्षराणां प्रणवो यथावत् यमाप संज्ञा तनयं नयज्ञं ॥ ३ ॥ इक्ष्वाकुनामा तनय स्ततोभूद् भक्त्याययौ विष्णुमनंतवीर्य: ॥ तपांसितप्त्वापि-नलब्धपूर्वं ब्रह्मोपदेशात् परमापभक्तिं ॥ ४ ॥ विकुक्षिमिक्ष्वाकुरवाप पुत्रं य: शेषशय्या शयनं विमाने ॥ आराध्य भक्त्यापरयादिदेवं सुखानि भेजे हरितोषणानि ॥ ५ ॥ शशादनामा तनयस्ततो भूद्वनर्पितंयत् शसमापिपित्र्यं ॥ श्राद्धे शशादेति ततोस्यनाम कर्मानुरूपं कृतवान् वसिष्ठ: ॥ ६ ॥ तत: परंतत्र भव: प्रपेदे ककुत्स्थनामा पृथिवीं समग्रां ॥ ककुत्स्थितोयो वृषभाकृतेर्हि व्यजेष्ठ शक्रस्य पुरारिवर्गं ॥ ७ ॥ नाम्ना अनेनास्तनयस्तदीयं पैत्र्यं पदं प्राप्यततो-नरेंद्र: ॥ नाम्ना ययुस्तत्तनयोधिजात: तस्यावसाने पृथिवीं शशास ॥ ८ ॥ तस्यापिनाम्ना किलविष्टराश्व सुतोधिजज्ञे विधुशुभ्रकीर्ति: ॥ आयार्द्र इत्युद्गतना-मधेयो महीं समग्रां क्षितिप: शशास ॥ ९ ॥ पुत्रंप्रपेदे युवनाश्वमेप: श्रावंतनामा तनयस्तदीय: ॥ नाम्नापरीयेन विनिर्मिताभूत् श्रावंतनाद्यो पवनाप्तशोभा ॥ १० ॥ हित्वोपभोगांस्तपसोत्तमेन त्रिविष्टपंप्राप्तवतिक्षितीशे ॥ तदात्मजोसौ बृहदश्वनामा वभूवनामा किलचक्रवर्ती ॥ ११ ॥ तस्याभवत्सूनुरुदारवीर्य: कुशब्दपूर्वं वलयाश्वनामा ॥ यस्याभवत्पूर्वमथापिहत्वा वभूवधुंधु किलधुंधुमार: ॥ १२ ॥ दृढाश्वनामा तनयस्तदीयो महारथोसौ महनीयकीर्ति: ॥ तस्यापि हर्यश्वइतिप्रसिद्धो निकुंभनामास्य सुतोवभूव ॥ १३ ॥ ससंहताश्वं तनयं प्रपेदे कृशाश्वनामा तनयस्तदीय: ॥ प्रसेनजिव्हास्य सुतो वभूव जातो यतो वै युवनाश्वनामा ॥ १४ ॥

मांधातृनाम्ना तनयोस्य जातः स सार्वभौमः पुरुकुत्समाप॥ स आप पुत्रं त्रसदस्युसंज्ञं संभूतनामास्य सुतो धिजज्ञे॥ १५ ॥ तदात्मजश्चापि सुधन्वनामा विधन्वनामापि ततः परोभूत्॥ अथारुणस्तत्परमापधर्त्री महानुभावो महनीयकीर्तिः॥ १६॥ सत्यव्रतस्तत्तनयो धिजातो यो यौवराज्ये किल सप्तपद्यां॥ जहार कस्यापि विवाहकाले कन्यां निरास्थद् गुरुरस्यकोपात्॥ १७॥ पित्रा निरस्तावनमाजगाम दुर्भिक्षकाले थ गुरोर्हरन् गां॥ आप्रोक्षितां तां स्वभुजे वभार स कौशिकस्यापि कलत्रमत्र॥ दोपत्रयापादनतो वसिष्ठस्त्रिशंकुनामानमथाभ्यपिंचत्॥ १८॥ तदात्मजः सागरधीरचेताः नाम्ना हरिश्चंद्र इति प्रसिद्धः॥ तदात्मजो रोहितनामधेय-स्तस्यापि पुत्रो हरितो वभूव॥ १९॥ तस्यात्मजश्चंचुरिति प्रसिद्धस्तस्यापि पुत्रो विजयो वभूव ॥ तदात्मजोऽभूद् रुरुको महात्मा वृकोभवत्तस्य ततोपि बाहुः ॥ २०॥ कृते युगे वाहुरधर्मबुद्धिः शकैर्निरस्तो वनमाजगाम ॥ तत्रापपुत्रं सगरं गराढ्यं स भार्गवादस्त्रमवाप चोग्रं॥ २१॥ अवाप्य चास्त्रं जितवान् शकान् स इयाज राजा क्रतुभिः कृतात्मा॥ कृतेयुगे तस्यसुतो समंजा स अंशुमंतं तनयं प्रपेदे॥ २२॥ पुत्रो दिलीपः पृथितः पृथिव्यां खट्वांगनामा खलु तस्य जज्ञे॥ यो मृत्युमात्मीयमसौ विदित्वा मुहूर्तमात्रेण वभूव मुक्तः॥ २३॥ भगीरथस्तस्यसुतो वभूव भागीरथीं यो भुवमानिनाय॥ तस्यापि पुत्रः सुतनामधेयो नाभागनामान-मवाप पुत्रं॥ २४॥ ततोंवरीपः किल विष्णुभक्तो द्वीपांतसिन्धूपदपूर्वनामा॥ ततो युताजिद्दतुपर्णमाप कृते युगे यस्य नलः सखाभूत्॥ २५ ॥ सुदासनामाथ भुवंप्रपेदे कल्मापपादश्चततः परोभूत्॥ स सर्वकर्माणमवाप पुत्रं॥ ततो नरण्यस्त-त एवनिघ्नः॥ २६॥ पितुरनंतरमुत्तरकोशलान् दुलिदुहः प्रशशास नराधिपः॥ अथ दिलीप इति प्रथितो भुवि रघुरतोपि ततो प्यजसंज्ञकः॥ २७॥ दशरथः प्रशशा-स ततो महीमनघकीर्तिरुदारविचेष्टितः॥ तदनुराग इतिप्रथितो भुवि हरिरभूद्र-जनीचरदर्पहा॥ २८॥ ततः परं तत्प्रभवः प्रपेदे कुशाग्रबुद्धिः कुशनामधेयः॥ कुमुद्वतीं नाम य आप कन्यां नागस्य पुत्रीं कुमुदस्य साध्वीं॥ २९॥ तस्या-तिथिर्नाम सुतोपपन्नः कुशोपिजयात् (?) विधिना विपन्नः॥ तस्यापिनाम्ना निपधोभिजज्ञे नलस्ततो भून्नभआसपश्चात्॥ स पुंडरीकं तनयं प्रपेदे स क्षेमधन्वा-नमवाप पुत्रं॥ ३०॥ अनीकशब्दांतमभूव यस्य देवादिनामा स च तस्यपुत्रः॥ अहीनगुर्नाम सुतोस्य जज्ञे सुधन्वनामा तनयश्च तस्य॥ ३१॥ शीलः सुतोभूदथ उल्छनामा तस्यापि पुत्रः किल वज्रनाभः॥ नलस्ततो भूद्ध्यूषिताश्वनाम तस्यापि पुत्रः तत आसपुष्यः॥ ३२॥ तस्यार्थसिद्धिस्ततएव जज्ञे सुदर्शनस्तस्य हि चाग्निवर्णः॥ तस्यैव पत्नीं सहपुत्रगर्भामथाभ्यपिंचत् विधिना वसिष्ठः॥ स शीघ्रनामाजनितो

जनन्या प्रसुश्रुतस्तस्य ततः सुसंधिः ॥ ३३ ॥ नाम्ना सहस्वानथ तस्य जज्ञे यो विश्रुतो विश्रुतवांस्ततो भूत् ॥ ततो मरुत्तस्य बृहद्‌बलो भूत् कालेयमस्मात्परमाप क्षत्रं ॥ ३४ ॥ विजयरथसनामा तस्य पुत्रो बभूव जगति विजयशाली चंद्रमः-शुभ्रकीर्तिः॥ विदित परमतत्वो भोगशीलो महात्मा भुवनभवनिदानः सर्वलोकैक कांतः॥ ३५ ॥ महारथस्तत्तनयो बभूव तदात्मजो हैहयनामधेयः॥ ततोमहानंद इति प्रसिद्ध आनंदराजोस्य सुतो धिजज्ञे ॥ ३६ ॥ तज्जो चलोभूनूमहनीयकीर्तिः रभंगसेनस्तनयोस्य जातः ॥ तस्य प्रजापाल इति प्रसिद्धो यः क्षात्र-धर्मः प्रथितप्रतापः ॥ ३७ ॥ कनकसेन इति प्रथितो भुवि तदनु पार्थिव-मंडलमन्वशात् ॥ यदनु सैन्यमगात् पृथिवीक्षितां सकललोकजयाय यियासतः ॥ ३८ ॥ जितक्षत्रः सुतस्तस्य सुजितः स्तस्य चात्मजः ॥ शिलाजित्तनयस्तस्य सावीरस्तस्य चात्मजः ॥ ३९ ॥ सुकेतस्तनयस्तस्य सुमतिस्तस्य वै सुतः ॥ चंद्रसिंहः सुतस्तस्य वीरसिंहोपि तत्सुतः ॥ ४० ॥ सुजयस्तस्य पुत्रोभूत् सुजितस्तस्य चात्मजः ॥ वैजबापायगोत्रो यो हंसवाहन-संज्ञकः ॥ ४१ ॥ पुरे सर्पान्वयेशोभूद् राजा राजीवलोचनः ॥ सूर्योपासन-मापेदे गोत्रसंज्ञासमन्वितं ॥ ततः प्रभृति वंश्या ये वैजवापाय गोत्रिणः ॥ ४२ ॥ तस्यपुत्रो महात्माभूत् विजयादित्यसंज्ञकः ॥ सूर्यमाराध्य यल्लब्धो तेनादित्योपनामकः ॥ ४३ ॥ नीते सर्पपुरे नागैस्ततोनागह्रदे गतः ॥ केशवादित्यनामा तु पुत्रस्तस्य महीभुजः॥ नागादीत्यो पि तत्रासीत् गृहादित्यस्तदात्मजः ॥ ४४ ॥ भोजादित्यस्ततो लेभे पुत्रवाप्पं नराधिपं ॥ ४४ ॥ हारीतनामा मुनिरस्य मित्रं गद्यावली येन विनिर्मितास्ति ॥ स एकलिंगास्पद-मीशमारादाराध्य लेभे किल चित्रकूटं ॥ ४५ ॥ हरः प्रसन्नो निजभक्तयोरदादेकस्यपार्श्वे किल चंडरूपता ॥ वाप्पं स राजानममाद्यवाग्भवः स चित्रकूटाधिप-मादधे वरात् ॥ ४६ ॥ हारीतराशेः कृतसाहचर्यास्तएवलाख्यामदधुर्महेंद्रा.(?)॥ खुम्माणनामा परमाप पृथ्वीं महींद्रनामापि ततो महीशः ॥ ४७ ॥ ततो तुलस्तस्य च सिंहनामा बभूव राजन्यपतिः सुधर्मा ॥ शक्तिकुमारसंज्ञोथ शालिवाहन संज्ञकः॥ ४८ ॥ शालिवाहन संज्ञेति यदाख्या शाकसुस्थिति ॥ ततः कुलेस्मिन्नरवाहनोभूदंबाप्रासादात्स च पुत्रमाप ॥ अंबाप्रसादेति ततोस्यनाम भूमंडले भूत् प्रथितं महत्वात् ॥ ४९ ॥ कीर्तिब्रह्म सुतस्तस्य नरब्रह्मापि तत्सुतः ॥ नरवीरोस्य तनय उत्तमोभूत्तदात्मजः॥ ५० ॥ श्रीपुंजस्तस्य पुत्रोभूत् कनकोथ महीपतिः ॥ भादुनामा भवत्तस्य गात्रडस्तस्य चात्मजः ॥ ५१ ॥ स हंसपालाभिधमाप पुत्रं

स वीरडंनाम सुतं च लेभे ॥ स वीरसिंहं स च देवलाख्यं निरूपमस्तस्य सुतो बभूव ॥ ५२ ॥ महीशसिंहोस्य सुतोधिजज्ञे सपद्मसिंहं सुतमाप पश्चात् ॥ तस्यारिसिंहस्तनयो वभूव सामंतसिंहोस्य विभुर्विजज्ञे ॥ ५३ ॥ स जीतसिंहं तनयं प्रपेदे सएवलोकं सकलं विजिग्ये ॥ तस्य सिंहलदेवो भूत् देदुनामास्य पार्थिवः॥ वीरसिंहोस्य तनयो वीरसिंहपराक्रमः ॥ भूचंडस्तस्य पुत्रोभुत् तज्जो डुंगरसिंहकः॥ ५४ ॥ तत्पुत्रः कर्मसिंहो भवदवनिपतिः व्रातसंजातकीर्तिः॥ कानडदे थास्य सूनुः परपुरपरिखापूरको वैरिवर्गैः ॥ ५५ ॥ पाताख्यस्तस्य पुत्रः समभवदखिला नंदकारी जितारिः ॥ स्तज्जो गोपालनामा समजनि जनतातापहारी नरेंद्रः ॥ ५६ ॥ तस्यात्मजो धीरगभीरचेताः श्रीसोमदासः प्रवरप्रणेता ॥ वभूव तस्यापि सुतो बलीयान् श्रीगंगदासो हि रणे विजेता ॥ ५७ ॥ अथास्य पुत्रः पदमाप पूर्वं यो वैरिवर्गे प्रथितप्रतापः ॥ नामास्य यस्योदयशब्दपूर्वं सिंहेति लोकप्रथितं नृपस्य ॥ ५८ ॥ तस्यात्मजो महातेजाः कामकांतिकृपाश्रयः ॥ औदार्यधैर्यशौर्याणां पृथ्वीराजो भवन्निधिः ॥ ५९ ॥ जगति विततकीर्तिः श्र्याश कर्णोरिवाणः सुमनासिशयचारु (?) वीरवीर्यापहंता ॥ सुसुरतरुलताभोद्वाहु युग्मोधरित्र्यामभवदमलकीर्तिः राजविद्याप्रवीणः ॥ ६० ॥ आशकर्णोः महाराजो महादानानि षोडश ॥ चकार विधिना यत्र दातृतामगमन् द्विजाः॥ ६१ ॥ मनोरथयथातीतं याचकेभ्यो ददौ धनं ॥ आशकर्णेति तेनास्य चिंत्यनामसमनन्वयात् (?)॥ ६२ ॥ राजाराजीवचक्षुः कनकगिरिनिभस्तुल्यकांतोधरित्र्याः द्विड्विद्याप्रवीणो विनयनयवतामग्रणी शौर्यभाजां ॥ मल्लोनाम्नामहात्मा भुवनभवनिधिः सर्वलोकैककांतो दातात्राताविहर्त्ता पवनजवहरो मध्यवर्ती विविक्तः ॥ ६३ ॥ तदात्मजः सागरधीरचेताः सुकर्मसिंहेत्यभिधानयुक्तः ॥ जघान यो वैरिगणं महांतं महीतटे शक्रसमानवीर्यः ॥ ६४ ॥ अथ प्रासादउद्धारकारी महाराजश्रीपुंजराजमहिमा ॥ तदात्मजो वैरिगणैरसह्यः सपुंजराजो जनतासुखाय ॥ यशो यदीयं दिवमंतरिक्षं भुवच वर्वर्तिसदैव व्याप्यं ॥ ६५ ॥ गंगाजलं यस्यमुखेघहारि यस्यांतरावर्ति हरिस्वरूपं ॥ पुरो यदीये भगवान् सलोकः सपुंजराजो जयताच्चिराय ॥ ६६ ॥ प्रासादवर्गोप्यमुना विधायि गोवर्द्धनोद्धारकृतो निवासे ॥ हेम्नस्तुलादानमकारि येन सुवर्णपृथ्वीमददाद् द्विजेभ्यः ॥ ६७ ॥ यं कर्मसिंहः सुपुवेद माख्या सा राजमातापि समग्रबुद्धिं ॥ सपुंजराजो नृपतिः प्रसादं व्यधत्त गोवर्द्धननाथरस्यै ॥ ६८ ॥ सप्तकोशार्द्धमानेन ग्रामे गाटडीनामनि ॥ निर्मीतवान् तडागं यः सागरोपममक्षयं ॥ ६९ ॥ रोपितवान् उद्यानं नवलक्षतरुश्रिया ॥ रम्यंपुष्पफलोपेतमिंद्रस्य नंदनं यथा ॥ ७० ॥ अर्थानर्थौ

विचार्यौं यमनियमवतौ यस्य धर्मेस्ति बुद्धिः योनाधारे जनानां जगति सदयथा माधवो वासईज्ये ॥ प्रीनः कांतः सुवर्चा मदनसम बभौ भास्कराभः सधन्वी दाता त्राता विनेता धननिचयधवः पुंजराजा चिराय ॥ ७१ ॥ कोटिः पद्मं लक्षमित्येवशब्दाः सलैर्बद्धे बद्धभावा धने ये ॥ तेते सर्वेनेन दत्ते धनौघे लोके लोके छिन्नबंधाश्चरंति ॥ ७२ ॥ यस्मिन् महीं शासति पार्थिवेंद्रे खलश्च साधुश्च विविक्तवृत्तिः ॥ म्लेच्छार्णवो यत्रगतः क्षयाय स पुंजराजो जयताच्चिराय ॥ ७३ ॥ गृहभूवृत्तिदानेन गृहस्था ब्राह्मणाः कृताः ॥ श्रीपुंजराजउद्धर्ता प्रासादं वै रमापतेः ॥ ७४ ॥ यस्मिन्महीं शासति पार्थिवेंद्रे मनोपि लोकस्य न पापवर्ति ॥ यो राजवर्यः प्रचुरप्रतापः स पुंजराजो जयताच्चिराय ॥ ७५ ॥ संख्ये यत्कर-वालकालभुजगः प्रत्यर्थिकंठाटवीरक्तं हंत निपीय भूरि विशदं निर्माति चित्रं यशः ॥ श्यामो यस्य च वैरिभूतिरमणस्फुर्जत्कृपाणोरगो यत्सूते सितभिन्नमुत्तमयशस्तत्पुंजराजोचितं ॥ ७६ ॥ तत्प्रत्यर्थिमहीभृतां ब-त हठात् कंठान्विछिद्य स्फुटं तत्स्त्रीणां परिपीय हंत वपुषां पीतां मनोज्ञां छविं ॥ संख्ये यस्य च खड्गकालभुजगी श्रीपुंजराजप्रभोर्यत्पीतं प्रचुरं प्रतापमतुलं सूते तदेवोचितं ॥ ७७ ॥ प्रासादस्त्रिदशांपतेर्मधुपतेर्वैकुंठलोकोपमं दृष्ट्वा यं सुरभिच्चकार निलयं त्यक्त्वापि लोकं स्वकं ॥ राज्ञो भक्तिवशाद् गतः परमुदं पुंजस्य भक्तप्रियः शश्वच्छांतिमुपैतु मा गिरिपुरे लोकोमदाप्तेः कृते ॥ ७८ ॥ प्रासादः कमलापतेस्त्रिवसनं ब्रह्मादयो यत्र वै नित्यं दर्शनकां-क्षया मधुपतेरायांति विप्रच्छलात् ॥ इंद्रो यत्रनुमानभंगभयतः पुण्यैः सुदृष्टो परो भक्त्या पूजयते धरंतमचलं गोवर्धनं भूगतं ॥ ७९ ॥ कमलहंस-समानकमच्युतः सकललोकसमुद्धृतिहेतवे ॥ गिरिपुरे नृपपुंजशुभाय वै स्व-यमुपेत्य सदा रमते त्र हि ॥ ८० ॥ प्रदक्षिणप्रक्रमणात् पदे पदे धर्मार्थतुल्यः कनकाचलार्पणैः ॥ प्रासादवर्यः कमलापतेः शुभः स्तंभैः शुभैः पुंजनृप-प्रकाशितः ॥ ८१ ॥ कृत्वाश्रांतिमुपागतो मरहितं दैत्यक्षयं किं ननु तच्छ्रांतिं समुपोहितुं (?) हि भगवान् रम्यं प्रदेशं गतः ॥ दृष्ट्वा भक्तनृपास्पदं गिरिपुरं तत्रापि भूपान्वये मत्वा पुंजगतिं सुभक्तमधिकं तत्रैव वासं व्यधात् ॥ ८२ ॥ अव्यक्तरूपो भगवान् गुहासु ग्रावांविलीनः किल पुर्वमास्थात् ॥ स सांप्रतं पुंजनृपेंद्र-भक्त्या व्यक्तस्वरूपेण समुद्गतो स्ति ॥ ८३ ॥ म्लेच्छैर्व्याप्तमिदं विलोक्य सकलं भूमेस्तलं संकरं वर्णानां च विलोक्य रम्यविषयं प्राप्तो धुनास्ते हरिः ॥ मत्वा भक्त-मिदं य विघ्नमधिकं पुंजप्रभुं सर्वदा वासं तत्र विरोचयत् ध्वनिमसौ श्रोतुं प्रियं छंदसां ॥ ८४ ॥ वेदार्थप्रतिपत्तिशास्त्रमधुना संप्राप्यते वागड़े मत्वैतिप्रवरः पुराणपुरुषो

ध्यास्ते तमेवादरात् ॥ ज्ञात्वा पुंजपतिं स्वकीयभजने दार्ढ्यं दधानो हरिः वासं तत्र विरोचयत् गिरिपुरे तद्राजधान्यां स्वयं॥ ८५ ॥ कला इव कलावंतं वाचो वाचस्पतिं यथा ॥ कल्पवृक्षं लता यद्वत् राजपत्न्यो द्रुमं श्रिताः ॥ ८६ ॥ अथ पत्नीनाम ॥ पूर्वप्रतापा देवी या शेषवंशसमुद्भवा ॥ अथ या प्रथमा देवी शोलंकीवंशजा हि सा ॥ ८७ ॥ योधपुरे समुत्पन्ना पद्मा देवीति सा मता ॥ ज्येष्ठा झालान्वये जाता गुरादेवीति विश्रुता ॥ ८८ ॥ नाम्ना गंभीरदेवीति मोहनाख्यपुरोद्भवा ॥ हाडान्वये समुत्पन्ना चतुरंग देवी हि सा मता ॥ राणाग्र्यवंशसंभूता पाटमदेवीति या मता ॥ ८९ ॥ मेडताख्यपुरे जाता कनूकादेवीति सा मता ॥ वीरपूरसमुत्पन्ना अंगदेवीति सा मता ॥ ९० ॥ बुध्नपुरे समुत्पन्ना गंगादेवीति सा मता ॥ परमारकुले जाता बहुरंग्देवीति सा मता ॥ ९१ ॥ झालान्वये समुत्पन्ना सौभाग्यदेवीति सा मता ॥ पद्मावतीति विख्याता चाहुवाणकुलोद्भवा ॥ ९२ ॥ नाम्ना शोभाधरा पश्चात्राजपत्न्याः प्रकीर्तिताः ॥ अथ भ्रातृनाम ॥ भ्राता वीरमजीन्नाम शोभनो ललितान्वयः ॥ भ्राता ऽजितसिंहश्च जयसिंहस्ततः परं ॥ रुद्रसिंहस्ततोप्पन्य कुमारो जलजेक्षणः ॥ ९४ ॥ अथ कुमारनाम ॥ भाति प्राप्तपरानंद शुद्धोभयकुलान्वितः॥ — — — — — — — —

— — — — — — — — क्षणः॥९५॥कंदर्प इव लावण्यःकीर्तिमान् गुणवान् शुचिः॥ श्रीमान् प्रतापसिंहाख्य कुमारो भासुरोग्रणीः॥ ततः श्रीभाउनामापि कुमारोललिता न्वयः॥९६॥ श्रीमान् सज्जनसिंहेति ततो नाम्नागुणान्वितः॥ एतेकुमारा विख्याताः

— — — — — — — — — — ॥ ९७ ॥ — — — — — — — व्योमाधवपुंजश्चक्षत्रियः॥ वच्छाख्य महितो विप्रः भालजीनाम सद्विजः॥ ९८॥ प्रधानो रामजीनामा मुख्योन्ये थाधिकारिणः॥ अथापि भीमजीनामा रघुनामापि तत्परः॥ ९९॥ शिल्प सुग्रामनामापि वाणिग् नारायणः पुनः॥ — — — — — — — — — — — — —

— — — — न ॥ १०० ॥ लालजिन् मेघजिन्नाम मेघजीन्मांमजित् पुनः॥ संस्तुतजानीतिकुसुतपूंजा लिखित॥ १०१ ॥ अथप्राकृतवंशावलिः आदिनारायणः कमल. ब्रह्मा. म — — — — — — — — — — — — — — — — — — कुस्थ. विश्वावसु. महामति. च्यवन. प्रद्युम्न. धनुर्धर. महीदास. युवनाश्व. सुमेधा. मान्धाता. कुरुछ. वेन. पृथु. हरिहर. त्रिशंकु. रोहिताश्व. अंबरीप, ताडजंग, नाडीजंग. धुंधुमार. सगर. अ — — — — — — — — — — — — — — — — — —

दशरथ. राम. कुश. अतिथि. निषध. नल. पुंडरीक. क्षेमधन्वा. देवानीक. अहीनगुजितमंत्र. पारिजात. शल्य. वृक्षनाभ. वृक्षधर. नाभि. विजिनध. ध्युपिताश्व. विश्वजित्. हनुनाभि. — — — — — — — — — — — — — — —

— — द्वि. सुदर्शन. सिंहवर्णन. अग्निवर्ण. विजरथ. महारथ. हैहय. महानंद. अनंदराज. अचल. असंगसेन. प्रजापाल. कनकसेन. जितछत. सुजित. शिलाजित. सावीर. सुकत. सुमति. चं. — — — — — — — — — — — — — — —
— — — — — — विजयादित्य. आसादित्य. भोगादित्य. योगादित्य. केशवादित्य. गृहादित्य. भोजादित्य. अथ राजवंशावलिः बापो राऊल. षुमाण रा. गोविंद रा. महित रा. आलू रा. भादू रा. सिंह रा. शक्तिकुमार रावल. शा — — — —
— — — — — — — — — — — — — — — — — — नरवीर रा. उत्तम रा. भालो रा. शूरपुंज रा. कर्ण रा. गोत्रड रा. हंसराव. जोनराज रा. विरड रा. वीरसिंह रा. राहप रा. देदो रा. नरू रा. हरीअड रा. वीरसिंह रा. अरसिंह रा. रायणसिंह रा. जितसिंह रा. कुअरसिंह रा. मयणसिंह रा. रयणसिंह रा. नारसींह रा. आरसींह रा. रतनसीह रा. श्रीपुंज रा. कुरुमेर रा. पद्मसींह रा. जीतसींह रा. तेजसींह रा. समरसींह रा. रतनसींह रा. नरब्रह्म रा. भालो रा. केशरीसिंह रा. सामतसींह रा. सीहड़दे राव. देदो रा. वरसेग रा. भचुंड रा. डुंगरसींग रा. कर्मसींह रा. कांनडदे रा. प्रतापसींह रा. गेपो रा. सोमदास रा. गोरा. आदसींग रा. पृथीराज रा. आसकर्ण रा. सेहेंसमल्लराव. कर्मसींहराव. ॐ श्री ५ पुंजराजो जयति. अथ भ्रातनाम भ्राता जेसींगजी भ्राता रुद्रसींगजी भ्राता वीरमजी भ्राता रांमसींहजी अथ राजपत्नीनाम उँ वौ प्रतापदे. वौ सोलंकणी वौ. योधप्री वौ. भाली जेष्टा वौ. मालपरी वौ. हाडी वौ. पाटमदे वौ. राणी वौ. मारुणी वौ. वीरपरी वौ. बघ्राउंरी वौ. प्रमार वौ. भाली लाडी वौ. चहुआण बडारेण जोधरां. अथ कुमार नाम. कु. गिरधरदासजी कु. लालाजी कु. प्रतापसींगजी कु. भाऊजी कु. — — जी अथ —र्श्व नाम दु० न्यांइदास वाघेला माधवदास पडाएता रांमजी महंवछा सुत लालजी मेघजी दा. सधारण सुत नरीणदासजी नितिकु सुत पुंजा सुत मुकुंद सुत द्वसरदा लिखितं मेदपाटि ज्ञात जोसीपुंजा सुत हरजी भ्राता हरीनाथ श्रीजीनो भंडारी.

श्री गणेशायनमः स्वस्ति श्री जयोमांगल्यमभ्युदयेषु श्रीगिरपुरनगराधिष्ठाता श्रीसूर्यवंशोद्भव महाराउल श्रीआशकरणजी तत्पुत्र महाराऊल श्री सहस्त्रमल्लजी तत्पुत्र महाराऊल करमसींहजी तत्सुत महाराजा धिराज महाराऊल श्रीपुंजराजजी संवत् १६७९ वैशाषशुदि ५ दिने श्री विष्णोः गोवर्द्धन नाथजी कस्य गिरपुरीरा प्रसागर सन्निधाने प्रासादा कृतः तथाच प्रतिष्ठा कृता तत्तुला सुवर्णस्तुला पुरुप कृतं स महाराजा चिरंजीवी श्रीपुंजराजजी कुंवर श्रीगिरधरदासजी वा माधवकीसोरजी.

स्वस्ति श्री डुंगरपुर सुभसुथाने राज्ञांराज्ञे महाराऊल श्री पुंजाजी आदेशात् वसइग्रामि पटेल जगमाल साहा महीआ तथा समस्त गामलोक तथा समस्त डोलीया ब्राह्मण जोग्य समाहुटकारजांचजत ओग्राम श्रीगोवर्द्धननाथजीद्वार धरमपाते आचंद्रादिक तांवापत्र मुंकीछे ते अमारे वंशमांहे हुअेतेपाले नांपाले तथानांपालावि तेने श्रीनाथजीनी आंण दुए श्री स्वांप्रतदुवे साहांरांमजी संवत् १७०० वरषे कारतक शुदी ३ गुरु राजलोक तथा कुंअर श्री गिरधरदासजी राणीसेपाउताणी राणीहाड़ी राणीमिडतणी राणीरणी वडारणशोधर अत्रसापः चहुआंण सुंदरदासजी चहुआंण भीमजी वाघेला माधवदासजी चहुआंण कचरा दोसीसवजी मितागेला मिताअमरजी सुतमिता वाघेजी दवेनईदास सलाट भाणजी लपीतं

(यह प्रशस्ति डूंगरपुरमें गोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें है).

दूसरी प्रशस्ति.

डूंगरपुरमें वनेश्वरमें विष्णुके मंदिरकी प्रशस्ति.

॥ स्वस्ति श्रीमत् संवत् १६१७ वर्षे शाके १४८३ प्रवर्त्तमाने उत्तरायणगते श्रीसूर्ये जेष्टमासे शुक्लपक्षे ३ तृतीयायां तिथौ सुमुहूर्त्तयोगे तद्दिने महारायां रायराउल श्री आशकर्णजी विजयराज्ये एवं विधे समये श्रीगिरिपुर राजवंश-विवर्द्धनसत्कीर्तिसुधाधवलितदिङ्मंडल श्रीमहारायां रायराउल श्रीपृथ्वीराज-स्य पट्टराज्ञी उभयकुलशुद्धदायिनी तथा श्रीलाछवाई श्रीआशकर्णजी श्री अपिलराजजी रुपसत्संतान सवित्रीबाई श्रीसजनाबाई नाम्नी तयाइयं पुरुपोत्तमस्य प्रासादेपु श्रेष्ठः कारितः सुप्रतिष्टितः कृत : छ : श्रीमद्वागडदेश भूमिपतिभिश्चिंतामणेस्तुल्यतां प्राप्तैर्व्याप्तमिदं विलोक्य विशदं रत्नाकराभं कुलं ॥ वक्रं किंचिदुदेति वामन इवोच्चाप्ये फले कामना वक्ष्येतः कमला करोऽतिरुचि-रांस्तस्मिन्भवाल्लेशत : ॥ १ ॥ वर्षे १६१७ सप्तमहीरसेंदु मितिके शाके १४८३ ग्निनागाब्धिभू संख्ये ज्येष्ट सुशुक्लवह्निदिवसे श्रीसज्जनांऽवाख्यया ॥ राज्ञा-कारि मुरारिभक्तिमनसा प्रासादएप ध्रुव :क्रीडां चात्र करोतु भक्तिरसिकोलक्ष्म्या नरेपूनमः ॥ २ ॥ आसीद्वंशस्य कर्त्ता रुचिरतरतनु : प्रौढमूलप्रतापस्तापाक्रांतारिवर्गो गिरिपुरनिलयो राजभूच्चंडनामा ॥ पाताख्यः सूर्यवंशे समभवदखिलानंद कारीजितारि स्तज्जोगोपालनामा समजनि जनतातापहारी नरेंद्र : ॥ ३ ॥ राजद्राजगजोघताडनहरेर्यस्यासिचंचच्छटात्रस्तव्यस्तपरिग्रहारिपुमृगा : प्राप्ता : परंकाननं ॥ तावत्तत्र च तत्प्रतापदहनज्वालादहद्विग्रहा : सौख्यद्वेषविनिघ्नमान

सगणा मग्ना हि मोहांबुधौ ॥ ४॥ तस्यात्मजो धीरगभीरचेता श्रीसोमदासः प्रवरप्रणेता ॥ बभूव तस्यापि सुतोबलीयान् श्रीगंगदासो हि रणे विजेता ॥ ५॥ येनाष्टादशसाहस्त्रं बलं भग्नं महात्मना ॥ इलदुर्गाधिपोभानु भालेगर्जन ताडितः ॥ ६ ॥ तुलापुरुषकर्त्ता यः स्वर्णभारभवस्यच ॥ द्विजातीनां च यो दाता त्राता चौरभयाद्दिसः ॥ ७ ॥ आसीद्गंगेवसूनुर्नयविनयवतामग्रणीः शौर्यभाजां राज्ञामाज्ञा प्रणेता पवनजवहरः कल्पवृक्षप्रदाता ॥ याचद्धैरण्यगर्भं परउदयपदात्सिंहनामा नृपेंद्रो दानं दानेश तुष्टै व्यरचयदमलं कालतापापहारि ॥ ८ ॥ केचिद्व्यसनिनो द्यूते परयाशासु केचन ॥ भूपालोदयसिंहस्तु व्यसनी जगदीश्वरे ॥ ९ ॥ तस्यात्मजो महातेजाः कामकांतिः कृपाश्रयः ॥ औदार्यशौर्यधैर्याणां पृथ्वीराजोभवन्निधिः ॥ १० ॥ ब्रह्मांडे रंगभूमौ कनकगिरिशिरः पादपीठोधिरूढा ज्योतिः पुष्पांजलिं साजलधिजवनिकोल्लंघने प्रक्षिपंति ॥ अग्रेशंभोः शुभेंशे शशितपननिभं तालयुग्मं दधाना पृथ्वीराजस्य कीर्ति जगति विजयते नृत्यमाना सदैव ॥ ११ ॥ पृथ्वीशनृपते राज्ञी सज्जनाख्या मितप्रभा ॥ कारितो यं तया दिव्य प्रासादेषु वरोवलः ॥ १२ ॥ तुला पुरुष दानस्य हेम संपादि तस्यच ॥ गोसहस्त्रादि दानानां दात्री पात्रजनस्य या ॥ १३ ॥ विश्वंभर तया व्याप्त्या ख्यातो दानैर्यशोभरैः ॥ अतुलोपि तुलां नीतो यया विष्णुर्मही तले ॥ १४ ॥ यत्कीर्त्यैवजितः शशी परिचलन्क्षीणत्व मापद्यते यद्दातृत्वपराजितो दितिसुतः पाताल आसीधुना ॥ अल्पोयद्गुण वर्णने फणिपतिः शेषत्वमागादिव वक्तुं ते सजनांबसाधुगुणितां शक्तः कथं स्यामहं ॥ १५ ॥ आशामायात काशविदधलविपुलं सेवमिद्राद्य धीशा दिङ्नागायात यत्नं गगनकुरुघनी भावलाभापयत्नं ॥ शैला बध्नीतबंधै र्विपुलतरतयो व्याप्तितः सज्जनाया ब्रह्मांडं भेदमेती कथयति चलतश्चंद्रइत्येव मान्यं ॥ १६ ॥ तस्यास्तनूजौ शुभनामधेयौ श्रीआशकर्णोक्षयराजनामा ॥ पूर्णार्थकामौ निहतारिवर्गौ भूमौ भवेतां सततं सुखाय ॥ १७॥ श्रीलाछबाई परमा पवित्रा श्री सज्जनांबा जनितानुरूपा ॥ भूयापदा भक्तिमती व राम दातृत्व निर्यातितकर्णकीर्तिः ॥ १८ ॥ पृथ्वी राजात्मजोयोसावाशाकर्णः श्रीयान्वितः ॥ यस्यकिंकरवर्गेण मेदपाटपतिर्जितः ॥ १९ ॥ द्विपत्कामहर्त्तात्यसद्धामधर्त्ता स्फुरत्काम रूपः क्षितिशानुरूपः ॥ अमानेनमानेनमानी सुवर्ण सदाभातु भूमंडले ह्याशकर्णः ॥ २० ॥ जगतिविततकीर्तिः श्याशकर्णोरिवाणः सुमनसिशयचारुवीर्यवीर्यापहंता ॥ सुसुरतरुलताभोद्दाहुयुग्मो धरित्र्यां भवतुहिसुखशाली राजविद्याप्रवीणः ॥ २१ ॥ अपिच ॥ श्रीमद्दाल

णदेवसूनुरभवल्क्षात्रैर्गुणैः संयुतः सोलंकी हरराजइत्यभिधया ख्यातो थ तस्यात्मजः ॥ कृष्णः कृष्ण इवापर क्षितितले श्रीसज्जनांबा ततो जाता कारि तया प्रसंनमनसो प्रासाद एप स्थिरः ॥ २२ ॥ अपिच ॥ श्री शेपो मरुमंडले समभवद्वैरीभुजोच्छेदकृत् तत्पुत्री शुभकर्मवलवचना श्रीता गुणैः श्रीश्रितैः ॥ आशाकर्णनृपस्य चाग्र्यमहिषी सूता रमांबा यया भूयात् स्वर्गनिवासिनीभिरुपमा सा ऽपूर्वदेऽवासदा ॥ २३ ॥ आशाकर्णात्मजः श्रीमान् सहस्त्रमल्लसंज्ञितः ॥ अक्षया राजपुत्रास्तु व्याघ्रज्येष्ठास्तथामताः ॥ २४ ॥ सुरसाक्षरतां पदे पदे घटयंती परमोहनाशिनी ॥ विमला कमलाकरस्य सा विदुशो दिव्युतिहंसगामिनी ॥ २५ ॥ अथ वागडदेशना राजानी वंशावली लिख्यते प्रथम विजयादित्य १ केशवादित्य २ नागादित्य ३ ग्रहादित्य ४ भोज ५ वापोरावल ६ पुमाणरावल ७ महेंद्ररावल ८ अलुरावल ९ शीह रा. १० शक्तिकुमार रा. ११ शालिवाहन रा. १२ नरवाहन रा. १३ संवपसान रा. १४ कीर्तिब्रह्म रा. १५ नृब्रह्म रा. १६ नरवीर रा. १७ उत्तम रा. १८ त्रिपज रा. १९ कनक रा. २० भादु रा. २१ गात्रड़ रा. २२ हंसपाल रा. २३ विरड रा. २४ वीरसी रा. २५ दहल रावल. २६ निरूपम रा. २७ महिसासी रा. २८ पदमसी रा. २९ अरसी रा. ३० सामंतसी रा. ३१ जीतसी रा. ३२ सींहडदे रा. ३३ देदू रा. ३४ वशसंगदे रा. ३५ भच्चूड रा. ३६ कमंसी रा. ३७ कानडदे रा. ३८ पातु रा. ३९ गिपु रा. ४० सोमदास रा. ४१ गंगो रा. ४२ उदयसिंह रा. ४३ पृथ्वीराज रा. ४४ आशकर्ण रा. ४५ चिरंजीवतु बाई सेश्रीसज्जनाबाई प्रासाद कराव्यूं छे.

शेपसंग्रह नम्बर ६.
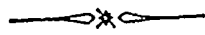
ॐ नमः शिवायः ॥ पाणौवद्धभुजंगफूत्कृतिभयात्संकोचयंत्याः करं व्याकृष्ट रतीजनेन रभसाच्छंभोर्दृढं गृह्णतः ॥ भ्रांताः संभ्रमतः सुखान्मुकुलिता विस्फारिताः ोतुकात् व्रीडासंवरिता विवाहसमये देव्यादृश पांतुवः ॥ १ ॥ इंदुंमूर्ध्नि दधत्क्षीणं ातुवः शशिशेखरः ॥ खेदादिव सदासन्नगौरीमुखपराजयात् ॥ २ ॥ अस्त्युर्गगनावलंबशिखरः क्षोणीभृदस्यांभुविख्यातो मेरुमुखोच्छ्रतादिषु परां कोटिं ातोप्यर्वुदः ॥ यत्र स्फाटिकपुष्परागकिरणालीढार्कचंद्रौ क्षणं दृष्ट्वा सिद्धजनैमन्यत दिवा रात्रिस्तु नक्तं दिनं ॥ ३ ॥ तस्मिंरुत्यक्तभवश्चरित्रविभवस्तुप्यंपोतप्यत ब्रह्मज्ञाननिधिर्गुणैर्निरवधिः श्रेष्ठो वसिष्ठो मुनिः ॥ यस्य ज्वलिताग्निहोत्रजनितै धूमैरिवव्योमगे जाताः संमालिना श्विरेण हरितास्ते

हारिदश्वाहयाः ॥ ४ ॥ मुनेस्तस्यान्तिके रेजे निर्मलादेव्यरुंधती ॥
स्थिरवश्येंद्रियग्रामा तपः श्रीरिव जंगमा ॥ ५ ॥ अनन्यसुलभाधेनुः कामपूर्वास्य
सन्निधौ ॥ ददती वांछितान्कामां स्तपः सिद्धिरिव स्थिता ॥ ६ ॥ ततः क्षत्रमदो-
द्धृत्तो गाधिराजसुतश्छलात् ॥ धेनुं जह्रे स्य दुष्प्राप्यां विप्रसिद्धिमिवोद्यतां ॥ ७ ॥
अथ पराभवसंभवमन्युना ज्वलनचंडरुचा मुनिनामुना ॥ रिपुवधं प्रति वीरविधि-
त्सया हुतभुजि स्फुटमंत्रयुतंहुतं ॥ ८ ॥ पृष्टे तूणीरयुग्मं दधदथ च करे चंडको-
दण्डदण्डं बध्वन्जूटं जटानामतिनिबिडतरं पाणिना दक्षिणेन ॥ क्रुद्धोयज्ञो-
पवीती निजविषमदृशा भाययन् जीवलोकं तस्मादुद्दामधामा प्रतिबलदलनो निर्ग-
तः कोपि वीरः ॥ ९ ॥ आदिष्टस्तेन यातो रणममरगणैर्म्मंगले गीयमाने वाढंव्या-
प्तांतराले दिनकरकिरणच्छादकै र्बाणवर्षैः ॥ कृत्वा भंगं रिपूणां प्रबलभुजबलः
कामधेनुं गृहीत्वा शक्त्या तस्यांघ्रिपद्मद्वयलुलितशिराः सोथ तस्थौ पुरस्तात् ॥ १० ॥
आनतस्य जयिनः परितुष्टो वांछिताशिवमसावभिधाय ॥ तस्य नाम परमार
इतीत्थं तथ्यमेव मुनिराशु चकार ॥ ११ ॥ तस्यान्वये क्रमवशादुदपादिवीरः
श्रीवैरिसिंह इति संभृतसिंहनादः ॥ दुर्व्वारवैरिवरवारणकुंभकूटभेदोद्यतासिन
खरो ड्मरक्षितींद्रः ॥ १२ ॥ कीर्ति तावदवेक्ष्य भावचपलां संभोगबद्धा-
श्रियं नित्यं मंगलसद्मना शुभचतुर्दिक्कुंभिकुंभप्रभे ॥ दोर्दण्ड द्वयशालिना
क्षितिभुजा माशाचतुष्कांतरे येनाकारि करग्रहो वसुधया गाढं गुणारक्तया ॥ १३ ॥
गतश्रीः श्रीनिधानेन संबंधः संयतारिणा ॥ नयेन समतां धत्ते जडधिः पटुबुद्धिना ।
॥ १४ ॥ तस्यानुजो डमरसिंह इति प्रचंडदोर्दण्डचण्डिमवशीकृतवैरिवृंदः ।हं
शृङ्गारसारतरुणीजनलोचनालिपुंजोपरुद्धवदनाम्बुरुहो बभूव ॥ १५ ॥ चंद्रिकात
पिकथं कारं यस्यकीर्त्या समंसमा ॥ एका दोषकरोद्भूता गुणोत्करभवा परा ॥ १६ तः
तस्यान्वये करिकरोद्धुरबाहुदण्डः श्रीकंकदेव इति लब्धजयो बभूव ॥ दर्प्पांधवैरि-
वनिताकुचपत्रवल्लीसंदोहदाहदहनज्वलितप्रतापः ॥ १७ ॥ युद्धकंडूलदोर्दण्डद्वयेयमौ
समरं प्रति ॥ मेने रिपुशराघातनखकंडूयनैः सुखं ॥ १८ ॥ आरुढागजपृष्टमद्भुतशरता-
सारैरणे सर्वतः कर्णाटाधिपतेर्ब्बलंविदलयं स्तन्नर्म्मदायास्तटे ॥ श्रीश्रीहर्षनृपस्स्वी
मालवपतेः कृत्वा तथारिक्षयं यः स्वर्गं सुभटो ययौ सुरवधूनेत्रोत्पलैरर्चितैः ॥ १९ ॥ ९
तस्यात्मजश्चंडपनामधेयो ब्रह्माण्डविश्रांतयशा बभूव ॥ सामंतकान्ताजनहासहंस ने-
श्रेणीप्रवासैकपयोदकालः ॥ २० ॥ ब्रह्मस्तम्बस्ययत्कीर्तिर्म्मंजरीवोपरि स्थिता तैः
शश्वत्किन्नरभृगौघैरुपगीताधिकं बभौ ॥ २१ ॥ सत्यास्पदं दहनदुःसहधाम मो
धामा श्रीसत्यराज इति तस्य सुतो बभूव ॥ सामंतदूरनतिसंगिललाटपट्टलग्नोल्लोल

सत्तिलकपादनखांशुजालः ॥ २२ ॥ वनमालाधरा नित्यं भिया यस्याच्युता अपि ॥ रिपवो न च विक्रांता नलक्ष्मीपतयः कथं ॥ २३ ॥ निर्व्याजं करुणार्द्रितोपि शतशो निस्त्रिंशकर्म्मोद्यत संजातप्रसरोपि विक्रमशतैरंतः सदा संयतः ॥ आमूलं गुणवर्द्धितोपि वहुधा दोपार्जित श्रीभरो योप्येवं नियतं विरुद्धचरितो लोके विरुद्धो भवत् ॥ २४ ॥ तस्मादभूदिह नयादिव वृद्धियोगः पुण्यस्त्रिलोक तिलको विपुलोन्नतांसः ॥ गीर्वाणचारुचरितार्पितकर्णपूरः श्रीमन्दिरं जगति मण्डनदेवनामा ॥ २५ ॥ विशालोरस्थलं कांतं मन्ये श्रीरुदितोदितं नवबंध यमासाद्य पुराणपुरुषे रतिम् ॥ २६ ॥ अनवच्छिन्नदानौघो यः प्रलंबकरोद्धुरः ॥ कुलैक धवलो भद्रः सुरद्विप इवाबभौ ॥ २७ ॥ विस्फूर्जन्नखचंद्रदीधितिलसल्लावण्यनीरोच्चयं सुस्निग्धस्फुटदीर्घराजिरुचिभृत्सन्शंखमीनांकितं ॥ वाहिन्यासपतित्वयोग्यमतुलं स्यातं श्रियः कारणं यस्या वक्रकरांघ्रिप्रद्मयुगलं सामुद्रिकं लक्षणं ॥ २८ ॥ यद्वा कौतुक मन्वयोच्छरुचिरां स्वच्छांगपूर्णाधिकं येनात्र स्मररूपिणा दृढभुजा दण्डोल्लसन्मण्डपे ॥ वैरिश्री र्नृवरेण भव्यदिवसावाप्तौ परैरीहिता दत्तेयं निजविक्रमेण महतेवोच्चैरनूढा स्वयं ॥ २९ ॥ धृतविश्वंभराभारः खंडिताराति-विग्रहः ॥ असिर्म्मंत्रीव सततं यस्यावर्द्धयत श्रियं ॥ ३० ॥ यस्यारातिवधूजनस्य सुरलैः श्वासानिलैः शोकजै रुष्णोष्णैः परितो युगांतपवनप्रस्कारिभिः कानने ॥ [illegible]धे नीलतृणांकरोत्करभरे नीरे धिकं शोषिते कृच्छ्रेणाशनपानवृत्तिरहितैः खिन्नैर्मृगैः [illegible]यते ॥ ३१ ॥ दीप्यमानः सदा सर्व्वत्राहिनीशः क्षयोल्बणः ॥ प्रतापो यस्य स[illegible]ाल वाडवोग्निरिवापरः ॥ ३२ ॥ कीर्तिनि[illegible] मनाथवे शृंखलेव रिपुश्रियां वा[illegible]ासि: समरे भाति वेणिकेव जयश्रियः ॥ ३३ ॥ बलभिद्वलयुक्तेन गोत्रहा गोस्य[illegible]दिना ॥ नयेन कृतिना धत्ते सोपिसाम्यं पुरंदरः ॥ ३४ ॥ तस्यास्ति हृदये लक्ष्मीः व[illegible]श्रीहृदयं गमः ॥ स्पर्द्धापि न कथंकारं करोति गरुडध्वजः ॥ ३५ ॥ यं प्रतापवनम[illegible]कांतं कीर्तिनिर्म्मलधृताक्षतदेहं ॥ श्रीः सदा नहि मुमोच दयांभः पूरितं विजय न[illegible]लकुंभं ॥ ३६ ॥ निर्व्याजं शरमंदिरेति विमलैर्व्वद्धैर्गुणैः स्थापिता मुक्तानां रुचिरा[illegible]णी सुमहिता लोकत्रयव्यापिनी ॥ प्रत्याशं प्रति काननं प्रतिपुरं गेहं प्रतिप्रच[illegible]ा यस्यैपाद्भुतदेवतेव सततं कीर्तिर्जनैः स्तूयते ॥ ३७ ॥ लक्ष्म्या यस्मिव[illegible]ात्तं जननमथ यशः पांडुपीयूषपूरैर्यत्रोद्भूतं समंतादखिलभूतलसद्भूतलाशा-॥[illegible]ाल: ॥ क्षीरांभोधिर्गुणौघो निरवधिरभवद्यस्य चारित्रसीम्नः शीतांशुर[illegible]ेदुल्था च्छुरपतिगगनं कीर्तिकल्लोलमाला ॥ ३८ ॥ खर्व्वाकापि तु कुत्रचिन्नपू[illegible]तथा लोके गताशेपतां न प्राप्ताविरतिं स्फुटं नहि वृषध्वंसोदयाविष्कृता ॥

नोपूर्णैकपदालपकत्रिभुवना क्रोडीकृता न क्वचिद्यत्कीर्तिर्व्विशिनष्टि कुंदधवला कृष्णां तनुं श्रीपतेः ॥ ३९ ॥ यस्योद्दामरवाहुदण्डयुगलस्योद्यद्बलेनाधिकं सच्छन्नेन रजोभरैः प्रचलत : प्रत्यर्थिवृंदं प्रति ॥ तेजस्त्यक्तमहो स्वकं भगवता चंडाशुनापि स्फुटं प्रत्याग्रं भयसन्नशात्रवजनस्यान्यस्य तत्का कथा ॥ ४० ॥ यस्याशाविजयोद्यतस्य निखिलक्ष्मापालचूड़ामणे वैरिश्रीभृतिलंपटस्य चलतस्तीरेपु वारांनिधेः ॥ क्रुद्धाधोरण तर्जितैरपिमुहुर्म्मानोन्नतैः पीयते मज्जद्दिग्गजदानराशिसलिलं दुःखेन सेनागजैः ॥ ४१ ॥ उच्चैर्धृतवृपो नित्यं समदर्शी गताहितः ॥ जितासंख्यपुरः पूज्यो यो परः परमेश्वरः ॥ ४२ ॥ विख्याता चपलेति ~ प्रियतमासौशंकितेव श्रिया गता दिव्यभुवं सुरैरपिनुता नित्यं विशुद्धा सति ॥ मानेनेव तथापि कीर्तिरमलेनांगीकृतापि स्वयं येने यं यशसा सहैव सहजेनेत्थं जगद्भ्राम्यति ॥ ४३ ॥ धनुर्विद्याविदा येन सत्वसत्यैकसद्मना ॥ रणे संधानमानीय कथं नु रिपवोहताः ॥ ४४ ॥ आलानो विजयद्विपस्य रुचिरा वेणीनु कीर्तिस्त्रियो दोर्दण्डप्रियनिर्भरैकवसतेश्छायास्फुरन्तीश्रियः ॥ वाढं वैरिवधोद्यतः प्रतिरणं कालोग्रदण्डो गुरुर्यस्यासिः सुशुभे पराक्रमभृतो दृप्तारिदर्पच्छिद : ॥ ४५ ॥ शूरप्रौढवलः कुलैकतिलको दुर्वारवीरांतको वेरिश्रीहरणैकलंपटलसच्चण्डासिदण्डोल्वणः ॥ कांतालोलकटाक्षपुंजनिलयः शृंगारमीनध्वजो जातोयस्य रविद्युतेर्गुणनिधिश्चामुण्डराजः सुतः ॥ ४६ ॥ मुहुर्दुः खोष्णनिश्वासैरश्रुपूरैश्च संततं ॥ कृतं यस्यारिकांताभिर्दग्धपल्लवितं वनं ॥ ४७ ॥ अहितदोषगुणैरुदितोदितैर्ज्जगति लब्धजयैरिव विभूता ॥ सकललोकनिकायनिराकृता यमिह सर्वगुणाः शरणं ययुः ॥ ४८ ॥ दुर्व्वारारिगिरिदारिणा हरिखुरक्षुण्णान्तराले भृशं तीक्ष्णास्त्रक्षतवांतशोणितपयः पूरप्लुते सर्वतः ॥ निस्त्रिंशाहतकुंभिकुंभविगलन्मुक्ताफलानां गणाः क्षिप्ता वीरवरेण येन समरक्षेत्रे यशो बीजवत् ॥ ४९ ॥ वारं वारं प्रकृतिसुभगं धौतनिस्त्रिंशपाणिं युद्धे युद्धे सततविजयश्रीप्रियं खेचरीणां ॥ तत्कालोत्थ स्मरभयवशाद्यं प्रतिस्पर्द्धयैता मंदं मंदंचकित चकितं दृष्टयः संपतंति ॥ ५० ॥ क्रोधाद्यस्यातिभीता दिशि दिशि निहतानंतसामंतकांताः कांतारेषु प्रविष्टाः श्रमवशविवशाः संश्रिता दुःखनिद्रां ॥ स्वप्नेदैवादुपात्तान्निजनिजरमणान्प्राप्य संभोगमेता जाग्रत्यो प्याशु नेत्थं रतिरसरसिकाश्चक्षुरुन्मीलयन्ति ॥ ५१ ॥ शत्रवश्चण्डकोपेन येन स्वस्थानचालिताः ॥ निजकान्तामनोमुक्त्वा स्थितिमन्यत्र नोगताः ॥ ५२ ॥ शश्वत्संनंदको वाढं वलिवंधो दितोदितः त्रिविक्रमइवोदारां यो लक्ष्मीं सततं दधौ ॥ ५३ ॥ दृढतरमभिसक्ता भव्यसंभोगरम्या विश्रुतविमलपक्षद्वंद्वमानंदहेतुं ॥ क्षणमपि न मुमोच प्राप्य यं राजहंसं कुलचरनिपात्रं राजहंसीवलक्ष्मीः ॥ ५४ ॥ सिंधुराजमतिमल्य हेलया खड्गमर

भृता युधि येन ॥ उत्तमेन पुरुषेषु विलेभे श्रीर्यशो भुवनपावनशंख: ॥ ५५ ॥ विश्वं वैरिप्रतापं झटिति कवलयन् लीलया जांगलाभं चंडांशोस्तीव्रशोचिर्म्मिलनकपिलितार्चिश्छटोकसरश्रीः॥ धारादंष्ट्राकरालो विलसति समरे जातघातोच्चनादो यस्यारातीभकुंभस्थलदलनपटु: प्रौढनिस्त्रिंशसिंहः॥ ५६॥ यस्य सर्व्वांगसौंदर्य्यप्रतिबिंबमपश्यता ॥ प्रशंसितास्मरेणापि निजा चिरमनंगता॥ ५७ ॥ स्त्रीभिर्यत्र गृहं प्रति प्रविशति स्वस्थे स्व हृन्मंडले हर्षोत्तालतयैव हारकिरणान् संभाव्य सत्स्वस्तिकं ॥ उत्तुंगस्तनकुंभसंगरुचिरश्रीकंठकंबुस्फुरद्वक्त्रांभोजविभूषितं निजवपुश्चक्रे स्वयं मंगलं ॥ ५८ ॥ दूतीं दृष्ट्वोत्सुकानां वदनमभिरुधत्सौरभात्कामिनीनां नायात्यायाति वेति स्ववचनउदिते यत्कृते दुःखसौख्यै: ॥ जातोष्णश्वासदाहान्मधुकरपटलान्यश्रुसंपातसेकाद् वैकल्यास्वास्थ्यभांजि त्वरिततरमध: संपतंत्युत्पतंति ॥ ५९ ॥ गेहे गेहे नुरागात्पथि पथि सुचिरं प्रांगणे प्रांगणे यद् वारं वारं नितांतं युतयुवतिजनो जाततृष्णाभरार्तः॥ उत्कल्लोलं समंतादहमहमिकया यस्य कंदर्पकांते लावण्यांभस्तनुस्थं स्वनयनचुलकै रुच्चलुंपांचकार ॥ ६० ॥ अनंग: सस्मरो युक्तं विरहज्वलिते हृदि॥ नस्यो यदिह कांतानां चित्रं यो वसतीति मे ॥६१ ॥ येन धर्म्मो मही पृष्टे कोप्यपूर्व: प्रकाशित: ॥ तस्योन्नयनतो प्येप गुणकोटिं परांगत: ॥ ६२ ॥ दत्वा कांचनरत्नदानमतुलं धर्म्मैकरागात्तथा येनैश्वर्य्यमतिप्रपंचितमहो पुण्यद्विजप्रापिता: ॥ जातं मंदिरमालिकासु तिमिरं दीपैर्विनैते यथा जित्वोद्योतमहर्न्निशं विद्धते रत्नप्रदीपांकुरा: ॥ ६३ ॥ येनस्वर्णगिरि — — र्विरचिता: स्वर्णेन सन्नाव्धय: स्वर्ण्य: कल्पतरु: समस्तवसुधा स्वर्ण्यां सहस्रं गवां॥ इत्यादि द्विजसंचयाय ददता स्फूर्जद्यशो हासत: सोल्लासं हसिता वलिप्रभृतय: सर्व्वेप्यमी पार्थिवा: ॥ ३४ ॥ कामधेनुरकामाभूच्चिंता चिंतामणेरपि ॥ विकल्प: कल्पवृक्षस्य श्रुत्वा यद्दानमद्भुतं ॥ ६५ ॥ नतरिपुधृतचूडालग्ननीलेंदुशोचिर्म्मधुकरनिकुरंवच्छन्नपादाम्बुजेन ॥ रुचिरमिदमुदारं कारितं धर्म्मधाम्ना त्रिदशगृहमिह श्रीमण्डनेशस्यतेन ॥ ६६ ॥ यावल्लोचनधूमदंडमिलितं छत्रच्छवींदुं दधौ भोगीद्रं नवयोगपट्टसदृशं यावच्च मौलौहर: ॥ यावत्कौस्तुभ एप भाति हृदये विष्णो: श्रिये रागवत् श्रीमन्मण्डन कीर्तनं क्षितितले तावत् स्थिरं तिष्ठतु ॥ ६७ ॥ अथ चैत्रचतुर्द्दश्यां यशोदेवादिकिंकरै: ॥ कीर्तिराजमुखैरन्यैर्देवस्यैपा कृता प्रतिः॥ ६८ ॥ वणिजां खण्डगुड्यो र्भरकं प्रतिवर्णिका ॥ मंजिष्ठसूत्रकार्पासभरकेषु च रूपक: ॥ ६९ ॥ तथा श्रीमंण्डनेनेयं शासनेन महात्मना ॥ हट्टे विक्रीयमेवन्तु तस्यापि रचिता प्रति: ॥ ७० ॥ नालिकेरभरके फलमेकमानकं लवणमूटकमध्यात् ॥ पूगमेकमपिपूगसहस्रादाज्यतैलघटके पलिकैका ॥ ७१ ॥ दापितो रूपक: सार्द्ध:

प्रतिकर्पटकोटिकां ॥ पूलकद्वितयं जालादन्नछद्दे च पाइली ॥ ७२ ॥ तच्छोच्छपनके तेन वणिजां प्रतिमंदिरं ॥ चैत्र्यां द्रम्मः पवित्र्यां च द्रम्मएकः प्रदापितः ॥ ७३ ॥ शालसु कांस्यकाराणां मासे द्रम्मः कृतस्तथा ॥ धुंधके कल्यपालानां रूपकाणां चतुष्टयं ॥ ७४ ॥ प्रकृतीनां च सर्व्वासां तया स्थित्यानुमंदिरं ॥ दापितो द्रम्मएकैको द्युतेस्मिन्रूपकद्वयं ॥ ७५ ॥ लगडापत्रशते द्वे तैलकर्षोनुघाणकं ॥ दापिता पत्रशाकेच्छा वृषविंशोपकस्तथा ॥ ७६ ॥ द्रम्मस्तेन तथादत्तो वणिग्मण्डलिकां प्रति ॥ सर्व्वावर्तयुतामासं प्रतिशुक्ला चतुर्दशी ॥ ७७ ॥ अर्द्धाष्टमशते देशे व्याप्यदोरकसंभवे ॥ तथेक्षुतवणिंद्रम्मो रघट्टे यवभारक ः ॥ ७८ ॥ दानें च भाण्डधान्यानां भरकच्छद्दविंशतौ तेन दत्तस्वधर्म्मेण भरकच्छद्दएवच ॥ ७९ ॥ सवाटिकं तथा तेन पुरं धवलमंदिरं ॥ कारितं भूः प्रदत्ता च देवायाघाटसंमिता ॥ ८० ॥ वीजपूरकमेकंतु लगडायाश्चदापितां॥ यवानांमूटकस्यैषवापश्चाटविकेतथा ॥ ८१ ॥ श्रूयतां भाविभूपालाः प्रदत्तं शासनं मया ॥ पाल्यतामन्यथा नात्र मौलौ बध्दोयमंजलिः॥ ८२ ॥ पृथुप्रभृतिभिर्भूपैर्भुक्ताकैः कैर्न मेदिनी ॥ तैरप्येषा पुनः सार्द्ध यतो नैकपदं गता॥ ८३ ॥ कविः सुमतिसाधारो वंशे साधारसंभवे॥ बभूव क्रमशो विद्वान् भारतीकर्णकुंडलं ॥ ८४ ॥ तस्यसुतगुणचंदनसुंदरसंजातदिग्वधूतिलकः॥ कविजनमुखकुमु लक्ष्मी जयताच्छ्रीविजयसाधारः ॥ ८५॥ तस्यानुजेनाभिहिता प्रशस्ति श्चंद्रेण चन्द्रोज्वलकीर्तिभाजा ॥ समासहस्त्रैकशतेप्रयाते षडुत्तरत्रिंशति याति काले ॥ ८६ ॥ बालभाजातिकायस्थ श्रीधरस्येह सूनुना॥ लिखिता अस्तराजेन प्रशस्तिः स्वस्थचेतसा ॥८७॥ उत्कीर्णाविजानामकेन सूत्रधारोत्रतत्रासुत गंदाकंसूत्रधार संवत् ११३६ फाल्गुन् शुदि ७ शुक्रे मंगलं महाश्रीः

शेषसंग्रह नम्बर ७.

ॐनमो वीतरागाय॥ सजयतिजिनभानुर्भव्यराजीवराजी जनितवरविकाशो दत्तलोकप्रकाशः॥ परसमयतमोभिर्नस्थितं यत्पुरस्तात्क्षणमपि चपलासद्वादिखद्योतकैश्च ॥ १ ॥ आसीच्छ्रीपरमारवंशजनितः श्रीमण्डलीकाभिधः कन्हस्य ध्वजिनीपतेर्न्निधनकृच्छ्रीसिंधुराजस्य च॥ जज्ञे कीर्तिलतालवालक इति श्चामुंडराजो नृपो योवन्तिप्रभुसाधनानि बहुशो हंति स्म देशे स्थलौ॥ २ ॥ श्रीविजयराजनामा तस्य सुतो जयति जगति विततयशाः ॥ सुभगोजितारिवर्गो गुणरत्नपयोनिधिः शूरः॥ ३ ॥देशोऽस्य पत्तनवरं तलपाटकाख्यं पण्यांगनाजनजितामरसुंदरीकम् ॥ अस्तिप्रशस्तसुरमन्दिरवैजयन्तीविस्तारहृद्दिननाथकरप्रचारं ॥ ४ ॥ तस्मिन्नागर-

वंशशेखरमणिर्नि : शेषशास्त्राम्बुधिर्जैनेंद्रागमवासनारससुधाविद्वास्थिमज्जाभवत् (?) ॥ श्रीमानंवटसंज्ञक : कलिवहिर्भूतो भिषग्रामणी गार्हस्थोपिनिकुंठिताक्षपसरो देशव्रतालंकृत: ॥ ५ ॥ यस्यावश्यककर्म्मनिष्ठितमतेर्भीष्टा वनान्ते भवन्नन्तेवासिवदाहितांजलिपुटा: सौरा : कृतोपासना : ॥ यस्यानन्य समानदर्शनगुणैरंतश्चमत्कारिता शुश्रुषां विदधे सुतेव सततं देवीव चक्रेश्वरा ॥ ६ ॥ पापाकस्तस्यसूनु: समजनि जनितानेकभव्यप्रमोद : प्रादुर्भूतप्रभूतप्रविमलधिषण : पारदृश्वा श्रुतीनां ॥ सर्वायुर्व्वेदवेदी विहितसकलरुक्कांतलोकानुकंपो निर्न्नीताशेषदोषप्रकृतिरपगदस्तत्प्रतीकारभार: ॥ ७ ॥ तस्यपुत्रास्त्रयो भूवन् भूरिशास्त्रविशारदा : ॥ श्रीलाक: साहसाख्यश्च लल्लुकाख्य : परोनुज : ॥ ८ ॥ यस्तत्राद्य : सहजविशदप्रज्ञया भासमान: स्वांतादर्शस्फुरित सकले तिह्यतत्वार्थसार: ॥ संवेगादि स्फुटतरगुणस्वाक्तसम्यक्त्वभाव : तैस्तैर्द्दानप्रभृतिभिरपि स्योपयोगीकृतश्री · ॥ ९ ॥ आधारोय : स्वकुलसमिते : साधुवर्गस्यचाभूदग्रे शीलं सकलजनताल्हादिरूपंच काये॥ पात्रीभूत: कृतद्यतिधृतीनां श्रुतानांप्रियाचरानंदानां (?) धुरमुदवहद्योगिनांयोगिनां च ॥ १० ॥ याम — रा — यनलस्तलतिग्मभानोर्व्याख्यानरंजितसमस्तसभाजनस्य ॥ श्रीच्छत्रसेनसुगुरो श्चरणारविंद सेवापरो भवदनन्यमना : सदैव ॥ ११ ॥ यस्यप्रशस्तामल शीलवत्यां होलाभिधायां वरधर्म्मपत्न्यां ॥ त्रयो वभूवुस्तनया नयाढ्या विवेकवन्तो भुवि रत्नभूता : ॥ १२ ॥ अभवदमल वोध: पाक्ककस्तत्प्रपूर्व्व : कृतगुरुजनभक्ति : सत्कुशाग्रीयवुद्धि : ॥ जिनवचसियदीय प्रष्णजाले विशाले गुणभृदपि विमुह्येत्कैव वार्ता परस्य (?) ॥१३॥ करणचरण रूपानेक : शास्त्रप्रवीण · परिहुत विपयार्थो दानतीर्थप्र — — ॥ समनियमितचित्तो जातवैराग्यभाव : कलि कलि लवि मुक्तो पासकीयप्रभाढ्य : (?) ॥ १४ ॥ कनिष्टस्तस्याभूद्भुवनविदितोभूपणइति श्रिय : पात्रं कांते : कुलगृहमुमायाश्चवसति : ॥ सरस्वत्या : क्रीड़ागिरिरमलवुद्धेरातितमां क्षमावत्या : कंद : प्रवितत कृपायाश्च निलय: ॥ १५ ॥ स्मर: सौरूप्येण प्रवलसुभगत्वेन शशभृत् कुबेर : संपत्या समधिक विवेकेनधिषण :॥ महोन्नत्यामेरु र्जलनिधिरगाधेन मनसा विदग्धत्वेनोच्चैर्य इह वरविद्याधर इव ॥ १६ ॥ जैनेंद्रशासनपरो वरराजहंसो मौनींद्रपादकमलद्वयचंचरीक : ॥ निःशेषशास्त्र निवहोदकनाथनक्र : सीमंतिनीनयनकैरवचारुचंद्र : ॥ १७ ॥ विदग्धजनवल्लभ : सरससारशृंगारवानुदारचरितश्चय : सुभगसौम्य मूर्त्ति : सुधी : ॥ प्रसाधनपरां नमद्वरविलासिनीकुंतल पस्तपदपंकज द्वितयरेणु रत्युन्नत: (?) ॥ १८ ॥ प्रथमधवलप्राये मेघे गते पि दिवं पुन : कुलरथभरो येनैकेनाप्यसंभ्रम मुद्धृत: ॥ गुरुतरविपन्न — च — — — ग्रहादुदतारिचस्थिरमति महास्थान्नानीतो (?) विभूतिगिरे:

शिरः॥१९॥ द्वे भार्ये भूषणस्यस्तः लक्ष्मी शीलीतिविश्रुते॥पतिव्रतत्वसंयुक्ते चारित्रगुण भूपिते ॥ २० ॥ सशीलिकायामुदपादिपुत्रा न्सन्नामयोग्यान् गुरुदेवभक्तः ॥ आलो-कसाधारणसांविमुख्या – – चित्ताब्जविकाशभानून् ॥ २१ ॥ आयुस्तप्तमहीध्रसार निहितस्तोकाम्बुवन्नश्वरं संचिंत्यद्विपकर्णचंचलतरां लक्ष्म्याश्चदृष्ट्वा स्थितिं ॥ ज्ञात्वा-शास्त्रसुनिश्चयात्स्थिरतरे नूनं – – – – – – तेनाकारि मनोहरं जिनगृहं भूमेरिदं भूषणम् ॥ २२ ॥ भूषणस्य कनिष्ठो सौ लल्लाक इतिविश्रुतः ॥ देवपूजा-परोनित्यं भ्रातुरादेशकृत्सदा ॥ २३ ॥ ज्येष्ठोपाद्रवनामायः सीलुकायामजीजनत् ॥ शुभलक्षणसंयुक्तं पुत्रमम्मटसञ्ज्ञकम् ॥ २४ ॥ वर्षसहस्रयातेषट्षष्ठ्युत्तरश-तेन संयुक्ते ॥ विक्रमभानोः काले स्थलिविषयमवनिमतिविजयगराजे ॥ २५ ॥ विक्रमसंवत् ११६६ वैशाखशुदि ३ सोमे वृषभनाथस्य प्रतिष्ठा ॥ श्रीवृषभनाथ नाम्नः प्रतिष्ठितं भूषणेन बिंबमिदं उच्छूणकनगरे स्मिंद्रजगतौ वृषभनाथस्य ॥ २६ ॥ युगलं॥ तुर्यवृत्तात्समारभ्य वृत्तान्येतातिषोडश॥ आद्यवृत्ते प्रयुक्तानि कृतवान् कटुको बुधः ॥ २७ ॥ भाइल्लोवस्यवंशे भून्नजं श्री माधवोद्विजः ॥ तन्सू-नोर्भांडकस्येयं निःशेषेणपराकृत्तिः ॥ २८ ॥ वालभान्वयकायस्थ राजपालस्यसूनुना ॥ संधिविग्रहसंज्ञेन लिखितानागरीलिपिः ॥ २९ ॥ यावद्रावणरामयोः सुचरितं भूमौ जनैर्गीयते यावद्विष्णुपदी जलं प्रवहति व्योम्न्यस्ति यावच्छशी॥अर्हच्चक्रविनि-र्गतं श्रवणकै र्यावच्छ्रुतंपठ्यते तावत्कीर्ति रियं चिराय जयतात्संस्तूयमाना जनैः ॥ ३० ॥ उत्कीर्णाविज्ञानिकस्तूमकेन मंगलंमहाश्री छ

॥ लक्ष्मीनिवासनिलयं विलोमविल्लयनिधाय हृदिवीरं॥ आत्मानुशासनमहं वक्षेविज्ञायभव्यानां(?) ॥१॥ दुःखाद्विभेषिनितरामभिधांसिसुखमतोहमथात्मना (?)॥ दुःखापहारीसुखकरमनुशास्मितवानु ममतव (?) ॥ २ ॥ यद्यपि कदाचिदस्मिन्वि पाकमधुरं तदात्वकटु॥ किंचित् त्वं तस्मान्मापो चीर्यथातु रोभेषजादुग्रात् ॥ ३ ॥ जनाघनाथवाबालाः सुलभाः स्युर्नये स्थिताः॥ वाह्यंतरार्द्रास्तेजगदा – संजिहीर्पवः ॥ ४ ॥ परापन्नात्सुखा दुःखं स्वायन्तं केवलं वरं॥ अन्यथा सुखिनामान कथत्मभंतपस्विनः ॥ ५ ॥ उपायकोटिदूरक्षे स्वनसूतइतोग्यतः सर्वपतनप्राये कायेकोयंनवाग्रहः ॥ ६ ॥ अवश्यंनस्वैरेभि रायुकायादिभिर्यदि ॥ शाश्वतंपदमा-याति मुधाप्वातवैहिने ॥ ६९ ॥ गंतुं सुखासनिः श्वासैर भ्यस्यत्येपसंततं ॥ लोकः प्रवेपितोवांछत्यात्मानमजरामरं ॥ ७० ॥ गलन्वायुः प्रायः प्रकटित घटीयंत्र सलिलं खलः कायोप्यायुः पतिमतिपतत्येप सततं किम – – – दूंयमयमिदं जीवितमिहस्थितोग्रांध्यानादिस्तुतिरवतुभे – – –

(यह प्रशस्ति वहुत अशुद्ध है, लेकिन् जैसी मिली है, वैसी ही दर्ज की गई).

शेषसंग्रह नम्बर ८.

वसन्तगढ़की लाणवावड़ीकी प्रशस्ति.

प्रणम्य हरिपुत्रेण कविना मातृशर्मणा ॥ सुश्लिष्टतरां वाणी प्रशस्तिः सुकृता मया ॥ ज्योतिर्ज्योतिविदां भवः शिवधियां दृष्टः परं चक्षुषा तत्वाराधनतः स्मृतः कलुषहा सर्व्वप्रकाशोमहान् ॥ तत्वज्ञानमसंवृतम्मतिमतां ज्ञाता च सत्कर्म्मणाम् पायाद्वो वसुसिद्धकिन्नरयुतस्त्रैलोक्यदीपो हरिः ॥ वसिष्ठकोपाज्जनितः कुमारः – भुम्यां महा बला यत्र नृपा बभूवुः॥ अस्यान्वये त्युत्पलराजनामा आरण्यराजो पि ततो बभूव ॥ तस्मादभूदद्भुतकृष्णराजो विख्यातकीर्तिः किल वासुदेवः ॥ तस्यात्मजो भूवलयः प्रतिष्ठः श्रीनाथघोपी वृतवान् वरेण्यः॥ पुत्रो पि तस्मान्महिपालनामा तस्मादभूद्धन्धुक एव भूपः ॥ अस्यापि कीर्तिः सुरराजलोके प्रगीयते वै सुरकिन्नरीभिः ॥ वीणानिविष्टं करजांगुलीभिर्विमुक्तकंठोक्तिरलंकृताभिः ॥ येनाहृता शौर्य्यबलेन लक्ष्मीर्व्विख्याप्य भारं परमेन्यमध्ये ॥ अस्यापि भार्य्या घृतदेविनाम्नी रूपेण शीलेन कुलेन युक्ता ॥ तस्मादमुष्यां भुवि पूर्णपालः पूर्णो नृणां पालयशोभिपूर्णः ॥ महारणेनापि विजित्यराष्ट्रं नामापि भूतं वलदर्पदेति ॥ कनककर्णिकभूपिततारया करपदे मणिभूपितवीणया ॥ विबुधराजकुले सुरकन्यया सदसि यस्य यशः खलु गीयते ॥ हत्वा येन रिपून् युधा च वहुशः प्रख्याप्य भारं स्वकं विक्रान्ता मदशालिनो वरगजा नड्वाः स्वके मंदिरे ॥ पूर्णप्पालकुलप्रदीप इव योप्यार्य्यावते धार्मिके अत्र श्रीपरमारवंशतिलके राज्ञी स्थिरा शासति ॥ अस्यानुजा लाहिनि नामराज्ञी लक्ष्मीर्यथा तामरसैर्व्विहीना ॥ ऊढापि या विग्रहभृभुजेन सत्यायथापूर्व्वमधोक्षजेन ॥ अस्यान्वयेपि ॥ आसीद्विजातिर्व्विदितो धरण्यां ख्यातप्रतापो रिपुचक्रमर्द्दी ॥ यो दुःखशौर्य्यार्ज्जितभूयशस्यः काशीश्वरः सर्व्वनृपप्रधानः ॥ तदन्वयेख्यातमतिर्नृपोभूत् कुलप्रदीपो भवगुप्तनामा ॥ उद्धृत्य वेशं वनवासिभानोर्वदेपु राज्यं कृतवान् सवीरः॥ अस्यान्वये संगनराजनामा वन्द्योनरेर्यो वदरीं समाप्तः॥ तस्मादभूद्वल्लभराजभूपश्चरोपि तस्माद्वरराजभूपः॥ वभूव तस्माद्गुणिताप्रधानो नृपोत्तमो विग्रहराजनामा ॥ प्रदानशौर्य्यादिगुणैरुदारैर्यशो ययौ यस्य विजित्य लोकान् ॥ द्विजिक्करिपुवाहनो ललनकान्तरापूजितः कुलद्वयकृतोन्नतिर्व्विधृतचारुलक्ष्मीवपुः ॥ स्वपौरुषधृतावनिर्ब्बलनिविष्टवक्षा महान् वभूव नृवरोत्तमः सनररूपधृद् माधवः ॥ भार्यां स चावाप्य गुणैः समेतां वितोपितां वै वुभुजे च भोगं ॥ सापि प्रियं प्राप्य पतिम्वरेण्यं यद्वन्महींद्रेष-

समं च रेमे॥ अस्मिन्मृते भर्तरि दैवयोगाद् भ्रातुर्गृहं सा प्रियविप्रयुक्ता॥ आवेशिता वै नगरे वदेऽस्मिन् दैवात् प्रहीनैव सुखंक्रमेण॥ वसिष्ठराजोपि अत्रासीदतोयं वसिष्ठराजान्वेयो ऽपि (जातमत्रपावारुणिनापि) अत्रन्यग्रोधस्याश्रमः॥ स्थाने कैभगौं स्वमतौ वसिष्ठो मुक्तिप्रदौस्थापितवान् वरिष्ठः॥ तद्वद्दाख्ये नगरे वनेऽस्मिन् बहुप्रसादान् कृतवान् वसिष्ठः॥ प्राकारवप्रोपवनैस्तडागैः प्रासादवेश्मैः सुघनैः सदुर्गैः॥ अतिमन्त्रोदमक्षोभ्यं पारगावक्रमाकुलं॥ वेदार्णवं द्विजासम्यग् यत्रतीर्णाप्यगर्व्विताः॥ लोकैर्धर्म्मपरैः स्वकर्म्मनिरतैः सद्भिः सदावासितं आवृत्याजनसम्मतैः प्रतिदिनं नित्यं वणिग्भिर्वृतं॥ पौराणैर्गणिकाजनैर्व्यसनिकैः शूरैर्जनैः संकुलं स्वर्गस्थानमिवापरं वदपुरं क्षोणीतले संस्थितं॥ मरुद्गता यत्र सरित् सरस्वती सोपानपंक्त्या च नृपेण निर्वृता॥ सुपुण्यपुष्पोदकफेनवाहिनी द्विजायमाना जननीव वेष्ठिता॥ ये सर्वे पालयन्ते नगरहितरता नीतिमन्तः प्रशान्ता देवान्विप्रान् यजन्ते वनभवनमही वस्त्ररत्ना दिदानैः॥ स्याता येचैवनित्यंत्रिभुवनवलये सद्गुणैरेव नीताः तेस्मिन्पौराः समस्ताः सकलजनहिता भानवे भक्तिमन्तः॥ सात्रागता लाहिनिनामराज्ञी भर्त्तुर्व्वियोगेन निपीडितांगी॥ अस्मिन् पुरे विप्रजनैः समेत्य दृष्ट्वा तुतोपान्तरनात्मबुध्या॥ भानोर्गृहं दैववशाद्विभक्तं वसिष्ठपौरैः सुकृतं यदासीत्॥ विनाशि सर्व्वं सहजीवितेन ज्ञात्वा गृहं कारितमाशु भानोः॥ लोकप्रयोगा सुकृता दुरापासुश्लिष्टसन्धीघटितोत्पलेव॥ ॥ सोपानपंक्तिः शुशुभे सुबद्धा निश्रेणिभूतेव दिवौकसानां॥ देवैः समस्तैर्मुनिभिश्च जुष्टा पापापहा व्याप्य वियत् स्थिता या॥ जीर्वैर्वृता लाहिनिपुण्यहेतोः सारस्वती शेषजनस्य वापी॥ निष्पाद्य सुकृतौ कृत्वा अर्थं दत्वा पुनः पुनः॥ वैनाशिकमिदं चान्यज्ज्ञात्वा लोकस्य चर्च्चितं॥ यावद्गोलोकवृत्तीः प्रवहति सुरभिर्यावदर्कोन्तरिक्षे यावद्वीच्यः समुद्रे पवनविधुनिताः संतताः प्रोच्छलन्ति॥ यावद्योम्नि प्रदीप्तं प्रवहति मिहिरस्यंदनस्यैकचक्रं वाप्येषा तावदक्षणा मुडुकरसदृशी कारकस्यातिकांता॥ कृतेयं हरिपुत्रेण मातृशर्म्मद्विजन्मना॥ सर्वलोकहितार्थाय लाहिन्याश्च हितैषिणा॥ आसीच्चनामा श्वपतेः सुदुर्गे दुर्गाकृतीदोडकसूत्रकारः॥ अस्यापि सूनुः शिवपालनामा येनोत्कृतेयं सुशुभा प्रशस्तिः॥ नवनवतिविहासीद्विक्रमादित्यकालेजगतिदशशतानामग्रतोयत्रपूर्णा प्रभवतिनभमासे स्थानके चित्रभानोः (?) सं १०९९

शेषसंग्रह नम्बर ९.

आबूपर वसंतपाल तेजपालके मंदिरकी प्रशस्ति १.

वंदे सरस्वतीं देवीं याति या कविमानसं॥ नीय माना निजं व ध (वेश्म) यान (मा)

नसवासिना ॥ १ ॥ यः कांतिमानप्यपवृत्तकामःशान्तोपि दीप्तः स्मरनिग्रहाय॥ निमीलिताक्षो पि समग्रदर्शी स वः शिवायास्तु शिवातनूजः ॥ २ ॥ अणहिल्लपुरमस्ति स्वस्ति पात्रं प्रजानामजरजिरघुतुल्यैः पाल्यमानं चुलुक्यैः॥ चिर मति रमणीनां यत्र वक्त्रेन्दुमन्दी कृतइवसितपक्षप्रक्षये प्यन्धकारः ॥ ३ ॥ तत्र ॥ प्राग्वाटान्वयमुकुटं कुटज प्रसूनविशदयशाः॥ दानविनिर्जितकल्पद्रुमषण्डश्चण्डपः समभूत्॥ ४॥ चण्डप्रसाद संज्ञः स्वकुलप्रसादहेमदण्डोस्य॥ प्रसरत्कीर्तिपताकः पुण्यविपाकेन सूनुरभूत् ॥५॥आत्मगुणैः किरणैरिवसोमो रोमोद्गमं सतां कुर्वन्॥ उदगादगाधमध्यादुग्धोदधिबान्धवात्तस्मात्॥ ६ ॥ एतस्मादजनिजिनाधिनाथभक्तिंबिभ्राणः स्वमनसि शश्वदश्वराजः ॥ तस्यासीद्दयिततमा कुमारदेवी देवीव त्रिपुरगुरोः कुमारमाता ॥ ७ ॥ तयोःप्रथमपुत्रोभून्मन्त्रीलूणिगसंज्ञया॥ दैवादवापबालोपि सालोक्यं वासवेन सः॥८॥ पूर्वमेवसचिवः स कोविदैर्गण्यते स्म गुणवत्सुलूणिगः ॥ यस्य निस्तुषमतेर्मनीषया धिक्कृतेव धिषणस्य धीरपि ॥ ९ ॥ श्रीमल्लदेवः श्रितमल्लिदेवः स्तस्यानुजोमन्त्रिमतल्लिकाभूत् ॥ बभूव यस्यान्यधनाङ्गनासु लुब्धानबुद्धिः शमलब्धबुद्धेः ॥ १० ॥ धर्मविधाने भुवनच्छिद्रपिधाने विभिन्नसंधाने ॥ सृष्टिकृतानहिसृष्टः प्रतिमल्लो मल्लदेवस्य ॥ ११ ॥ नीलनीरदकदम्बकमुक्त श्वेतकेतुकिरणोद्धरणेन ॥ मल्लदेवयशसा गलहस्तो हस्तिमल्ल दशनांशुपुदत्तः॥ १२ ॥ तस्यानुजो विजयते विजितेन्द्रियस्य सारस्वतामृतकृताद्भुतहर्षवर्षः॥श्रीवस्तुपाल इति भालतलस्थितानि दौःस्थ्याक्षराणि सुकृती कृतिनां विलुम्पन् ॥ १३ ॥ विरचयति वस्तुपाल श्चुलुक्यसचिवेषु कविषु च प्रवरः ॥ न कदाचिदर्थहरणं श्रीकरणे काव्यकरणे वा ॥ १४ ॥ तेजः पालः पालितस्वाशितेजः पुञ्जः सोयं राजते मन्त्रिराजः ॥ दुर्वृत्तानां शङ्कनीयः कनीयानस्य भ्राता विश्वविश्रान्तकीर्तिः॥ १५ ॥ तेजः पालःस्य विष्णोश्च कः स्वरूपं निरूपयेत् ॥ स्थितं जगत्रयीसूत्रं यदीयोदरकन्दरे॥ १६॥ जाल्हूमाऊसाऊधनदेवीसोहगावयजुकाख्याः ॥ पदमलदेवी चैषां क्रमादिमाः सप्तसोदर्याः ॥ १७ ॥ एतेश्वराजपुत्रा दशरथपुत्रास्तएवचत्वारः॥ प्राप्ताः किल पुनरवनावेको दरवासलोभेन ॥ १८ ॥ अनुजन्मना समेतस्तेजः पालेन वस्तुपालोयम् ॥ मदयति कस्यन हृदयं मधुमासोमाधवेनेव ॥ १९ ॥ पन्थानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिदं स्मरन्तौ॥ सहोदरौ दुर्द्धरमोहचौरैः संभूयधर्माध्वनितौ प्रवृत्तौ ॥ २० ॥ इदं सदा सोदरयोरुदेतु युगं युगव्यायतदोर्युगश्रि ॥ युगे चतुर्थे प्यनघेन येन कृतं कृतस्यागमनं युगस्य ॥ २१ ॥ मुक्तामयंशरीरं सोदरयोः सुचिरमेतयोरस्तु॥ मुक्तामयं किल महीवलयमिदं भाति

यत्कीर्त्या ॥ २२ ॥ एकोत्पत्तिनिमितौ यद्यपि पाणीतयो स्तथाप्येक : ॥ वामो भूदनयो र्नतुसोदर्यो : कोपि दक्षिणयो : ॥ २३ ॥ धर्मस्थानाङ्किता मुर्वीसर्वत:कुर्वतामुना ॥ दत्त: पादोवलाद्वन्धु युगुलेन कलेर्गले ॥ २४ ॥ इति श्रौलुक्यवीराणां वंशे शाखाविशेषक : ॥ अर्णोराजइतिख्यातो जातस्तेजोमय: पुमान् ॥ २५ ॥ तस्मादनन्तरमनन्तरितप्रताप: प्राप क्षितिं क्षतरिपुर्लवणप्रसाद : ॥ स्वर्गापगाजलवलक्षितशङ्खशुभ्रा वभ्राम यस्य लवणाब्धिमतीत्य कीर्ति : ॥ २६ ॥ सुतस्तस्मादासीद्दशरथककुत्स्थप्रतिकृति : प्रतिक्ष्मापालानां कवलितबलो वीर-धवल: ॥ यश: पूरेयस्य प्रसरति रतिक्रान्तमनसा मसाध्वीनां भग्नाभिसरणकलायां कुशलता ॥ २७ ॥ चौलुक्य : सुकृति : स वीरधवल : कर्णे जपानां जपं य : कर्णे पि चकार न प्रलपतामुद्दिश्य यो मन्त्रिणौ ॥ आभ्यामभ्युदयातिरेकरुचिरं राज्यं स्वभर्तु: कृतं वाहानां निवहाघटा: करटिनां वद्धाश्वसौधाङ्गणे ॥ २८ ॥ तेनमन्त्रिद्वयेनायं जानेजानू (तू) पवर्तिना ॥ विभुर्भुजद्वये नैव सुखमाश्लिष्यति श्रियम् ॥ २९ ॥ गौरीवरश्वशुरभूधरसंभवोयमस्त्यर्बुद : ककुदमद्रिकदम्बकस्य ॥ मन्दाकिनीं घनजटेदधदुत्तमाङ्गे य : श्यालक: शशिभृतो भिनयंकरोति ॥ ३० ॥ क्वचिदिह विहरन्ती वीक्षमाणस्य रामा प्रसरतिरतिरन्तर्मोक्षमाकाङ्क्षतो पि ॥ क्वच-नमुनिभिरर्थ्यां पश्यतस्तीर्थवीथिं भवति भवविरक्ति (क्तौ) धीरधीरात्मनोपि ॥ ३१ ॥ श्रेय : श्रेष्ठवसिष्ठहोमहुतभृक्कुण्डान्मृतण्डात्मज प्रद्योता धिकदेहदीधिति भर: कोप्याविरासीन्नर : ॥ तंमत्वापरमारणैकरसिकं सव्याजहारश्रुते राधार : परमार इत्यजनितन्नामाथतस्यान्वय : ॥ ३२ ॥ श्रीधूमराज: प्रथमंवभूव भूवासवस्तत्र नरेंद्रवंशे ॥ भूमीभृतोय : कृतवानभिज्ञान्पक्षद्वयोच्छेदनवेदनासु ॥ ३३ ॥ धन्धुकध्रुवभटादयस्ततस्तेरिपुद्वयघटाजितोभवन् ॥ यत्कुलेजनि पुमान्मनोरमो राम-देव इतिकामदेवजित् ॥ ३४ ॥ रोद : कन्दरवर्तिकीर्तिलहरी लिप्तामृतांशुंद्युते रप्रद्युम्न-वशोयशोधवल इत्यासीत्तनूजस्तत : ॥ यश्चौलुक्यकुमारपालनृपतिप्रत्यर्पिता-मागतं मत्वासत्वरमेवमालवपतिं वल्लालमालब्धवान् ॥ ३५ ॥ शत्रुश्रेणीगलवि-दलनोन्निद्रनिस्त्रिंशधारो धारावर्ष : समजनि सुतस्तस्यविश्वप्रशस्य : ॥ क्रो-धाक्रान्तप्रधनवसुधानिश्चले यत्र जाता श्च्योतन्नेत्रोत्पलजलकणा : कोङ्कणा-धीशपत्न्य : ॥ ३६ ॥ सोयं पुनर्दाशरथि: पृथिव्यामव्याहतौजा: स्फुटमुज्जगाम ॥ मारीचवैरादिव योधनोपि मृगव्यमव्यग्रमति : करोति ॥ ३७ ॥ सामन्तसिंह-समितिक्षितिविक्षतौजा : श्रीगुर्जरक्षितिपरक्षणदक्षिणासि : ॥ प्रल्हादनस्तदनुजो दनुजोतमारिचारित्रमत्र पुनरुज्ज्वलयांचकार ॥ ३८ ॥ देवीसरोजासनसंभवा किं

यानन्दा पि न्नृसोमेयी ॥ तल्हादनाकारधराधरायामायानवत्येप न निश्चयो मे ॥
३९ ॥ धन्यधन्युनो यं जयति श्रीसोमसिंहदेवो यः ॥ पितुः शौर्यं विद्यां पितृव्यतो
दानमभ्यतो जगृहे ॥ ४० ॥ मुक्ताविम्रकृतनराति निकरान्निर्जित्य तत्किंचन
प्रारम्भमति सोमसिंहनृपतिः सोमप्रकाशं यशः ॥ येनोर्वीतलमुज्ज्वलं रचयताप्यु-
न्मार्जनाभीप्सया सर्वेषामिह विद्विषां नहि मुखान्मालिन्यमुन्मूलितम् ॥ ४१ ॥
यत्पुत्रकस्ययशून श्रीकृष्ण-कृष्णराजदेवो स्य ॥ मात्राधिकप्रतापो यशोदयासंश्रितो
जयति ॥ ४२ ॥ इतश्च ॥ अन्वयेन विनयेन विद्यया विक्रमेण सुकृतक्रमेण च ॥
क्वापि कोपि न पुमानुपैति मे वस्तुपालसदृशो दृशोः पथि ॥ ४३ ॥
ललिता ललितादेवीतनयमवीतनयमाप सचिवेन्द्रात् ॥ नाम्ना जयन्तसिंहं जयन्त-
मिन्द्रात्पुलोमसुतेव ॥ ४४ ॥ यः शैशवे विनयवैरिणि बोधवन्ध्ये धत्ते नयं च विनयं च
गुणोदयं च ॥ सोयं मनोभवपराभवजागरूकरूपो न कं मनसि चुम्बति जैत्रसिंहः
॥४५॥ श्रीवस्तुपालपुत्रः कल्याणयं जयन्तसिंहो स्तु ॥ कामादधिकं रूपं निरूप्यते
यस्य दाने च ॥ ४६ ॥ सश्रीतेजः पालः सचिवश्चिरकालमस्तु तेजस्वी
॥ येन जना निश्चिन्ताश्चिन्तामणिनेव नन्दन्ति ॥ ४७ ॥ यच्चाणक्या-
नमृनमतस्याधिशुक्रादिकानां प्रागुत्पादं व्यधितभुवने मन्त्रिणां बुद्धिधाम्नाम्
॥ तत्के स्यामः न खलु विधिनानूनमेन विधातुं तेजः पालः कथमितरथा-
धिरूपमारोपितेषु ॥ ४८ ॥ अस्ति स्वस्तिनिकेतनं तनुभृतां श्रीवस्तुपालानुजः स्ते-
ज पालइति स्थितिविलिकुना मर्वोस्थले पालयन् ॥ आत्मीयं बहुमन्यते नहि गुण-
ग्रामं च कामन्दकिश्चाणक्यो पि चमत्करोति न हृदि प्रेक्षास्पदं प्रेक्ष्ययस् ॥ ४९ ॥
इतश्च महंश्रीतेजःपालस्य पत्न्याश्चानुपमदेव्याः पितृवंशवर्णनम् ॥ प्राग्वाटान्वय
मण्डनैकमुकुटः श्रीमान्द्रचंद्रावतीवास्तव्यः स्तवनीयकीर्तिलहरीप्रक्षालितक्ष्मा-
तलः ॥ श्रीगागाभिधयासुधीरजनि यद्वृत्तानुरागादभूत्कोनामप्रमदेनदोलित-
शिरानोत्कृतर्गमापुमान् ॥ ५० ॥ अनुसृतसज्जनसरणिर्धरणिगनामाबभूवतत्तनयः ॥
न्दत्रभृहृदये गुणिना हारेणेवस्थितयेन ॥ ५१ ॥ त्रिभुवनदेवी तस्य
त्रिभुवनविख्यातशीलसंपन्ना ॥ चदिता भूदस्याः पुनरङ्गं द्वेधा मनस्त्वेकम् ॥ ५२ ॥
अनुपदेवीदेवी साक्षाद्दाक्षायणीव शीलेन ॥ तद्दुहिता सहिता श्रीतेज· पालेनपत्या-
भून ॥ ५३ ॥ इयमनुपमदेवी दिव्यवृत्तप्रसून व्रततिरजनितेजःपालमन्त्रीशपत्नी ॥
नयविनयविवेको चित्यदाक्षिण्यदानप्रमुखगुणगणेन्दुद्योतिताशेषगोत्रा ॥ ५४ ॥
लावण्यसिंहस्तनयस्तयोरयं रयंजयन्निन्द्रियदुष्टवाजिनाम् ॥ लब्ध्वापिमीन-
ध्वजमङ्गलं वयः प्रयाति धर्मैकविधायिना ध्वना ॥ ५५ ॥ श्रीतेजपाल-
तनयस्य गुणानमुष्य श्रीलूणसिंहकृतिनः कति न स्तुवन्ति ॥ श्रीबन्धनो

द्धुरतैरपियैसमन्ताद्धुद्दामतात्रिजगतिक्रियते स्म कीर्तिः ॥ ५६ ॥ गुणधन निधानकलशः प्रकटोयमवेष्टितश्च खलसर्पैः ॥ उपचयमयते सततं सुजनैरुपजीव्यमानो पि ॥ ५७ ॥ मल्लदेवसचिवस्य नन्दनः पूर्णसिंहइति लीलुकासुतः ॥ तस्य नन्दति सुतोयमह्लगादेविभूः सुकृतवेश्मपेथडः ॥ ५८ ॥ अभूदनुपमापत्नी तेजपालस्यमन्त्रिणः ॥ लावण्यसिंहनामायमायुष्मानेतयोः सुतः ॥ ५९ ॥ तेजःपालेन पुण्यार्थं तस्यपुत्रकलत्रयोः ॥ हर्म्यं श्रीनेमिनाथस्य तेने तेनेदमर्बुदे ॥ ६० ॥ तेजःपालइति क्षितीन्द्रसचिवःशङ्खोज्ज्वलाभिःशिलाश्रेणीभिःस्फुरदिन्दुकुन्दरुचिरं नेमिप्रभोर्मन्दिरम् ॥ उच्चैर्मन्दिरमग्रतो जिनवरा वासद्विपञ्चाशतं तत्पार्श्वेपु बलानकं च पुरतो निष्पादयामासिवान् ॥ ६१ ॥ श्री सच्चण्डपसंभवः समभवच्चण्ड प्रसादस्ततः सोमस्तत्प्रभवो श्वराजइति तत् पुत्राः पवित्राशयाः ॥ श्री मल्लूणिगमल्लदेव सचिवः श्री वस्तुपालाह्वयस्तेजः पाल समन्विता जिनमता शमोन्नमन्नीरदाः ॥ ६२ ॥ श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालतनयः श्रीजैत्रसिंहाह्वयस्तेजःपालसुतश्च विश्रुतमति र्लावण्यसिंहाभिधः ॥ एतेषांदशमूर्तय करिवधूस्कन्धाधिरूढाश्चिरं राजन्ते जिनदर्शनार्थमवतादिङ्नायकानामिव ॥ ६३ ॥ मूर्त्तीनामिह पृष्ठतः करिवधू पृष्ठप्रतिष्ठाजुषां तन्मूर्तीर्विमलाश्म खत्तकयुता कान्तासमेतादश ॥ चौलुक्यक्षितिपालवीरधवलस्याद्वैतबन्धु : सुधी स्तेजःपाल इति व्यधापयदयं श्रीवस्तुपालानुजः ॥ ६४ ॥ तेज : पालः सकलप्रजोपजीव्यस्य वस्तुपालस्य ॥ सविधे विभाति सफलः सरोवरस्यैव सहकारः ॥ ६५ ॥ तेन भ्रातृयुगेन या प्रतिपुरग्रामाध्वशैलस्थलं वापीकूपनिपानकाननसरःप्रासादसत्रादिका: ॥ धर्मस्थानपरंपरा नवतरा चक्रेथ जीर्णोद्धृता तत्संख्यापि नबुध्यते यदि परं तद्वेदिनी मेदिनी ॥ ६६ ॥ शम्भोः श्वासगतागतानि गणयेद्यः सन्मतिर्यो थवा नेत्रोन्मीलनमीलनानि कलयेन्मार्कण्डनाम्नो मुनेः ॥ संख्यातु सचिवद्वयी विरचिता मेतामपेतापर व्यापारः सुकृतानुकीर्तनततिं सोप्युज्जिहीतेयदि ॥ ६७ ॥ सर्वत्रवर्ततां कीर्तिरश्वराजस्य शाश्वती ॥ (उद्दर्तु) मुपकर्तु च जानीते यस्यसंततिः ॥ ६८ ॥ आसीच्चण्डपमण्डितान्वयगुरुर्नागेन्द्रगच्छश्रिय श्चडारत्नमयत्नसिद्धमहिमा सूरिर्महेन्द्राभिधः ॥ तस्माद्विस्मयनीयचारुचरितः श्रीशान्तिसूरिस्ततो प्यानन्दामर सूरियुग्ममुदयच्चन्द्रार्कदीप्तद्युति ॥ ६९ ॥ श्री जैनशासनवनीनवनीरवाह : श्रीमांस्ततोप्यघहरो हरिभद्रसूरिः ॥ विद्वान्मनोमयगदेष्वनवद्यवैद्य : ख्यातस्ततो विजयसेन मुनीश्वरोयम् ॥ ७० ॥ गुरोस्तस्याशिषांपात्रं सूरिरभ्युदय प्रभुः ॥

मैाक्तिकानीवसूक्तानि भान्तियत्प्रतिमान्बुधे ॥ ७१ ॥ एतद्धर्मस्थानं धर्मस्थानस्य चास्यय: कर्ता ॥ तावद्वयमिदमुदियादुदयत्ययमर्बुदोयावत् ॥७२॥ श्रीसोमेश्वरदेव-श्चुलुक्यनरदेवसेविताङ्घ्रिपदयुग्म: ॥ रचयांचकार रुचिरां धमर्स्थानप्रशस्ति-मिमाम् ॥ ७३ ॥ श्रीनेमेरम्बिकायाश्च प्रसादादबुर्दाचले ॥ वस्तुपालान्वयस्यास्तु प्रशस्ति:स्वस्तिशालिनी ॥ ७४ ॥ सूत्रकारकह्लणसुतधांधलपुत्रेण चण्डेश्वरेण प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा श्री विक्रम संवत् १२८७ वर्षे श्रीश्रावण वदि ३ रवौ श्री विजयसेनसूरिभि:प्रतिष्ठा कारिता ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १०.

अचलेश्वरके मंदिरकी प्रशस्ति.

परमार वंश वर्णनं.

इतश्च ॥ अस्ति श्रीमानर्बुदाख्यो द्रिमुख्य: शृंगश्रेणिर्बिभ्रदभ्रंलिहो य: ॥ वृद्धि विंध्य: किंपुनर्यात्यसावित्यादित्यस्य भ्रान्तिमंतर्विधत्ते ॥ १० ॥ तत्राथ मैत्राव-रुणस्य जुव्हतश्चंडो ग्निकुंडात्पुरुष:पुरो भवत्॥ मत्वा मुनींद्र: परमारणक्षमं स व्याह-रत्तं परमारसंज्ञया ॥ ११ ॥ पुरा तस्यान्वये राजा धूमराजाव्हयो भवत् ॥ येन धूम-ध्वजेनेव दग्धा वंशा:क्षमाभृताम् ॥ १२ ॥ अपरे पि न संदग्धा धधूध्रुवभटादय:॥ जाता:कृताहवोत्साहवाहवो वहवस्तत: ॥ १३ ॥ तदनंतरमभ्रंगितकीर्तिसुधा-सिन्धु: शुंधितव्योमा ॥ श्रीरामदेवनामा कामादपिसुंदर: सो भूत् ॥ १४ ॥ तस्मान्महीगविदितान्यकलत्रगात्रस्पर्शोयशोधवलइत्यवलंवते स्म ॥ यो गुर्जर-क्षितिपतिप्रतिपक्षमाजौ वल्लालमालभत मालवमेदिनींद्रं॥ १५ ॥ धारावर्षस्तत्सुत: प्रापलक्ष्मी र्लिप्तक्षोणि: शोणितै: कुंकणेंदो: ॥ सर्वत्रापि स्वैश्चरित्रै: पवित्रैर्ल्लीला-क्षोघाराघवेणेव येन ॥ १६ ॥ तस्य प्रल्हादनो नाम वामनस्येव भूभुव: ॥ अनुजन्मा भवद्येन दक्षा श्री रग्रजन्मनां ॥ १७ ॥ श्रीसोमसिंह:पितुरेष धारा वर्षस्य राज्यं कुरुताच्चिराय ॥ तथाहि राज्यं गणतस्तुराज्यं दिशादिभिर्यस्य च दत्तमेव ॥ १८ ॥ सोमसिंहो नृसिंहोयमपूर्व:पृथिवीतले॥यन्नाम्ना भुविदीर्यंते हृदयानि विरोधिनां॥ १९॥ श्री – देव: क्षितिदेवदौस्थ्यनिर्व्वासितव्याप्टतमासनो सौ ॥ श्रीसोमसिंहे पितरिस्वराज्ये वति स्थिरं यो वति यौवराज्यं ॥ २० ॥

इतश्च ॥

(यह प्रशस्ति बहुत बड़ी है, इसका संवत् ज़मीनमें गड़ाहुआ मालूम होता है, और इसके ऊपरके भागमें भी बहुत अक्षर खंडित होगये हैं, इस वास्ते हमने मात्र परमार राजाओंका हाल लिखा है).

शेषसंग्रह, नम्बर ११.

(१) आबूके परमार राजा धारावर्षका ताम्रपत्र, सं० १२३७.

प्लेट १.

संवत् १२३७ वर्षे कार्तिक शुदि ११ गुरावद्येहचाज्ञापनं ॥ समस्त राजावलीसमलंकृत श्रीमदर्बुदाधिपति श्रीधूमराजदेवकुलकमलोद्योतनमार्तंडमांडलिकेषुचरंतु श्री धारावर्षदेवकल्याणविजयराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनमहं० श्रीकोविदास समस्तमुद्राव्यापारान्परिपंथयतीत्येवं कालेप्रवर्तमाने शासनाक्षराणि लिख्यंते यथा उदयेसंजातेदैवा – – – का – – – महाप्रक्षीणनलिनीदलगतजललवतरलतरंजीवितव्यासिदविधाय परमाप्तैवाचार्य भट्टारकवीसलउग्रदमके

प्लेट २.

– साहिलवाड़ा ग्रामेग्रह – मुक्ति ॥ तथाएतदीयधरणीगोचरेचरणीया तथाकुंभारनुलीग्रामे सुरभिमर्यादापर्यंत भूमिदत्ताहल २ हलद्वयभूमिशासनेनोदक पूर्वप्रदत्ता ॥ घूतोत्र महं श्री कोविदासगी. जाल्हणो ॥ मतै ॥ श्रीः ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ताराजभिः सगरादिभिः॥ यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलम् ॥ १ ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां ॥ षष्ठिवर्षसहस्त्राणि विष्टायांजायतेकृमि ॥ २ ॥ ममवंशक्षये क्षीणेअन्योह नृपतिर्भवेत् ॥ तस्याहंकरलग्नोस्मि ममदत्तं न लोपयेत् ॥ ३ ॥ ढ ॥ शुभंभवतु .

मागवाड़ीग्राम ग्रासभूमिदत्ता दातड़लीग्राम ग्रासभूमिदत्ता ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १२.
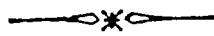
ॐ स्वस्ति ॥ यः पुंसां द्वैतभावं विघटयितुमिव ज्ञानहीनेक्षणानामर्द्धस्वीयं विहायार्द्धमपि मुररिपोरेकभावात्मरूपः ॥ – – – रोदजन्मा प्रलयजलधरश्यामलः कंठनाले भाले यस्यार्द्धलेखा स्फुरति शशभृतः पातु वः स त्रिनेत्रः ॥ १ ॥ अवंतीभूलोकं निजभुजभृतां शौर्यपटलैः पुनंती विप्राणां श्रुतिविहितमार्गानुगमिनां॥ सदाचारैस्तारैःस्मरसरसयूनां परिमलैरवंती हर्षतीजयति धनिनां क्षेत्रधरणी ॥ २ ॥ एतस्यां पुरि नूतनाभिधमठात् संपन्नविद्या तया धीरात्मा चपलीयगोत्रिविभवो निर्वाणमार्गानुगः ॥ एकाग्रेण तु चेतसा प्रतिदिनं चंडीशपूजारतः संजातः

(१) यह ताम्रपत्र सिरोही राज्यके हाथल गामके एक शुक्ल ब्राह्मणके पास है.

स च चंडिकाश्रमगुरुस्तेजोमयस्तापस : ॥ ३ ॥ शिष्यो मुनेरस्य महातपस्वी विवेक-विद्याविनयाकरो य : ॥ गुरूरुभक्तिर्व्यसनानिरिक्तो बभौ मुनिर्वा कलराशिनाम ॥ ४ ॥ जज्ञे ततो ज्येष्ठजराशिरस्मादेकांतरीशांतमनास्तपस्वी ॥ त्रिलोचनाराधनतत्परात्मा बभूव यागेश्वरराशिनाम ॥ ५ ॥ तस्मादाविरभूदहस्करइव प्रव्यक्तलोकद्वय : क्रोधध्वांतविनाशनैकनिपुण : श्रीमौनिराशिर्मुनि : ॥ शांतिक्षांतिदयादिभि : परिकरै : शूलेश्वरीसन्निभा शिष्या तस्य तपस्विनी विजयिनी योगेश्वरी प्राभवत् ॥ ६ ॥ दुर्वासराशिरेतस्या : शिष्यो दुर्वाससा सम : ॥ मुनीनांसबभूवोग्रस्तपसा महसापि च ॥ ७ ॥ व्रतनियमकलाभिर्यामिनीनाथमूर्तिर्निजचरितवितानैर्दिक्षु विख्यातकीर्ति : ॥ अमलचपलगोत्रप्रोद्यतानां मुनीनामजनि तिलकरूपस्तस्यकेदारराशि : ॥ ८ ॥ जीर्णोद्धारं विशालं त्रिदिवपतिगुरोरत्र कोटेश्वरस्य व्यूढं चोत्तानपट्टं सकलकनखले श्रद्धया यश्चकार ॥ अत्युच्चैर्भित्तिभागैर्दिवि दिवसपतिस्यं-दनं वा विग्रहणन् येनेहाकारि कोट : कलिविहगचलच्चितवित्रासपाश : ॥ ९ ॥ अभिनवनिजकीर्तिमुर्तिरुच्चैरवाद : सदनमतुल नाथस्योद्धृतं येन जीर्णं ॥ इहकनखलनाथस्याग्रतो येन चक्रे नवनिविडविशाले सद्मनीशूलपाणे : ॥ १० ॥ यदीया भगिनिशांता ब्रह्मचर्यपरायणा ॥ शिवस्यायतनं रम्यं चक्रे मोक्षेश्वरी भुवि ॥ ११ ॥ प्रथमविहितकीर्ति प्रौढयज्ञक्रियासु प्रतिकृतिमिव नव्यां मंडपे यूपरूपां ॥ इह कनखलशंभो : सद्मनि स्तंभमालाममलकपणपाषाणस्य सव्याततान ॥ १२ ॥ यावदर्बुदनागोयं हेलया नंदिवर्द्धनं वहति पृष्ठतो लोके तावन्नंदतु कीर्त्तनं ॥ १३ ॥ यावत् क्षीरं वहति सुरभी शस्यजातं धरीत्री यावत् क्षोणीं-कपटकमठो यावदादित्यचंद्रौ ॥ यावद्वाणीप्रथमसुकवे र्व्यासभाषा च यावत् श्रीमल्ल-क्ष्मीधरविरचिता तावदस्तु प्रशस्ति : ॥ १४ ॥ संवत् १२६५ वर्षे वैशाख शु० १५ भौमे चौलुक्योद्धरण परम भट्टारक महाराजाधिराज श्रीमद्भीमदेवप्रवर्द्धमान-विजयराज्ये श्री करणेमहामुद्रामत्यमहंवा भूप्रभृति समस्तपंचकुलेपरिपंथयति चंद्रावतीनाथ मांडलिकासुर शंभु श्री धारावर्षदेवे एकातपत्र वाहकत्वेनभुवं पालयति पटदर्शन अवलंबनस्तंभसकलकलाकोविदकुमार गुरुश्रीप्रल्हादनदेवे यौवराज्ये सति इत्येवंकाले केदारराशिना निष्पादितमिदं कीर्तनं सूत्रपाल्हणहकेन उत्कीर्णं ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १३.

ॐनम : ***************

संवत् १२८७ वर्षे लौकिक फाल्गुन वदि ३ रवौ अद्येह श्रीमदणहिलपाटके चौ-

लुक्यकुलकमलराजहंससमस्तराजावलीसमलंकृत महाराजाधिराजश्रीभ ***** विजयराज्येत ************* (धा ?)

श्रीवशिष्ठकुण्डयजनानलोद्भूतश्रीमद्धूमराजदेवकुलोत्पन्न महामण्डलेश्वर राजकुल श्रीसोमसिंहदेव विजयराज्ये तस्यैव महाराजाधिराजश्रीभीमदेवस्य प्रसाद **** रात्रामण्डले श्री चौलुक्यकुलोत्पन्न महामण्डलेश्वर राणक श्री-लवणप्रसाददेवसुत महामण्डलेश्वर राणक श्री वीरधवलदेव सत्कसमस्त मुद्रा-व्यापारिणा श्री मदणहिलपुरवास्तव्य श्रीप्राग्वाट ज्ञातीय ठ० श्री चंडपसुत ठ० श्रीचण्डप्रसादात्मज महं० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआसराज भार्या ठक्कुर श्री कुमारदेव्यो : पुत्र महं० श्रीतेजपालेन श्रीमल्लदेवसंघपति महं० श्री वस्तु-पालयोरनुजसहोदरभ्रातृ महं० श्री तेज : पालेन स्वकीयभार्या महं० श्री अनुप-मादेव्या स्तत्कुक्षिस ***

चित्रपुत्र महं० श्रीलुणसिंहस्यच पुण्ययशोभिवृद्धये श्रीमदर्बुदाचलोपरि देउलवाड़ाग्रामे समस्तदेव कुलिकालंकृतं विशालहस्तिशालोपशोभितं श्री-लुणसिंहवसहिकाभिधानश्रीनेमेनाथदेवचैत्यमिदं कारितम्‌ ॥ छ ॥

प्रतिष्ठितं श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिसंताने श्रीशांतिसूरिशिष्य श्री-आनन्दसूरि श्री अमरचन्द्रसूरिपट्टालंकारणप्रभु श्रीहरिभद्रसूरिशिष्यै : श्रीवि-जयसेनसूरिभि : ॥ छ ॥ अत्र च धर्म स्थाने कृत : श्रावकगोष्ठिकानां नामानि यथा ॥ महं० श्रीमल्लदेव महं० श्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेज : पाल प्रभृति भ्रातृत्रय संतान परं परया तथा महं० श्रीलूणसिंहसत्कमातृ कुलपक्षे श्रीचन्द्रावती वास्तव्य प्रागवाटज्ञातीय ठ० श्रीसावदेवसुत ठ० श्रीसालिगतनुज ठ०

श्रीसागर तनय ठ० श्री गागापुत्र ठ० श्रीधरणिगभ्रातृ महं० श्री राणिग महं० श्री लीला० तथा ठ० श्री धरणिगभार्या ठ० श्रीतिहुणदेवीकुक्षिसंभूत महं० श्री अनुपमादेवीसहोदर भ्रातृ ठ० श्री खीवसीह ठ० श्री आम्बसीह श्रीऊदल तथा महं० श्री लीलासुत महं० श्रीलूणसीह तथा भ्रातृ ठ० श्री जग-सीह ठ० रत्नसिंहानां समस्तकुटुम्बेन एतदीय संतानपरंपरया च एतस्मि न्धर्मस्थाने सकलमपिस्नपनपूजासारादिकं सदैव करणीयं निर्वाहणीयं च तथा ॥

श्री चन्द्रावत्या : सत्क समस्त महाजन सकलजिनचैत्यगोष्टिक प्रभृति श्रा-वक समुदाय : तथा उंबरणी कीसरउली ग्रामीय प्राग्वाटज्ञा० श्रे० रासल उ० आसधर तथा ज्ञा० माणिभद्र उ० श्रे० आल्हण तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ० खीम्वसी

हधर्कटज्ञातीय श्रे० नेहा उ० साल्हा तथा ज्ञा० धउलिग उ० आसचंद्र तथा ज्ञा० श्रे० वहुदेव उ० सोमप्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सावड उ० श्रीपाल तथा ज्ञा० श्रे० जीन्दा उ० पाल्हण धर्कट ज्ञा० श्रे० पासु उ० सादा प्राग्वाटज्ञातीय पूना उ० साल्हा तथा श्रीमाल ज्ञा० पूना उ० सल्हा प्रभृति गोष्ठिका अमीभिः श्रीनेमिनाथदेवप्रतिष्ठावर्षग्रंथियात्राष्टाहिकायां देवकीय चैत्रवदि ३ तृतीया दिने स्नपनपूजाद्युत्सव : कार्य : तथा कासहृदग्रामीय उएस वालज्ञातीय श्रेष्ठ सोहि उ० पाल्हण तथा ज्ञा० श्रे० सलखण उ० वालण प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सांनुय उ० देल्हय तथा ज्ञा० श्रे० गोसल उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे० कोला उ० आम्ना तथा ज्ञा० श्रे० पासचद्र उ० पूनचन्द्र तथा ज्ञा० श्रे० जसवीर० उ० जगा तथा ज्ञा० ब्रह्मदेव उ० राल्हा श्रीमालज्ञातीय कडुयरा उ० कुलधरप्रभृति गोष्ठिका: अमीभिस्तथा ४. दिने श्रीनेमिनाथ देवस्य द्वीतीयाकाष्टाहिका महोत्सव: कार्य: तथा ब्रह्माणवास्तव्यप्रागवाटज्ञातीय महाजनि० आंमिग उ० पुन ड० उ० एसल ज्ञा० महा० धान्वा उ० सागर तथा ज्ञा० महा० साटा उ० वरदेव प्राग्वाट ज्ञातीय महा० पाल्हण उ० उदयपाल उंइसवाल ज्ञा० महा० आबोधन उ० जगसीह श्रीमाल ज्ञा० महा० बीसल उ० पासदेवप्राग्वाटज्ञातीय महा० वीरदेव उ० अरसिंह तथा ज्ञा० श्रे० धनचन्द्र उ० रामचन्द्र प्रभृति गोष्ठिका: अमिभिस्तथा ५ पञ्चमी दिने श्रीनेमिनाथ देवस्य तृतीयाष्टाहिका महोत्सव: कार्य: ॥ तथा धउली ग्रामीय प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण उ० पासवीर तथा ज्ञा० श्रे० वोहडि उ० पुना तथा ज्ञा० श्रे० जसडय उ० जेगण तथा ज्ञातीय श्रे० साजण उ० भोला तथा ज्ञा० पासिल उ० पूनुय तथा ज्ञा० श्रे० राजुय० ऊसावदेव तथा ज्ञा० दूगसरण उ० साहणीय उंइसवाल ज्ञा० श्रे० सलखण ऊं महं० जोगा तथा ज्ञा० श्रीदेवकुंवार उ० प्रभृति गोष्ठिका: ॥ अमिभिस्तथा ६ षष्टीदिने श्री नेमिनाथ देवस्य चतुर्थाष्टाहिका महोत्सवः कार्य : तथामुण्डस्थलमहातीर्थवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय श्रेष्टसंधीरण उ० गुणचन्द्रपाल्हा तथा श्रे० सोहियं उ० आस्वेसर तथा श्रे० जेजा० उ० खांखण तथा फीलाणि ग्राम वास्तव्य श्रीमालज्ञा० वापल गाजण प्रमुखगोष्ठिकाः अमीभिस्तथा ७ सप्तमी दिने श्री नेमिनाथ देवस्य पञ्चमाष्टाहिका महोत्सव : कार्यः तथा हएडाउद्राग्राम डवाणीग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० आस्वुय उ० जसराज तथा ज्ञा० श्रे० लखमण उ० आसु तथा ज्ञा० श्रे० आसल उ० जगदेव तथा ज्ञा० श्रे० समिग उ० धणदेव तथा ज्ञा० श्रे० जिणदेव उ० जाल प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० आसल उ० सादा श्रीमालज्ञा० श्रे० देदा उ० वीसल

तथा ज्ञा० श्रे० आसधर उ० आसल तथा ज्ञा० श्रे० थिरदेव उ० विरुय तथा ज्ञा० श्रे० गुणचन्द्र उ० देवधर तथा ज्ञा० श्रे० हरिया उ० हेमा प्राग्वाटज्ञा० श्रे० लखमण उ० कडुया प्रभृतिगोष्ठिकाः अमिभिस्तथा ८ अष्टमी दिने श्री नेमिनाथ देवस्य षष्ठाष्टाहिका महोत्सवः कार्यः ॥ तथा मडाहडवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० देसल उ० ब्रह्मसर (सा. ?) ण तथा ज्ञा० जसकर उ० श्रे० धणिया तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ० अल्हा तथा ज्ञा० श्रे० वाला उ० पद्मसीह तथा ज्ञा० श्रे० आंबुय उ० वोहडि तथा ज्ञा० श्रे० वोसरि उ० पूनदेव तथा ज्ञा० श्रे० वीरुय उ० सजण तथा ज्ञा० श्रे० पाहुय उ० जिणदेव प्रभृति गोष्ठिकाः अमीभिस्तथा ९ नवमि दिने श्रीनेमिनाथदेवस्य सप्तमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः॥ तथा साहिलवाड़ा (१) वास्तव्य उईसवाल ज्ञातीय श्रे० देल्हण उ० आल्हण श्रे० नागदेव उ० आस्वदेव श्रे० काल्हण उ० आसल श्रे० वोहिथ उ० लाखण श्रे० जसदेव उ० बहडा श्रे० सीलण उ० देल्हण श्रे० वहुदा श्रे० महघरा उ० धनपाल श्रे० पूनिग उ० बाघा श्रे० गोसल उ० वहड़ा प्रभृति गोष्ठिकाः अमीभिस्तथा दशमि दिने श्री नेमिनाथ देवस्य अष्टमाष्टाहिका महोत्सवः कार्यः तथा श्रीअर्बुदोपरि देउलवाडावास्तव्य समस्त श्रावकैः श्रीनेमिनाथ देवस्य पञ्चापिकल्याणिकानि यथादिनं प्रतिवर्षं कर्तव्यानि ॥ एवमियं व्यवस्था श्रीचन्द्रावतीपति राजकुल श्रीसोमसिंहदेवेन तथा तत्पुत्रराज० श्रीकान्हड़देवप्रमुखकुमारैः समस्तराजलोकैस्तथा श्रीचन्द्रावतीयस्थानपतिभट्टारकप्रभृतिकविलास तथा गूगुली ब्राह्मण समस्त महाजन गोष्ठिकैश्च तथा अर्बुदाचलोपरि श्री अचलेश्वर श्रीवशिष्ठ तथा संनिहिता ग्राम देउलवाड़ा ग्राम श्रीश्री मातामहवुग्राम आवुयाग्राम ऊरासाग्राम ऊ. तरछग्राम सिहरग्राम सालग्राम हेठउजी ग्राम आखी ग्राम श्रीधान्धलेश्वर देवीय कोटड़ी प्रभृति द्वादशग्रामेषु संतिष्ठमान स्थानपति तपोधन गूगुली ब्राह्मण राठीय प्रभृति समस्त लोकैस्तथा भालिभाडा प्रभृति ग्रामेषु संतिष्ठमान श्रीप्रतिहारवंशीय सर्वराजपुत्रैश्च. आत्मीयात्मीय स्वेच्छया श्रीनेमिनाथदेवस्य मण्डपे समुपविश्योपविश्य महं० श्री तेजःपाल पार्श्वात्स्वीयस्वीयप्रमोदपूर्वकं श्रीलूणसिंहवसहिकाभिधानस्यास्य धर्मस्थानस्य सर्वोपिरक्षापभारः स्वीकृतः तदेतदात्मीयवचनं प्रमाणिकुर्वद्भिरेतैः सर्वैरपि तथा एतदीयसंतानपरंपरया च धर्मस्थानमिदमाचन्द्रार्कं यावत्परिरक्षणीयम् ॥ यतः किमिह कपालकमण्डलुवल्कलसितरक्तपटजटापटलैः॥

(१) ग्राम धारावर्षके ताम्रपत्रमें यही लिखा है- देखो शेषसंग्रह नम्बर ११.

व्रतमिदमुज्वलमुन्नतमनसां प्रतिपन्ननिर्वहणम् ॥ तथा महाराज कुल श्री-सोमसिंहदेवेन अस्यां श्रीलूणसिंह वसहिकायां श्रीनेमिनाथ देवाय पूजाङ्ग-भोगार्थं वाहिरहद्यां डवाणिग्रामः शासनेन प्रदत्तः ॥ स च श्रीसोमसिंह-देवाभ्यर्थनया प्रमारान्वयिभिराचन्द्रर्के यावत्प्रतिपाल्यः सिद्धिक्षेत्रमिति प्रसिद्ध-महिमा श्रीपुंडरीको गिरिः श्रीमान् रैवतकोपि विश्वविदितः क्षेत्रं विमुक्ते रिति ॥ नूनं क्षेत्रमिदं द्वयोरपि तयोः श्री अर्बुदस्तत्प्रभूभेजाते कथमन्यथा सममिदं श्री आदिनेमीरवयम् ॥ १ ॥ संसारसर्वस्वमिहैव मुक्तिः (?) सर्वस्य मप्यत्र जिनेशदृष्टम् विलोक्यमाने भुवने तवास्मिन् ॥ पूर्वं परं च त्वयि दृष्टि-पान्थे ॥ २ ॥ श्री कृष्णर्षीय श्री नयचन्द्रसूरेरिमे संसरवणपुत्रसं सिंहराजसाधू साजणसं सहसासाईदे पुत्रीसुनथवप्रणमन्ति ॥ शुभम् ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १४.

अचलेश्वरके मन्दिरकी प्रशस्ति.

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ येन यस्य गुणागुणे — — णिनः प्रायेण पाठ्या इव ×××× ××××××××××××××××××××××××××××××××××××× मनिशं मोहं व्यपोह महदानंदशिवनिलेनं कलमसौ सौवोचलेशः ॥ १ ॥ ×××× ××××××××××××××××××××××××××××××××××××× ठानिकलया कर्माणि कर्म्मान्य वे व्यर्थव्यनुतान्य जात्म कुणपेतज्ज्ञान्वि ×××××××× ××××××××××××××××××××××××××××××××××××× हंचराचरमिदं पूरयन्नात्मभावैर्विशेपो निजमावयांच गुणवान्वक्ति त्रय×××××××××××××××××××× ××××××××××××××××××××××××××××××××× विधिंवेधाकरोत्वप्यसुं ॥ ३ ॥ विरंचिविष्णुभर्गाणांसरसया — — — तः ॥ जीर्णोद्धारं चकाराथ प्रशंसा क्रियते मया ॥ ४ ॥ जीर्णोद्धारः पुनश्चात्र त्वचलेश्वरमंडपे ॥ अकारि लिख्यते येन तस्य वं-शागरः परः ॥ ५ ॥ क्षितौ प्रशांतौ किल सूर्यसोमवंशौ विशालौ प्रवरौ हि पूर्वात् ॥ तयोर्विनाशे भगवान् किवच्छ स्वचिंतयद्दोपभयान्महात्मा ॥ ६ ॥ तच्चिंतया चंद्रमसस्सुयोगाद्ध्यानान्महर्षेरभवभुविशुशेच (?) — — — — दिशासु सर्वासु दैत्यान्प्रविलोक्य वेगात् ॥ ७ ॥ निजायुधैर्दैत्यवरान्निहत्य संतोपयत क्रोधयुतं नुवच्छं ॥ वच्छ्य स्तदाराधनतत्पराश्च चंद्रस्य वो — — — चंद्रवंश्याः ॥ ८ ॥ एते तदारभ्य विशालवश्याः ख्याताः क्षितावत्र पवित्रगोत्राः ॥ त्राणायत्रासात्पक्षात्र चित्राक्षात्रंविधिंविधिवशात् प्रचरंति चित्रं ॥ ९ ॥ वंशे — — — — — विरमेच तस्मिन्गुणैर्गरिष्टोहि — — — सोमौ ॥ स्वतेजसा निर्जितसर्ववंशः पूर्वप्रसिद्धोत्र तु सिंधुपुत्रः ॥ १० ॥ ततश्चातीवतेजाचपुमान् यो रुधभू — — — —

णोलक्षणाधार: सर्वाधाराय — विह ॥ ११ ॥ शाकंभरीपूर्वयदा पुरावै माणिक्यसंज्ञ: पुरुष: प्रवीर:॥ स्ववीर्यधैर्यार्जितभूमिभागो नर्दत — — — दलक्ष्मणोभूत् ॥ १२ ॥ ततोभूदधिराजाख्य पुत्रस्तस्यपराक्रमी सोहीरक्तोशनोवंशे शोभिभूमौहितत्सुत: ॥ १३ ॥ महिंदुर्महतांश्रेष्ठोबलीवलिकुलोद्वह: तदन्वयीचमतिमान्सिंधुराजोविराजते ॥ १४ ॥ प्रतापेनपदंप्रापन्महीं दोर्महदद्भुतं ॥ अभूत्तेषां कुलेशानां कुले कुलविवर्द्धन:॥ १५॥ रघुर्यथा वंशकरो हि वंशे सूर्यस्य शूरो भुविमंडले ग्रे ॥ तथाबभूवात्रपराक्रमेण स्वनामसिद्ध : प्रभुरासराजा ॥ १६ ॥ तस्यभूदान्दणोसानी चाहुमानान्वयाधिप: ॥ कीर्तिपाल: सुतस्तस्मात्कीर्त्या ख्यातो ऽखिल क्षितौ ॥ १७ ॥ अभूत्समरसिंहो नु नामार्थपरिपालक: ॥ समरेमृगराजेव निहता मृगमानवा: ॥ १८ ॥ समरसिंहसुतौ द्वौ सिंहशावाविवानुगौ ॥ तयोरुदयसिंहोभूद्धाताराज्यधुरंधर: ॥ १९ ॥ यो वै परोदानगुणैर्गरिष्ठस्तस्यात्मजो मानवसिंहनामा ॥ बभूव भूमौ किलक्षत्रियाणामनाथनाथो महतानुरूप:॥ २० ॥ ततो भवद्वंशविवर्द्धनो नु प्रतापनामा नयनाभिराम:॥ सदा स्वकीर्त्या किल चाहुमान: पूज्य: प्रतापानलतापि तारि:॥ २१ ॥ तस्यात्मजो ऽपूर्वगुणाधिवासस्त्वासीदशस्यंदननामभाप: ॥ बभार बीजानि तु बीजश्रेयोचत्वारिराज्यायहरे: प्रसादात् ॥ २२ ॥ याभूदतीवादितितेजतुल्यांस्तुल्यांस्तनूजान्सुषुवे हि वीरान् ॥ सा मल्लदेवी दयिता तु तस्य धराचरा भारवहान्वरिष्ठान्॥ २३ ॥ ज्येष्ठो लावण्यकर्णोभूद्दृढलक्षणसंज्ञको ॥ लूणवर्मानुजस्तेषामग्रजोराजपालक: ॥ २४ ॥ चकारकर्माणिचयानिनान्यै गच्छंति सिद्धिं नियतं निरीह: ॥ नीते क्षयं क्षत्रवरे सुरेर्यौ स्वगोत्रगोपालपरायणोभूत् ॥ २५ ॥ लावण्यकर्णे नुगते तु नाकं भ्रातानुजो लूणिगदेवसंज्ञ: ॥ स्वबाहुवीर्यार्जितसर्वदेशान् शशास शूर: कुलकल्पवृक्ष: ॥ २६ ॥ पुनर्गतान्ना पदरीन्निहत्य दैत्यानिवद्यो समरे ऽमरीश: ॥ प्रापत्प्रतापादपरान्हिदेशान् चंद्रावतीं चार्बुददिव्यदेशं ॥ २७ ॥ न तेन तुल्य: समये च तस्मिं देशे समोय: समरे विभर्ति ॥ शस्त्रीवशंभू परमोपि येन साकंवराकोत्रहि लुंठिगेन ॥ २८॥ अकारिपुण्यानि पराक्रमंच युक्त्यार्बुदे चार्बुदमानवेश: ॥ निवेशयद्वै प्रतिमांगमूर्तिं राज्ञोस्यराज्ञ्यास्त्वचलेश्वराग्रे॥ २९ ॥ एवं गुणागराचार: लुंढागरनरागर:॥ कालावप्य करोदत्र जीर्णोद्धारं सुरेश्वरे॥ ३०॥ उद्धर्त्ता पुण्यतीर्थानां प्रासादानां नराश्रय: ॥ अर्बुदे ऽपरनाकेतु नागराजाश्रयेसुधीं: ॥ ३१ ॥ तेन वै देवदेवस्य त्वचलेश्वरमंडप: ॥ जीर्णोद्धारस्य विधिना कारयित्वा प्रतिष्ठित: ॥ ३२ ॥ सर्वदात्रोपचर्यार्थं शासनेश्रद्धयान्वित: ॥ दत्तो सावचलेशस्य हेठुंजीग्राममग्रत: ॥ ३३ ॥ प्रीत्यर्थ मस्य सततं स्थितिकं वत्सरं प्रति॥श्रद्धयोत्पन्न मचलमचलेशायदत्तवान् ॥ ३४ ॥ शन्नाप्रशस्ता विशदान्वयेन

द्विजेनजाम्बाजनितेन तेन ॥ स्थानाशजे नागर नागरेण यशश्रितांशेन महाधरेण ॥ २५ ॥ कृतार्थ रूपार्थ विनाविनाभू तेनेयमेनोऽनवनाशनेन ॥ भवाभवा भावन भावभूतिनाम्नात्ममोदोदयमोहितेन ॥ २६ ॥ मांगल्यमस्तु ॥ संवत् १३७७ वर्षे वैशाख सुदी ८ सोमे - - संवत्सरे ऽद्येयचंद्रावतीं प्रतिबद्ध बहुणसमावासित महाराजकुल श्रीलुंढागरे चंद्रावती प्रभृति देशेषु तथा यावतीपुर प्रतिबद्ध द्विराजकुलाधिप - - संतोशितनिशुक्रे श्रीकरणादिपागारे मह॰ देवसिंह प्रतिबद्ध देवकुल प्रतिपथे श्रीअर्बुदाचले देवश्रीअचलेश्वर महामंडपजीर्णोद्धारो महाराज श्रीलुंढपेन कारितः

(यह प्रशस्ति बहुत खंडित है, लेकिन् हम को जैसी मिली, वैसी ही यहां दर्ज कीगई है).

शेषसंग्रह. नम्बर १५

आबू परके श्री वसिष्ठके मंदिरकी प्रशस्ति.

ओंनमः श्रीवसिष्ठाय ॥ निर्दोषः सततोदितो मितकलः श्रीमान् कलंकोझितः तल्पः पक्षयुगे पि दर्पितवपु मित्रप्रतापोदये ॥ अत्यंतं कविभिर्बुधैरनुदिनं संसेवितो भूरिभिः नव्यः को पि विराजते द्विजपतिः पार्श्वेमहादेवकः ॥ १ ॥ योमग्न: शोकेरर्दैमे प्रवल्ति: पार्जरिसबैरति कौरैः किंच गतः श्रुतिस्मृतिकथा वैकल्यमभ्यागतः ॥ श्रीमत्पार्श्व धरासुरेण सुगणैरुत्यपुरितः स्वच्छंदं परिबद्धसीतिभुवने दानैरनेकैर्नृपः ॥ २ ॥ विदितवचनतत्वा श्रीवसिष्ठाग्रभक्तः निखिलभुवनकर्म्मा रंभनिर्वाहदक्षः ॥ अशुभ हरणधीरो वीरतां यः प्रयातः सजयति भुवनेवै श्रीमहादेवपार्श्वः ॥ ३ ॥ किंच ॥ सरस्वतीयस्य पुराजनित्री गोपालसूनुः सोविराजते वै ॥ दाता द्विजानां सहजैरतिरः श्रीमान्महादेव चिरायजीवी ॥ ४ ॥ गजांतापस्यतेलक्ष्मी भेजांते यस्य कीर्तनं श्रीमद्वसिष्ठभुवनं स्वर्गाः दपि मनोरमं ॥ ५ ॥ गुरोः प्रासादान्मधुसूदनस्य नरोत्तमोवैपरमोगुरुर्मे ॥ तयोः प्रासादाद्भुवनं सुरम्यं पश्यंतुलोकाः परमं पवित्रं ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमकालातीत संवत् १३९४ वर्षे वैशाख शुदि १० गुरावद्येह श्रीचंद्रावत्यां चाहुमानवंशोदरलक्ष्मीरेयराज श्रीतेजसिंह सुतराज श्रीकानल्हदेवे राज्यं प्रशासति सति पार्श्व श्रीमहादेवेन इहं श्रीवसिष्ठस्य धर्म्मायतनं कारापितमिस्यर्थैः ॥ तथाच चहुमान ज्ञातीयराज श्रीतेजसिंहेन स्वहस्तेन शासनपं दत्तं ग्रामं १ द्वितीयं भातुलेश्वरं २ तृतीयं तेजलपुर मिति ३ तथा च देवडा श्रीविठुपाकेन स्वहस्तेन सीहलुपग्रामं दत्तं तथा राज श्रीकान्हडदेवेन स्वहस्तेन वीरवाडाग्रामं दत्तं तथा चाहुमान ज्ञातीय राज श्रीसामतसिंहेन दुद्धाई सहुवी किरणथल ग्रामकपं दत्तं ॥ शुभं भवतु ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १६.

श्री वसिष्ठ मुनीजी.

संवत् १५८९ वर्षे वैशाष सुदि १५ गुरुवारे स्वस्ति श्री महाराज श्री अपिराज चिरंजीवी गत्रे भषकामना करावितं पाढि श्री रायमल करापितं पीरीजी स्वहस्त० २५०५ देवका घरू शुभंभवतुः

शेषसंग्रह, नम्बर १७.

आबूपरके माना रावके मन्दिरकी प्रशस्ति.

शाके नंदांकशक्रे जलनिधिदहन क्षोणिपे विक्रमाब्दे ज्येष्ठे मासि द्वितीया दिनकरदिवसे पूर्णतांप्राप्तएषः ॥ प्रासादश्चंद्रमौलेर्निजतनयवधु श्रेयसेकारितोद्रौ मात्राश्रीधारबाय्या नृपमुकुटमणेर्मानसिंहस्यराज्ञः ॥ १ ॥ राज्ञः श्रीमानसिंहस्य पत्नीपंचकसंयुता ॥ मूर्ति श्री मन्महेशस्य सदाराधनतत्परा ॥ २ ॥ हस्तयुग्मंतुसंयोज्य स्थितापुण्यवदग्रणीः ॥ सर्वपापापनोदाय चित्तैकाग्र्युयुता स्थिता ॥ ३ ॥ भुकूवाराज्यं तु धर्मेण देवडावंशसंभवः ॥ प्रभवः सर्वपुण्यानां मानसिंहस्य वर्मणः ॥ ४ ॥ श्री रामभक्तिनिरतः श्री शिवार्चनतत्परः ॥ शूरोदारगभीरात्मा मानसिंहो नृपाग्रणीः ॥ ५ ॥ ज्योतिर्विदानाथाख्येन लिखतं ॥ श्री अचलेश्वरोजयति ॥ श्रीमच्चौहाणवंशालंकारशौर्यौदार्यगांभीर्यधैर्याद्याश्रय श्रीमद्दुर्जनशल्यस्तस्यात्मजः सकलराज गुणश्रेयः श्री मानसिंहः श्री मदर्बुदाचले श्री मदचलेश्वरचरणसेवारतः ॥ सर्वपापविमुक्तो यः सर्वपुण्यरतः सदा ॥ श्रद्धयापरयायुक्तः सेवते ह्यचलेश्वरं ॥ तस्येयं परमामूर्तिः पत्नीपंचकसंयुता ॥ कारिता शिवसेवायै धारबाय्या शिवालये ॥ स्वस्तिश्री मन्नृपविक्रमार्क समयातीत त्रयस्त्रिंशदधिक शोडश शततमे वर्षे पार्थिव नाम्नि संवत्सरे उत्तरायणगते श्रीसूर्ये ग्रीष्मर्तौ महामांगल्य प्रदे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वितीयायां तिथौ रविवासरे श्रीमदचलेश्वर सन्निधाने शिवभक्त्यर्थे शिवालयं कारयित्वा मात्रा श्री धारबाय्या सपत्नीकस्यश्रीमानसिंहस्य स्वर्गगतस्य मूर्तिः कारिता श्रीमानेश्वरपुत्रपुण्यर्थे श्रीमात्रा धारबाय्या नवीनं चैत्यं कारितं सूत्र जोधाकेनकारितं श्रीहर्षकमल कस्य लिपिरियं आचंद्रार्कौ नंदतात् गोत्रेषु वंशेषु पुण्यवृद्धिर्भवतु ॥ उँ मंगलं भगवान् विष्णुः संवत् १६३३ वर्षे ज्येष्ठशुक्ला २ रविवासरे.

सूरे गोरवालेकी, जो ब्रह्मपुरीमें हरनाथकी बावड़ीके पास महादेवजीके मंदिरके बाहर चौंतरेपर है, उसकी नक़्ल.

सूरज. गाय, बच्छ. चंद्रमा.

स्वस्ति श्री महाराजा धीराज महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी आदेशात्, प्रथम दुवे पंचोली विसनदास भट देवराम अपरंच, ब्रह्मपुरी राय श्री निवासरीमांहे ब्राह्मणे हुकमथी घर मांड्या जणीरी धरती तथा माहोमाह बामण घर वेचे जीरी जगात तथा लागत विलगत भट देवराम हे स्वस्ति भणावे दीधी, अबे ब्रह्मपुरीथी कणी-वातरी दरबाररी आड़ीरी चोलण नहीं व्हे, अबे कोई कामदार तथा कोटवाल ओरही कोई चोलण करे, तींहे श्री एकलिंगजी पोंछे. बामण घर बेचे, तो न्यातरा न्यातहें बेचे; तीनवरणने वेचवा पावे नहीं. ब्रह्मपुरीमे कोटवाल नहीं आवे, राते चोकी सारु जावता सारु आवे, इसो हुकम हो. संवत् १७८१ वर्ष सावण विद ६ बुदे. कर्कसंक्रांतरा पुण्यकाल माणे चीरो रोपावारो हुकम हुवो, उणीदिन जगात लागत विलगत तथा घर मांड्या ज्या धरती भट देवरामहे स्वस्तिभणावे उदक आघाट करे श्री-रामार्पणकरे दीधी. श्रीदरबाररी आड़ी शिवनिर्माल्यहै, राय श्रीनिवासरी पुलाथी तला-वरा ओटाथी गोलेरा अपाडा विचे ब्राह्मणारा घर है, यांरी सब लागत छूटरो हुकम है.

छप्पय.

मिहर वंश मणिमौलि अमर पत्तन अमरेश्वर ।
उच्चाशन आरूढ़ भये संग्राम नरेश्वर ॥
पुर, मांडल, ले पटा मुगल सासन मेवाती ।
रान शुभट चखरत्त कढ़े तिन पे केवाती ॥
रन बाज़ ख़ान नाहर मरन अरु जोरावर उब्बरिय ।
अति कोप साह आलम अखिल भांति जहर-घुट्टन भरिय॥ १॥
साह सु फ़र्रुख़सियर ख़ास अच्छर दल पठ्य ।
जिज़िया जारी करन रान रोखानल कठ्य ॥
दूत बिहारी दासगौन दिल्लिय पुर किन्नो ।
फ़र्रुख़सें फ़रमान रामपत्तन हठलिन्नो ॥
रट्ठोरवंश दुग्गाशुभट बडपनाह दै वृद्धबर ।
जगतेश कँवर ब्याहन जबहि लौना पुर चालुक्य घर ॥ २ ॥
बीडर ईडर बिखम राख हीडर रट्ठोरन ।
लीडरपाय पनाह बडे तोरन जलबोरन ॥

रामपुरा जागीर लेख माधव हित किन्नो ।
रच जयसिंह फ़रेब दाव कग्गर लिखदिन्नो ॥
संग्राम सकल कारज ब्यशद भावी राजन हित भये ।
परलोक बास हाहा परब सुत कलत्र नामहि ठये ॥ ३ ॥
कुल चन्द्रावत कथा राम पत्तन जिम जेसी ।
ईडर धर इतिहास तास लेखिय तिम तेसी ॥
गिरपुर अन्वय गहर बंश पत्तन घर वत्तन ।
देवलिया पुर दिघ्घ कथा शूरे उन मत्तन ॥
चहुवान थान अब्बुव चरित मिट्टत वल मुगलानको ।
जिम जहांदार फ़र्रुख़सियर मरन करन जन हानको ॥ ४ ॥
कछु दिन रफ़िउश्शान कछुक दिन रफ़िउद्दौला ।
शाह मुहम्मद शाह हसन अछिय खत खोला ॥
ईरानी अवनीश शाह नादिर बढ़ आवन ।
सुपह अहम्मद शाह परे घर केद अपावन ॥
आलम्मगीर सानी अधिप शाहजु आलिम नाहशो ।
सानीय अकब्बर साहवह पिनसन पावत माहशो ॥ ५ ॥
ताहि बहादुर शाह परमसुख पिन्सन पावन ।
मिल सिपाह बदमाश, मुगल थल वंश गमावन ॥
फिर लिख संग्रह शेष रान संग्राम पव्व इम ॥
बानिक वीरविनोद जानि कविराज श्याम जिम ॥
सज्जन महीप आशय सकल किलसासन फ़तमालको ॥
इतिहास खंड निज मति अनुग किय अंकित हित हालको ॥ ६ ॥

महाराणा संग्रामसिंह २,

ग्यारहवां प्रकरण समाप्त.